

श्रीभगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः ।

तस्य तृतीय खण्डः

बन्ध-स्वामित्व-विचयः

हिन्दीभाषानुवाद तुलनात्मकटिप्पण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टे सम्पादित

सम्पादक

नागपुरस्थ-नागपुरगृहाविद्यालय-संस्कृताध्यापक एम् ए, एल् एल् आर्, डी लिट् इत्युपाधिधारी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादक

बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

संशोधने सहायकी

व्या. वा, सा सू, प देवकीनन्दन

सिद्धान्तशास्त्री

*

डा नेमिनाथ-त्तनय-आदिनाथ

उपाध्याय, एम् ए, डी लिट्

प्रकाशक

श्रीमन्त शेठ शिंतायराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फंड कार्यालय

अमरावती (वरार)

वि.स. २००४)

वीर निर्माण-संवत् २४७३

(ई.स. १९४७

मूल्य रूप्यरु-दशकम्

प्रकाशक—

श्रीमन्त घेठ मितानराय लक्ष्मीचन्द्र,

जैन साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय

अमरावती (बरार)



मुद्रक—

टी. एम्. पाटील

मेनेजर

सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती

THE ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF
PUSPADANTA AND BHŪTABALI
WITH
THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. VIII BANDHA-SWĀMITVA-VICAYA

Edited

with introduction, translation, indexes and notes

BY

Dr HIRALAL JAIN, M A, LL B, D Litt,
C P Educational Service, Nagpur-Mahavidyalaya, Nagpur

ASSISTED BY

Pandit Balchandra Siddhānta Shāstrī

with the cooperation of

Pandit DEVAKINANDAN
Siddhānta Shāstrī

*

Dr A N UPADHYE
M A, D LITT

Published by

Shrimant Sach Shitabrai Laxmichandra,
Jana Sāhitya Uddhārakā Fund Kāryālaya,
AMRAOTI (Berar)

1947.

Price rupees ten only.

Published by—

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Kāryālaya
AMRAOTI [Berar]



Printed by—

T M Patil, Manager,
Saraswati Printing Press,
AMRAOTI (Berar)

विषय-सूची

	पृष्ठ
१ प्राक्कथन	१
१ प्रस्तावना	
Introduction	
१ विषय-परिचय	१
२ बन्ध-स्वामित्व-विचयकी विषय सूची	-९
३ शुद्धि-पत्र	१७
२	
मूल, अनुवाद और टिप्पण बन्ध-स्वामित्व-विचय	१-३९८
१ ओषधी अपेक्षा त्रयस्वामित्व	१
२ आदेशकी " "	९३
३	
परिशिष्ट	
१ बन्ध-स्वामित्व-विचय-सूत्रपाठ	१
२ अत्रतरण-गाथा-सूची	२१
३ न्यायोक्तियां	"
४ ग्रन्थोल्लेख	२२
५ पारिभाषिक शब्द-सूची	"

प्राक्-कथन



पट्टखण्डागम सातवें भाग गुरदासधके प्रकाशित होनेके दो वर्ष पश्चात् यह आठवां भाग बन्धस्वामि व विचय पाटनोके हाथ पहुच रहा है । इस भागके साथ पट्टखण्डागमके प्रथम तीन खण्ड पूर्णतः विद्वत्साराके समुख उपस्थित हो गये । कागज, मुद्रण व व्यवस्थादि सम्बन्धी अनेक कठिनाइयों व असुविधाओंके होते हुए भी यह कार्य गतिशील बना ही रहा है, इसका श्रेय ग्रन्थमालाके सस्थापक श्रीमत् सेठजी व अय अधिकाारी, मेरे सहयोगी प बाउचन्द्रजी शारदी तथा सरस्वती प्रेसके मैनेजर श्रीयुत टी एम् पाटीलको है जो इस कार्यको विशेष रुचि और अपनत्वके साथ निगाहते जा रहे हैं । इन सबका मैं हृदयमे अनुगृहीत हू । वहींके सहयोगके बलपर आगेका कार्य भी समुचित रूपसे चलता रहेगा, ऐसी आशा है । नवें भागका मुद्रण प्रारम्भ हो गया है ।

प्रस्तावना

INTRODUCTION.

The present volume contains the complete third part (Khanda) of the Satkhandāgama. It is called Bandha sāmitta-vicaya which means ' Quest of those who bind the Karmas ' Out of the 148 varieties of Karmas, it is only 120 that are capable of being produced directly by the soul. The author of the Sūtras has mentioned, in the form of questions and answers, the spiritual stages (Gunasthānas) and the detailed conditions of life and existence (Mārganāsthānas) in which specified Karmas may be forged. Forty-two Sūtras are devoted to the Gunasthāna treatment and the rest 282 to the Mārganāsthāna. The commentator has enlarged the scope of the treatment of the subject by raising twenty-three questions and answering them in relation to all the Karmas. In this way, good many details about the Karma Siddhānta have been exposed, and the whole work is very important for a thorough study of Jaina Philosophy.

विषय-परिचय

इस खण्डका नाम बन्धस्वामित्व-विचय है, जिसका अर्थ है बंधके स्वामित्वका विचय अर्थात् विचारणा, मीमांसा या परीक्षा। तदनुसार यहाँ यह विवेचन किया गया है कि कौनसा कर्मबन्ध किम किम गुणस्थानमें व मार्गणास्थानमें सम्भव है। इस खण्डकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है —

कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें उठते अनुयोगद्वारका नाम बन्धन है। बंधनके चार भेद हैं—ग्रन्थ, बंधक, बंधनीय और बन्धविज्ञान। ग्रन्थविज्ञान चार प्रकारका है—प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश। इनमें प्रकृतिग्रन्थ दो प्रकारका है—मूल प्रकृतिबन्ध और उत्तर प्रकृतिबन्ध। सत्प्ररूपणा पृष्ठ १२७ के अनुसार उत्तर प्रकृतिबन्ध भी दो प्रकारका है, एकैकोत्तरप्रकृतिबन्ध और अव्योगादुत्तरप्रकृतिबन्ध। एकैकोत्तरप्रकृतिबन्धके समुत्कीर्तनादि चौबीस अनुयोगद्वार हैं जिनमें बारहवा अनुयोगद्वार बन्धस्वामित्व विचय है।

इस खण्डमें ३२४ सूत्र हैं। प्रथम ४२ सूत्रोंमें शेष अर्थात् केवल गुणस्थानानुसार प्ररूपण है, और शेष सूत्रोंमें आदेश अर्थात् मार्गणानुसार गुणस्थानोंका प्ररूपण किया गया है। सूत्रोंमें प्रश्नोत्तर क्रमसे केवल यह बतलाया गया है कि कौन कौन प्रकृतियाँ किन किन गुणस्थानोंमें बन्धको प्राप्त होती हैं। किन्तु धनञ्जयने सूत्रोंको देशामर्शक मानकर बन्धव्युत्प्रेद आदि सम्बन्धी तेरीस प्रश्न और उठाये हैं और उनका समाधान करके बन्धोदयव्युत्प्रेद, स्रोदय-परोदय, सान्तर-निरन्तर, सप्रलय अप्रपय, गति-सयोग व गति-स्वामित्व, बन्धाध्वान, बन्ध-व्युत्तिष्ठतिस्थान, सादि-अनादि व ध्रुव अध्रुव बन्धोंकी व्यवस्थाका स्पष्टीकरण कर दिया है, जिसमें विषय सारांगपूर्ण प्ररूपित हो गया है। इस प्ररूपणाकी कुछ विशेष व्यवस्थाएँ इस प्रकार हैं—

सान्तरबन्धी—एक समय बंधकर द्वितीय समयमें जिनका बन्ध विश्रान्त हो जाता है वे सान्तरबन्धी प्रकृतियाँ हैं। ये ३४ हैं—असातापेदनीय, क्षीपेद, नपुसकपेद, अरति, शोक, नरकगति, एकेन्द्रियादि ४ जाति, समचतुरस्रस्थानको छोड़ शेष ५ सस्थान, वज्रर्षभनाराच-सहननको छोड़ शेष ५ सहनन, नरकगयानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, स्थानर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्मग, दुस्वर, अनादेय और अवशकीर्ति।

निरन्तरवन्धी— जो प्रकृतिवा जघनसे भी अतर्मुहने काठ तरु निरन्तर रूपसे बधनी हैं वे निरन्तरवन्धी हैं। वे ५४ हैं— ध्रुव १७ (देखिये पृ ३), आयु ४, तीर्थ ११, आहारकशरीर और आहारकशरीरगोपण।

सान्तरनिरन्तरवन्धी— जो जघनसे एक समय और उत्कर्षित एक समयसे लेकर अतर्मुहनेके आगे भी बधनी रहती हैं वे सान्तरनिरन्तरवन्धी प्रकृतिवा हैं। वे ३२ हैं— सातावेदनाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, निर्धगति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जानि, औदारिकशरीर, वैक्रियिजशरीर, समचतुरस्रस्थान, औदारिकशरीरगोपण, वैक्रियिकशरीरगोपण, बर्जम-रहना, तिर्थगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी, परमात, उद्भास, प्रशस्तविद्यायोगनि, प्रस, वादर, पयाप्त, प्रदेवशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्वीर्नि, नीचगोत्र और ऊचगोत्र।

गतिसमुक्त— प्रश्नके उत्तरमें यह उक्तया गया है कि विभिन्न प्रकृतिके वचके साथ चार गतियोंमें कौनसा गतियोंका वच होता है। जैसे— मिथ्यादृष्टि जीव ५ ज्ञानारणको चारों गतियोंके साथ, उच्चगोत्रको मनुष्य व देवगतिके साथ, तथा यशस्वीर्तिको नरकगतिके बिना शेष ३ गतियोंसे समुक्त वाचना है।

गतिस्वामित्वमें विभिन्न प्रकृतियोंको बाधनेवाले कौन कौनसी गतियोंके जीव हैं, यह प्रकृतिपित किया गया है। जैसे— ५ ज्ञानारणको मिथ्यादृष्टिसे अमय गुणस्थान तरु चारों गतियोंके, सयतासयन तिर्यंच व मनुष्य गतिके, तथा प्रमत्तादि उपरिष्ठ गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव बाधने हैं।

अध्यानेमें विभिन्न प्रकृतिका वच किस गुणस्थानमें किम गुणस्थान तरु होता है, यह प्रकट किया गया है। जैसे— ५ ज्ञानारणका वच मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाधारण गुणस्थान तरु होता है।

सादि वच— विभिन्न प्रकृतिके वचको एक तरु व्युच्छेद हो जानेपर जो उपशमश्रेणीसे भ्रष्ट हुए जीवके पुन उसका वच प्रारम्भ हो जाता है वह सादि वच है। जैसे— उपशान्त वचान गुणस्थानसे भ्रष्ट होकर सूक्ष्मसाधारण गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके ५ ज्ञानारणका वच।

अनादि वच— विभिन्न कर्मके वचके व्युच्छिन्नस्थानको नहीं प्राप्त हुए जीवके जो उसका वच होता है वह अनादि वच वच है। जैसे— अपने बन्धव्युच्छिन्न स्थान से सूक्ष्मसाधारण गुणस्थान को प्राप्त हुए जीवके ५ ज्ञानारणका वच।

पुनः वन्ध—अमृत्यु जीवोंके जो ध्रुवगन्धी प्रकृतियोंका पुनः होता है वह अनादि-अनन्त होनेसे ध्रुव वन्ध कहलाता है ।

ध्रुवगन्धी प्रकृतियाँ ४७ हैं— ५ ज्ञानारण, ९ दर्शनारण, मिथ्यात्व, १६ कषाय, मय, जुगुप्सा, तैजस व कार्पण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अमृष्ट्यु, उपघात, निर्माण और ५ अतराय ।

अध्रुव वन्ध—मृत्यु जीवोंके जो कर्म पुनः होता है वह विनश्यत होनेसे अध्रुव वन्ध है ।

अध्रुवगन्धी प्रकृतियाँ—ध्रुवगन्धी प्रकृतियोंसे शेष ७३ प्रकृतियाँ अध्रुवगन्धी हैं ।

इनमें ध्रुवगन्धी प्रकृतियोंका सादि, अनादि, पुनः और अध्रुव चारों प्रकार तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव वन्ध ही होता है ।

उक्त व्यवस्थाओं यथासम्भव आगेकी तालिकाओंमें स्पष्ट की गई हैं—

वन्धोदय-तालिका

संख्या	प्रकृति	स्वोन्मयगन्धी आदि	सान्तरवन्धी आदि	वन्ध किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	उदय किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	पृष्ठ
१-५	ज्ञानारण ५	स्वो-वन्धी	निरन्तरवन्धी	१-१०	१-१२	७
६-९	चक्षुदर्शनारणादि ४	"	"	"	"	"
१०-११	निद्रा, प्रचठा	स्व-परो	"	१-८	"	३५
१२-१४	निद्रानिद्रादि ३	"	"	१-२	१-६	३०
१५	सातापेदनीय	"	सा निर	१-१३	१-१४	३८
१६	असातापेदनीय	"	सान्तरवन्धी	१-६	"	४०
१७	मिथ्यात्व	स्वो	नि	१	१	४२
१८-२१	अनन्तानुगन्धी ४	स्व-परो	"	१-२	१-२	३०
२२-२५	अप्रत्याख्यानारण ४	"	"	१-४	१-४	४६
२६-२९	प्रत्याख्यानारण ४	"	"	१-५	१-५	५०
३०-३२	सम्बलनशोधादि ३	"	"	१-९	१-९	५२, ५५
३३	सम्बलनलोभ	"	"	"	१-१०	५८

संख्या	प्रकृति	स्वोदयवर्गी आदि	सात्तवर्गी आदि	बन्ध किम गुणस्थानते किम गुणस्थान तव	उदय किम गुणस्थानते किम गुणस्थान तव	पृष्ठ
३४ ३५	हास्य, रति	स्व-परो	सा नि	१-८	१-८	९५
३६ ३७	भरति, शोक	"	सा	१-६	"	४०
३८ ३९	मय, सुगुप्ता	"	नि	१-८	"	५९
४०	नपुसस्त्रवेद	"	सा	१	१-९	४२
४१	स्त्रीवेद	"	"	१-२	"	३०
४२	पुरुषवेद	"	सा नि	१-९	"	५२
४३	नारकायु	परो	नि	१	१-४	४२
४४	तिर्यगायु	स्व-परो	"	१-२	१-५	३०
४५	मनुष्यायु	"	"	१, २, ४	१-१४	६१
४६	देवायु	परो	"	१-७ (३ सो छोड)	१-४	६४
४७	नरकागति	"	सा	१	"	४२
४८	तिर्यगागति	स्व परो	सा नि	१-२	१-५	३०
४९	मनुष्यगति	"	"	१-४	१-१४	४६
५०	देवगति	परो	"	१-८	१-४	६६
५१ ५४	एनेन्द्रियादि ४ जाति	स्व-परो	सा	१	१	४२
५५	पञ्चेन्द्रिय जाति	"	सा नि	१-८	१-१४	६६
५६	औदारिकाशरीर	"	"	१-४	१-१३	४६
५७	वैक्रियिकाशरीर	परो	"	१-८	१-४	६६
५८	आहाराशरीर	"	नि	७-८	६	७१
५९	तैजसाशरीर	स्वो	"	१-८	१-१३	६६
६०	वार्मणशाशरीर	"	"	"	"	"
६१	औदारिकाशरीरगोपांग	स्व परो	सा नि	१-४	"	४६
६२	वैक्रियिकाशरीरगोपांग	परो	"	१-८	१-४	६६
	आहाराशरीरगोपांग	"	नि	७-८	६	७१

६४	निर्माण	स्वो	नि	१-८	१-१३	६६
६५	समचतुरस्रसंस्थान	स्व-परो	सा नि	"	"	"
६६	न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान	"	सा	१-२	"	३०
६७	स्वातिसंस्थान	"	"	"	"	"
६८	कुन्जकसंस्थान	स्व-परो	सा	१-२	१-१३	३०
६९	वामनसंस्थान	"	"	"	"	"
७०	हुण्डकसंस्थान	"	"	१	"	४२
७१	यज्ञद्वयमनाराचसंज्ञन	"	सा नि	१-४	"	४६
७२	यज्ञनाराचसंज्ञन	"	सा	१-२	१-११	३०
७३	नाराचसंज्ञन	"	"	"	"	"
७४	अर्धनाराचसंज्ञन	"	"	"	१-७	"
७५	कीलितसंज्ञन	"	"	"	"	"
७६	असंप्राप्तसुपाटिकासंज्ञन	"	"	१	"	४२
७७	स्पर्श	स्वो	नि	१-८	१-१३	६६
७८	रस	"	"	"	"	"
७९	गन्ध	"	"	"	"	"
८०	वर्ण	"	"	"	"	"
८१	नरकगत्यानुपूर्वी	परो	सा	१	१, २, ४	४२
८२	निर्धग्गत्यानुपूर्वी	स्व-परो	सा नि	१-२	"	३०
८३	मनुष्यगत्यानुपूर्वी	"	"	१-४	"	४६
८४	देवगत्यानुपूर्वी	परो	"	१-८	"	६६
८५	अगुरुलघु	स्वो	नि	"	१-१३	"
८६	उपघात	स्व-परो	"	"	"	"
८७	परघात	"	सा नि	"	"	"
८८	आताप	"	सा	१	१	४२
८९	उद्योत	"	"	१-२	१-५	१०
९०	उच्छ्वास	"	सा नि	१-८	१-१३	६६
९१	प्रशस्तविहायोगिनि	"	"	"	"	"

सहस्रा	प्रकृति	स्वोदयवर्णी आदि	सागरवर्णी आदि	यद्य किम गुणस्थानसे किम गुणस्थान सक	उदय किम गुणस्थानसे किम गुणस्थान सक	पृष्ठ
९२	अप्रशस्तिविहायोगति	स्व-परो	सा	१-२	१-१३	३०
९३	प्रत्येकशरीर	"	सा नि	१-८	"	६६
९४	सागरशरीर	"	सा	१	१	४२-
९५	व्रत	"	सा, नि	१-८	१-१४	६६
९६	स्थान	"	सा,	१	१	४२
९७	सुभग	"	सा नि	१-८	१-१४	६६-
९८	दुर्भग	"	सा	१-२	१-४	३०
९९	सुस्वर	"	सा, नि	१-८	१-१३	६६
१००	दुस्वर	"	सा	१-२	"	३०
१०१	शुभ	स्वो	सा, नि	१-८	"	६६
१०२	अशुभ	"	सा	१-६	"	४०
१०३	बादर	स्व-परो	सा, नि	१-८	१-१४	६६
१०४	सूक्ष्म	"	सा	१	१	४२
१०५	पर्याप्त	"	सा नि	१-८	१-१४	६६
१०६	अपर्याप्त	"	सा	१	१	४२
१०७	रिषर	स्वो	सा नि	१-८	१-१३	६६
१०८	अरिषर	"	सा	१-६	"	४०
१०९	आदेय	स्व-परो	सा नि	१-८	१-१४	६६
११०	अनादेय	"	सा	१-२	१-४	३०
१११	यदाकीर्ति	"	सा नि	१-१०	१-१४	७३
११२	अयशकीर्ति	"	सा	१-६	१-४	४०
११३	तीर्थकर	परो	नि	४-८	१३-१४	७३
११४	उत्तमगोत्र	स्व परो	सा नि	१-१०	१-१४	७३
११५	नीचगोत्र	"	"	१-२	१-१	३०
	अन्तराय	स्वो	नि	१-१०	१-१२	७३

प्रत्यय-तालिका (पृ. १९-२४)

गुणस्थान	मिथ्यात्व ५	अधिरासि १२	कषाय २५	योग १५	समस्त ५०
मिथ्यात्व	५	१२	२५	२३ आहारदिक्रमे रहित	५५
सासादन		"	"	"	९०
मिश्र		"	२१ अनन्तानुगच्छिचतुष्कसे रहित	१० आ दिक्र, औ मि, वै मि व कर्मणसे रहित	४३
असयत्		"	"	१३ आहारदिक्रसे रहित	४६
देशसयत्		११	१७	९ आ दिक्र, औ मि, वै दि व कर्मणसे रहित	३७
प्रमत्त		प्रसअस- यम रहित	१३ प्रत्याख्यानचतुष्कसे रहित	२१ आहारदिक्रसे सहित उपर्युक्त	२४
अप्रमत्त			"	९ आहारदिक्रसे रहित उपर्युक्त	२२
अपूर्वकरण			"	"	"
अनिवृत्ति- करण भा १			७ नोफ्रयाय ६ से हीन	"	१६
भा २			६ नपुसकवेदसे हीन	"	१५

गुणस्थान	मिथ्यात्व ५	अविवक्षित १२	कथाय २५	योग १५	समस्त ५७
अनिवृत्ति- कारण भा ३			५ सर्वविदसे हीन	९ आ द्विक, औ मि, वे द्वि व कर्मणसे रहित	१४
भा ४			४ पुरुषमेसे हीन	"	१३
भा ५			३ सम्बन्धनकारसे हीन	"	१२
भा ६			२ सम्बन्धनमानसे हीन	"	११
भा ७			१ सम्बन्धनमायासे हीन	"	१०
सूक्ष्मसाम्य राय			"	"	"
उपशांत कथाय				"	"
धीनमोह				"	९
सयोग- केवडी				"	"
अयोग- केवडी				७ सत्य व अनुमय मन और वचन, औ द्विक, कर्मण	७

विषय-सूची



क्रम न	विषय	पृष्ठ	क्रम न	विषय	पृष्ठ
१	ध्वजलाकारका मंगलाचरण	१	१३	ध्रुवग्रन्थी प्रकृतियोंका निर्देश	१७
२	बन्ध स्वामित्व विचयका द्वा प्रकारसे निवृत्ति	२	१५	निरन्तरबन्ध और ध्रुवग्रन्धमें विशेषता	"
३	बन्ध स्वामित्व विचयका अयत्तार	२	१६	मूल और उत्तर प्रत्ययोंकी विस्तृत प्ररूपणा	१९
४	बन्ध व मोक्षका स्वरूप	३	१७	गनिसंयोगादिविषयक प्रश्नोंका उत्तर	२८
५	बन्ध स्वामित्व विचयका निरुत्तरार्थ	"	१८	निद्रानिद्रादिक पक्षीस प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३०
६	ओघसे बन्ध स्वामित्व विचयके चौदह जीवनमासोंका निर्देश	४	१९	निद्रा और प्रचला प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३१
७	चौदह गुणस्थानोंमें प्रकृतिबन्ध व्युच्छेदकी प्रतिष्ठा	५	२०	सातवेदनीयके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३८
८	व्युच्छेदके भेद और उनका निष्कर्षार्थ	"	२१	असातवेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४०
ओघकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व ७-९२			२२	मिथ्यात्व आदि सोलह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४२
९	पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धकोंकी प्ररूपणामें तेईस प्रश्नोंका उद्भावना	७	२३	अप्रत्याख्यानावरणीय आदि नौ प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४६
१०	प्रकृतियोंकी उदयन्युच्छिष्टि	९	२४	प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५०
११	प्रकृतियोंके बन्धोद्भयकी पूर्णा परता	११	२५	पुरुषवेद और सत्त्वलनक्रोधके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५२
१२	पाच ज्ञानावरणीयादिकोंके बन्धके स्वामी व उन्मके व्युच्छेदस्थानकी प्ररूपणा करते हुए उन तेईस प्रश्नोंका उत्तर	१२	२६	सज्जलनमान और मायाके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५५
१३	सान्तर, निरन्तर और सान्तर निरन्तर रूपसे बधनेवाली प्रकृतियोंका निर्देश	१६			

क्रम न	विषय	पृष्ठ	क्रम न	विषय	पृष्ठ
२७	संज्ञान लोभके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५८	४१	तीर्थंकर प्रवृत्तिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१०३
२८	हास्य, रति, मय और जुगुप्साके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५९	४२	प्रथम तीन पृथिवियोंमें बन्ध स्वामित्वका विचार	१०४
२९	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	६१	४३	चतुर्थ, पंचम और छठी पृथिवीमें बन्धस्वामित्व आदिका विचार	१०५
३०	देवायुके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	६४	४४	सातवीं पृथिवीमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	॥
३१	देवगति आदि सत्ताइस प्रकृति यौग्य बन्धस्वामित्व आदिका विचार	६६	४५	सातवीं पृथिवीमें निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१०९
३२	आहारकशरीर और आहारक शरीरागोपागके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	७१	४६	सातवीं पृथिवीमें मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११
३३	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	७३	तिर्यग्गतिमें—		
३४	तीर्थंकर प्रकृतिके विशेष कारणोंकी आशंका	७६	४७	तिर्य्य, पंचेन्द्रिय तिर्य्य, पंचेन्द्रिय तिर्य्य पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्य्य योजनमतिर्य्योंमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	११२
३५	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धके सोलह कारणोंकी प्ररूपणा	७८	४८	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	११९
३६	तीर्थंकर प्रकृतिके उदयका माहात्म्य	९१	४९	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२३
औदेशकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व ९३-३९८ गतिमार्गणा			५०	अमत्याख्यानावरणचतुष्केके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२५
३७	मरकगतिमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	९३	५१	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१२६
३८	निद्रानिद्रादिके बन्धस्वामित्वका विचार	९८	५२	पंचेन्द्रिय तिर्य्य अपर्याप्तोंमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२७
३९	मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१०१	मनुष्यगतिमें—		
४०	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका	१०२	५३	मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनिर्य्योंमें ओषधके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१३

क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
५४	मनुष्य अपर्याप्तोंमें पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१३४	६६ मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१५४
	देवगतिमें—		६७ तीर्थकर प्रकृतिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
५५	देवोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	१३७	६८ अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५५
५६	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४१	इन्द्रियमार्गणा	
५७	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४३	६९ पचेन्द्रिय, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त अपर्याप्त, विकलव्रय पर्याप्त अपर्याप्त, तथा पचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१५८
५८	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१४४	७० पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वके विचारमें बन्धक आदि विषयक तर्कस प्रश्नोंके एक द्विसंयोगादि भर्गोंकी प्ररूपणा	१७०
५९	तीर्थकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	१४५	७१ उक्त जीवोंमें निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१७४
६०	भवनवासी, घानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें कुछ विशेषताके साथ सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्व आदिकी प्ररूपणा	१४६	७२ निद्रा और प्रचलके बन्ध स्वामित्वका विचार	१७७
६१	सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवोंमें सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१४७	७३ सातायेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	"
६२	सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें प्रथम पृथि धीस्थ नारकियोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१४८	७४ असातायेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वका विचार	१७८
६३	आनत कल्पसे लेकर नौ त्रैवेयक तक पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४९	७५ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८०
६४	निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५२	७६ अप्रत्याख्यानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८२
६५	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१५३		

क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
७७	प्रत्याख्यानान्तरणचतुष्कके बन्ध स्वामित्वका विचार	१८३	योगमार्गणा	
७८	पुरुषवेद और सज्ज्वलनशोके बन्धस्वामित्वका विचार	"	८९ पाच मनोयोगी, पाच वचनयोगी और वाययोगी जीवोंमें सत्र प्रतियोंके बन्धस्वामित्वकी ओहके समान प्ररूपणा	२०१
७९	सज्ज्वलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	१८५	९० उक्त जीवोंमें सातावेदनीय त्रिष यक बन्धस्वामित्वकी कुछ विशेषता	२०२
८०	सज्ज्वलन शोभके बन्धस्वामित्वका विचार	"	९१ औदारिककाययोगियोंमें मनुष्य गतिके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२०३
८१	हास्य, रति, भय और जुगुप्साके बन्धस्वामित्वका विचार	१८६	९२ उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वकी मनोयोगियोंके समान प्ररूपणा	२०५
८२	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	"	९३ औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें पाच घानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
८३	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१८७	९४ निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२०९
८४	देवगति आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	"	९५ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२१२
८५	आहारकशरीर और आहारक अगोपागके बन्धस्वामित्वका विचार	१९१	९६ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२१३
८६	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	"	९७ देवचतुष्कके बन्धस्वामित्वका विचार	२१४
	कायमार्गणा		९८ वैन्नियिककाययोगियोंमें देव गतिके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२१५
८७	पृथिवीकायिक, जलकायिक, वनस्पतिकायिक, निर्गोद जीव बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त तथा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय त्रिषं अपर्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१९२	९९ वैन्नियिकमिश्रकाययोगियोंमें देव गतिके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२२२
८८	तेजकायिक व वायुकायिक बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्तोंमें कुछ विशेषताके साथ पंचेन्द्रिय त्रिषं अपर्याप्तोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१९०	१०० उक्त जीवोंमें त्रिषं और मनुष्यायुके व घाभावकी विशेषता	२२९

क्रम नं	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
१०१	आहारक व आहारकमिश्रकाय योगियोंमें पाच शानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२२०	११४ हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा	२५४
१०२	फार्मणकाययोगियोंमें पाच शानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२३०	११५ जपगतवेदियोंमें पाच शानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२६४
१०३	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२३७	११६ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२६५
१०४	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२३८	११७ सज्जलनक्रोधके बन्धस्वामित्वका विचार	२६६
१०५	मिथ्यात्र आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२३९	११८ सज्जलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	२६७
१०६	देवगति आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२४१	११९ सज्जलनलोभके बन्धस्वामित्वका विचार	२६८
वेदमार्गणा			कपायमार्गणा	
१०७	स्त्री, पुरुष और नपुंसकवेदियोंमें पाच शानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२४२	१२० क्रोधरुपायी जीवोंमें पाच शानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२६९
१०८	निद्रानिद्रा आदि द्विस्थानिक प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वकी ओघके समान प्ररूपणा	२४५	१२१ द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२७२
१०९	निद्रा और प्रचलाकी ओघके समान प्ररूपणा	२४८	१२२ निद्रासे लेकर प्रत्याग्यानावरण चतुष्क तक ओघके समान प्ररूपणा	२७४
११०	असातावेदनीयकी ओघके समान प्ररूपणा	२४९	१२३ पुरुषवेदादिकी ओघके समान प्ररूपणा	२७५
१११	मिथ्यात्व आदिक एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	"	१२४ हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा	"
११२	अप्रत्याग्यानावरणीयकी ओघके समान प्ररूपणा	२५१	१२५ मानरुपायी जीवोंमें पाच शानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
११३	प्रत्याग्यानावरणीयकी ओघके समान प्ररूपणा	२५४	१२६ द्विस्थानिक आदि प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२७६

क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
१२७	हास्यरति आदिकी ओघके समान प्ररूपणा	२७७	१४० मन पर्ययज्ञानियोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२९५
१२८	मायाकपायी जायोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१४१ निद्रा और प्रचलाके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१२९	द्विस्थानिक आदिकी ओघके समान प्ररूपणा	"	१४२ नातावेदनीयके बन्धस्वामित्व का विचार	२९६
१३०	हास्यरति आदिकी ओघके समान प्ररूपणा	२७८	१४३ शेष प्रवृत्तियोंकी कुछ विशेषताके साथ ओघके समान प्ररूपणा	"
१३१	लोभकपायी जायोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१४४ केवलज्ञानियोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२९७
१३२	शेष प्रवृत्तियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	"	सयममार्गणा	
१३३	अकपायी जीवोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	"	१४५ सयत जीवोंमें मन पर्ययज्ञानियोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	२९८
१३४	ज्ञानमार्गणा	"	१४६ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	"
१३५	मतिभ्रष्टानी, ध्रुतभ्रष्टानी और विभ्रगज्ञानियोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२७९	१४७ सामायिक छेदोपस्थापनशुद्धिसयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	"
१३६	एकस्थानिक प्रवृत्तियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२८५	१४८ शेष प्रवृत्तियोंके बन्ध स्वामित्वकी मन पर्ययज्ञानियोंके समान प्ररूपणा	३००
१३७	आभिनयोधिक, ध्रुत और अयधिकानी जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२८६	१४९ परिहारशुद्धिसयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	३०३
१३८	निद्रा व प्रचलाकी ओघके समान प्ररूपणा	२८७	१५० असातावेदनीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	३०५
१३९	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२८८	१५१ देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	३०६
१४०	शेष प्रवृत्तियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२८९	१५२ आहारशरीर और आहार शरीरगोपागके बन्धस्वामित्व का विचार	३०७

क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
१५३	सूक्ष्मसाम्परायिक सयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३०८	१६५ तेज और पद्मलेइयावालोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३३३
१५४	यथाख्यातविहारशुद्धिसयतोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	३०९	१६६ द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	३३७
१५५	सयतासयतामें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१०	१६७ असातावेदनीयकी ओघके समान प्ररूपणा	३३९
१५६	असयत जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१२	१६८ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३४०
१५७	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	३१७	१६९ अप्रत्याख्यानावरणीयकी ओघके समान प्ररूपणा	३४१
१५८	एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	"	१७० प्रत्याख्यानावरणकी ओघके समान प्ररूपणा	३४३
१५९	मनुष्यायु और देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	"	१७१ मनुष्यायुकी ओघके समान प्ररूपणा	"
१६०	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१८	१७२ देवायुकी ओघके समान प्ररूपणा	३४४
	दर्शनमार्गणा		१७३ आहारकशरीर और आहारक शरीरागोपागके बन्धस्वामित्वका विचार	"
१६१	चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी जीवोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	"	१७४ तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	३४५
१६२	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	३१९	१७५ पद्मलेइयावालोंमें मिथ्यात्व दण्डकी नारकियोंके समान प्ररूपणा	३४६
१६३	अवधिदर्शनी जीवोंमें अवाधि ज्ञानियों और केवलदर्शनी जीवोंमें केवलज्ञानियोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	"	१७६ शुक्ललेइयावालोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा	"
	लेइयामार्गणा		१७७ उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वकी मनोयोगियोंके समान प्ररूपणा	३५६
१६४	कृष्ण, नील और कापोतलेइयावालोंमें असयतोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३२०	१७८ द्विस्थानिक और एकस्थानिक प्रकृतियोंकी नवप्रयेयकविमानवासी देवोंके समान प्ररूपणा	"

क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
भयमार्गणा				
१७७	भय जीर्णोंमें ओषधके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३५८	१७१ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	३७५
१८०	भय जीर्णोंमें पाच पाना वरणीय आदिके बंध स्वामित्वका विचार	५५९	१७२ असातावेदनीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३७६
सम्यक्त्वमार्गणा				
१८१	सम्यग्दृष्टि और स्वायत्तत्वमय गृहस्थ जीर्णोंमें आभिनित्याधिक ज्ञानियोंके समान बंध स्वामित्वकी प्ररूपणा	३६३	१७३ अथ याग्यानावरणीयकी अवधिज्ञानियोंके समान प्ररूपणा	"
१८५	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	३६४	१७४ उक्त जीर्णोंमें आयुके बन्धका जमाव	३७७
१८३	वेदस्वम्यग्दृष्टियोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१७५ प्रत्याप्यानावरणचतुष्पदे बंध स्वामित्वका विचार	"
१८४	असातावेदनीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	३६७	१७६ पुण्यदेद और सज्जनलोमके बन्धस्वामित्वका विचार	"
१८५	अप्रत्याप्यानावरणचतुष्पदे बन्ध स्वामित्वका विचार	३६९	१७७ सज्जलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	३७८
१८६	प्रत्याप्यानावरणचतुष्पदे बन्ध स्वामित्वका विचार	३७०	१७८ सज्जनलोमके बंध स्वामित्वका विचार	"
१८७	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	३७१	१७९ हास्य, रति, भय और क्षुण्णताके बन्धस्वामित्वका विचार	३७९
१८८	आहारक्षारीर और आहारक शरीरागोपागके बन्धस्वामित्वका विचार	३७२	२०० देवपति आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१८९	उपवाससम्यग्दृष्टियोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	२०१ आहारक्षारीर और आहारक शरीरागोपागके बन्धस्वामित्व का विचार	३८०
१९०	निद्रा और प्रचलके बन्ध स्वामित्वका विचार	३७४	२०२ सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी मति ज्ञानियोंके समान प्ररूपणा	"
			२०३ सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंकी अस्त यतोंके समान प्ररूपणा	३८३
			२०४ मिथ्यादृष्टियोंकी अभय जीर्णोंके समान प्ररूपणा	३८६
			२०५ सही जीर्णोंमें ओषधके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	"

क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
२०६	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्व की वस्तुदर्शनी जीवोंके समान प्ररूपणा	३८७	२०८ आहारक जीवोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३९०
२०७	असही जीवोंमें अभव्योंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३९१	२०९ अनाहारक जीवोंमें कार्मण काययोगियोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	३९१

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	प	अशुद्ध	शुद्ध
८	१८	किस गुणस्थान तक	किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक
९	४	उचयसे	उचयसो
१३	७	योच्छिज्जति	योच्छिज्जति
१५	६	यज्जति	यज्जति
११	११	बधमाणाणि ।	बधमाणाणि
११	१२	बधति	बधति
११	२५-२६	दश प्रकृतियां तथा दर्शनावरणकी स्वीदयसे ही बधती हैं,	दश प्रकृतियों तथा दर्शनावरणकी चार ही प्रकृतियोंको बांधनेवाले सब गुणस्थान स्वीदयसे ही बांधते हैं,
१६	६	पुच्छण पडिचण्ण ।	पुच्छण पडिचण्ण वुच्छदे ।
११	२२	ये तीन प्रश्न प्राप्त होते हैं ।	इन तीन प्रश्नोंका उत्तर कहते हैं ।
१८	८	इति	इत्थि
११	२३	अशुम, पांच	अशुम पांच
११	२४	विद्यायोगति स्यावर	विद्यायोगति तथा स्यावर
२४	८	दु बावीसा	दुबावीसा
२५	२०	हं	हं
३२	७	उदयवोच्छेदो	उदयवोच्छेदादो
३५	५	कदि गदिया	कदिगदिया
३८	३	वुच्छदे	वुच्छदे

पृष्ठ प

अशुद्ध

शुद्ध

४३	११	निरयगहपाओग्गाणुपुत्रि	निरयगह निरयगहपाओग्गाणुपुत्रि
"	२६	नारकायु और	नारकायु, नरकगति और
४९	७	धुवबधो ।	धुवबधो
"	१७-२१	सर्प काल क्यों नहीं पाया जाता ?	शका—सर्वकाल औदारिकशरीरका ध्रुव बन्ध और अनादिक बन्ध भी क्यों नहीं पाया जाता ?
"	२३	अनादि रूपसे ध्रुव बन्धका	अनादि एव ध्रुव बन्धका
५०	४	बधा ॥ २० ॥	बधा। एदे बधा, अयसेसा अयधा ॥२०॥
"	१५	बन्धक हैं ॥ २० ॥	बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २० ॥
५२	५	धुविहाभावादो	धुविहाभावादो ^१
"	१८	दो प्रकारके बन्धका	ध्रुव बन्धका
"	२५	x x x	२ प्रतिशु इविहाभावादो इति पाठ ।
५३	६	गयपच्चओ	सगपच्चओ ^१
"	२०	गतप्रलय है, अर्थात् उसका प्रलय ऊपर बतला ही चुके हैं,	स्वनिमित्तक है,
"	२३	अनुभागोदयसे अथवा अनन्तगुण-	अनुभागोदयकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन
"	३०	हानिसे हीन	
५५	२०	x x x	
		क्योंकि, वहां	१ प्रतिशु ' गयपच्चओ ' इति पाठ ।
७८	१४	अतदीपक	क्योंकि, [मिथ्याच और सासादन गुण-स्थानमें]
९१	१०	लोहस्स	अतदीपक
"	"	अरुचणिज्जा वदणिज्जा	लोहस्स
"	१५	अर्चनीय, वदनीय,	अरुचणिज्जा पूजणिज्जा वदणिज्जा
९२	१९	पांच मृष्टियों अर्थात् अगोंसे	अर्चनीय, पूजनीय, वदनीय,
९९	४	बधो	पांच मृष्टियों अर्थात् पांच अगों द्वारा भूमिस्पर्शसे
१०४	२२	द्वितीय दण्डकमें (१)	बधो
			द्वितीय दण्डक अर्थात् निद्रानिद्रा आदि द्विस्थानमें - इतियोंमें



सिरि भगवंत-पुष्पदन्त-भूदवलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाडरिय-विरइय-धवला-टीका समणिदो
तस्स तदियसडो

बंधसामित्तविचओ

साहुज्झाएरिए अरहते णदिऊण^१ सिद्धे नि ।

जे पच लोगवाले^२ घोच्छ बधस्स मामित्त ॥

जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिदेसो
ओधेण आदेसेण य ॥ १ ॥

किमट्ठमिद सुत्त वुच्चदे ? सवधामिहेय^३-पओजणपदुप्पायणट्ठ । जो सो बधसामित्तविचओ

साधु, उपाध्याय, आचार्य, अरहत और सिद्ध, ये जो पच लोकपाल अर्थात्
लोकोत्तम परमेष्ठी हैं उनको नमस्कार करके उनके स्वामित्वको कहते हैं ।

जो बधस्वामित्त्वविचय है उसका यह निर्देश ओष और आदेशकी अपेक्षासे दो
प्रकार है ॥ १ ॥

शंका—यह सूत्र क्यों कहा जाता है ?

समाधान—सम्बन्ध, अभिधेय और प्रयोजनके उतलानेके लिये उक्त सूत्र कहा
गया है ।

‘जो वह बधस्वामित्त्वविचय है’ इससे सम्बन्ध कहा गया है । वह इस प्रकार

१ प्रतिपु ‘गट्टिऊण’ इति पाठ ।

२ अ आपयो ‘लोकचले’ इति पाठ ।

३ प्रतिपु ‘सवधामिहिय’ इति पाठ ।

पृष्ठ	प	अशुद्ध
१७८	१	सातर निरतरो ।
१९४	५	आदेज्ज-जसकित्ति
"	१७	आदेय, यशकीर्ति
१९७	३	अत्थगईय
"	१७	अर्यापत्तिसे
१९९	५	पज्जत्तापज्जत्ताण
२३४	८	मिच्छाइट्ठीसु
२७८	११	॥ १०५ ॥
३१०	२	रदि-सोग
"	१५	रति, शोक
३१६	२४	नरकगति
३५८	४	वेच्छिज्जदि
३६७	१०	अजसकित्तिणामाणं
"	२७	अयशकीर्ति
३८०	१	असजसम्मादिट्ठिप्पट्ठि
"	१२	मदिणाणिमगो
"	२३	मतिज्ज्ञानियोके
"	२४	x x x

शुद्ध
सातर निरतरो,
आदेज्ज [अणादेज्ज] जसकित्ति
आदेय, [अनादेय], यशकीर्ति
अत्थ गईय
इस पर्यायमें
पज्जत्तापज्जत्ताण
मिच्छाइट्ठीसु
॥ २०५ ॥
रदि अरदि सोग
रति, अरति, शोक
नरकगति
वेच्छिज्जदि
अजसकित्तिणामाण
अयशकीर्ति
असज्जदसम्मादिट्ठिप्पट्ठि
मदिअण्णाणिमगो ^१
मतिज्ज्ञानियोके
१ प्रतिष्ठु मदिणाणिमगो इति पाठ ।



सिरि भगवंत-पुष्कदत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समणिणदो
तस्स तदियप्पडो

बंधसामित्तविचओ

माहूवज्झाइरिए अरहते 'दिऊण' सिद्धं वि ।

जे पच लोणाले^१ वोच्छ वधस्स सामित्त ॥

जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिहेसो
ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

किमट्ठमिदं सुत्तं बुच्चदे ? सग्गामिहेयं-पओजणपदुप्पायणट्ठं । जो सो वधसामित्तविचओ

साधु, उपाध्याय, आचार्य, अरहत और सिद्ध, ये जो पच लोकपाल अर्थात्
लोकोत्तम परमेष्ठी हैं उनको तमस्कार करके वधके स्वामित्तको कहते हैं ।

जो वधस्वामित्तविचय है उसका यह निर्देश ओघ और आदेशनी अपेक्षासे दो
प्रकार है ॥ १ ॥

शका—यह सूत्र क्यों कहा जाता है ?

ममाधान—सम्बन्ध, अभिधेय और प्रयोजनके उतलानेके लिये उक्त सूत्र कहा
गया है ।

‘जो वह वधस्वामित्तविचय है’ इससे सम्बन्ध कहा गया है । यह इस प्रकार

१ प्रतियु ‘वट्ठिऊण’ इति पाठ ।

२ अ वाप्रयो ‘लोणाले’ इति पाठ ।

३ प्रतियु ‘सक्कामिहिंय’ इति पाठ ।

णामेति एदेण सनधो कहिदो । त जहा— रुदि नेदयात्तिचदुवीसअणिओगहारोसु तत्थ वधण
मिदि छट्ठमणिओगहार । त चउत्विह वधा उधगा वधणिज वधनिहाणमिट्ठि । तथ वधो णाम
जीवस्म कम्माण च सनध णयमस्मिदण परूवेदि । नग्गो ति अहियांगं प्पहारसअणिओगहारोदि
वधण परूवेदि । उधणिज णाम जहियांगे तेरीसउग्गणाहि उधजोग्गमउधनोग्ग च वोग्गउदउ
परूवेदि । ज त उधनिहाण त चउत्विह पयडि ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसवधो चेदि । तत्थ
पयडिनधो दुविहो मूलपयडिनधो उत्तरपयडिनधो चेदि । जो सो मूलपयडिवधो सो दुविहो
एग्गमूलपयडिनधो अब्बोगाढमूलपयडिनधो चेदि । जो सो अयोगाढमूलपयडिनधो सो दुविहो
भुजगारवधो पयडिउग्गणधो चेदि । तथ उत्तरपयडिनधस्म समुत्तिण्णाओ चदुवीसअणिओग
हारणि भवति । तेसु चदुवीसअणिओगहारोसु वयसामित्त णाम अणिओगहार । तस्मेव वध
सामित्तविचओ ति मण्णा । जो सो वयसामित्तविचओ वधण-वधनिहाणप्पसिद्धो [सो]
पमाहसरूवेण अणाइणिहणो । जो सो ति वयणेण जेण सो सभासिद्धो तेण एमो णिहेमो
सनउपरूवओ । एसो चेव अभिरूपपरूवओ वि । त जहा— जीव-कम्माण भिच्छतामजम
कयाय जोगेहि एयत्तपरिणामो उधो । उन च—

हे— इति, वेदना आदि चोरीस अनुयोगद्वारोंमें वन्धन नामक जो छद्म अनुयोगद्वार है वह
चार प्रकार है— उध, वधक, उन्धनीय और उन्धविधान । उनमें वन्ध नामक अधिकार
जाय और वधोत्त सन्धधरा नयनी अपेक्षा करके निरूपण करता है । वन्धक अधिकार
ग्यारह अनुयोगद्वारोंसे वन्धकोत्त निरूपण करता है । वन्धनीय नामक अधिकार तेरह
घगणामोंसे वधयोन्य और अउधयोन्य पुद्गल द्रव्यका प्ररूपण करता है । जो वन्ध
विधान है वह चार प्रकार है— प्रवृत्तिउध, स्थितिउध, अनुभागवन्ध और प्रदेहाउध ।
उनमें प्रवृत्तिउध दो प्रकार है— मूलप्रवृत्तिउध और उत्तरप्रवृत्तिउध । जो मूलप्रवृत्तिउध
है वह दो प्रकार है— एउधकमूलप्रवृत्तिउध और अयोगाढमूलप्रवृत्तिउध । जो
अयोगाढमूलप्रवृत्तिउध है वह दो प्रकार है— भुजगारवध और प्रवृत्तिउन्धविधान ।
इनमें उत्तरप्रवृत्तिउध समुत्तीतन करनेवाले चोरीस अनुयोगद्वार ह । उन चोरीस
अनुयोगद्वारोंमें वन्धस्वामित्य नामक अनुयोगद्वार है । उसका ही नाम वन्धस्वामित्यविचय
प्रसिद्ध है वह प्रवाहरूपसे अनादिनिधन है । ' जो सो ' इस वचनसे चूनि उसका स्मरण
कराया गया है इसलिये वह निश्चय सन्धधरा निरूपण है, और यही अभिधेयका भी
निरूपण है । वह इस प्रकार है— जीव और वधोत्त भिच्छात्व, असयम, कयाय और
यागोंसे जो एउध परिणाम होता है उसे वन्ध कहते हैं । कहा भी है—

यणेण य सजोगो पोगलदब्बेण होइ जीनस्स ।

यणो पुण णिण्णेओ उअण्णिओओ पमोक्खो दु ॥ १ ॥

एदस्स वधस्स सामित्त वधमामित्त, तस्म विचओ [वधसामित्तविचओ, विचओ] निचारणा मीमांसा परिक्रमा इदि एयट्ठो । तस्म नधसामित्तविचयस्स इमो दुविहो णिदेसो त्ति जेणेद सुत्त देसामामिय तेणेत्य पओजण पि परूवेदब्ब । किमट्ठमेत्थ नधस्स सामित्त उच्चदे ? सत्त-दब्ब-खेत्त-फोसण-कालत्तर-भावप्पाउहुव-गडरागडव्वगत्तेण अवगयाण चौदसगुणट्ठाणाण अणवगदे नधविसेमे वधगत वधकारणगडरागडओ च सम्म ण णव्वति त्ति काऊण चौदस-गुणट्ठाणाणि अहिकिच्च अप्पाउआणमणुगहट्ठ वधविसेसो उच्चदे । तस्स णिदेसो दुविहो ओघोदेमभेएण । तिनिहो णिण्ण होदि ? ण, वयणपओगो हि णाम परट्ठो । ण च परो वि दुणयवदिरित्तो अत्थि जेण तिविहा एयविहा वा परूवणा होज्ज त्ति । ओघणिदेसो दब्ब-द्वियणयाणुगहकरो, डयरो वि पज्जवट्ठियणयस्स ।

जीवना पुद्गल द्रव्यसे जो बन्ध सहित संयोग होता है उसे शुद्ध और बन्धके वियोगको मोक्ष जानना चाहिये ॥ १ ॥

इस बन्धका जो स्वामित्य है वह बन्धस्वामित्य है । उसका जो विचय है वह बन्धस्वामित्यविचय है । विचय, निचारणा, मीमांसा और परीक्षा, ये समानार्थक शब्द हैं । 'उस बन्धस्वामित्यविचयका यह दो प्रकारका निर्देश है' चूँकि यह सूत्र देशामर्शक है इस लिये यहाँ प्रयोजन भी कहना चाहिये ।

शका—यहाँ बन्धके स्वामित्यको किस लिये कहा जाता है ?

समाधान—सत्य, द्रव्य, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव, अल्पबहुत्व और गत्या गति बन्धक रूपसे जाने गये चौदह गुणस्थानोंके बन्धविशेषके अज्ञात होनेपर बन्धकत्व व बन्धनिमित्तक गति आगतिका भले प्रकार ज्ञान नहीं हो सकता, ऐसा जानकर चौदह गुणस्थानोंका अधिकार करके अत्पायु शिष्योंके अनुग्रहके लिये बन्धविशेष कहा जाता है । उसका निर्देश ओघ और आदेशके भेदसे दो प्रकार है ।

शका—यह निर्देश तीन प्रकारका क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता, क्योंकि वचनका प्रयोग परके लिये होता है, ओघ पर भी दो नयोंको छोड़कर है नहीं जिससे तीन प्रकार या एक प्रकार प्ररूपणा होसके ।

ओघनिर्देश द्रव्यार्थिक नयवालोंका और इतर अर्थात् आदेशनिर्देश पर्यायार्थिक नयवालोंका अनुग्रहकर्ता है ।

१ प्रतिपु 'पमोक्खा' इति पाठ ।

ओधेण वंधसामित्तविचयस्स चोदसजीवसमासाणि णादव्वाणि
भवन्ति ॥ २ ॥

‘जहा उदेसो तहा णिदेसो’ ति जाणावणद्वमोघेणेनि उच । वधसामित्तविचयस्सेत्ति मवधे छट्ठी दट्ठव्वा । अथा, वधसामित्तविचय इदि निसयत्तस्सणमत्तमीए छट्ठीणिदेसो कायव्वा । पुव्वमवगया चेव चोदमजीवसमामा, पुणो ते एत्थ किमडु परूविज्जते ? ण एस दोसो, निस्सरणालुअसिस्ससमात्तण्डुत्तादो ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असजदसम्माइट्ठी
सजदासजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसजदा अपुव्वकरणपहट्ठुव्वसमा
खवा अणियट्ठिवादरसांपराइयपहट्ठुव्वसमा खवा सुहुमसांपराइयपहट्ठु-
व्वसमा खवा उवसत्तकसायवीयरागछट्ठुमत्था खीणकसायवीयरायछट्ठु-
मत्था सजोगिकेवली अजोगिकेवली ॥ ३ ॥

ओपनी अपेक्षा वधसामित्तविचयके चोदह जीवसमास जानने योग्य हैं ॥ २ ॥

‘जसा उदेश येमा निदंश होना है’ हमके ज्ञापनार्थ ‘ओघसे’ केमा कहा है ।
‘वधसामित्तविचयके’ यह सम्बन्धमें पट्ठी विभक्ति जानना चाहिये । अथा ‘वन्ध
वधसामित्तविचयमें’ इस प्रकार त्रिपयाधिनरण लक्षण सप्तमी विभक्तिके स्थानमें पट्ठी
विभक्तिका निर्देश करना चाहिये ।

शका—चोदह जीवसमास पूर्वमें जाने ही ना चुके ह, फिर उनकी यहां प्ररूपणा
किसलिये की जाती है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है, क्योंकि, यह कथन निस्सरणदील शिष्योंके
स्मरण करानेके लिये है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्पददृष्टि, सम्मामिथ्यादृष्टि, अमयतसम्पददृष्टि, सयतामयत,
प्रमत्तसपत, अप्रमत्तमयत, अपूर्वरूपप्रविष्ट उपशमक व क्षपक, अनिशुत्तिवादरसाम्परायिक-
प्रविष्ट उपशमक व क्षपक, सम्माम्परायिकप्रविष्ट उवशमक व क्षपक, उपशान्तरूपाय वीत-
रागउत्तमस, क्षीणकपाय वीतरागछट्ठमथ, सयोगिकेवली और १०० के चोदह जीव-
हैं ॥ ३ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो जहा जीवद्वणे वित्थेण परूविदो तहा एत्थ परूवेदव्वो,
विसेसामावादो । एव चोदसण्ह जीवममासाण सरूव समालिय वधमामित्तपररूपणद्वमुत्तरसुत्त
मणदि—

एदेसिं चोदसण्हं जीवसमासाणं पयडिवंधवोच्छेदो कादव्वो
भवदि ॥ ४ ॥

जदि जीवसमासाण पयडिवंधवोच्छेदो चेव उच्चदि तो एदस्स गथस्स वधसामित्त-
विचयसण्णा कध घडदे ? ण एम दोसो, एदम्मि गुणद्वणे एदासिं पयडीण वधवोच्छेदो होदि
चि कहिदे हेट्ठिल्लगुणद्वानाणि तासिं पयडीण वधसामियाणि चि सिद्धीदो । किं च वोच्छेदो
दुनिहो उप्पादाणुच्छेदो अणुप्पादाणुच्छेदो चेदि । उत्पाद सत्त्व, अनुच्छेदो विनाश अभाव
नीरूपिता' इति यावत् । उत्पाद एव अनुच्छेद उत्पादानुच्छेद, भाव एव अभाव इति यावत् ।
एसो दव्वट्ठियणयव्वहारी । ण च एसो एयतेण चण्लओ, उत्तरकाले अप्पिदपज्जायस्स

इस सूत्रका अर्थ जेसे जीवस्थानमें विस्तारमें कहा गया है वैसे ही यहां भी
कहना चाहिये, क्योंकि, जीवस्थानसे यहां कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार चौदह
जीवसमासोंके स्वरूपका स्मरण करार बन्धस्यामित्यके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

इन चौदह जीवसमासोंके प्रकृतिबन्धव्युच्छेदका कथन करने योग्य है ॥ ४ ॥

शंका—यदि यहां जीवसमासोंका प्रकृतिबन्धव्युच्छेद ही कहा जाता है तो फिर
इस ग्रन्थका ' बन्धस्यामित्य ' यह नाम केने घटित होगा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस गुणस्थानमें इतनी प्रकृतियोंका
बन्धव्युच्छेद होता है, पेना कहनेपर उससे नीचेके गुणस्थान उन प्रकृतियोंके बन्धके
स्वामी हैं, यह स्थयमेव सिद्ध हो जाता है । दूसरी बात यह है कि व्युच्छेद दो प्रकारका
है— उत्पादानुच्छेद और अनुत्पादानुच्छेद । उत्पादका अर्थ सत्त्व और अनुच्छेदका अर्थ
विनाश, अभाव अथवा नीरूपीपना है । ' उत्पाद ही अनुच्छेद उत्पादानुच्छेद ' (इस
प्रकार यहां कर्मधारय समास है) । उक्त कथनका अभिप्राय भाष्यो ही अभाव वतलाना
है । यह द्रव्यार्थिक नयके आश्रित व्याख्यान है । और यह एकान्त रूपसे अर्थात् सर्वथा
मिथ्या भी नहीं है, क्योंकि, उत्तरकालमें विवक्षित पर्यायके विनाशसे निशिष्ट द्रव्य पूर्व

विणासेण विसिद्धद्वयस्स पुब्वित्थकाले पि उल्लमादो । द्व्यद्वियणयमि मताण पज्जायाण
कथमभासो ? को भणदि तेसिं तवाभासो' ति, किंतु ते तत्थ अप्पहाणा अवित्तित्तया
अणप्पिया इदि तेसिं द्व्यत्तमेव ण तत्थ पज्जायत्त । कथमत्थिययमेण अदवाण पज्जया
द्व्यत्त ? ण, द्व्यदो एयतेण तेसिं पुग्गुदाणमणुल्लमादो, द्व्यमहायाण चेवुल्लमा । जदि
एव तो भावस्स दुचरिमादिसु समएसु चमिममण इव अभासवत्तहसो विण्ण कीरदे ? ण एम
दोसो, दुचरिमात्तीण चरिमसमयस्सेव अभासेण सह पच्चायत्तीए अभासादो । द्व्यद्वियस्स
कथमभाववत्तहारो ? ण एम दोसो, 'यत्थि न तद् द्वयमतिलघ्व वसीत्त' इति दो पि णए
अविलिखिज्ज डिदणेगमणयस्स भागामात्तवत्तहारविग्गहामादो । अनुत्पाद असत्त्व, अनुच्छेदो

बालम भी पाया जाता है ।

शका—द्रव्याधिभूत नयमें विद्यमान पर्यायोंका अभाव कैसे होता है ?

समाधान—यह कौन कहता है कि उनका यहाँ अभाव होता है, किन्तु वे यहाँ अप्रधान, अविश्विस्त अथवा अनपित हैं, इसलिये उनके प्रत्यपना ही है, पर्यापना यहाँ नहीं है।

शका—द्रव्यार्थिन नयने यदासे द्रव्यसे भिन्न पर्यायोंके द्रव्यत्व कैसे सम्भव है ?

समानान—यह दावा ठीक नहीं, क्योंकि, पर्याप्त द्रव्यमे संवेधा भिन्न नहीं पायी जाती, किन्तु द्रव्यस्वरूप ही ये उपग्रह दर्शाते हैं।

शका—यदि ऐसा है तो फिर पदाभके अन्तिम समयके समान विचरमादि समयोंमें भी अभावरका व्यवहार क्यों नहीं किया जाता ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्विचरमादिक समयोंके अन्तिम समयके समान अमाधर भाव प्रयासति नहीं है।

शका—द्रव्यार्थिकर्षा अपेक्षा पर्यायोंमें अभ्यासका व्यवहार कैसे होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, 'जो है वह दोनोंका भविष्यमण कर नहीं रहता' इस लिये दोनों नयीका आश्रयकर स्थित नैगमनयके भाव व अभावा रूप व्यवहारमें कोई निरोध नहीं है।

अनुपादका अथ असत्य और अनुच्छेदका अर्थ विनाश है। अनुत्पाद ही अनुच्छेद

निनाश, अनुत्पाद एव अनुच्छेद (अनुत्पादानुच्छेद) असत अभाव इति यावत्, सतः अस्तत्विरोधात् । एसा पञ्चनद्विषयव्यवहारो । एत्थ पुण उत्पादानुच्छेदमस्मिदूण जेण सुत्तकारेण अभावव्यवहारो कदो तेण भासो चेत्त पयडिवधस्स परूविदो । तेणेदस्स गथस्स वधसामित्तविचयसण्णा घडदि ति ।

**पंचणं णाणावरणीयाणं चटुहं दंसणावरणीयाणं जसकित्ति-
उच्चागोद पंचण्हमंतराडयाणं को वधो को अवंधो ? ॥५॥**

वधो वधसो ति भण्णिद होदि । पयडिसमुत्तिकत्तणाए णाणावरणादीण सरूव परूविद-
मिदि णेह परूविज्जदे, पउणरुत्तियादो । को वधो को अवंधो ति णिहिसादो एद पुच्छा-
सुत्तमासक्तियसुत्त वा । किं मिच्छाइही वधो किं सामणसम्माइही किं सम्मामिच्छाइही किं
असज्जदसम्माइही एव गतूण किं जजोगी किं सिद्धो वधो ति तेणेत्त पुच्छा कायव्वा । एद
देसामासियसुत्त । किं वंधो पुव्व वोच्छिज्जदि किमुदओ पुव्व वोच्छिज्जदि किं दो वि सम
वोच्छिज्जति, किं सोदण्ण एदासिं वधो किं परोदण्ण किं स-परोदण्ण, किं सातरो वधो किं

अर्थात् असत्त्वा अभावा होता है, क्योंकि सत्त्वे अस्त्यका विरोध है । यह पर्यायार्थिक
नयके आश्रित व्यवहार है । यहापर चूकि सूत्रकारने उत्पादानुच्छेदका आश्रय करके ही
अभावका व्यवहार किया है, इसलिये प्रकृतिबन्धका सद्भाव ही निरूपित किया गया है ।
इस प्रकार इस ग्रन्थका ' वन्धन्यामित्वविचय ' नाम संगत ही है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोन और पाच अन्तराय,
इनका कौन वन्धक है और कौन अवन्धक है ? ॥ ५ ॥

' वन्ध ' शब्दसे यहा वन्धकका अभिप्राय प्रकट किया गया है । चूकि प्रकृतिसमु-
त्कीर्तन चूलिकामें ज्ञानावरणादिकोंका स्वरूप कहा जा चुका है, अत एव अत उनका स्वरूप
यहा नहीं कहा जाता, क्योंकि ऐसा करनेसे पुनरुक्ति दोष आवेगा ।
' कौन वन्धक और कौन अवन्धक ' इस निर्देशसे यह पृच्छासूत्र अथवा आशकासूत्र है,
ऐसा समझना चाहिये । इसीलिये क्या मिथ्यादृष्टि वन्धक है, क्या सामान्यसम्यग्दृष्टि
वन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि वन्धक है, क्या असत्यतसम्यग्दृष्टि वन्धक है, इस प्रकार
जाकर क्या अयोगी वन्धक है, क्या सिद्ध जीव वन्धक है, ऐसा यहा प्रश्न करना
चाहिये । यह देशामर्शक सूत्र है । इसलिये यहा क्या वन्धकी पूर्वमें व्युत्पत्ति होती
है (१) क्या उदयकी पूर्वमें व्युत्पत्ति है (२) या दोनोंकी साथ ही व्युत्पत्ति होती
है (३) क्या अपने उदयके साथ इनका वन्ध होता है (४) क्या पर प्रकृतियोंके उदयके
साथ इनका वन्ध होता है (५) या अपने व पर दोनोंके उदयसे इनका वन्ध होता है (६)

नितरो वधो किं सातरनितरो, किं सपचओ किमपचओ, किं गइमजुत्तो किमगइमजुत्तो,
कदिगदिया सामिणो अमामिणो, किं वा उवद्दाण, किं चमिमसमए वधो वोच्छिज्जदि किं पढम-
समए किमपढमअचरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि, किं सादिगो नओ किं अणादिओ, किं उवो किमद्वो
वि, तेणेदाओ तेरीमपुच्छओ पुच्चिप्पुच्छए अनम्मूदाओ चि दठव्वाओ । एत्थुनउज्जतीओ
आरिसगाहाओ—

वया नरिही पुण सामिनद्वाण पच्चयविही य ।

एदे पचणिओमा मग्गणठाणेषु मग्गेज्जा ॥ २ ॥

बरोदय पुञ्ज ना मम न गियएण ऊत्स न पेण ।

अण्णदरस्सुदएण व सान्निगिपतर का च ॥ ३ ॥

पच्चय सामित्तविही मज्जुवद्दाणएण तह चैय ।

सामित्त गेय न पयटीण ठाणमासेवज ॥ ४ ॥

बरोदय पुञ्ज ना मम व स-परेदण तदुमएण ।

सात्त नितर ना चमिमेदर सादिआदीया ॥ ५ ॥

यथा सान्तर उन्ध होता है (७) क्या निरन्तर यन्ध होता है (८) या सान्तर निरन्तर
यन्ध होता है (९) क्या सनिमित्तन यन्ध होता है (१०) या अनिमित्तक (११) क्या
गतिसयुक्त यन्ध होता है (१२) या गतिसंयोगसे रहित (१३) नितनी गतिगाले जीन
रामी है (१४) और नितनी गतिगाले स्वामी नहीं है (१५) यन्धायान कितना है अर्थात्
यन्धकी सीमा जिस गुणस्थान तक है (१६) क्या अन्तिम समयमें यन्धनी 'वुच्छिज्जति' होती
है (१७) क्या प्रथम समयमें यन्धनी 'वुच्छिज्जति' होती है (१८) या बीचके समयमें
(१९) यन्ध क्या सादि है (२०) या क्या अनादि (२१) क्या ध्रुव यन्ध होता है (२२)
या अध्रुव (२३) ये तर्हस प्रश्न पूर्वोक्त प्रश्नके अन्तर्गत हैं, ऐसा जानना चाहिये । यहाँ
उपयुक्त आर्य गाथाएँ—

यद्य, यन्धविधि, यन्धस्वामित्व, अध्वान अथात् यन्धसीमा और प्रत्ययविधि, ये
पांच नियोग भाषणास्वान्तर्गते भोजने योज्ये ॥ २ ॥

यद्य पूर्वमें है, उदय पूर्वमें है, या दोनों साथ है, किस कर्मका यन्ध निजके उदयके
साथ होता है, किम्बका परके साथ, और जिसका अन्तरके उदयके साथ, कौन प्रकृति
सान्तरयन्धगाली है, और कौन निरन्तरयन्धगाली, प्रत्ययविधि, स्वामित्वविधि तथा गति
सयुक्त यन्धायानके साथ प्रवृत्तियोंका स्थानना आश्रयकर स्वामित्व जानना चाहिये ॥३-४॥

यद्य पूर्वमें, उदय पूर्वमें या दोनों साथ होते हैं, वह यद्य होदयसे परोदयसे या
दोनों उदयसे होता है, उक्त यद्य सान्तर है या निरन्तर, यह अन्तिम समयमें होता है
या इतर समयमें, तथा वह सादि है या अनादि है ॥ ५ ॥

एत्थ एदासु पुच्छसु विसमपुच्छाणमत्थो वुच्चदे । त जहा— वधवोच्छेदो एत्थेव सुत्तसिद्धो ति त मोत्तण पयडीणमुदयवोच्छेद ताव वत्तइस्सामो । मिच्छत्त-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थानर-सुहुम-अपजत्त-साहारणाण दसण्ह पयडीण मिच्छाइडिस्स चरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो । एत्तो महाकम्मपयडिपाहुडउववसो । चुणिणसुत्तकत्ताराणमुवएसेण पचण्ण पयडीणमुदयवोच्छेदो, चहुजादि-थानराण सासणसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदमुवगमादो । अणताणुवधिकोह-माण-माया-लोहाण सासणसम्माइडिचरिमसमए उदयवोच्छेदो । सम्मा-मिच्छत्तस्स सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि उदयवोच्छेदो^१ । अपक्खत्ताणावरणकोह-माण-माया-लोह-णिरयाउ-देवाउ-णिरयगइ-देवगइ-वेउव्वियमरीर-वेउयियसरीर-अगोवग-चत्तारिआणुपुव्वि-दुभग-अणादेज्ज-अजसक्कित्तीण सत्तारसण्णमेदासिं पयडीण असजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदो^१ । पक्खत्ताणा-वरणकोह-माण माया-लोह-तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-उज्जोव णीचागोदानमट्ठण्ण पयडीण सजदा-सजदम्मि उदयवोच्छेदो । णिदाणिदा पयलापयला थीणगिद्धि-आहारसरीरदुगाण पचण्ण पयडीण

इन प्रश्नोंमें विषम प्रश्नोंका अर्थ कहते हैं। यह इस प्रकार है— चूँकि बन्ध-व्युच्छेद यहाँ ही सूत्रसे सिद्ध है अतः एत उसको छोड़कर प्रकृतियोंके उदय-व्युच्छेदको कहते हैं। मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन दश प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद मिथ्यादृष्टि गुण-स्थानके अन्तिम समयमें होता है। यह महाकर्मप्रकृतिप्राभृतका उपदेश है। चूँकि सूत्रोंके कर्ता यतिनृपभाचार्यके उपदेशसे मिथ्यात्व गुणस्थानके अन्तिम समयमें पाँच प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद होता है, क्योंकि, चार जाति और स्थावर प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें माना गया है। जनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया और लोभका उदयव्युच्छेद सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है। सम्यग्मिथ्यात्वका उदयव्युच्छेद सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें होता है। अप्रत्याख्याना-घरण क्रोध, मान, माया, लोभ, नारकायु, देवायु, नरकायु, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरागोपाग, चार आनुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय और अयशकीति, इन सत्तरह प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद भ्रमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें होता है। प्रत्याख्यानाघरण क्रोध, मान, माया, लोभ, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, उद्योत और नीच भोत्र, इन आठ प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद सयतासयतगुणस्थानमें होता है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, आहारशरीर और आहारशरीरागोपाग, इन पाँच प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद प्रमत्तसयत

१ प्रतिपु 'णमिउणरुत्ताण' इति पाठ ।

२ मिच्छे मिच्छदत्तं सुहुमायिं सोमणे णेइदी । धावरवियल मिस्से मित्त च य उदयवोच्छेत्तणा ॥ गो क २६५

३ अयदे विदियसयाया वेणुवियज्जक्क णिरय देवाउ । मयुय तिरियाणुपुव्वी दुम्मगणदेन अज्जमय ॥ गो क २६६

४ व २

मत्तसजदमि उदयवोच्छेदो' । अद्धणारायण-नीलिय असपत्तेसजदसरिरसपडण पेदगममत्ताण
चदुण्ह पयडीण अपमत्तमजदमि उदयवोच्छेदो । इत्थं पयुमय पुरिसवेद-कोह माण-मायामज्जणण छण
पयडीणमपुज्जणमि उदयवोच्छेदो । इत्थि पयुमय पुरिसवेद-कोह माण-मायामज्जणण छण
पयडीणमणियद्विद्धि उदयवोच्छेदो । लोमसजलणस्म एक्कस्म चेत्त मुहुममापराडयचरिमसमयमि
उदयवोच्छेदो । वज्जणारायण णारायणमरीमघडणण दोण्ण पयडीण उवसतकमारमि
उदयवोच्छेदो' । णिद्धा पयलाण दोण्ह पि खीणकमायदुचरिममयमि उदयवोच्छेदो ।
पघणाणारणीय चउदमणाणणीय पचत्ताइयाण चोइमण्ण पयडीण खीणकमायचरिमसमयमि
उदयवोच्छेदो' । ओरातिय तेत्ता रुम्मइयमरीम-उमठाण ओरातियसरीरअगोण्ण वज्जिसहवइ
णारायणमरीमघडण वण्ण गध रस फास अगुरुअलहुत्त-उत्ताद-परघादुस्साम-दोविहावगदि--
पत्तेसरीर थिराथिर-मुहामुह-मुम्पर दुस्पर णिमिणाणमेगुणतीसपयडीण सजोगिकेअत्तिद्धि उदय

गुणस्थानमें होता है । अर्धनागच, कीलित, असंप्राप्तछपाटिकासहनन और वेदकसम्यन्त्र
इन चार प्रकृतियोंका उदययुच्छेद अप्रमत्तसयत्त गुणस्थानमें होता है । हास्य, रति, अरति
शोक, भय और जुगुप्सा, इन छह प्रकृतियोंका उदययुच्छेद अपूर्वकरण गुणस्थानमें
होता है । स्त्री, नपुंसक और पुरुषवेद, सज्जन मोघ, मान और माया, इन छह प्रकृतियोंका
उदययुच्छेद अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें होता है । केवल एक सज्जलन लोभका उदय
व्युच्छेद सूक्ष्मसाधनप्रायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है । वज्जनाराच और
नाराच शरीरसहनन, इन दो प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद उपशान्तकपाय गुणस्थानमें
होता है । निद्रा और प्रचला दोनों प्रकृतियोंका उदययुच्छेद क्षीणकपाय गुणस्थानके
द्विचरम समयमें होता है । पाच ज्ञानारणीय, चार दशनाघरणीय और पाच अन्तराय, इन
चौदह प्रकृतियोंका उदययुच्छेद क्षीणकपाय गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है ।
औदारिक, वैजम्ब और कामण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरामोपाग, वज्जर्मनाराच
सहनन, यण, गध, रस, स्पश, अगुरुकलपुक्, उपघान, परघात, उच्छ्वास, दो विहायो
गतिपा, प्रत्यक्षशरीर, स्थिर अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुस्वर, दुस्वर और निर्माण, इन उनतीस
प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद सयोगिनेउली गुणस्थानमें होता है । दो वेदनीय मनुष्यायु,

१ देव तदियक्रमाया गित्ताउजावर्णाच निगियमरी । उद्ध आरादुम धीणिय उदयवोच्छिणा ॥
गो क २६७

२ अपमत्ते सम्पत्त अनिमित्तियमहदी य पुज्जमिह । छणव णात्तमाया अणियहीभागमागेह ॥ वेदातिप
कोह-माण मायामज्जणमेव सुहुणे । सुहुमा ताहा तते वज्जणाय णाराय ॥ रा क २६८-२६९

३ खीणकमायदुचरिय णिद्धा पयला य उदयवोच्छिणा । णाणत्तायदसय दमणवत्तारि वमिद्धि ॥
गो द २७०

बोच्छेदो' । देवेदणीय मणुस्माउ-मणुस्सगइ-अचिंदियजादि तस-नादर पज्जत्त सुभग आदेज्ज-जसगित्ति तित्थयर-उच्चागोदाण तेरसण्ह पयडीणमजोगिकेवल्लिहि उदयबोच्छेदो' । एत्थ उवसहारगाहा—

दस चट्ठुरिणि सत्तरस अट्ठ य तह पच चेन चउरो य ।

छच्छक एग दुग दुग चोइस उगुतीस तेरसुदयनिही' ॥ ६ ॥

एवमुदयबोच्छेद परुविय कांसि पयडीण बंधो उदए फिट्ठे वि होदि, कांसि पयटीण बंधे फिट्ठे नि उदओ होदि, कांसि बंधोदया सम बोच्छिज्जति ति वुन्चदे । त जहा— देवाउ देवगइ वेउव्वियसरीर वेउव्वियअगोवग देवगइपाओगाणुव्वि-आहारदुग-अजसकित्तीण-मट्ठण्ण पयडीण पढममुदओ बोन्ठिज्जट्ठि पच्छ बंधो । एत्थ उवसहारगाहा—

देवाउ देवचउवकाहारदुअ च अजसमट्ठण्ह ।

पढममुदओ विणस्मदि पच्छा बंधो मुणयेव्वो ॥ ७ ॥

मनुष्यगति, पचेन्द्रियजगति, ब्रह्म, वादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थर और उच्चगोत्र, इन तेरह प्रकृतियोंका उदयबुच्छेद अयोगिकेउली गुणस्थानमें होता है । यहा उपसहारगाथा—

वशा, चार, एक, सत्तरह, आठ, पाच, चार, छह, छह, एक, दो, दो, चोदह, उनतीस और तेरह, (इस प्रकार क्रमश मिथ्यावादि आदि चोदह गुणस्थानोंमें उदयबुच्छिन्न प्रकृतियोंकी संख्या है) ॥ ६ ॥

इस प्रकार उदयबुच्छेदको कहकर अब किन प्रकृतियाका बन्ध उदयके नष्ट होनेपर भी होता है, किन प्रकृतियोंका उदय बन्धके नष्ट होनेपर भी होता है, और किन प्रकृतियोंका बन्ध व उदय दोनों साथ ही व्युत्तिन्न होते हैं, इस बातको कहते हैं । वह इस प्रकार है— देवायु, देवगति, वैश्विकशरीर, वैश्विकआगोपाग, देवगतिआयोग्यानु-पूर्णा, आहारकशरीर, आहारकआगोपाग और अयशकीर्ति, इन आठ प्रकृतियोंका प्रथम उदयका विच्छेद होता है, पश्चात् बन्धका । यहा उपसहारगाथा—

देवायु, देवचतुष्क अर्थात् देवगति, देवगत्यानुपूर्णा, वैश्विकशरीर और वैश्विक-आगोपाग, तथा आहारकशरीर, आहारक आगोपाग एव अयशकीर्ति, इन आठ प्रकृतियोंका पहिले उदय नष्ट होता है, पश्चात् बन्ध, ऐसा जानना चाहिये ॥ ७ ॥

१ तदियेक्क ज गिणिण विर सुह सर गदि-उराल तेचदुग । सठाण वण्णायुक्कउक्क-पवेय जोगिहि ॥
गो क २७१

२ तदियेक्क मणुगदी पचिंदिय-सुभग तस तिगादेज । जग ति य मणुवाक्क उक्क च अजोगिकरिमिहि ॥
गो क २७२ ३ गो क २६३

४ देवचउवकाहारदुग-अजसमदेवाउगाण सो पच्छा । गो क ४००

मिच्छत-अणताणुपुविचउक्क-अपञ्चक्खाणापरणचउक्क पञ्चसत्ताणापरणचउक्क-तिणिण-
संजन्या पुगिसेवेद हस्स रदि-भय-दुगुछ एइरियं-वीडदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि-मणुसगइ-
पाओर्याणुपुवि आदाव थावा सुहुम अपञ्चत-साहारणाण एकत्तीसपयडीण बघोदया मम वोच्छि-
वज्जति । एत्थ उपसहारगाथाओ—

मिच्छत भय दुगुत्र हस्स-रई पुगिम थागगादावा ।

सुहुम जाडचउक्क साहारणय अपञ्चत ॥ ८ ॥

पण्णस वमाया निणु लोहेणकेण आणुपुगी य ।

मणुमाण एदासि समग बघोवुच्छेदो ॥ ९ ॥

एचणाणावरणीय णवदसणावरणीय दोनेयणीय लोहमजलण-इन्धि णवुमयवेद अरइ-सोग-
णिरयाउ तिरिक्खाउ मणुस्साउ णिरयगइ तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-पचिंदियजाइ-ओरालिय तेजा-
कम्मइयसरीर-छसठाण ओरालियमरीरअगोरग छसठवण-वण्णचउक्क-णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओ-
ग्गाणुपुवि अगुरुअलहुवचउक्क उज्जोव दोविहायगइ तम वादर पञ्चत-पत्तेयमगी थिराथिर-सुहा-
सुह-सुमग दुमग सुस्सर-हुस्सर ओदेज्ज-अणादेज्ज जससिति णिमिण नित्थयर णीसुच्चगोद पच

मिथ्यात्व, चार अन-तानुष-धी, चार अप्रत्याख्यानापरण, चार श्रत्याख्यानापरण,
तीन सज्जलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि-
न्द्रियजाति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, स्थायर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन
इकतीस प्रकृतियोंका पन्च छ उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं । यहा उपसहारगाथायें—

मिथ्यात्व, भय, जुगुप्सा, हास्य, रति, पुरुषवेद, स्थायर, आताप, सूक्ष्म, एकेन्द्रिय
आदि चार जाति, साधारण, अपर्याप्त, सज्जलनलोभने बिना पन्द्रह कपाय और मनुष्य
गत्यानुपूर्वी, इन प्रकृतियोंका बन्ध मुच्छेद और उदयव्युच्छेद साथ ही होता है ॥८-९॥

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, दो वेदनीय, सज्जलनलोभ, श्रववेद, नपुंसक
वेद, अरति, शोक, नारकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, नरकगति, तिर्यगगति, मनुष्यगति, पंचे-
न्द्रियजाति, औदारिक, तैजस और कामण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, छह
सहलन, वणादिक चार, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यगगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलपु आदिक चार,
उघोत, दो निहायोगति, ब्रह्म, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग,
दुमग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनादेय, यशकीति, निर्माण, तीर्थकर, नीचगोत्र, उच्चगोत्र

१ अग्रनी ' दुग्गलमरिदिय ' इति पाठ ।

२ मिच्छादावाणं कण्ठं धावरचउक्काणं । पण्णरक्खीयअथदुग्ग हस्सइ चउज्जदि पुगिसेदाणं । सम
मैच्छरीयाण ससिणसीदाणं पुच्च तु ॥ नो क ४००-४०१

तराइयाणमेगामीदिपयडीण पढम बधो वोन्ठज्जदि, पच्छा उदओ । एत्थ उवमहारगाहा—

पुबुत्तसेमाओ एगासीढी हन्ति पयटीओ ।

ताण पुबुच्छेदो पुन पच्छेदउच्छेओ ॥ १० ॥

सेसाण जहावसरमत्थ भणिस्सामो ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिजदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो बुद्धे । त जहा— मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइय खवा ' ति एदेण वयणेण अट्ठाण जाणानिद । ' एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ' ति ' एदेण बधस्स सामित्त जाणानिद । ' सुहुमसांपराइयसुद्धिसजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिजदि ' ति एदेण नि ' किं चरिमसमयं बंधो वोन्ठज्जदि ' ति ' पुच्छाए पढम [अपढम-] अचरिमपडिसेहमुहेण पडिउत्तरो दिण्णो । अजमेसाण पुच्छाण ण परिच्छेओ कदो । तेणेद

और पांच अन्तराय, इन इन्ध्यासी प्रकृतियोंका पहिले बन्ध नष्ट होता है, पश्चात् उदय । यहा उपसंहारगाथा—

पूयात् प्रकृतियोंसे शेष जो इन्ध्यामी प्रकृतिया रहती है उनका बन्धन्युच्छेद पहिले और उदयन्युच्छेद पश्चात् होता है ॥ १० ॥

शेष प्रश्नोंका अर्थ यथाश्रम कहेंगे—

मिथ्यादृष्टिमे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रायिकशुद्धिमयत उपग्रामक व क्षण तक उपर्युक्त ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंके बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्प्रायिककालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ६ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— ' मिथ्यादृष्टिमे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रायिक क्षणक तक ' इस ध्वननसे बन्धाध्वान स्थापित किया है । ' ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ' इससे बन्धका स्वामित्व स्थापित किया है । ' सूक्ष्मसाम्प्रायिकशुद्धिमयतकालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है ' इससे भी ' क्या अन्त समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता ? ' इस प्रश्नका प्रथम और [अप्रथम] अचरम समयके प्रतिषेधमुखसे प्रत्युत्तर दिया गया है । शेष प्रश्नोंका निर्णय यहा सूत्रमें नहीं किया गया । इसीलिये यह देशामर्शक

देसामासियसुतं, तम्हा ण्य लीणन्याण परूवणं कम्मामो । त जहा— किं यवो पुत्र
 वोच्छिञ्जदि, किमुदओ पुत्र वोच्छिञ्जदि, किं दो वि सम वोच्छिञ्जति, एदासिं तिण्ण पुच्छाप
 बुत्तरो बुच्चे । एदासिं सोलमण्ण पयडीण यवो पुत्र वोच्छिञ्जदि सुहुममापराइयचरिमसमए,
 उदओ पन्हा वोच्छिञ्जदि, पचनाणावरणीय चउदमणावरणीय-पचतराइयाण लीणकमान-
 चरिमसमए, जसक्ति उचागोदाणमजोगिचरिमसमए उदयओच्चेददसणादो । किं सोदएण,
 किं परोदएण, किं सोदयपरोदएण एदासिं यवो ति पुच्छमस्मिदूण बुच्चे । एत्थ तान एदेण
 मवधेण सोदएण परोदएण सोदय परोदएण पञ्चमाणपयडिपरूवण कम्मामो । त जहा— गिरयाउ-
 देवाउ गिरयगइ-देवगइ वेउव्वियसरीर आहारसरीर-वेउव्विय-आहारसरीरगोपग-गिरयगइ-देवगइ-
 पाओग्गाणुपुव्वि निन्धयग्गमिदि एदाओ एक्कारसपयडीओ परोदएण वज्झति । एत्थ उव
 सहारगाहा—

तित्थयर गिरय-देवाउअ-वेउव्वियउक्क दा वि आहारा ।

एक्कारसपयडीण यवो इ परोदए बुत्तो ॥ ११ ॥

पचनाणावरणीय- [चउदमणावरणीय] मिच्छत्त तेजा कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क
 अगुरुअल्लुअ विराधिर सुरासुह निमिण पचतराइयमिदि एदाओ सत्तमीमपयडीओ सोदएण

सूत्र हे और देशामर्शक होनेसे यहा लीन अर्थात् अतर्निहित अर्थोंका प्ररूपणा करते हैं ।
 यह इस प्रकार है— क्या यद्य पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता
 है, या क्या दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं ? इन तीन प्रश्नोंका उत्तर कहते हैं— इन सोलह
 प्रकृतियोंका यद्य उदय-व्युच्छित्तसे पहिले सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें
 व्युच्छिन्न होता है, तत्पश्चात् उदयका व्युच्छित्त होती है, क्योंकि पाच ज्ञानावरणीय,
 चार दर्शनावरणीय और पाच अंतराय, इन चांदह प्रकृतियोंका क्षीणरूपाय गुणस्थानके
 अन्तिम समयमें, तथा यशस्विति व उच्चगोत्र इन दो प्रकृतियोंका अयोगिके-उत्पत्तिके अन्तिम
 समयमें अन्य-व्युच्छेद देखा जाता है । 'क्या सोदयमे, क्या परोदयसे, या क्या सोदय
 परोदयसे इनका वन्ध होता है ?' इस प्रश्नका आश्रयकर उत्तर कहते हैं । अब यहा पहिले इस
 सम्बन्धसे सोदय, परोदय और सोदय-परोदयसे बधनेवाली प्रकृतियोंका निरूपण करते
 हैं । यह इस प्रकार है— नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, वैत्रियिकशरीर, आहारक
 शरीर, वैत्रियिकशरीरगोपग, आहारक-शरीरगोपग, नरकगत्यानुपूर्वा, देवगत्यानुपूर्वा
 और तीर्थकर, ये ग्यारह प्रकृतिया परोदयसे उचती हैं । यहा उपसहारगाथा—

तीर्थकर, नारकायु, देवायु, वैत्रियिकशरीरादि छह और दोनों आहारक, इन
 ग्यारह प्रकृतियोंका वन्ध परोदयमे कहा गया है ॥ ११ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, [चार दर्शनावरणीय], मिथ्यात्व, सैजस और कार्मण शरीर,
 चार, अगुरुअल्लुअ, रियर, आदियर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अंतराय, ये

वज्रति । पचदसणावरणीय दोवेदणीय सोलसकसाय णवणोक्साय तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-
तिगिक्खगइ मणुस्सगइ एइदिय वीइदिय तीइदिय चउरिंदिय-पचिंदियजादि-ओरालियसरीर छ-
सठाण-ओरालियसरीरअगोवग छसघडण-तिरिक्खगइ मणुस्सगइपाओग्माणुपुव्वि-उवघाद परघाद-
उस्सास-आदाव उज्जोव-दोनिहायगदि तस थावर-घादर सुहुम पज्जत अपज्जत-पत्तेय साधारण-
सरीर सुभग-दुभग सुस्सर-दुस्सर आदेज्ज-अणादे-ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णीवु-चागोदमिदि
एदाओ वासीदिपयडीओ सोदय-परोदण वज्रति । एत्थ उवसहारगाहाओ—

माणतराय-दसण-धिरादिचउ तेजम्मदेहाइ ।

णिमिण अगुरुल्लहुअ ण्णचउक्क च मिच्छत्त ॥ १२ ॥

सत्तानीसेदाओ वज्रति हु सोदण पयडीओ ।

सोदय-परोदण णि वज्रतप्सेसियाओ हु ॥ १३ ॥

एत्थ णाणावरणतराइयदसपयडीओ दसणावरणस्स चत्तारि पयडीओ चेव वधमाणाणि ।
सव्वगुणट्ठाणाणि सोदण चेव वधति, मिच्छाइडिप्पहुडि जाव खीणकसाया ति एदांसि
णित्तरोदयादो सोदण वज्रमाणपयडीणवन्तरो पादादो वा । जसकित्ति मिच्छाइडिप्पहुडि

सत्ताईस प्रकृतिया स्त्रोदयसे वधती ह । पाच दर्शनावरणीय, दो वेदनीय सोलह कपाय, नौ
नोकपाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकैन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि
न्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहनन,
तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आत्ताप,
उद्योत, दो विहायोगति, व्रस, स्थानर, नादर, सूक्ष्म, पयाध, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण
शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, नीचगोत्र
और उच्चगोत्र, ये व्याप्ती प्रकृतिया स्त्रोदय परोदय दोनों प्रकारसे वधती है । यहा
उपसहारगाथायै—

पाच ज्ञानावरण, पाच अन्तराय, दर्शनावरण चार, स्थिर आदिक चार, तैजस और
कार्मण शरीर, निर्माण, अगुम्फलसुक, वर्णादिक चार और मिथ्यात्व, ये सत्ताईस प्रकृतिया
तो स्त्रोदयसे वधती हैं और शेष प्रकृतिया स्त्रोदय परोदयसे वधती हैं ॥ १२-१३ ॥

यहा ज्ञानावरण व अन्तरायकी दस प्रकृतिया तथा दर्शनावरणकी चार ही प्रकृतिया
वधनेवाली हैं । ये अपने बन्ध योग्य सब गुणस्थानोंमें स्त्रोदयसे ही वधती हैं, क्योंकि,
मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक इनका निरन्तर उदय रहता है, अथवा
इनका पतन स्त्रोदयसे वधनेवाली प्रकृतियोंके भीतर है । यशकीर्ति प्रकृतिको मिथ्यादृष्टिसे

जाय अमनसम्माद्वि ति सोदएण वि परोदएण वि ववति, एदेसु दोण्ण एकदरस्सुदय नादो । उवरिमा सोदएण चेव ववति, सनत्तामनदण्हडिउरिमेसु गुणदोणेसु अजमकिति उदयाभावादो । उच्चगाद मिच्चइद्वि प्पहुडि जाय मज्झिमाज्झा ति एदे सोदएण परोदएण वि वज्झति, एत्थ दोण्ण मोदानसुदयमभावादो । उरिमा पुण सोदएण चेव ववति, तथ णीचागोदस्सुदयाभावादो । तम्हा' जसकिति उच्चगादोदाणि सोदय परोदयनधा इदि सिद्ध ।

एदामि नथो किं सातरो किं णित्तरो किं सातर निगत्तो ति एदासि पुच्छण पडिक्कण । एत्थ एदेण अत्यमनयेण ताव सातर णित्तर सातरणित्तेण उच्चमाणपयडीओ जाणोवमो । त जहा— पचणाणाकरणीय णउदसणाउरणीय मिच्छत सोलमरुमाय मय दुगुग्ग आउचउक्क आहार तेनाकम्मइयमरिग आहाग्गरीरअगोउग वण्ण गघ रम फास अगुरुनलहुअ उवघाद णिमिज निव्थयर पंचतराइयमिदि एदाओ चउवण्ण पयडीओ णित्तर वज्झति । तत्थ उवमहारगाहा—

सत्तेनाउ धुवाओ तित्थयराहार-आउचत्तारि ।

चउउरण पयडाओ उअति णित्तर सत्ता' ॥ १४ ॥

लेकर असयतनम्यद्वि तत्र स्वोदयसे भा राधते ह और परोदयमे भी बाधते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें यशस्वीति और अयशस्वीतिमेंसे किसी एकका उदय रहता है । असयतनम्यद्विसे ऊपरके गुणस्थानवर्ती जीव स्वोदयसे ही बाधते ह, क्योंकि, सयतासयतसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें अयशस्वीतिका उदय नहान रहता । उच्चगोत्रमे मिध्याद्विसे लेकर सयतासयत तकके जीव स्वोदयमे जात परोदयमे भी राधते हैं, क्योंकि, यहा दोनों गोत्रोंका उदय सम्भव है । परन्तु इससे ऊपरके जीव स्वोदयमे ही बाधते हैं, क्योंकि, यहा मीचगोत्रका उदय नहान रहता । इस कारण यशस्वीति और उच्चगोत्र प्रकृतिया स्वोदय परोदयन उभनेवाली हैं, यह सिद्ध हाता ह ।

अब 'उत्त' सालह प्रकृतियोंका यच्च क्या सान्तर है, क्या निगत्तर है, और क्या सान्तर निगत्तर ह ? 'ये तीन प्रश्न प्रान्त होते हैं । यहा इस अर्थसमग्रन्धमे पहिले सान्तर निगत्तर और सात्तर-निगत्तर रूपसे बघनेवाली प्रकृतियोंका बोध कराते ह । यह इत्य प्रकार है—पाच ज्ञानाउरणीय, ती दशज्ञाउरणीय, मिध्यात्व, मोलह क्कयाय, मय, दुगुग्गसा आयु चार, आहारकशरीर, तैजसशरीर, कामणशरीर, आहाग्गकशरीरागोपाग, वर्ण, राघ, रम, स्पश, अगुरुक्कपूक उपघान, निमाण, तीविकर ओग शाच अत्तनाय, ये चौवन प्रकृतिया निगत्तर वघती हैं । यहा उपसहारनाया—

संतालीम धुवप्रकृतिया, तीविकर, आहारकशरीर, आहारकशरीरागोपाग और चार आयु, ये सत्र चौवन प्रकृतिया निगत्तर वघती हैं ॥ १८ ॥

काओ धुववधियपयडीओ ? एदाओ चेन आउचउनक तित्थयराहारदुयविरहिदाओ ।
एदासिं परूवणगाहाओ—

णाणतरायदसय दसण णर मिच्छ सोलस कमाया ।

भयकम्म दुगुच्छा नि य तेजा कम्म च वण्णचद्ध ॥ १५ ॥

अगुरअलहु-उत्ताद णिमिण णाम च होंति सगदाल ।

वओ चउवियप्पो धुनयणीण पयटिगो ॥ १६ ॥

गिरतरवधस्स धुनयधस्स को विससो ? जिस्से पयडीए पच्चओ जत्थ^१ कत्थ वि जीने
अणादि-धुनभायेण लब्ध सा धुनवधपयडी । जिस्से पयडीए पच्चओ^२ णियमेण सादि अद्धओ
अतोमुहुत्तादिकालानट्ठाई सा गिरतरवधपयडी । जिस्से जिस्से पयडीए अद्धान्खण धधवोच्छेदो
समय सा सातरवधपयडी । असादावेदणीय-इत्थि-णनुमयवेद-अरइ-सोग-णिरयगइ-जाइचउनक-
हेट्ठिमपचसठाण-पचसघडण-णिरयगइपाओगाणुप्पि-आदाबुज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-यानर-

शका—धुवगन्धी प्रकृतिया फोनसी ह ?

समाधान—चार आयु, तीर्थंकर जोर दो आहारसे रहित ये उपर्युक्त प्रकृतिया ही
धुवप्रकृतिया हैं । इन प्रकृतियोंकी निरूपक गाथायें—

ज्ञानारण और अतरायकी दश, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भयकर्म
‘जुगुप्सा, तेजस और कर्मण शरीर, घर्णादिक चार, अगुरकलधु, उपघात और निर्माण
नामकर्म, ये सतालीस धुवगन्धी प्रकृतिया ह । इनका प्रकृतिग्रन्थ सादि, अनादि, धुय पच
अधुय रूपसे चार प्रकारका होता है ॥ १५-१६ ॥

शका—निरतरवध और धुवगन्धमें क्या भेद है ?

समाधान—जिस प्रकृतिका प्रत्यय जिस किसी भी जीवमें जनादि पच धुव भाजसे
पाया जाता है वह धुवगन्धप्रकृति है, और जिस प्रकृतिका प्रत्यय नियमसे सादि एव अधुव
तथा अन्तर्मुहर्त आदि काल तक अग्रस्थित रहनेवाला है वह निरन्तरवधप्रकृति है ।

जिस जिस प्रकृतिका कालक्षयसे बन्धव्युच्छेद सम्भव है वह सान्तरवधप्रकृति
है । असातवेदनीय, खीरेद, नपुसकवेद, अरति, शोक, नरकगति, जाति चार, अधस्तन
पाच सस्थान, पाच सहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अप्रशस्तविहायो-

१ धादिति मिच्छ-कमाया भय तेजगुरुग णिमिण वण्णचओ । सचेनाल्लुवाण वद्धा सेसणय वु द्धा ॥

गो क १२४

२ प्रतिपु ‘पओज्जय’ इति पाठ ।

३ प्रतिपु ‘पचओ’ इति पाठ ।

छ व ३

सुहुम-अपज्जत माहाग्ण अयिग्-असुह दुभग्-दुस्सर-अण्णएज्ज अनसकित्ती एदाओ चोत्तीसप-
 डीओ सातर वज्जति' । अग्गेसाओ वत्तीम पयडीओ सातर गिरतर वज्जति । तामि णामणिद्देओ
 कीरेदे । त जहा -- मादावेदणीय पुगिसेद हम्म-रन्ति-तिरिस्सगड मणुस्सगड-देग्गइ पच्चिदिय-
 जादि-ओगानिय-वेउवियमगी-ममचउरमससण-ओरास्ति-वेउवियसरिअग्गेग्ग-वज्जरिसह-
 ववण्णारायणमरीग्मघडण-तिग्गिग्गगड मणुस्सगइ-देवगडपाओग्गाणुपुत्ति-परवादुस्साम-पसत्थ-
 विहायगइ-तम पादग्-पञ्चत्त-पत्तेयमगी यिग् सुह सुभग् सुस्सर अदेज्जे जमकित्ति-णीचुवागोद-
 मिदि सातर गित्तेरेण वज्जमाणपयडीओ' । एत्थ उवमहाग्गाहाओ --

इयि गउसयणेत्ता जात्तउक्क असाइ गिस्यदुग्ग ।

आशउ-चोराग्ग सोगासुह पचमठाणा ॥ १७ ॥

पचासुहमपटणा विहायगइ अपसयिया अण्णे ।

थान-सुहुमासुहदम चोत्तसिट सातर गग्गा ॥ १८ ॥

गति, स्थान, सूक्ष्म, अपर्याप्त साधारण, आश्रित, अशुभ, दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और
 अपशान्ति, ये चोत्तास प्रकृतिया सातन् रूपमे ग्रथनी ह । दोष वत्तीस प्रकृतिया
 सान्तर निरन्तर रूपमे ग्रथनी ह । उनरा नामनिर्देश किया जाता है । वह इस प्रकार
 है -- सानावेदनीय, पुग्गपेत्त, हास्य, गति, निर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पच्चिन्द्रियजाति,
 औदारिकशरीर, चैत्रियिकशरीर, समचतुरम्भसहज, औदारिकशरीरगोपाग वैक्रियिक
 शरीरगोपाग, उष्णभवज्जनाराचशरीरसहनन, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वा, मनुष्यगति
 प्रायोग्यानुपूर्वा, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, परगति, उच्छवास, प्रशस्तविहायेगति, अस,
 पादग्, पर्याप्त, प्रत्येकद्वारा, स्थिर, शुभ, सुभग्, सुस्सर, जादेय, यशनीति,
 नीचगोत्र और उच्चगोत्र, ये सातन्तर निरन्तर रूपसे ॥ ग्रन्थाली प्रकृतिया है । यहा
 उपसहारगाथायें --

स्वयिद्, मणुस्सगइ, जाति चार, असात्तावेदनीय, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानु
 पूर्वा, आनाप, उत्थान, अरति, शोक, अशुभ, पाच सस्थान, पाच अशुभ सहनन, अपशस्त
 विहायेगति स्थान, सूक्ष्म पय अशुभ आदि अय गग्गा, इस प्रकार ये चोत्तीस
 प्रकृतिया यहा सातन्तर ग्रथनी ह ॥ १७-१८ ॥

१ गिरदुग्ग-आशउक्क सगदिमठाणपणपण ॥ दुग्गमणावानुग्ग थानरदसग्ग असादयत्थी । अद-
 थो चद सात्ताग्गा होति चोत्तीमा ॥ गो क ४ ४-४० ।

२ प्रलियु ' शुग्गा दुस्सर जादज ' इति पाठ ।

३ सा गग्गा गिग्गास्तिग्ग-वग्नियदुग्ग पमचगदि वज्ज । पग्गादग्ग ममचउर पच्चिदिय तपदस साद ॥ इस-
 गदग्ग मग्गास्तिग्गमि सातन् होति । अद्द पुण पच्चिदिय गित्तग्ग इति वत्तीमा ॥ गा क ४०६-४०७

सातर-णितरेण य उत्तासत्सेसियाओ पयडीओ ।

वचनि पच्चयाण ढुपयागण उसगयाओ ॥ १९ ॥

एत्थ पचणाणाऱणीय चउदसणाऱणीय-पचतराडयपयडीओ णितर वज्झंति, धुव-
वधित्तादो । जसकित्ती सातर णितर वज्झदि' । कुदो ? मिच्छाडट्टिपट्टि जाण पमत्तो ति
सातर-णितर वज्झड, पडिक्खत्तजमकित्तीए उभमभादो । उवरि णितर वज्झड जसकित्ती,
पटिक्खत्तपयडीए वधाभादो । तेण जसकित्ती वधेण मातर-णितरा । उच्चागोद मिच्छाडट्टि-
सामणमम्माडट्टिणो सातर उधत्ति, पटिक्खत्तपयडीए तत्थ वधसमवादो । उवरिमा पुण णितर
वधत्ति, पडिक्खत्तपयडीए तत्थ उभाभादो । भोगभूमिं सु पुण मज्जगुणट्टाणजीना उच्चागोदं
चेव णितर वधत्ति, तत्थ पत्तकाले देवगड मोत्तण अण्णगडिण उभाभादो । तेण उच्चागोद
पि वधेण सातर-णितर ।

एदासिं पयडीण किं सपचओ वधो किमपचओ ति पुच्छिदे उच्चदे— सपच्चगो
वधो, ण णिकारणो । एत्थ तां पच्चयपरूवणा कीन्दे । त जहा— मिच्छत्तामजम कमाय-

शेष वर्त्तमान प्रकृतिया मूल व उत्तर भेद रूप दो प्रकार प्रत्ययोंके वशीभूत होकर
सान्तर निरन्तर रूपसे उभती है ॥ २० ॥

यहा पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण जोर पांच अन्तराय प्रकृतिया निरन्तर
वपती है, क्योंकि, ये प्रकृतिया ध्रुववर्धी हैं । वदानीतिं जीव सान्तर निरन्तर रूपसे
वाधते हैं । इसका कारण यह है कि मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रसन्न गुणस्थान तक यह प्रकृति
सान्तर निरन्तर उधती है, क्योंकि, यहा इसकी प्रतिपक्षी अदृशनीति का बन्ध सम्भव है ।
प्रसन्न गुणस्थानसे उपर वदानीतिं प्रकृति निरन्तर उधती है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष
प्रकृतिसे बन्धना अभाव है । इसीलिये वदानीति बन्धसे सान्तर निरन्तर है । उच्चगोत्रको
मिथ्यादृष्टि आर सामादनसम्यग्दृष्टि जीव सान्तर वाधते हैं, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष
प्रकृतिका उभ सम्भव है । परन्तु उपरितन गुणस्थानपती जीव उसे निरन्तर वाधते हैं,
क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृति का बन्ध नहीं रहता । तथा भोगभूमियोंमें सर्व गुणस्थानपती
जीव केवल उच्चगोत्रको ही निरन्तर वाधते हैं, क्योंकि, यहा पर्याप्तकालमें देवगतिको
छोड़कर अन्य गतियोंका बन्ध नहीं होता । इसलिये उच्चगोत्र भी बन्धसे सान्तर निरन्तर है ।

'इन प्रकृतियोंका क्या सप्रत्यय अर्थात् सकारण उध होता है या क्या अप्रत्यय
अर्थात् अकारण उध होता है ?' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— इन प्रकृतियोंका बन्ध
सकारण होता है, अकारण नहीं । यहा पहिले प्रत्ययोंकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस

अहिणिसो ममयमिच्छत् । एवमेदे मिच्छतपञ्चया पच । ५ ।

असजमपञ्चओ दुनिहो इदियासजम-पाणामजमभेएण । तत्थ इदियासजमो छविहो परिम रम रूप-गध मद्-णोडदियासजमभेएण । पाणामजमो नि छविहो पुढवि आउ तेउ वाउ-वणप्फदि-तसामजमभेएण । अमजमसज्वसमासो वारम । १२ । कमायपञ्चओ पचवोसनिहो सोल्लमरुसाय-णणोत्कमायभेएण । कसायपञ्चयसमासो एसो । २५ । जोगपञ्चओ तिविहो मण-वचि कायजोगभेएण । सच्च मोस-मच्चमोस-अमच्चमोसभेएण चउच्चिहो मणजोगो । वचिजोगो नि चउच्चिहो मच्च मोस सच्चमोस अमच्चमोसभेएण । कायजोगो सत्तविहो ओरालिय-ओरालियमिस्म वेउच्चिय-वेउच्चियमिस्म आहार आहारमिस्म-कम्मट्यकाय-जोगभेएण । एदेमि मज्जसमासो पणारम । १५ । सच्चपञ्चयसमासो सत्तावण

है । इस प्रकार ये मिथ्यान्त्र प्रत्यय पांच (५) हैं ।

असयम प्रत्यय इन्द्रियात्म्यम और प्राण्यत्म्यमे भेदसे दो प्रकार है । उनमें इन्द्रियात्म्यम स्पर्श, रस, रूप, गन्ध, शब्द और नोइन्द्रिय जनित जन्मयमके भेदसे छह प्रकार है । प्राण्यत्म्यम भी पृथिवी, अप, तेज, वायु, धनस्पति और वन जीवोंकी विराधत्तामे उत्पन्न असयमके भेदसे छह प्रकार है । सय जन्मयम मिलकर गारह (१०) होते हैं ।

कपायप्रत्यय सोल्लह कपाय और नो नोकपायके भेदसे पच्चीस प्रकार है । यह कपाय प्रत्ययोंका योग पच्चीस (२५) हुआ ।

योगप्रत्यय मन, घचन और काय योगके भेदसे तीन प्रकार है । मनोयोग चार प्रकार है— सत्यमनोयोग, मृषामनोयोग, सत्य-मृषामनोयोग और असत्य मृषामनोयोग । घचनयोग भी सत्यघचनयोग, मृषाघचनयोग, सत्यमृषाघचनयोग और असत्य मृषा घचनयोग भेदसे चार प्रकार है । काययोग औदारिक, औदारिकमिथ, वक्कियिक, वैक्कियिक मिथ, आहारक, आहारकमिथ, और कर्मण काययोगके भेदसे सात प्रकार है । इनका सर्वयोग पन्द्रह (१५) होता है । सय प्रत्ययोंका योग सत्तावन (५७) हुआ ।

१ मायदर्शनं ज्ञान चारिणाणि किं मोक्षमात्रं स्याद्वाननेत्यनसत्तापमिथ मध्यम । म मि ८, १ सामान्यज्ञान-चारिणाणि मोक्षमात्रं किं स्याद्वान वदि वदिद्वान सद्यम । त ग ८, १, २८, किं वा मवेन वा जेना धर्मो तिसादिद्वान । इति यथ वदिद्वान मयेत् सातपि हि तत् । त मा ५, ५

२ अत्रता 'सच्चमोस जम चमाम मय' सच्चमामभेएण चउच्चिहो मणजोगो । वचिजोगो नि चउच्चिहो सच्चमाम मच्चमोस कपयो 'मच्चमाम अमच्चमोस सच्चमोस सच्चमोस असच्चमोस अमच्चमोसमपुण ३०१' इति पाठ ।

[५७] । एतद् आहारदुग्धमग्निदे मिन्द्रादिपिण्डेषु पचयामहेति [५८] ।
 एदेहि पचयहि मिन्द्रादीं सुतुतमान्मपयदीओ वधदि । एतद् पचमिन्द्रादिपचयामहेति
 निदेशु पचयामहेति [५९] । एदेहि पचयहि माताममादीं सुतुतमोलापयदीओ
 वधदि । पचयामहेति ओरातिवमिन्द्रादिपचयामहेति वमिन्द्रादिपचयामहेति
 निदेशु तेदात्त पचयामहेति [६०] । एदेहि पचयहि ममादिमादीं मोलापयदीओ वधदि ।
 तेदात्तपचयामहेति ओरातिवमिन्द्रादिपचयामहेति वमिन्द्रादिपचयामहेति
 निदेशु पचयामहेति अमन्द्रादिमादीं अपिन्द्रादिपचयामहेति अपिन्द्रादिपचयामहेति
 पचयामहेति अमन्द्रादिपचयामहेति ओरातिवमिन्द्रादिपचयामहेति वमिन्द्रादिपचयामहेति
 निदेशु सत्ततीसपचयामहेति [६१] । एदेहि पचयहि मन्द्रादिमादीं मन्द्रादिपचयामहेति
 पचयामहेति एदेसु सत्ततीसपचयामहेति मन्द्रादिपचयामहेति मन्द्रादिपचयामहेति
 असत्ततीसपचयामहेति निदेशु अमन्द्रादिमादीं, तद् आहारदुग्धे पचयामहेति चत्ततीस पचयामहेति
 होति [६२] । एदेहि पचयहि मन्द्रादिमादीं अपिन्द्रादिपचयामहेति अपिन्द्रादिपचयामहेति
 पचयामहेति आहारदुग्धमग्निदे पचयामहेति पचयामहेति [६३] । एदेहि पचयहि अपिन्द्रादिपचयामहेति

इतिमैत्रे आहारः और आहारकमिश्रको अग्नि करदनेपर मिथ्याहृष्टिमे सम्बद्ध
 प्रत्यय पचयन् (५५) हात है । इन प्रत्ययोंसे मिथ्याहृष्टि सृष्टेय मोलाह प्रकृतियोंको
 बाधता है । इतिमैत्रे पाच मिथ्याहृष्टिप्रत्ययोंको धरा करदनेपर पचास (५०) प्रत्यय होने
 हैं । इन प्रत्ययोंसे साक्षाद्वनसम्यग्वादि सृष्टेय मोलाह प्रकृतियोंको बाधता है । इन पचास
 प्रत्ययोंमेंसे औदारिकमिथ, वैज्रियिकमिथ, कामण और चार अनन्तानुगन्धी प्रत्ययोंको
 अलग करदनेपर तेतालीस प्रत्यय होने हैं (४३) । इन प्रत्ययोंसे सम्यग्मिथ्याहृष्टि मोलाह
 प्रकृतियोंको बाधता है । तेतालीस प्रत्ययोंमें औदारिकमिथ, वैज्रियिकमिथ और कामण
 प्रत्ययोंको मिलानेपर छपत्तीस प्रत्यय हात हैं (४५) । इन प्रत्ययोंसे असम्यक्तसम्यग्वादि
 निवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बाधता है । इन असम्यक्तसम्यग्वादि प्रत्ययोंमेंसे चार
 अप्रत्याख्यानपरण, औदारिकमिथ, वैज्रियिक, वैज्रियिकमिथ, कामण और चत्ततीसयम,
 निवक्षित सोलह प्रकृतियोंको वम करदनेपर सत्ततीस प्रत्यय होने हैं (३७) । इन प्रत्ययोंसे सयत्तासयत
 प्रत्याख्यान और ग्यारह असम्यक्त प्रत्ययोंको वम करदनेपर शेष चारदस रहते हैं, उनमें
 आहारक और आहारकमिश्रको मिला देनेपर चौतीस प्रत्यय होते हैं (२४) । इन प्रत्ययोंसे
 द्विषको वम करदनेपर बाइस प्रत्यय होने हैं (२०) । इन प्रत्ययोंसे अप्रमत्तसयत और

अपुव्वकरणपइइउममा' खया च अपिदसोलसपयडीओ वधति । एदेसु चेव ठण्णोकमाएसु
 अवाणिदेसु सोलस होति । १६ । एदेहि पच्चएहि पढमअणियट्ठी सोलस पयडीओ वधदि । एत्थ
 णुसयवेदे अणिदे पण्णारस होति । १५ । एदेहि पच्चएहि निदियअणियट्ठी अपिदपयडीओ
 वधदि । एदेसु इत्थियेदे अवाणिदे चोइस होति । १४ । एदेहि पच्चएहि तदियअणियट्ठी
 अपिदपयडीओ वधदि । एत्थ पुरिसवेदे अणिदे तेरह होति । १३ । एदेहि पच्चएहि
 चउत्थअणियट्ठी अपिदपयडीओ वधदि । पुणो एत्थ कोधमजलणे अवाणिदे वारस होति
 । १२ । एदेहि वाग्गसपच्चएहि पचमअणियट्ठी अपिदपयडीओ वधदि । पुणो एत्थ माण-
 सजलणे अवाणिदे एक्कारस होति । ११ । एदेहि पच्चएहि उडुअणियट्ठी अपिदपयडीओ
 वधदि । एदेहि तो मायासजलणे अवाणिदे दम होति । १० । एदेहि पच्चएहि सत्तमअणियट्ठी
 अपिदपयडीओ वधदि । एदेहि चेव दसहि पच्चएहि सुद्धमसापराइयो' रि अपिदसोलसपयडीओ
 वधदि । दससु लोभसजलणे अणिदे णर होति । ९ । एदे उवसत्तकमाय-रणीकमाएहि
 घञ्जमाणपयटीण पच्चया । एदेहि तो मज्झिमदो-दोमणअचिजेगे अवाणिय ओरालियमिस्स-

अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमण एव क्षपक जीव विज्ञाक्षित सोलह प्रकृतियोंको बाधते ह ।
 इन्हीं प्रत्ययोंमेंसे छह नोपपायोंको अलग करदेनेपर सोलह होते ह (१६) । इन प्रत्ययोंसे
 प्रथम अनिवृत्तिकरण सोलह प्रकृतियोंको बाधता है । इनमेंसे नपुंसकवेदको अलग कर
 देनेपर पन्द्रह होते ह (१५) । इन प्रत्ययोंसे द्वितीय अनिवृत्तिकरण विज्ञाक्षित प्रकृतियोंको
 बाधता ह । इनमेंसे स्त्रीवेदको फम करदेनेपर बाँधह होते ह (१४) । इन प्रत्ययोंसे तृतीय
 अनिवृत्तिकरण विज्ञाक्षित प्रकृतियोंको बाधता है । इनमेंसे पुंस्ववेदको अलग करदेनेपर
 तेरह होते ह (१३) । इन प्रत्ययोंसे चतुर्थ अनिवृत्तिकरण विज्ञाक्षित प्रकृतियोंको बाधता
 है । पुन इनमेंसे क्रोधसजलनको अलग करदेनेपर बारह होते हैं (१२) । इन बारह
 प्रत्ययोंसे पचम अनिवृत्तिकरण विज्ञाक्षित प्रकृतियोंको बाधता है । पुन इनमेंसे मानसज-
 लको फम करदेनेपर ग्यारह होते ह (११) । इन प्रत्ययोंसे छठा अनिवृत्तिकरण विज्ञाक्षित
 प्रकृतियोंको बाधता है । इनमेंसे मायासजलनको अलग करदेनेपर दस होते ह (१०) । इन
 प्रत्ययोंसे सप्तम अनिवृत्तिकरण विज्ञाक्षित प्रकृतियोंको बाधता है । इन्हीं दश प्रत्ययोंसे
 सुद्धमसापराधिक भी विज्ञाक्षित सोलह प्रकृतियोंको बाधता है । इन दश प्रत्ययोंमेंसे
 लोभसजलनको अलग करदेनेपर नौ प्रत्यय होते ह (९) । ये नौ उपदान्तरूपाय और
 क्षीणरूपाय जीवोंके द्वारा बाध जायेवाली प्रकृतियोंके प्रत्यय ह । इनमेंसे मध्यम

१ अग्रतो 'अपुव्वकरणपइइउममा' इति पाठ ।

२ प्रतिपु 'सापराइया' इति पाठ ।

अस्मद्व्यक्त्यानेतेषु पश्चिन्तेषु सत्तं होति । ७ । एंहि सजहि पञ्चाति सजोगिनिना
यधदि । एत उपसहस्रगाद्याओ —

चतुष्पञ्चदशो यथा पञ्च उग्रमिनिष निचडभा' ।
मिममभिदिओ उग्रमिदृग च सेगदमष्टि' ॥ २० ॥

उग्रमिनिष पुण दृपचओ जोगपञ्चओ निण ।
ममपञ्चया नडु अट्टणग हानि मस्मा' ॥ २१ ॥

पणउणगा इ वणगा निगउ ग्राउ मत्तनीमा य ।
चदुओम ऽ ग्राउसा साग्म एगुग नान नउ सत्त' ॥ २२ ॥

सपथि एगममद्व्यउत्तरुत्तरपञ्च चोदमनीउसमायेसु भणिस्मामो । त जहा —

दो दो अर्धात् दृषा और सत्यदृषा मन और चचन योगोत्सो अल्प कथे अर्धादिकमिध्र य
कामन काययोगको मिला देनेपर स्वात होते हैं (७) । इन सात प्रत्ययोंमें स्वयोगी निन
[एक सावाग्नेदनीयको] धाधते हैं । यहा उपसहस्रगाद्याये —

प्रथम गुणस्थानमें चारों प्रत्ययोंमें यध होता है । इससे ऊपर तीन गुणस्थानोंमें
मिथ्यात्वरों छोटकर दोष तीन प्रत्ययसमुच्च यध होता है । द्वेष्टमयत गुणस्थानमें
मिथ्यरूप अर्थात् विरलाविरतरूप द्वितीय प्रत्यय और कथाय ये योग ये दोष दोनों उपरिम
प्रत्यय रहते हैं । इसके ऊपर पांच गुणस्थानोंमें कथाय और योग इन दो प्रत्ययोंके निमित्तसे
यध होता है । पुन उपशातमेहादि तीन गुणस्थानोंमें कथय योगनिमित्तक यध होता
है । इस प्रकार गुणस्थान प्रक्रमे आठ कर्मोंके ये नामांश प्रत्यय हैं ॥ २०-२२ ॥

पचयन, पचास', तेतालीस', छयालीस', सैंतीस', चौतीस', दो घाग बार्हिस',
सोह' और इसके आगे नौ तरु एक एक कम अर्थात् पट्टह, चौदह, तेरह, बारह,
ग्यारह, दश, नव, ना', नौ' और सात', इस प्रकार प्रक्रमे मिथ्यागादि अपूर्णकरण
तरु आठ गुणस्थानोंमें, अनिर्गुत्तरकरणये सात भागोंमें तथा सूक्ष्ममाप्पतायादि संयोग
केजली तक दोष गुणस्थानोंमें यधप्रत्ययोंकी सख्या है ॥ २० ॥

अथ एक समपथे होनेवाले उत्तरोत्तर प्रत्ययोंकी चौदह जीतसमाप्त्योंमें कहते हैं ।

१ अग्रता 'उग्रमिनिषपञ्चदश', वाग्रता 'उग्रमिनिष चप पञ्चदश' इति पाठ ।

२ अग्रता 'समगलेमहि', वाग्रता 'दसदेसहि' इति पाठ । चतुष्पञ्चदशा कथा पथे णतरानिग
निपञ्चदशा । मिस्तमभिदिय उग्रमिदृग च देसमदेसमि ॥ गो क ७८७

३ गो क ७८८

४ पणउणगा पणगाया निदळ बोदात् सचवापा य । चदुओम वातीसा बारीमयुउररणी ति ॥ धूले
घोडमपहुदी गुरा ज्ञान हादि दस ठण । छुदुवादिदु दम नवय जोगिनि सत्तया ॥ या न ७८९-७९०

५ अग्रता 'यधयि' इति पाठ ।

तत्थ तां मि-ठाइडिस्म, जहण्णेण दस पच्चया । पचसु मिच्छतेसु एक्को । एक्केण इदिण एक्क काय जहण्णेण निराहेदि [ति] दोणिण अमजमपच्चया । अणताणुववि-
चउक्क विमज्जिय मिच्छत गयस्स आपलियमेत्तकालमणताणुवविचउक्कस्सुदयाभावादो
चारससु कमाएसु तिणिण कसायपच्चया । तिसु वेदेषु एक्को । हस्स रदि-अरदि सोगदोसु
जुगलेसु एक्कदर जुगल । दससु जोगेसु एक्को जोगो । एवमेदे सत्वे वि जहण्णेण दस
पच्चया [१०] । पचसु मिच्छतेसु एक्को । एक्केण इदिण उक्काए निराहेदि ति सत्त असजम-
पच्चया । सोलमेसु कमाएसु चत्तारि कमायपच्चया [३] । तिसु वेदेषु एक्को । हस्स रदि-
अरदि सोगदोजुगलेसु एक्क जुगल । मय दुगुज्जाओ दोणिण । तेरसेसु जोगपच्चएसु एक्को ।
एवमेदे सत्वे वि अट्ठारस होति [१८] । एवमेदेहि दस-अट्ठारसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि मिच्छा-
इड्डी अप्पिदसोलमपयडीओ वधड ।

एक्केणिदिण एक्क काय निराहेदि ति दोअमजमपच्चया । सोलमेसु कमाएसु
चत्तारि कमायपच्चया । तिसु वेदेषु एक्को वेदपच्चओ । हस्स रदि अरदि सोगदोजुगलेसु
एक्कदर जुगल । तेरससु जोगेसु एक्को । एव जहण्णेण सामणस्स दस पच्चया होति [१०] ।
उक्कसेण सत्तरस पच्चया होति, मिच्छतस्सुदयाभावादो [१७] । एवमेदेहि जहण्णुक्कस्स-

यह इस प्रकार है-उनमें मिथ्यादृष्टि के जघन्यमे दश प्रत्यय होते हैं । पांच मिथ्यात्वोंमेंसे एक,
मिथ्यादृष्टि एक इन्द्रियसे एक कायकी जघन्यसे विराधना करता है, इस प्रकार दो
असयम प्रत्यय, अनन्तानुबन्धिवचतुष्टयका विसंयोजन करने मिथ्यात्वको प्राप्त हुए जीवके
आचलीमान काल तक अनन्तानुबन्धिवचतुष्टयका उद्भय न रहनेसे बारह कथायोंमें तीन
कथाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हान्य रति और अरति शोक इन दो युगलोंमेंसे एक युगल,
तथा दश योगोंमें एक योग, इस प्रकार ये सब ही जघन्यमे दश प्रत्यय होते हैं (१०) । पांच
मिथ्यात्वोंमें एक, एक इन्द्रियसे छह कायोंकी निराधना करता है, अतः सात असयम
प्रत्यय, सोलह कथायोंमें चार कथाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हान्य रति और अरति शोक
इन दो युगलोंमें एक युगल, मय व जुगुत्सा दो, तेरह योग प्रत्ययोंमेंसे एक, इस प्रकार
ये सभी अठारह होते हैं (१८) । इस प्रकार इन जघन्य दश और उत्कृष्ट अठारह प्रत्ययोंसे
मिथ्यादृष्टि जीव निवक्षित सोलह प्रकृतियोंको ग्राहता है ।

एक इन्द्रियसे एक कायकी निराधना करता है इस प्रकार दो असयम प्रत्यय,
सोलह कथायोंमें चार कथाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक वेद प्रत्यय, हान्य रति और अरति
शोक इन दो युगलोंमें एक युगल, तेरह योगोंमें एक योग, इस प्रकार सासादतसम्पददृष्टि
जघन्यमे दश (१०) और उत्कर्षसे सत्तरह प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उसके मिथ्यात्वका उद्भय
नहीं रहता (१७) । इस प्रकार क्रमसे इन जघन्य और उत्कृष्ट दश व सत्तरह प्रत्ययोंसे

दस सत्तारमपञ्चद्वि मामणममादिद्वि अपिदमोत्तमपयदीश्रो नरति ।

एक्केणिदिण एक्क काय त्रिगहदि ति दो अमंजमपञ्चया । अणताणुवधि चटुक्कपदिरित्तधारमकमाण्णु तिणि कमायपञ्चया । तिसु वेदेषु एक्को । हस्म रदि अग्दि सोगदोजुगलेसु एक्क । त्सु जोगेसु एक्को । एमंदे मन्ने वि णय हँति । ॥ १० ॥ एक्केणिदिण छक्काण त्रिगहदि ति मन अमंजमप चया । अणताणुवधिरिहिनारमकमाण्णु तिणि कमायपञ्चया । तिसु वेदेषु एक्को । हस्म रदि-अग्दि सोगदोजुगलेसु एक्कन जुगल । दो भय दुगुछओ । दमसु जोगेसु एक्को । एमंदे मंत्तम पञ्चया । ॥ ११ ॥ एदेहि जहण्णुक्कस्सणन मोत्तसप चण्हि मम्मामि ठाट्ठी अमंजममाइट्ठी च अपिदमोत्तमपयदीश्रो यधदि ।

एक्केणिदिण एक्क काय त्रिगहदि ति दो असजमपञ्चया । अणताणुवधि-अ चक्काणचउत्तरिहदिअट्ठकमाण्णु त्ते कमायपञ्चया । तिसु वेदेषु एक्को । हस्म रदि-अग्दि सोगदोजुगलेसु एक्क । णजोगेसु एक्को । एमंदे अट्ठ । ॥ १२ ॥ एक्केणिदिण पक्काण विराहदि ति छमंजमपञ्चया । दो कमायपञ्चया । एक्को वेदपञ्चओ । हस्म रदि-अग्दि सोग

सामादनसम्यग्द्वि त्रिभिक्षिण सालह प्रतियोको रात्रता है ।

एक इन्द्रियसे एक वायकी त्रिराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय, अनन्ताणुवधचतुष्टयको छोड़कर शेष बारह कर्मायोंमें तीन कर्माय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हास्य रति और अग्नि शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, दश योगोंमेंसे एक, इस प्रकार ये सभी नौ प्रत्यय होते हैं (९) । एक इन्द्रियसे छह कर्मायोंकी त्रिराधना करना है इस प्रकार सान असंयम प्रत्यय, अनन्ताणुवध्याग्नि रहित बारह कर्मायोंमें तीन कर्माय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हास्य-रति और अग्नि-शोक इन दो युगलोंमें एक युगल, भय और जुगुप्सा ये दो, दश योगोंमें एक, इस प्रकार ये सोलह प्रत्यय होते हैं (१६) । इन जयन्त्य और उत्कृष्ट नौ और सोलह प्रत्ययोंसे सम्यग्मिव्याद्वि और असंयतसम्यग्द्वि ओर त्रिभिक्षिण सालह प्रतियोको राधता है ।

एक इन्द्रियसे एक वायकी त्रिराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय, अनन्ताणुवधचतुष्टय और अन्यत्यागानाउत्तमचतुष्टयमें रहित आठ कर्मायोंमें दो कर्माय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हास्य रति और अग्नि-शोक इन दो युगलोंमें एक, नौ योगोंमें एक, इस प्रकार ये आठ प्रत्यय हात हैं (८) । एक इन्द्रियसे पांच कर्मायोंकी त्रिराधना करता है इस प्रकार छह असंयम प्रत्यय, दो कर्माय प्रत्यय, एक वेद प्रत्यय, हास्य-रति और अग्नि शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, भय और जुगुप्सा, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इस

दोण्हं जुगलाणमेन्कदर । भय दुगुछाओ । णजजेगेसु एन्को । एन्मेदे चोह्म । १४ । एदेहि जहण्णुक्कस्मअट्ट-चोहसपञ्चएहि सजदासजदो अप्पिदसोलमपयडीओ वधदि ।

चट्टसजलणेसु एन्को कसायपञ्चओ । तिसु वेदेसु एन्को । हस्म रदि अरदि-सोग-दोण्हं जुगलाणमेन्कदर । णजसु जेगेसु एन्को । एन्मेदे पच जहण्णेण पञ्चया । ५ । एन्को कमायपञ्चओ । एको वेदपञ्चओ । हस्म रदि अरदि-सोगदोण्ण जुगलाणमेन्कदर । भयदुगुछाओ । णवसु जेगेसु एन्को । एन्मेदे सत्तन्कस्मपञ्चया । ७ । एन्मेदेहि जहण्णुक्कस्सपच-सत्त-पञ्चएहि पमत्तसजदो अप्पमत्तमजदो अपुव्वकरणो च अप्पिदपयडीओ वधदि ।

एन्को सजलणकमाओ । एन्को जोगो । एन्मेदे जहण्णेण दो पञ्चया । २ । उन्कस्सेण तिण्णि वेदेण सह । ३ । एदेहि जहण्णुक्कस्सदो-तिण्णिपञ्चएहि अणियट्ठी अप्पिदसोलसपयडीओ वधदि ।

लोभकमाओ एन्को । [एन्को] जोगपञ्चओ । एन्मेदेहि जहण्णेण उन्कस्सेण वि दोहि पञ्चएहि सुट्टमसापराडओ अप्पिदपयडीओ वधदि । ऊपरि उममतकसाओ खीणकमाओ सजोगी च एक्केण चैव जेगेण वधति । एत्थ उवमहारगाहा—

प्रकार ये चौदह प्रत्यय ह । इन जघन्य ओर उत्कृष्ट आठ उ चौदह प्रत्ययोंसे सयतामंयत जीव विवक्षित मोलह प्रवृत्तियोंको बाधता है ।

चार सजलनोंमेंसे एक कपाय प्रत्यय, तीन वेदोंमेंसे एक, हास्य-रति और भरति शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इस प्रकार जघन्यसे ये पाच प्रत्यय हैं (५) । एक कपाय प्रत्यय, एक वेद प्रत्यय, हास्य-रति और भरति शोक इन दो युगलोंमेंसे एक युगल, भय ओर जुगुप्सा, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इन प्रकार ये सात उत्कृष्ट प्रत्यय ह (७) । इस प्रकार इन जघन्य और उत्कृष्ट पाच व सात प्रत्ययोंसे प्रमत्तसयत, धममत्तसयत और अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीव विवक्षित प्रवृत्तियोंको बाधता है ।

एक सजलनकपाय और एक योग इस प्रकार ये जघन्यसे दो प्रत्यय (२), तथा उत्कर्षसे वेदके साथ तीन (३), इस प्रकार इन जघन्य और उत्कृष्ट दो व तीन प्रत्ययोंसे धनितृस्तिकरण गुणस्थानवर्ती जीव विवक्षित सोढह प्रवृत्तियोंको बाधता है । लोभकपाय एक और एक योग प्रत्यय, इस प्रकार इन जघन्य व उत्कर्षमें भी दो प्रत्ययोंसे सूक्ष्मसाग्य-रायिक जीव विवक्षित प्रवृत्तियोंको बाधता है । इससे ऊपर उपशावकपाय, क्षीणकपाय और सयोगिकेयर्त्त फेरल एक योगसे ही बन्धक है । यहा उपसहारगाथा—

दम अट्टरम सय सत्तह णर सोलम च दोण तु ।

अट्ट य चोदस पणय मत्त निण दू नि दू एयमय च' ॥ २३ ॥

रिगडमजुतो ? एदिस्मे पुच्छए चोदसजीउसमामपडिउद्धो उत्तरो तुच्चदे । त
जहा— मिच्छादिही चदुगणिसजुत्त रयति । णवरि उच्चागोद णिरय तिरिक्खगइ मोत्तूण
दुगणिसजुत्त वधदि । जसकिंति णिरयगइ मोत्तूण तिगदिसजुत्त वधदि । मासणो चोदस-
पयडीओ णिरयगइ मोत्तूण तिगदिसजुत्त वधति । उच्चागोद णिरय तिरिक्खगइओ मोत्तूण
दुगदिसजुत्त वधति । जसकिंति पुण णिरयगइ मोत्तूण तिगडसजुत्त वधदि । सम्मामिच्छादिही
असत्तसम्मादिही च मोत्तमपयडीओ णिरयगइ तिरिक्खगइओ मोत्तूण दुगडसजुत्त वधदि ।
सजदामजदपट्टि जाय अपुव्वकरणद्वाए मवेजे भागे गत्तूण डिदा त्ति अपिदसोलमपयडीओ
देवगदिसजुत्त वधति । उवगिमा जगदिसजुत्त वधति ।

कादिगदीया सामिणो ? एदिस्मे पुच्छए परिहारो वुच्चदे— मिच्छादिही चदुगदिया

मिथ्यात्व गुणस्थानमें दश व नडारह, मासादनमें दश व सत्तरह, दो गुणस्थानोंमें
अधातु मिथ्र और अतिरतसम्पत्तिमें नौ व सोलह, सयतासयतमें आठ
और चोदह, प्रमत्तसयतादिष तीनमें पाच व सात, अनित्यत्तिरुणमें द्यो व तीन, सूक्ष्म
साम्परायमें दो, तथा उपजातत्वाय, शोणत्वाय पर सयोगिरेरणी गुणस्थानोंमें एकमात्र,
इस प्रकार एक जीउने एक समयमें जगत्त व उत्पत्ति पन्धप्रत्यय पाये जाते हैं ॥ २३ ॥

‘धीनसा गतिस सयुक्त राधक हे ?’ इस प्रश्नका चोदह जीउसमात्तोंसे सम्बन्ध
उत्तर रहते हैं । यह इस प्रकार है— मिथ्यादिष्टि जाय चारों गतियोंसे सयुक्त उक्त
प्रतियौका बाधक है । विशेष इतना है कि उच्चगोत्रको नरकगति और तिर्यग्गतिको
छोडकर शय ने गतियोंसे सयुक्त बाधता है । यशस्वीनिका नरकगतिको छोडकर तीन
गतियोंसे सयुक्त बाधता है । सात्वादन गुणस्थानम चोदह प्रतियौको नरकगतिको
छोड तीन गतियोंसे सयुक्त बाधता है, उच्चगोत्रको नरक व तिर्यग्गतिका छोड़ शय
दो गतियोंसे सयुक्त बाधता है । विस्तु यशस्वीनिको नरकगतिसे छोड़ शय तीन गतियोंसे
सयुक्त बाधता है । सम्यग्मिथ्यादिष्टि और असयतसम्पत्ति जीव सोलह प्रतियौको
नरकगति व तिर्यग्गतिको छोड़ दो गतिसयुक्त बाधते हैं । सयतासयतमे लेकर अपुव्वकरण
कालके मरणात् बहुभाग जाकर भिन्न जीव प्रजिज्ञित भोग्ग प्रतियौको देवगतिस्सयुक्त
बाधते हैं । इससे ऊपरके जीव अगतिसयुक्त बाधते हैं ।

‘उन प्रकृतियोंके भित्तने गतिवाचे चीज
महते हैं— मिथ्यादिष्टि चारों गतियोंके ज’

ह ? इस प्रश्नका परिहार
है— मिथ्यादिष्टि, सम्यग्मिथ्या

सामिणो । सामणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असजदसम्माइट्ठिणो नि चट्ठगदिया सामिणो । दुगदिसजदामजदा सामिणो । उवरिमा मणुसगदिया चेव । अट्ठाण सुत्तसिद्ध । पढम-अपढमचरिम चरिमसमयनधवोच्छेदपुच्छाविमयपरूवणा वि सुत्तसिद्धा चेव ।

किं सादिओ किमणादिओ किं ध्रुवो किमद्धवो बंधो ति एदिस्से पुच्छाए वुच्चदे—
चोदमपयडीण वधो मिच्छाइट्ठिस्स सादिओ, उवसमसेडिहि उधवोच्छेद कादूण हेट्ठा ओदरिय वधस्सादिं करिय पडिवण्णमिच्छत्ताण सादियनधोउलभादो । अणादिगो, उवसम-सेडिमणारूढमिच्छादिट्ठिजीराण वधस्स आदीए अमावादो । ध्रुवो वधो, अभवियमिच्छादिट्ठिण वधस्स वोच्छेदाभावादो । अद्धवो, उवसम-उत्तमगेहिं चडणपाओग्गमिच्छाइट्ठिनधस्स ध्रुवत्ता-भावादो । जसकिति उच्चागोदाण पि एउ चेव । णउरि अणादि ध्रुवनधा णत्थि, अजसकिति-णाचागोदाण पडिवन्त्ताण मभवादो । सच्चगुणट्ठाणेषु सेसेसु चोदसध्रुवपयडीओ सादि-अणादि-अद्धवमिदि तिहि वियण्णेहि वज्जति । ध्रुवमगो णत्थि, तेसिं भवियाण णियमेण वधवोच्छेद-

दृष्टि और असयतमव्यवृष्टि भी चारों गतियोंके जीव स्वामी हैं । दो गतियोंके सयतासयत जीव स्वामी हैं । उपनिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव स्वामी हैं । यन्धुध्वान सूत्रसे सिद्ध है । प्रथम, अप्रथम अचरम और चरम समयमें होनेवाले यन्ध-व्युच्छेद-समर्थी प्रश्राविषयक प्ररूपणा भी सूत्रसिद्ध ही है ।

अब 'क्या सादिक यन्ध होता है, क्या अनादिक यन्ध होता है, क्या ध्रुव यन्ध होता है, या क्या अध्रुव यन्ध होता है?' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं—चौदह प्रकृतियोंका यन्ध मिथ्यादृष्टिके सादिक होता है, क्योंकि, उपशमश्रेणीमें यन्धव्युच्छेद करके पुन नचि उतरकर यन्धका प्रारम्भ करके मिथ्यात्वको प्राप्त हुए जीवोंके सादिक यन्ध पाया जाता है । अनादिक यन्ध होता है, क्योंकि, उपशमश्रेणीपर नहा चढ़े हुए मिथ्यादृष्टि जीवोंके यन्धके आदिका अभाव है । ध्रुव यन्ध होता है, क्योंकि, अभय मिथ्यादृष्टि जीवोंके यन्धका कभी व्युच्छेद नहीं होता । अध्रुव यन्ध होता है, क्योंकि, उपशम और क्षपक श्रेणीपर चढ़नेके योग्य मिथ्यादृष्टि जीवोंका यन्ध ध्रुव नहीं होता । यशस्विति और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका भी मिथ्यादृष्टिके इसी प्रकार ही यन्ध होता है । विशेष इतना है कि इन दोनों प्रकृतियोंका उसके अनादि और ध्रुव यन्ध नहीं होता, क्योंकि, इनकी प्रतिपन्नभूत अयशस्विति और नीच गोत्रका यन्ध सम्भव है । शेष सब गुणस्थानोंमें चौदह ध्रुवप्रकृतियां सादि, अनादि और अध्रुव इन तीन विधियोंमें यधती हैं । उहा ध्रुव भग नहीं है, क्योंकि, उन भव्य जीवोंके

सभवादो । जसकिति-उच्चागोदाण पुण उधो सच्चगुणद्वान्सु सादि-अद्वयो चेव ।

णिदाणिदा पयलापयला थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोह-माण-
माया लोभ इत्यिवेद तिरिक्साउ तिरिस्खगइ-चउसठाण-चउसघडण-
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्वि उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ दुभग-दुस्सर-
अणादेज्ज णीचागोदाणं को वधो को अवधो ? ॥ ७ ॥

एउ पुच्छासुत्त देसामासिय च । तेण किं मिच्छाडइ वधओ किं सासणसम्माइही
वधओ किं सम्मामिच्छाडइ वधओ एव गतूण किमोमी किं मिद्धा वधओ, किमेदेसि कम्माण
वधो पुत्र वोच्छिज्जदि, किमुदओ, किं दे। पि सम वोच्छिज्जति, एवाओ किं सोदएण वज्झति
किं परोदएण, किं सोदय-परोदएण, किं सातर वज्झति, किं णिरतर वज्झति, किं सातर णिरतर
वज्झति, किं पच्चएहि वज्झति, किं पच्चणहि निणा वज्झति, किं गइसजुत्त वज्झति, किमगइ-
सजुत्त वज्झति, कदिगदिया एदेयि वधमामिणो होति, कदिगदिया ण होति, किं वा नपद्धाण,
किं चरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि, किं पढममए, किमपढम अचरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि,

नियमने उध-पुच्छेद सम्मव हे । परन्तु यशनीति ओर उच्चगोत्र प्रकृतियाका बन्ध सर्व
गुणस्यान्तर्गते मादि ओर अधुन ही होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनंतानुगन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,
रौपेद, तिर्यगायु, तिर्यगति, चार सस्थान, चार सहनन, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत,
अप्रशस्तनिद्रायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनदेय और नीचगोन, इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक
है और कौन अनन्तरक ? ॥ ७ ॥

यह पृच्छसूत्र भी देशामर्शक है । अतएव क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या साम्ना
दानसम्यग्दृष्टि उधर है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि उधर है, इस प्रकार जाकर क्या अयोगी
बन्धक है, क्या सिद्ध बन्धक है, क्या इन कर्मोंका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या
उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या दोनों साथ ही व्युच्छिन्न होते हैं ये प्रकृतियां क्या
स्वोत्पन्ने वधती है, क्या परोदयस उधती है, क्या स्वोदय परोदयसे वधती है, क्या
सातर वधती है, क्या निरतर वधती है, क्या सातर निरतर उधती है, क्या प्रत्ययोंसे
वधती है, क्या निना प्रत्ययोंसे उधती है क्या गतिसयुक्त उधती है, क्या अगतिसयुक्त
वधती है इन कर्मोंके उधर स्वामी निन गतियोंवाले होते हैं व निन गतियोंवाले नहीं
होते, यथाप्याप्त जितना है, क्या चरम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्या प्रथम
समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्या अप्रथम अचरम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है,

किमेदामि सादिओ वधो, किमणादिओ, किं धुवो, किमद्वुवो वधो ति एदाओ पुच्छाओ एत्थ
रुदन्नाओ । एदासि पुच्छाणमुत्तरपरुणइमुत्तरसुत्त मणदि—

**मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा
अवंधा ॥ ८ ॥**

एद देसामामियसुत्त, सामित्तरुणपरुणदोरेण पुच्छसुत्तद्विद्वसव्वत्थपरुवणादो ।
सामित्तरुण च सुत्तादो चेत्त जच्चदि ति ण तेसित्तो वुच्चदे । किमेदासि वधो पुत्त
वोच्छिज्जेदे, किमुदओ पुत्त वोच्छिज्जेदे, एदस्सन्यो वुच्चदे— थीणगिद्धितियस्स पुत्त वधो
वोच्छिणो, पच्छा उदयस्स वोच्छेदो, मामणमम्मादिट्ठिचरिमसमए वधे फिट्ठे सते पच्छा
उपरि गतूण पमत्तमज्जग्गि उदययोच्छेदोअलमादो । अणताणुगधिचउक्कस्स उधोदया सम
फिट्ठति, सामणसम्माइट्ठिचरिमसमए एदेमि वधोदयाण जुगण वोच्छेददसणादो । इत्थिवेदस्स
पुत्त वधो पच्छा उदओ वोच्छिणो, सासणमि वधे वोच्छिणे पच्छा उपरि गतूण अणि-
यट्ठिम्ह उदययोच्छेदादो । एव तिरिस्खाउ-तिरिस्सगड तिरिस्सगइपाओमाणुपुत्ति-उज्जोव-

—

क्या इन प्रकृतियोंका सादिक ग्रन्थ है, क्या अनादिक ग्रन्थ है, क्या ध्रुव ग्रन्थ है, या
क्या अध्रुव ग्रन्थ है, इस प्रकार ये प्रश्न यहाँ करना चाहिये । इन प्रश्नोंका उत्तर कहनेके
लिये अगला सूत्र कहते हैं—

**उपर्युक्त प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव बन्धक हैं । ये बन्धक
हैं, शेष जीव अनन्धक हैं ॥ ८ ॥**

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, बन्धके स्थापित्य और अध्यानकी प्ररूपणा द्वारा
यह पृच्छासूत्रमें उद्दिष्ट मन व्यक्तिकी निरूपण करता है । बन्धस्थापित्य और अध्यान
चूकिते सूत्रसे ही जाना जाता है अतः इन दोनोंका अर्थ यहाँ नहीं कहा जाता । 'क्या इनका
ग्रन्थ पहिले व्युत्पन्न होता है या उदय पहिले व्युत्पन्न होता है ?' इसका अर्थ कहते
हैं— स्थानानुद्धि आदि तीन प्रकृतियोंका पूर्वमें ग्रन्थ व्युत्पन्न होता है, तत्पश्चात् उदयका
व्युत्पन्न होता है, क्योंकि सासादनसम्यग्दृष्टिके चरम समयमें ग्रन्थके नष्ट होनेपर पश्चात्
ऊपर जाकर प्रसक्तसमयमें इनके उदयका व्युत्पन्न पाया जाता है । अनन्तानुगन्धिचतु
ष्टयका बन्ध और उदय दोनों साथ नष्ट होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टिके चरम
समयमें इनके ग्रन्थ और उदयका एक साथ व्युत्पन्न देखा जाता है । रूपादेका पूर्वमें
बन्ध पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है, क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें बन्धके व्युत्पन्न
होनेपर तत्पश्चात् ऊपर जाकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें उदयका व्युत्पन्न होता है ।
इसी प्रकार तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वा, उद्योत और नीचगोत्र प्रकृति

पीचागोदाणि, सासणम्मि नधोच्छेदे जादे पच्छा उवरिं गतूण सजदासजदम्मि उदय-
वोच्छेदादो, तिरिकपाणुपुत्रीए असजदसम्माडडिहि उदयवोच्छेदुत्तमादो । एण मज्झिम-
चदुसअणाणि, सासणम्मि वधे थक्के संते उवरि गतूण सजोगिहि उदयवोच्छेदादो । एव
चेव मज्झिमचदुसअणाणि, सामणम्मि नधे थक्के संते उवरि अपमत-उवसतकसाएमु कमेण
दोण्ण दोण्णमुदयवसयदसणादो । एण अपमतयनिहायगदीए, सामणम्मि वधे थक्के संते
उवरि सजोगिहि उदयवोच्छेदादो । एण दुभग अणादेज्जाण वत्तअ, सासणम्मि वधे थक्के
उवरि असजदसम्मादिडिहि उदयवोच्छेदो । एण दुस्सरस्स वि वत्तअ, सासणम्मि नधे थक्के
सजोगिकेवलिहि उदयवोच्छेदादो ।

किं सोदण्ण किं परोदण्ण किमुभण्ण वड्ढति ति पुच्छाए उत्तगे वुचंते । त जहा-
धीणगिद्धितियमित्थिवेत्तिरिक्काउअ तिरिक्कागइ चदुसअणाणि चदुसअणाणि तिरिक्का
गदिपाभोगाणुपुत्थि उज्जेअ अपमतयनिहायगदिसणत्ताणुअधिचदुत्तक दुभग-दुम्मर-अणादेज्ज
पीचागोदाणि च मिच्छादिडि-सासणसम्माडडिणे सोदण्ण वि परोदण्ण वि वड्ढति, विरोहा

योंना पूर्वमें वध युक्तिगत होता है, तत्पश्चात् उदयना व्युत्प्रेद होता है, क्योंकि सासा-
दनगुणस्थानमें वधका व्युत्प्रेद हो जानेपर पश्चात् ऊपर जान सयतासयत गुणस्थानमें
उदयका व्युत्प्रेद होता है, तथा तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वार्थे उदयना व्युत्प्रेद असयत
सम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें पाया जाता है । इसी प्रकार मध्यम चार सस्थानोंका पूर्वमें वध
व्युत्प्रेद होता है, तत्पश्चात् उदयना व्युत्प्रेद होता है, क्योंकि सामादन गुणस्थानमें
वध के रक जानेपर ऊपर जाकर सयोगकेगली गुणस्थानमें उदयका व्युत्प्रेद होता है ।
इसी प्रकार ही मध्यम चार सहनन ह, क्योंकि, सामादनगुणस्थानमें इनके वधके रक
जानेपर ऊपर अपमतसयत और उपशान्तकपाय गुणस्थानमें वधसे दो दो सहननोंका
उदयसय देखा जाता है । इसी प्रकार अपशान्तनिहायोगतिका भी कथन करना चाहिये,
क्योंकि, सामादनगुणस्थानमें वधके रक जानेपर ऊपर सयोगकेगली उदयना व्युत्प्रेद
होता है । इसी प्रकार दुभग और अनादेयका कथन करना चाहिये, क्योंकि, सामादनमें
वधके रक जानेपर ऊपर असयतसम्यग्दृष्टिमें उदयका व्युत्प्रेद होता है । इसी प्रकार
दुम्मरका भी कहना चाहिये, क्योंकि, सामादनमें वधके रक जानेपर सयोगकेगलीमें
उदयका व्युत्प्रेद होता है ।

‘उपपुत्त मरुत्तिया क्या स्रोदयसे क्या परोदयसे या क्या स परोदय उभयरूपसे
वधती है?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं। यह इस प्रकार है—स्थानगुत्तिवध, खावेद, तियं
गायु तियग्गति, चार सस्थान, चार सहनन, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वार्थ, उद्योत, अपशान्त
निहायोगति, अनत्ताणुअधिचनुत्तक, दुभग, दुम्मर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रवृत्तियोंको
मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्यग्दृष्टि स्रोदयसे भी और परोदयसे भी वाधते हैं, क्योंकि,

भावादो ।

किं सातर किं णितर किं सातर णितर वज्झति ति एदस्मत्थो वुच्चदे— थीण-
गिद्धितियमणत्ताणुनधिचउत्तक च णितर उज्झड', वुत्तपित्तादो । इत्थिवेदो मिच्छाइडि सासण-
सम्मादिड्डीहि मातर उज्झड, वधमद्वाए खीणाए णियमेण पडिउत्तपयडीण वधसभवादो ।
तिरिस्सखउअ मिच्छाइडि-मामणमम्मादिड्डीहि णितर उज्झड, अद्दाम्मएण वधस्स थन्कणा-
भावादो । तिरिस्सखगड-तिरिस्सखगडपाओग्गाणुपुत्तीओ मातर णितर वज्झति ।

होदु मातरग्घो, पडिउत्तपयडीण वधुवलभादो, ण णितरग्घो, तस्स कारणाणु-
वलभादो ति वुत्ते वुच्चदे— ण एस दोसो, तेउत्तकाडय-वाउत्तकाडयमिच्छाइडीण सत्तमपुडि-
णेइयमिच्छाइडीण च भवपडिउत्तमकिलेमेण णितरग्घोवलभादो । सासणसम्माइडिणो दोणण
पयडीणमेदामि क' णितरग्घया ? ण, सत्तमपुडिउत्तममाण तिरिस्सखगड भोत्तूणणगईण यथा-
भावादो ?

हममें कोई विरोध नहीं है ।

‘ उक्त प्रवृत्तिया क्या सान्तर, क्या निरन्तर, या क्या सान्तर निरन्तर पड़ती ह ? ’
इसका अर्थ कहते हैं—स्थानवृद्धिग्रय और अनन्तानुबन्धिततुल्य निरन्तर पड़ती ह,
क्योंकि, ये भूयग्रन्थी प्रवृत्तिया ह । स्त्रीप्रेरको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि सान्तर
वाधते हैं, क्योंकि, रन्धककालके क्षीण होनेपर नियमने प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका बन्ध सम्भव
है । तिर्यगायुको मिथ्यादृष्टि ओर सासादनसम्यग्दृष्टि निरन्तर वाधते हैं, क्योंकि, कालके
क्षयसे रन्धके न्कनेका अभाव है । तिर्यग्गति और तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सान्तर-
निरन्तर वाधते हैं ।

शुका—प्रतिपक्षभूत प्रवृत्तियोंके रन्धकी उपलब्धि होनेसे सान्तर रन्त्र भले ही
हो, किन्तु निरन्तर रन्ध नहीं हो सक्ता, क्योंकि उसके कारणोंका अभाव है ?

समाधान—इस शकाका उत्तर कहते हैं कि यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि,
तेजकायिक और वायुकायिक मिथ्यादृष्टियों तथा सप्तम पृथिवीके नारकी मिथ्यादृष्टियोंके
भयसे सम्यक् सङ्केतके कारण उक्त दोनों प्रवृत्तियोंका निरन्तर रन्ध पाया जाता है ।

शुका—सासादनसम्यग्दृष्टि इन दोनों प्रवृत्तियोंके निरन्तर रन्धक कैसे हैं ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके
तिर्यग्गतिको छोड़कर अन्य गतियोंका रन्ध ही नहीं होता ।

१ अ-आप्रलो ‘ नियम ’ इति पाठ ।

२ अ-आप्रया ‘ वधय ’ अपठनी ‘ वधिय ’ इति पाठ ।

चदुसठाण चदुसघटण-उज्जोअ अपमत्थविहायगदि-दुमग-दुस्सर-अणादेज्जाणमित्थि वेदभगो, सातरचयित षडि भेदाभागादो । णीचागोदस्स तिरिस्सगदिभगो, तेउ वाउक्काडएसु सत्तमपुदविणेरइएसु च णीचागोदस्स णितर उधुत्तमादो ।

किं पच्चणहि वज्झति किं तेहि णिणा, एदस्सत्थो बुच्चदे— मिच्छादिट्ठा मिच्छता सज्जम कसाय जोगमण्हिदचदुहि मूलपचएहि पणवण्णुत्तरपच्चएहि दस अट्ठारमण्णसमय सभनिजहण्णुक्कस्मपच्चएहि य एदाओ पयडीओ वधदि । सामणमम्माइही मिच्छत मोत्ता तीहि मूलपचएहि एचासुत्तपच्चएहि एगसमयसभनिददस मत्तारमजहण्णुक्कस्मपच्चएहि य एदाओ पयडीओ वधदि । णवणि तिरिक्खाउअस्स वेउत्त्रियमिस्स-कम्मदयपच्चएहि विणा तेत्तण ओगानियमिस्सेण च णिणा सत्ताल पचया मिच्छादिट्ठि-सामणाण' होंति ।

गदसज्जुत्तपुच्छाए अयो बुच्चदे । त जहा — वीणगिद्धितिय-अणताणुर्निचउक्क च मिच्छाइही चउगइसज्जुत्त, सासणो णियगईए णिणा तिगडसज्जुत्त वधइ । इत्थिवेद मिच्छा इही सासणो च णियगईए णिणा तिगडमज्जुत्त वधइ । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगड तिरिक्ख

चार मस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रशस्त्रविहायोगनि, दुर्भग, दुस्सर और अनान्य प्रकृतिया एत्रिणैरे समान ह, क्योंकि, सान्तरगिधत्तके प्रति इन प्रकृतियोंमें स्त्रीप्रेमसे कोई भेद नहीं है । नीचगोत्र तियग्गतिके समान है, क्योंकि, नेजकाधिक और यायुकायिज तथा स्वतम पृथिवाने नागनियोंमें नीचगोत्रका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

अथ 'सुमान प्रकृतिया क्या प्रत्ययोंसे उधती है या क्या उनके विना ?' इसका अर्थ कहते हैं—मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्त, असयम, कपाय और योग सजाबाले चार मूल प्रत्ययोंसे, पचउन उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समयमें सम्भव होनेवाले दश और अठारह जघय व उट्टए प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंको बाधते हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मिथ्यात्वको छोड़कर शेष तीन मूल प्रत्ययोंसे, पचास उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समयमें सम्भव दश और सत्तरह जघन्य व उट्टए प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंको बाधते हैं । विशेष यह कि तिर्यग्गायुके धैर्यगतिमि. ३ और कामण काययोगके विना मिथ्यादृष्टिके तिरपन, तथा धैर्यगतिमि. ३, कामण और औदार्यमिथ्यके विना सासादनसम्यग्दृष्टिके सत्तालास प्रत्यय होते हैं ।

गतिमयुक्त प्रदानका उच्चर कहते हैं । वह इस प्रकार है—स्थानगृद्धि आदि तीन रूपा अनन्तानुर्निचचतुष्कको मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंसे सयुक्त और सासादन सम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे सयुक्त बाधता है । स्त्रीप्रेमको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे सयुक्त बाधता है । तिर्यग्गायु, तिर्यग्गति,

गडपाओग्गणुपुन्वि-उज्जेवे मिच्छाइट्ठी सासणो च तिरिक्खगइसंजुत्त वधति । चउसअण-
चउसघडणाणि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्त वधति । अप्पसत्थ-
विहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाणि मिच्छाइट्ठी देवगईए विणा तिगइसंजुत्त, सासणो
देव-णिरयगईहि विणा दुगदिसंजुत्त वधदि ।

कदि गदिया सामिणो ति वुत्ते धीणगिद्धितिय-अणताणुवधिचउक्कादिपयडीण वधस्म
चउग्गइमिच्छाइट्ठी सासणसम्मादिट्ठिणो सामी । वधट्ठाण सासणचरिमसमए वधवोच्छेदो च
सुत्तणिट्ठिदो ति ण पुणो वुच्चदे ।

किमेदासिं पयडीण सादिओ ववओ ति पुच्छासनद्धो अत्थो वुच्चदे । त जहा—
धीणगिद्धितिय अणताणुवधिचउक्काण उवो मिच्छाइट्ठिन्टि सादिओ अणादिओ धुवो अद्धवो
च । सामणम्मि अणाइधुवेण विणा दुवियप्पो । सेमाण पयडीण वधो मिच्छाइट्ठि मासणैसु
सादिगो अद्धवो च ।

णिदा-पयलाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ९ ॥

एद पुच्छासुत्त देसामासिय, तेणेत्थ पुव्वित्तपुच्छाओ सच्चाओ पुच्छिदच्चाओ ।

तिर्यग्गतिप्रयोगानुपूर्वी ओर उद्योतको मिथ्यादृष्टि ओर सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गतिले
सयुक्त बाधते है । चार स्थान और चार महानोंको मिथ्यादृष्टि ओर सासादन-
सम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व अनुप्यगतिले सयुक्त बाधते है । अप्रशस्तत्रिहायोगति, दुर्भग, दुस्वर,
अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि देयगतिके बिना तीन गतियोंसे सयुक्त, ओर सासा-
दनसम्यग्दृष्टि देय व नरक गतिके बिना दो गतियोंसे सयुक्त बाधता है ।

फिरने गतिखाले जीव स्वामी होते हैं, ऐसा कहनेपर उत्तर कहते हैं—स्थान
शुद्धिप्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्क आदि प्रवृत्तियोंके बन्धके चारों गतियाँवाले मिथ्या-
दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान और सासादनके चरम समयमें होने-
वाला बन्धव्युच्छेद सूत्रसे निदिष्ट है, अतः उमें फिरसे नहीं कहने ।

‘क्या इन प्रवृत्तियोंका आदिक बन्ध है ?’ इस प्रश्नसे सम्यग्द्वैतार्थको कहते हैं ।
यह इस प्रकार है—स्थानशुद्धिप्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्का बन्ध मिथ्यादृष्टि गुण-
स्थानमें सादिक, अनादिक, ध्रुव और अध्रुव रूप होता है । सासादन गुणस्थानमें अनादि
और ध्रुवके बिना दो प्रकारका होता है । शेष प्रवृत्तियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादन
दोनों गुणस्थानोंमें सादिक व अध्रुव होता है ।

निद्रा और प्रचला प्रवृत्तियोंका कौन बन्धक है और कौन अवन्धक ? ॥ ९ ॥

यह पृच्छामूत्र देशामर्शक है, अनण्व यहा सर पूवाक प्रश्न पूछना चाहिये ।

पुच्छिमिस्तस्मात् सदेहिणामण्डमुत्तरसुत्त भणदि -

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्टसुद्धिसंजदेसु उवसमा
खवा वधा । अपुव्वकरणद्वाए सखेज्जदिमं भागं गंतूण वंधो
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ १० ॥

एद पि देसामामियसुत्त, वधद्वाण नमसामि अमामिणो च अपुव्वकरणद्वाए अपढम
अचरिममए वधयोच्छेद च भणिदूण सेसत्वे सचिय अण्डाणादो । अपुव्वकरणद्वाए पढम
सत्तमभागे णिहा पयलाण वधो थम्कदि ति एत्थ वत्तव । कथमेद णव्वदे ? परमगुरुवएमादो ।

किमेदेसिं कम्माण उघो पुत्र पच्छा मममुदएण वोच्छिज्जदि ति पुच्छाए णिच्छओ
कीरेदे । एदेसिं वधो पुत्र विणस्पदि, पच्छा उदयस्म वोच्छेदो, अपुव्वकरणद्वाए पढममत्तम
भागे वधे थके सत्त उवरी गतूण खीणकमायस्स दुचरिमसमपन्नि उदयवोच्छेदादो ।

किं सोदएण परोदएण सोदय-परोदएण नज्जति ति पुच्छाए वुच्चदे- एदाओ दो वि
पयडीओ सोदय-परोदएण वज्जति, णाणातरावपचरुस्सेव एदामि धुवोदयत्ताभावादो । किं

शत्रायुक्त शिष्यके स्वदेहको दूर करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिमे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्टशुद्धिसयतोमे उपशमक और क्षपक तक बन्धक
हैं । अपूर्वकरणकालके मर्यातर्णे भाग जाकर बन्ध-युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, दोष
जीव अबन्धक हैं ॥ १० ॥

यह भी वंशामर्शक सूत्र है, क्योंकि यह बन्धाध्यान, बन्धहन्तामी अस्वा मी तथा
अपूर्णकरणकालके प्रथम अचरम समयमें होनेवाले बन्धव्युच्छेदको कहकर दोष अर्थोंको
मूचित कर अवहित है । अपूर्वकरणकालके प्रथम सप्तम भागमें निद्रा और प्रचला
प्रवृत्तियोंका बन्ध रुक जाता है, ऐसा कहा चाहिये ।

शका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

‘क्या इन दोनों कर्मोंका बन्ध उदयसे पूर्व, पश्चात् अथवा साधमें व्युच्छिन्न होता
है ?’ इस प्रश्नका निर्णय करते हैं—इसका बन्ध पूर्वमें नष्ट होता है तत्पश्चात् उदयका
व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके प्रथम सप्तम भागमें बन्धके रुक जानेपर
ऊपर जाकर क्षीणकमाय गुणस्थानके द्विचरम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है ।

‘दोनों कर्म प्रवृत्तियाँ क्या स्वोदय, क्या परोदय या क्या स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं ?’
इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं—ये दोनों ही प्रवृत्तियाँ स्वोदय परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि, पाच
बानावरण और पाच अन्तरायके समान इन दोनों प्रवृत्तियोंके धुवोदयका अभाव है ।

१ प्रतिपु पुन व नसदि १ इति पाठ ।

सातर गिरतर सातर-गिरतर वञ्चति ? एदाओ गिरतर वञ्चति, सत्तेतालधुवपयडीसु पादादो । किं पञ्चएहि वधदि ति पुञ्चाए वुच्चदे— मिच्छाइडी चदुहि मूलपञ्चएहि पणवणणाणा-समयुत्तरपञ्चएहि दस अट्टारसएगसमयजहण्णुक्कस्सपञ्चएहि, सासणो मिच्छत्तेण विणा तिहि मूलपञ्चएहि पचासुत्तरपञ्चएहि दस सत्तारसएगसमयजहण्णुक्कस्सपञ्चएहि, सम्मामिच्छाइडी तिहि मूलपञ्चएहि तेदालुत्तरपञ्चएहि एगसमयणव-सोलमजहण्णुक्कस्सपञ्चएहि, असजदसम्माइडी तिहि मूलपञ्चएहि छादालुत्तरपञ्चएहि एगसमयणव-मोलसजहण्णुक्कस्सपञ्चएहि, सजदासजदो मिस्सा-सजमेण सहिदकसाय जोगदोमूलपञ्चएहि सत्ततीसुत्तरपञ्चएहि एगममइयजड-चोइसजहण्णुक्कस्सपञ्चएहि, पमत्तमजदो दोहि' मूलपञ्चएहि चदुवीसुत्तरपञ्चएहि एगसमयपच-सत्तजहण्णुक्कस्स-पञ्चएहि, अप्पमत्तसजदो अपुच्चरुणो च दोहि मूलपञ्चएहि वारीसुत्तरपञ्चएहि एगममयपच-सत्तजहण्णुक्कस्सपञ्चएहि वधति ।

शका—उक्त दोनों प्रकृतिया क्या सान्तर, निरन्तर या सान्तर निरन्तर वधती हैं?

समाधान—ये दोनों प्रकृतिया निरन्तर वधती हैं, क्योंकि, ये संतालीस भूय प्रकृतियोंके अन्तर्गत हैं ।

‘ये प्रकृतिया किन किन प्रत्ययोंसे वधती हैं ?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं—मिथ्याए हि जीव चार मूल प्रत्ययोंसे, पचयन नाना समय सम्यन्धी उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा दश और अट्टारह एक समय सम्यन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे निर्द्रा एव प्रचला प्रकृतियोंको बाधते हैं । सात्तादनसम्यग्दृष्टि मिथ्याएके त्रिना तीन मूल प्रत्ययोंसे, पचास उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा दश और सत्तरह एक समय सम्यन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं । सम्यग्मिथ्याएहि तीन मूल प्रत्ययोंसे, तेतालीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्यन्धी नौ व सोलह जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं । असयतसम्यग्दृष्टि तीन मूल प्रत्ययोंसे, छयालीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्यन्धी नौ और सोलह जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं । सयतासयन मिथ्र अस्यम (सयमा-सयम) के साथ कपाय एव योग रूप दो मूल प्रत्ययोंसे, सैंतीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्यन्धी आठ व चौदह जघन्य और उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं । प्रमत्तसयत दो मूल प्रत्ययोंसे, चौतीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्यन्धी पांच और सात जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं । अग्रमत्तसयत और अपूर्वकरणगुणस्थानयनी जीव दो मूल प्रत्ययोंसे, चाईस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्यन्धी पांच और सात जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं ।

गइसजुत्तउधपुच्छाए यत्थो— मिच्छाइद्दी चउगइमजुत्त, सासणो तिगइसजुत्त, सम्मामिच्छाइद्दी असजदसम्माइद्दी देव-मणुस्सगइमजुत्त, उवरिमा देवगइसजुत्त णिदा-पयत्तओ दो वि उथति । कदिगादिया सामी, एदिस्से पुच्छाए बुच्चदे— मिच्छाइद्दी सासणसम्माइद्दी सम्मामिच्छाइद्दी असजदसम्माइद्दी चउगइया, दुगदिसजदासजदा, उवरिमा मणुस्सगइया सामी । अद्दाण सुगम । वोळिण्णपदेमो वि सुगमो । किं सादिओ ति पुच्छाए बुच्चदे— मिच्छाइद्दिमिद्दि णिदा-पयत्तण यधो मान्निओ अणादिओ धुवो अद्दुवो ति चटुनियप्पो । सासणादिरुण्णणाणेषु तिवियप्पो, धुवत्ताभावादो । सेस सुगम ।

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवधो ? ॥ ११ ॥

यधो यधयो ति धेतव्यो । एद पुंठसुत्त देसामासिय, सामिपु-छ णिदिसिद्धण मेम-पुच्छानिमयणिदेमाकरणादो । तणेत्थ मव्वपुच्छाओ णिदिसिद्धवाओ । पुच्छिदमिस्सससयफुमणइ-सुत्तसुत्त भणदि—

गतिस्सयुक्त बन्धसम्बन्धी प्रश्नका अर्थ कहने हैं— मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंमें समुत्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंमें समुत्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि द्वय व मनुष्य गतिमें समुत्त, तथा उपरिम जीव देवगतिमें समुत्त निद्रा व प्रचला दोनों प्रवृत्तियोंको बाधने हैं ।

‘कितने गतियोंवाले जीव उक्त दोनों प्रवृत्तियोंके स्वामी हैं ?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि चारों गतियोंवाले, दो गतियोंवाले सयतासयत, तथा उपरिम जीव मनुष्यगतिवाले स्वामी होते हैं । बन्धाभ्यान सुगम है । चरम समयादिरूप बन्ध स्पुच्छिप्रप्रदेश भी सुगम है । ‘उक्त प्रवृत्तियोंका बन्ध क्या सादि है ?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें निद्रा और प्रचला प्रवृत्तियोंका बन्ध सादिक, अनादिक, ध्रुव और अध्रुव इस प्रकार चारों तरहका होता है । सासादनादि गुणस्थानोंमें ध्रुव बाधके न होनेसे दोष तीन प्रकारका बन्ध होता है । दोष सूत्राथ सुगम है ।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ११ ॥

‘बन्ध’ शब्दसे बन्धकरूप अर्थ ग्रहण करना चाहिये । यह पृच्छास्त्र देशामर्शक है, क्योंकि, यह क्यामित्तिपयक पृच्छाका निर्देश करके दोष पृच्छाविषयक निर्देश नहीं करता । इसलिये यहाँ सब पृच्छाओंका निर्देश करना चाहिये । शक्ययुक्त शिष्यके सशयको बरनेक निये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव सजोगिकेवलि ति वंधा । सजोगि-
केवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ १२ ॥

एद पि सुत्त देसामासिय, सामित्तमद्धान उधविणासट्ठाण च भणिदूण्णेसित्थाणम-
णिदेसादो । तेणिदेसिं पक्खणा कीरदे । त जहा— एदस्म वयो पुव्वमुदओ पच्छा
वोच्छिज्जदि, सजोगिचरिमसमये वधे वोच्छिज्जणे सते पच्छा अजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेदादो ।
सादावेदनीय मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव सजोगिकेवलि ति सोदएण परोदएण वि वज्जदि,
सादासादोदेयाण पराउत्तिदसणादो, स-परोदएहि उधविरोहाभावादो च । मिच्छाद्विष्टिपहुडि
जाव पमतो ति सातरो वधो, तत्थ पडिउत्तपयडीए वधमभवादो । उवरि गिरतरो,
पडिक्खपयडीए वधाभावादो । जम्हि जम्हि गुणट्ठाणे जत्तिया जत्तिया मूलपच्चया णाणा-
समयउत्तपच्चया एगसमयजहणुक्कस्सपच्चया च बुत्ता ताणि गुणट्ठाणाणि तेत्तिएहि
पच्चएहि सादावेदनीय वग्गति ।

मिथ्यादृष्टिमे लेकर सयोगिकेवली तक सातावेदनीयके बन्धक हैं । सयोगिकेवलिकालके
अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये उन्धक हैं, शेष जीव अनन्धक
हैं ॥ १२ ॥

यह भी सूत्र देनामर्शक है, क्योंकि, यह स्वामित्व, बन्धाध्यान और बन्धविनाश
स्थानको कहकर अन्य अर्थोंका निर्देश नहीं करता । इस कारण अन्य अर्थोंकी प्ररूपणा
करते हैं । यह इस प्रकार है— सातावेदनीयका उन्ध पूर्वमें और उदय पश्चात् व्युच्छिन्न
होता है, क्योंकि, सयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें बन्धके व्युच्छिन्न होनेपर पीछे अयोग-
केवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । सातावेदनीय मिथ्यादृष्टिमे लेकर
सयोगिकेवली तक स्वोदयने और परोदयसे भी वधता है, क्योंकि, यहा साता और
असाताके उदयमें परिचयन देखा जाता है, तथा स्व परोदयसे बन्ध होनेमें कोई विरोध भी
नहीं है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्त गुणस्थान तरु सातावेदनीयका बन्ध सान्तर है,
क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्ति (असाता) का उन्ध सम्भव है । प्रमत्त गुणस्थानसे ऊपर
निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके उन्धका अभाव है । जिस जिस गुणस्थानमें
जितने जितने मूल प्रत्यय, नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय और एक समय सम्बन्धी जघन्य
य उन्ध प्रत्यय रहे गये हैं, वे गुणस्थान उतने प्रत्ययोंसे सातावेदनीयको बाधते हैं ।

मि छाई छिपरगईए बिणा तिगइसनुत् । अप्पसत्वाए तिरिस्सगईए सह कथ
सादधो ? ज, छिपरगइ व अचतियअप्पमत्थत्तामावादो । एव सामणो वि । सम्मामि छाई
असजसम्माम्हाई दुगइयनुत् वधति छिरय-तिरिस्सगईए बिणा । उवणिमा देवगइसनुत् ।
अपुव्वकरणस्स चरिमसत्तममागप्पहुइ उररे अगदिमनुत् वधति । मिच्छाडिट्टि-सामणसम्माम्हाई
सम्मामिच्छाडिट्टि-अमज्जदसम्माम्हाइणो चदुगदिया, दुगदिसज्जदासज्जदा सामणो, सेमा मणुस
गईए चेव । यधद्वाण यधवोउदद्वाण च सुगम सुत्तुत्तादो । सत्तेसु गुणद्वाणेषु मादा
वेदणीयस्स प्रथो सादि अद्दुवो, सादासादाण परात्तणमरूपेण वधादो ।

**असादावेदणीय अरदि सोग अथिर असुह-अजसकित्तिणामाणं
को वधो को अवंधो ? ॥ १३ ॥**

एद पुत्तासुत्त देसामामिय, तेणेत्य सत्त्वपुत्ताओ कायच्चाओ । अधवा, आमकिय

मिध्यावृष्टि जीव नरकगतिके बिना तीन गतियोंसे समुक्त सातावेदनीयको
वाधते है ।

शका—अप्रशस्त त्रियगगतिके साथ कैसे सातावेदनीयका बन्ध होना सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि त्रियगगति नरकगतिके समान अत्यन्त अप्रशस्त नहीं है ।

इसी प्रकार सासादनसम्यग्बुद्धि भी तीन गतियोंसे समुक्त सातावेदनीयको
वाधते है । सम्यग्मिध्यावृष्टि और असत्यतसम्यग्बुद्धि नरक और त्रियगगतिके बिना दो
गतियोंसे समुक्त वाधते है । उपरिम जीव देवगतिके समुक्त वाधते है । अपूर्वकरणके
अन्तिम स्वप्न भागसे लेकर ऊपरके जीव अगति समुक्त वाधते है । मिध्यावृष्टि, सासा
दनसम्यग्बुद्धि, सम्यग्मिध्यावृष्टि एवं असत्यतसम्यग्बुद्धि चारों गतियोंवाले तथा दो गतियों
वाले सद्यतान्यत स्वामी है । शेष जीव अनुभ्यगतिके ही स्वामी है । यथा-वान और
बन्धमुत्तेदरूपान मृतोत्त होनेसे सुगम है । सब गुणम्यानोंमें साता और असाताका
परिपन्थित बन्ध होनेसे सातावेदनीयका बन्ध सादि और अधुय है ।

असातावेदनीय, अग्नि, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मका को
पथक और कौन अवचक है ? ॥ १३ ॥

यह पुत्तासुत्त देसामार्शक है, इत्यन्त्ये यहा सब प्रश्नोंको करता चाहिये । अथवा

अ-अप्रशस्त 'अप्ययमावादा', अप्रती 'अप्ययमावादा', अप्रती 'अप्यययमावादा'
॥ १३ ॥

सुत्तमेदमिदि दट्टञ्च । तण्णिण्णयजणण्डमुत्तरसुत्त भणादि —

**मिच्छादिट्ठिण्हुडि जाव पमत्तसंजदा वधा । एदे वंधा, अवसेसा
अवंधा ॥ १४ ॥**

एद देसामासिय सुत्त, पुच्छिदत्थाणमेगेदेम छिन्दिण्ण अण्डाणादो । तणेदेण सूडदत्थाण अत्थपरूवणा कीरेदे । असादोवेदणीयम्म पुच्च वधो उदओ पच्छा वोच्छिण्णो, पमत्तसजदम्मि वधवोच्छेदे सते पच्छा अजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो । एवमरदि-सोगाण, पमत्त-मजदम्मि वधे णडे सते अपुच्चचरिममयम्मि उदयवोच्छेदादो । अथिर-असुहाण पि एव चेव वत्तव्व, पमत्तम्मि वधे विणडे सजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो । अजमगिस्सीण पुच्चमुदओ वोच्छिज्जिदि पच्छा नधो, असजदसम्मादिट्ठिम्हि उदए णडे पच्छा पमत्तमजदम्मि वधवोच्छेदादो ।

असादोवेदणीय अग्दि सोगा सोदय परोदएहि नज्जति, उदयस्स उवत्ताभावादो ।

यह आशका सूत्र है येना समग्रना चाहिये । उसके निद्वयोत्पादनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तमयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ १४ ॥

यह देशामशंक सूत्र है, क्योंकि वह पूछ हुए अर्थोंके एक देशको छुकर अथ स्थित है । इस कारण इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा की जाती है । असादोवेद नीयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तगुणस्थानमें बन्धव्युच्छेद होजानेपर पीछे अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । इसी प्रकार अरति और शोकका बन्ध पूर्वमें और उर्य पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तसयतमें बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे अपूर्वकण्णके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । अस्थिर और अशुभ प्रवृत्तियोंका भी इसी प्रकार ही बन्धोदयव्युच्छेद कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्तसयतमें बन्धके नष्ट होनेपर सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । त्रयशर्कतिका पूर्वमें उदय व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् बन्ध, क्योंकि असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उदयके नष्ट होजानेपर पीछे प्रमत्तसयत गुणस्थानमें बन्धका व्युच्छेद होता है ।

असादोवेदनीय, अरति और शोक प्रवृत्तिया स्त्रोदय परोदयसे बधती हैं, क्योंकि,

एवमजमकित्ती वि, उदयस्म अद्भुतत्तण भेदाभावादे । णरि सपदामजट्ठप्पहुडि उवरि परोदण्णेन वधो, तत्थ जमकित्ति मोत्तण अवरण उदयाभावादे । अथिर-असुहाण सोत्तण्णेन वधो, धुवोदयत्तादे । एदामि छण्ण पयडीण मिच्छाइट्ठिप्पहुडि छमु वि गुणद्वारेणु सान्ते वधो । कुदो ? एदासि पडिअत्तपयडीणमेत्थ वधपान्तेदामावादे । णाणावरणादिमोत्तमपयडीण जे पच्चया प्लुविदा एदेसु छमु गुणद्वारेणु तेहि चेन पच्चगहि एदाओ छण्णयडीओ पज्जति । असात्तरिदि मोगे मिच्छाइड्डी चउगडमजुत्त, सामणो गिरयगड मोत्तण तिगइसजुत्त, सम्मा मिच्छाइट्ठि-असजदसम्मानिड्डिणो देन मणुमगट्सजुत्त, उवरिमा देवगडसजुत्त वधति । ए अथिर असुभ अजमकित्तीण, भेदाभावात्ते । चउगडमि अइड्डि मामणमम्मादिड्डि-सम्मानिमिच्छाइट्ठि-असजदसम्मादिड्डिणो सामी । दुगडसजदासज्जा सामी । पमत्तमजदा मणुमा चेन । वधद्वारेण वधवोच्चेद्वारेण च सुगम । एताओ छ वि पयडीओ वधेण मादि अद्भुताओ ।

मिच्छत्त णवुसयवेद-णिरयाउ गिरयगइ एइदिय-वेइदिय-तीइ-दिय चउरिंदियजादि-हुडसटाण असपत्तसेवट्टसरीरसघडण-णिरयगइ-

इनका उदय ध्रुव नहीं है । इसी प्रकार अयशाकृति भी व्याख्य परोदयसे नधती है, क्योंकि, उदयनी अभ्युपतानी अपेक्षा इसके उक्त तीनों प्रतियोंसे कोई भेद नहीं है । विशेष इतना है कि सयसामयतम लेकर आग इसका बन्ध परोदयसे ही होता है, क्योंकि वहा यशाकृति । छोड़कर अयशाकृति का उदय नहीं रहता । अस्थिर और अनुभ प्रतियाका बन्ध सरोदयसे ही होता है, क्योंकि, व ध्रुवकी प्रतिया ह । इन छहों प्रतियोंका मिथ्या दृष्टि आदि छहों गुणरत्नोंमें सात्त नध जाना है । इसका कारण यह है कि यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रतियोंके बन्ध युच्छेदका अभाव है । आवावरणादि सोत्त प्रतियोंके जो प्रत्यय इन छह गुणरत्नोंमें वहे गये ह उहाँ प्रत्ययोंस हा ये छह प्रतिया वधती है । असाता घेदनीय, अरति और और प्रतियोंके मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंमें सयुक्त, सामा वनसम्यग्दृष्टि नरकगति । छोड़कर तीन गतियोंसे सयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि देव मनुष्य गतियोंसे सयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे सयुक्त बाधते ह । इसी प्रकार अस्थिर, अनुभ और अयशाकृति प्रतियोंका भी गतिसयुक्त बन्ध जाना चाहिये, क्योंकि, उनस इनक कोई भेद नहीं है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । दो गतियोंके सयता सयत स्वामी ह । प्रमत्तसयत मनुष्य ही स्वामी होते हैं । बन्धाज्ञान और बन्धयुच्छेद रज्ञान सुगम हैं । ये छहों प्रतिया वधस सादि णव अधुन ह ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डमस्थान, अमप्राप्तसुखादिकामहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपवी, आताप, स्थावर

पाओग्माणुपुन्वि आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त साहारणसरीरणामाणं
को वंधो को अवधो ? ॥ १५ ॥

एद पुच्छासुत्त देमामासिय, तेणेत्थ सत्त्वपुच्छाओ कायव्वाओ । पुन्विदसिस्सत्त
समयविणामणइमुत्तरसुत्त भणदि—

मिच्छाइद्दी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १६ ॥

एद देमामासियसुत्त, सामित्तद्वाणाण दोण्ण चेय परूवणादो । तेणेदेण सुइदत्थाणं
परूवण कीरेदे— मिच्छत्तस्स वपोदया मम वोच्छिज्जति, मिच्छाइद्दिचरिममए वधोदयोनोच्छेद-
दमणादो । एइदिय मीडिय-नीइदिय चउरिंदियजादि-आदाय थावर सुहुम-अपज्जत्त साहारण-
सरीरण मिच्छत्तमगो, मिच्छाइद्दिमिह वधोदयोनोच्छेद पडि एदासिं मिच्छत्तेण सह भेदाभावादो ।
णवुमयवेदस्स पुत्त वधवोच्छेदो पच्छ उदयस्स^१, मिच्छाइद्दिमिह वधे णट्ठे सत्ते पच्छा अणि-
यद्दिमिह उदयोनोच्छेदादो । एय णिरयाउ-णिरयगडपाओग्माणुपुन्विणामाण वत्तत्त, मिच्छाइद्दिमिह

सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन बन्धक है और कौन अनन्धक है ?
॥ १५ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये यहा पूरोंक सत्र प्रश्नाओ करना चाहिये ।
पृच्छनेवाले शिष्यका मन्दाय नष्ट करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिध्यादृष्टि जीव बन्धक है । ये बन्धक है, शेष जीव अनन्धक है ॥ १६ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, वह उन्वस्वामित्त ओग उन्वाध्वान इन दोनोंका
ही प्ररूपण करता है । इस कारण इससे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं—मिध्यात्व
प्रकृतिका उन्ध ओर उदय दोनों साथ व्युत्तिष्ठ होते हैं, क्योंकि, मिध्यादृष्टि गुणस्थानके
अन्तिम समयमें इनके उन्ध ओर उदयका व्युत्तेद देखा जाता है । ऐकान्द्रिय, द्वीन्द्रिय,
त्रैन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जानि, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणसरीर
प्रकृतियोंका उन्धोदय युच्छेद मिध्यात्व प्रकृतिकेही समान हैं, क्योंकि, मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें
हानेवाले उन्धोदय युच्छेदके प्रति इनका मिध्यात्वके साथ कोई भेद नहीं है । नपुंसकउदका
पूर्वमें बन्ध युच्छेद ओर पश्चात् उदयका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें
बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे अनिवृत्तिपरण गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद होता है । इसी
प्रकार नारकायु ओग नरकगतित्प्रायेत्यानुपूर्वी नामकर्मका उन्धोदयव्युच्छेद कहना चाहिये,
क्योंकि, मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें उन्धके नष्ट होजानेपर पीछे असयतनम्यगृष्टि गुणस्थानमें

बधे ण्ठे सते पच्छा असनदसम्माइडिम्हि उदयवोच्छेदादो । एव हुडसठाण असपत्तसेवट्-
सरीरसपडणाय पि वत्तन्व, मिच्छाडिडिम्हि बधे फिट्ठे मने पच्छा जहाकमेण सजोगिकेनलि
अप्पमतसजद्रेसु उदयवोच्छेदादो ।

मिच्छतस्म योत्तएणेव बधो । निरयाउ निरयगइ निरयगइयाओग्गाणुपुव्विणामाओ परो-
दण्णेव वज्झनि, सोदएण सगउपस्म विरोहदाओ । णुमयवेद एडदिय बीडदिय-तीडदिय-चउरि-
दियजादि हुडसठाण अपपनमेवट्ठमरीरसपडण आदान थावर-सुहुम-अपज्जत्त-माहारणसरीराणि
सोदय परोदएहि वज्झति, उमयथा नि विरोहामादाओ ।

मिच्छत निरयाउअ च निरतरवधिणो, धुवउधित्तादो अद्धाक्खएण बधविणासा
भावान्ते । अवसेममउपयडीओ मानर वज्झनि, तामि^१ पडिक्कउपयडिबधमभवदाओ ।

चट्ठहि मूलपञ्चएहि पञ्चउचामणाणसमयउत्तरपञ्चएहि ढस अट्ठारमणसमयउत्तरणु
क्कत्तपञ्चएहि य मिच्छाडिडि एदाओ पयडीओ बवइ । णवरि वेउव्विय वेउव्वियमिस्स-
ओगालियमिस्म कम्मइयपञ्चएहि तिणा एगवचामपञ्चएहि निरयाउअ बधत्ति वत्तन्व । एव

इनक उदयका म्युच्छन् हन्ता है । इसी प्रकार हुण्डसस्थान और असप्राप्तस्पाटिकासहननका
भी कहना चाहिये, क्योंकि, मिथ्याहृष्टि गुणस्थानमें यन्त्रने नष्ट होजानेपर पीछे यथा
क्रमसे व्योमके शरीर और अग्रमनमयन गुणस्थानमें इनके उदयका 'बुन्देइ' होता है ।

मिथ्यात्रका स्तोत्रयमे ही बध हन्ता है । नारकायु, नरकगति और नरकगति
प्रायेत्यानुपूर्वी नामकम परोत्रयमे ही बधते हैं, क्योंकि, स्तोदयमे इनके अपने बन्धका
पिरोध है । नपुमकउद्, एकोद्वय, द्वीद्वय, त्रीद्वय, चतुरिन्द्रिय जाति हुण्डसस्थान,
अनप्राप्तस्पाटिकासहनन, आनाप, स्थावर, सूक्ष्म, अपयान और नाधारणशरीर स्तोदय
परोदयमे यथैत है, क्योंकि, दोनों प्रकारमे भी इनका बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

मिथ्यात्र और नारकायु प्रवृत्तिया निरन्तर उचनेरात्री हैं, क्योंकि ध्रुवबन्धी
हानसे वाक्पयमे इनके उचधित्ताशका अभाव है । शय सत्र प्रवृत्तिया स्थान्तर बंधती
है, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंक वक्त्रकी सम्मात्रना है ।

चार मूल प्रत्ययोंम, पञ्चजन जाना समय मन्वन्धी उत्तर प्रत्ययासे, तथा दश ध अठा
रह एक समय मन्वन्धी जघय गव उट्टए प्रत्ययोंसे मिथ्याहृष्टि इन प्रवृत्तियोंको बाधता
है । विशेष इतना है कि वैज्विक, वैमिज्विमिथ और वैदारिकमिथ और कामण काययोग
प्रत्ययोंक बिना यह इपयायन प्रत्ययोंमे नारकायुको बाधता है, ऐसा कहना चाहिये । इसी

[गिरयगइ-] गिरयगइपाओग्गानुपुच्चिण । पेडदिय तेडदिय चउरिदिय सुहुम-साहारण अपज्जत्ताण वेउच्चियदुगेण विणा तेज्जणा पच्चया ।

मिच्छत चउगइसजुत्त, णनुमयवेद देवगइए विणा तिगइसजुत्त, गिरयाउ-गिरय-गइ-गिरयगइपाओग्गानुपुच्चिणामाओ गिरयगइसजुत्त, हुडमठाण देवगइ मोत्तूण तिगइसजुत्त, असपत्तमेवदुमरीरमघडण-अपज्जत्तणामाओ तिरिख-मणुमंगइसजुत्त, मेसाओ तिरिखगइ-सजुत्त वधति ।

मिच्छत-णनुसयवेद-हुडमठाण असपत्तमेवदुमरीरमघडणाण चउगइमिच्छाइही सामी । पइदिय-आदाव थावग्गामाण वधम्म गिरयगइ मोत्तूण तिगइमिच्छाइही सामी । मेसाण पयडीण तिरिख मणुसगइमिच्छाइही सामी । वधडाण वधवेच्छेइडाण च सुगम । मिच्छत्तस्म वधो सादि-जणादि धुव-अद्धवेगेण चउन्निहो । मेसाण वधो सादि-अद्धो ।

प्रकार [नरकगति और] नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वके भी इफ्याउन प्रत्यय है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुन्द्रिय, मूढम, नाधारण और अपर्याप्त प्रकृतियोंके त्रैत्रियिकद्विकके विना तिरपन प्रत्यय है ।

मिध्यात्त्रक, चार गतियोंमे सयुक्त नपुंसकवेदके त्रेजगतिके विना तीन गतियोंसे सयुक्त, नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मको नरकगतिसे सयुक्त, हुण्डमस्थानको देवगतिको छोड़ तीन गतियोंमे सयुक्त, असप्राप्तखपाटिकाशरीरसहनन और अपर्याप्त नामकर्मके निर्यगति य मनुष्यगतिये सयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंको निर्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं ।

मिध्यात्त्र, नपुंसकवेद, हुण्डमस्थान और असप्राप्तखपाटिकाशरीरसहनन प्रकृतियोंके चारों गतियोंके मिध्यादृष्टि स्वामी हैं । एकैन्द्रिय, आताप और स्थावर नामकर्मके बाधके नरकगतिको छोड़ शेष तीन गतियोंके मिध्यादृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके निर्यगति य मनुष्यगतिके मिध्यादृष्टि स्वामी हैं । बन्धाधान और बन्ध-युच्छेदस्थान सुगम हैं । मिध्यात्त्रक, यध सादि, जनादि, धुत्र और अधुत्र भेदसे चार प्रकार है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि और अधुव होता है ।

१ अत्रा ' णनुमयवेद व देवगइए ' इति पाठ ।

२ प्रतिपु ' वधवाच्छिण्णाण ' इति पाठ ।

अपच्यवराणावरणीयकोष माण-माया-लोभ मनुसगड-ओरा-
लियसरीर-ओरालियसरीरअगोत्रग-उज्जरिसहवडरणारायणसंघडण-
मनुसगडपाओगाणुपुन्विणामाण को वंधो को अबंधो ? ॥ १७ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टपहुडि जाय अमजदमम्माद्विष्टी वंधा । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ १८ ॥

एद देवतामियवुत्त, सामित्तदाणाण' चेव परूणादो । तेणेदेण सइत्थपरूवणा
कीरेदे । त तदा— अपच्यवराणावरणउत्तकस्य मनुसगडपाओगाणुपुन्विणामाण यथादया
मम बोधिज्जति, एकस्मिन् अमजदमम्माद्विष्टि दोष्ण विणामुत्तमादो' । मनुसगडए पुच्छ
यथा पच्छा उदओ बोच्छिणो, अमजदसम्माद्विष्टिद्विष्टे' वधे णट्ठे पच्छा अजोगिचरिमसमयमि
उदयवोच्छेदादो । एमोरालियसरीर ओरालियसरीरअगोत्रग-उज्जरिसहवडरणारायणसंघडणाण ।
णरि सजोगिचरिमसमण उदयवोच्छेदा ।

अत्र यात्यानावरणीय कोष, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, औदारिकगति, औदा-
रिकगतिगोपाय, उत्तर्यभजनाचारसहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा नामरुमका कौन
बधक और कौन अवधक है ? ॥ १७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमे लेख अमयनसम्यग्दृष्टि तक बधक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव
अबन्धक हैं ॥ १८ ॥

यह वेशमशर सूत्र है, क्योंकि, यह केवल व अम्यासि व और उपाधमानका ही
निरूपण करता है । इसी कारण इस सूत्रसे सूचित अर्थही प्ररूपणा करते हैं । यह इस
प्रकार है—अप्रत्यक्षानावरणचतुष्क और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामरुमका बध और
उदय दोनों साधने व्युत्तिष्ठ होते हैं, क्योंकि, एक अमयनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दोनोंके
विनाश पाये जाते हैं । मनुष्यगतिसाधने बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्तिष्ठ होता है,
क्योंकि असयनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उचके नष्ट होनेपर पीछे अयोगकैवलीके अन्तिम
समयमें उदयका युत्ते' होता है । इसी प्रकार औदारिकगति, औदारिकगतिगोपाय
और उत्तर्यभजनाचारसहननसाधने उचके उच और पश्चात् उदय व्युत्तिष्ठ होता है । विशेष
इतना है कि सयोगके अन्तिम समयमें उदयका युत्ते' होता है ।

१ प्रतिपु 'सामित्तदाणिण' इति पठ्य ।

२ प्रतिपु 'सम्माद्विष्टी' इति पठ्य ।

३ प्रतिपु विणामुत्तमादो' इति पाठ्य ।

अपञ्चकलाणावरणचतुष्कादीण स्वयंसि मोदय-परोदएहि वधो, निरोहाभावादो ।
 णवरि सम्मामिच्छाड्ढि-असजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगडदुगोरागलियदुग वज्जरिमहमण्डणोण परो-
 दओ वधो । अपञ्चकलाणावरणचतुष्कनधो णितरो, धुववधितादो । मणुसगड-मणुसगडपा-
 ओग्गाणुपुच्चिनधो मिच्छाड्ढि-सासणमम्माड्ढीण सातर-णितरो, आणदादिदेवसु णितरवध
 लद्धण अण्णत्थ सातरवधुवलमादो । सम्मामिच्छाड्ढि अमजदसम्माड्ढीसु णितगे, देव णेरइय-
 अपिददोगुणट्ठाणेसु अण्णगइ आणुपुञ्जीण वधामावादो । एवमोरागलियसरीर-ओरागलियसरीर-
 अगोराग वज्जरिसहसघडणाण वत्तव । कुदो ? आगलियमरीरस्स सत्त्वदेव-णेगइएसु तेउ-
 वाउकाइएसु च णितर नुवुलमादो, अण्णत्थ सातरवधदमणादो, ओरागलियमरीरअगोवगस्स
 सत्त्वणेगइएसु सणम्भुमारदिदेवसु च णितर नध लद्धण ईमाणादिदेहिमदेवाण मिच्छाड्ढि-
 सासणेसु तिरिक्ख-मणुस्सेसु च सातरवधुवलमादो, वज्जरिमहसघडणस्स देव-णेगइयमम्मा-
 मिच्छाड्ढि-असजदसम्मादिट्ठीसु णितर यत्त लद्धण अण्णत्थ मातगधुवलमादो ।

अप्रत्यास्थानावरणचतुष्क जादिक सत्त्व स्वोदय परोदयसे ग्रन्थ होता है, क्योंकि,
 ऐसा होनेमें कोई विरोध नहीं है । विशेष यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतत्त्वग्र-
 हदृष्टि गुणस्थानमें मनुष्यगतिद्विक, आद्वारिकद्विक पर उद्गर्भसहजनका परोदय ग्रन्थ
 होता है ।

अप्रत्यास्थानावरणचतुष्क ग्रन्थ निरन्तर है, क्योंकि, ये चारों प्रकृतियां ध्रुव
 बन्धी हैं । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रयोगयानुपूर्वींका ग्रन्थ मिथ्यादृष्टि और सासादन
 सम्यग्दृष्टिके सान्तर निरन्तर है, क्योंकि, आनतादि देवोंमें निरन्तर बन्धको प्राप्तकर अन्यत्र
 सान्तर ग्रन्थ पाया जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतत्त्वग्रहदृष्टि गुणस्थानोंमें निर-
 न्तर बन्ध है, क्योंकि, देवों पर नारकियोंके इन निश्चित दो गुणस्थानोंमें अन्य गति व-
 जानुपूर्विके बन्धका जमाव है । इसी प्रकार औदारिकशरीर आद्वारिकशरीरगोपाय और
 उद्गर्भसहजनके भी कहना चाहिये । इसका कारण यह कि औदारिकशरीरका सर्व देव
 नारकी तथा तेजकायिक उपायकायिक जीवोंमें निरन्तर ग्रन्थ पाया जाता है, अन्यत्र
 यही बन्ध सान्तर देखा जाता है, औदारिकशरीरगोपायका सब नारकियोंमें और
 सान्तकुमार एवं माहेन्द्र कल्पके देवोंमें भी निरन्तर बन्ध पाकर ईशानादिक अधस्तन देवोंके
 मिथ्यादृष्टि व सासादन गुणस्थानोंमें तथा तिर्यच और मनुष्योंमें सातर ग्रन्थ पाया जाता
 है, उद्गर्भसहजनका देव आर नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असत्यतत्त्वग्रहदृष्टि गुणस्थानोंमें
 निरन्तर ग्रन्थ पाकर अन्यत्र सान्तर ग्रन्थ पाया जाता है ।

अपञ्चकखानापरणचउत्क चउगुणद्वानजीवा णाणापरणपञ्चगहि चय वधति । एव मणुसगइ मणुसगइपाओगाणुपुञ्जीण पि चदुसु गुणद्वानेमु पन्तया परुवेदव्वा । पञ्चि सम्माभिच्छाडिस्म वादात्पञ्चया वत्तया, ओगालियकायजोगपञ्चयामागादो । असज सम्माडिस्म चोदात्पञ्चया, ओगालियकायजोग ओगालियमिस्मकायजोगपञ्चयाणमभागादो । एवमोरातियसरीर ओगालियमरीरअगोवग-वज्जग्मिमहमघडणण पि पञ्चयपरुवणा मणुसगइए २' कायव्वा ।

अपञ्चकखानाचउत्क मिच्छाडिस्म चउगइसजुत्त, सासणो गिरयगईए विणा तिगाइ-सजुत्त, सेसा दो वि देव-मणुमगइसजुत्त नथि । मणुमगइ मणुमगइपाओगाणुपुञ्जीओ सज-गुणद्वानजीवा मणुसगइसजुत्त नथि । ओगालियमरीर ओगालियअगावगाइ मिच्छाडिस्म सासण सम्मादिट्ठिणो तिरिक्क मणुमगइसजुत्त, मम्मामिच्छाडिस्म अमजदमम्मामिच्छिणो मणुसगइसजुत्त वधति । एव वज्जग्मिमहमघडणणारायणमघडणस्य वि उत्तय, भेदाभावादो ।

अपञ्चकखानाचउत्क नथस्य चउगइमिच्छाडिस्म-सासणमम्मामिच्छिणो सम्माभिच्छाडिस्म अस जदमम्मामिच्छिणो मामी । मणुमगइ मणुमगइपाओगाणुपुञ्जी ओगालियसरीर-ओगालियअगोवग

अप्रत्याख्यानानापरणचतुष्कको चार गुणस्थानोंक जव भानापरणप्रत्ययोंमे ही बाधते हैं । इसी प्रकार मनुष्यगति जीव मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वोंके भी प्रत्ययोंकी चारों गुणस्थानोंमें प्ररूपणा करना चाहिये । विशेषतया यह है कि सम्यग्मिध्यादष्टिके ध्यातीम प्रत्यय कहना चाहिये, क्योंकि, उसके औदारिककाययोग प्रत्ययका अभाव है । असयत सम्यग्दष्टिके चयातीम प्रत्यय कहना चाहिये, क्योंकि, उसके औदारिककाययोग और औदारिकमिश्रकाययोग प्रत्ययोंका अभाव है । इसी प्रकार औदारिकशरीर, औदारिक शरीरागोपाग और वज्जग्मसहननके भी प्रत्ययोंकी प्ररूपणा मनुष्यगति नामकमेंके समान करना चाहिये ।

अप्रत्याख्यानानापरणचतुष्कको मिध्यादष्टि चार गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दष्टि मरकगनिके धिना तीन गतियोंसे संयुक्त, और शेष दोनों गुणस्थानरतों जीव देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बाधते हैं । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वोंके सब गुणस्थानोंके जीव मनुष्यगतिते संयुक्त बाधते हैं । औदारिकशरीर और औदारिकअगोपागको मिध्यादष्टि और सासादनसम्यग्दष्टि तियगति एव मनुष्यगति संयुक्त बाधते हैं, सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टि मनुष्यगतिते संयुक्त बाधते हैं । इसी प्रकार वज्जग्मभयज्जनाराच सहननका भी गतिमयाग कहना चाहिये, क्योंकि, उक्त प्रवृत्तियोंसे इसके कोई भेद नहीं है ।

अप्रत्याख्यानानापरणचतुष्कक बाधन चारों गतियोंके मिध्यादष्टि, सासादनसम्यग्दष्टि, सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टि स्वामी हैं । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वों, औदारिकशरीर, औदारिकअगोपाग और वज्जग्मभयज्जनाराचसहनन प्रवृत्तियोंके चारों

वज्जरिसहवडरणायणसरीरसघडणाण चउगइमिच्छइडि-सासणसम्मादिट्ठी सामी । दुगइसम्मा-
मिच्छइडि-असज्जदमम्मादिट्ठी सामी । वज्जण वधणदपदेसो वि सुगमो ।

अपचक्षणाणचउत्कनधो मिच्छइडिमिह चउव्विहो, धुववधित्तादो । संमेसु गुणद्वारेणसु
तिविहो, युत्ताभावादो । मणुमगइ ओगलियसरीर ओगलियसरीरअभोवग-वज्जरिसहवडरणारा-
यणमघडण-मणुमगट्ठाओम्माणुपुव्विणामाण नधो सव्वगुणद्वारेणसु सादि-अदुवो, पडिक्ख-
पयडिवधसभवादो । ओगलियसरीरस्स णिच्चणिगोदेसु सव्वकाल वेउव्विय आहारसरीरवध-
निरहिदेसु धुववगो । अणादियधधो च णिण लब्भे ? ण, पडिक्खपयडिउत्तसत्तिस्सम्भाव
पहुच्च अणादि-उत्तभाणपरूवणादो, चउगइणिगोदे मोत्तूण णिच्चणिगोदेहि एत्थ अहियारा-
भावादो वा । वरत्ति पडुच्च पुण वरस्स अणादियधुत्त ण निरुज्जहे ।

गतिर्योके मित्यादिष्टि च सात्तादनमम्यगदष्टि स्वामी ह । वो गतिर्योके सम्यग्मित्यादिष्टि और
असत्यतन्म्यगदष्टि स्वामी ह । बन्धाध्यान और उन्धनप्रदेश ज्योंत् जिस स्थान तक बन्ध
होना है तथा जहा उन्धकी युञ्जित्ति होती है वह जानना भी मुगम है ।

अप्रत्याख्यानाउरणचतुष्फला बन्ध मिथ्यादिष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका है, क्योंकि,
ये चारों प्रकृतिया धुववन्धी ह । शेष गुणस्थानोंमें इनका बन्ध तीन प्रकारका है, क्योंकि,
वहा धुव बन्ध नहीं होता । मनुष्यगति, आहारिकशरीर, आहारिकशरीरगोपाग, वज्रभ-
वज्जनाराचसहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामरुमका बन्ध सब गुणस्थानोंमें सादि
च अधुव है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है । सर्वकाल वैकृतिक
और आहारिक शरीरोंके बन्धसे रहित नित्यनिगोदी जीवोंमें आहारिकशरीरका धुव बन्ध
होता है ।

शुक्रा—नित्यनिगोदी जीवोंमें आहारिकशरीरका अनादि बन्ध भी क्यों नहीं
पाया जाता ?

समाधान—नहीं पाया जाता, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी बन्धशक्तिके लक्ष
भावर्य अपेक्षा करके अनादि रूपसे धुव बन्धका प्ररूपण नहीं किया गया । अथवा
चतुर्गतिनिगोदोंको ज्योंत् चारों गतिर्योमें होकर पुन निगोदम आये हुए जीवोंको छोड़कर
नित्यनिगोदोंका यहा अधिकार नहीं है । परन्तु बन्धकी अभिव्यक्तिकी अपेक्षा करके बन्धके
अनादि और धुव होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

पञ्चस्वाणावरणीयकोध-माण माया-लोभाणं को वंधो को
अबंधो ? ॥ १९ ॥

सुगममेव सुत ।

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव संजदामंजदा बंधा ॥ २० ॥

एद देयामामियसुत्त, मामित्तद्वाणाणमेव पद्धजणादो । तेणे थ अयुत्तत्थाणं परवया
कीरदे । त जहा— एदामि पयटीण नधोण्या सम वाञ्छिण्णा, मज्जदामजदमि वधस्सेव
उदयवोच्छेदमणादो । एदामि चउण्ण पि नधो सोदय-परोदण्हि, कोधादीण वधकांठ तस्सेव
उदए पि होदज्वमिदि णियमाभासाने । एदामि चउण्ण पि णिरत्तरो यो मत्तेत्तालीमपुव
यत्तपयडीसु पाणादो । मिच्छादिद्विआदिपचगुणद्वाणेमु जे पच्चया परवुविदा मूलुत्तरमेएण तोहि
पच्चयहि एदाओ वज्जति ति तेसु तेसु गुणद्वाणेसु ते ते चेव पच्चया वत्तया, वधस्स
पच्चयममूहकज्जत्तादो । अधया, एदामि पयटीण नधस्स पच्चस्वाणपयडीए उदयमामण

प्रत्याख्यानारणीय क्रोध, मान, माया और लोभका कौन उन्धक और कौन अबन्धक
है ? ॥ १९ ॥

यह मूल सुगम है ।

मिथ्याद्विष्टि लेकर सयतामयत तक बंधक है ॥ २० ॥

यह देशामर्ग मूल है क्योंकि, यह उन्धस्वामित्य और बंधाध्यानका ही निरूपण
करता है । इस कारण यहा अनुक्त अर्थोंकी प्रकृषणा करते हैं । यह इस प्रकार है—इन
चारों प्रवृत्तियोंका उन्ध और उदय दोनों साथ ही व्युत्पन्न होते हैं, क्योंकि, सयतामयत
गुणस्थानमें उन्ध के समान इनके उदयका भी व्युत्पन्न देखा जाता है । इन चारों ही
प्रवृत्तियोंका एक सोदय परोदयसे होता है, क्योंकि, प्राधानिकोंके उन्धकारमें उसका ही
उन्ध भी होना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है । इन चारोंका ही निरन्तर बन्ध होता है,
क्योंकि, ये चारों प्रवृत्तिया मतांगीन धुनधी प्रवृत्तियोंमें आती हैं ।

मिथ्याद्विष्टि आदि पाच गुणस्थानोंमें जो मूल व उत्तर प्रत्यय बंधे
गये हैं उन प्रत्ययोंमें ये प्रवृत्तिया प्रधान हैं, जब पर उन उन गुण
स्थानोंमें उर्ध्व उर्ध्व प्रत्ययोंको कहना चाहिये, क्योंकि, बन्ध प्रत्ययसमूहका कार्य
है । अधया, इन प्रवृत्तियोंके बंधन प्रत्यय प्रत्याख्यान प्रवृत्तिका उदयसामान्य है ।

पञ्चओ । सेसकसायाणमुदओ जोगो च पञ्चओ ण होदि, एत्तो उरि तेसु सेतेसु वि एदासिं वधाभावादो । ण मिच्छताणताणुनवि-अपञ्चक्खाणारणाणमुदओ नि एदासिं वधस्म पञ्चओ, तेण विणा नि वधुवलभादो । अस्सण्णय-वदिरेगेहि जस्मण्णयवदिरेगा होति [त] तस्म कजमियर च कारण । ण चेद पञ्चक्खाणोदय मुन्वा अण्णत्थत्थि^१ तम्हा पञ्चक्खाणोदओ चेव पञ्चओ ति सिद्ध । मिच्छाइडिग्धि णट्ठवधसोलसपयडीण वधस्म मिच्छतोदओ चेन पञ्चओ, तेण विणा तासिं वधाणुवलभादो । सामणम्मि णट्ठवधपणुवीमपयडीण अणताणुनधीणमुदओ चेन पञ्चओ, तेण विणा तासिं वधाणुनलभादो । असज्जदम्ममादिडिग्धि णट्ठवधणपयडीण वधस्स अपञ्चक्खाणोदओ कारण, तेण विणा तासिं वधाणुनलभादो । पमत्तमज्जम्मि णट्ठवध-उप्पयडीण वधस्म पमादो पञ्चओ, तेण विणा तदणुवलभादो । एवमण्णत्थ वि जाणिय वत्त^२ व ।

एदाओ पयटीओ मिच्छाइड्डी चउगइसजुत्त, मासणो गिरयगई^३ विणा तिगइसजुत्त,

क्षेप कपायांश्च उदय ओर याग प्रत्यय नहा हे, क्योंकि, पाचवें गुणस्थानके ऊपर उनके रहनेपर भी इनका उन्ध नहीं होता । मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याख्यानघरण प्रकृतियोंका उदय भी इन प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, उनके उदयके बिना भी इनका उन्ध पाया जाता है । जिसके अन्वय और यतिरेकके साथ जिसका अन्य और व्यतिरेक होता है वह उसका कार्य और दूसरा कारण होता है । और यह बात प्रत्याख्यानारणके उदयको छोड़कर अन्यत्र है नहीं, इसलिये प्रत्याख्यान-घरणका उदय ही अपने बन्धका प्रत्यय है, यह बात सिद्ध हुई । मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें व्युच्छिन्न सोलह प्रकृतियोंके उन्धका प्रत्यय मिथ्यात्वका उदय ही है, क्योंकि, उसके बिना उन सोलह प्रकृतियोंका उन्ध पाया नहीं जाता । सासादनगुणस्थानमें व्युच्छिन्न पञ्चास प्रकृतियोंके बन्धका अनन्तानुबन्धितुक्का उदय ही प्रत्यय है, क्योंकि, उसके बिना इन पञ्चास प्रकृतियोंका उन्ध पाया नहीं जाता । असयतमम्यगृष्टि गुणस्थानमें व्युच्छिन्न नौ प्रकृतियोंके बन्धका अप्रत्याख्यानारणका उदय कारण है, क्योंकि, उसके बिना उनका बन्ध पाया नहीं जाता । प्रमत्तसयत गुणस्थानमें व्युच्छिन्न छह प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय प्रमाद है, क्योंकि, उसके बिना उनका उन्ध पाया नहीं जाता । इसी प्रकार अन्यत्र भी जानकर कहना चाहिये ।

इन प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि चारों गनियांसि संयुक्त, सासादनमम्यगृष्टि नरक-

१ प्रतिपु 'अणत्थ ति' इति पाठ । २ अपनो 'पिग्गद' वा मययो 'गिरयगई' इति पाठ ।

पादादो । पुरिसवेदनसो सातरो । कुदो ? मिच्छाडडि सासणेसु पडिअखपयरीण वधु
वलभादो । गिरनरो नि, पम्म-सुक्खेस्सयतिरिअ-मणुममिच्छाडडि-सासणसम्मादिट्ठीसु मम्मा
मिच्छाडडिआदिउवरिमगुणट्ठाणेसु च गिरनरअधुवलभादो ।

एदामि पच्चयपरुणणे कीरमाणे पुध पुअ जे पच्चया मलुत्तराणणेगसमयभेयमिण्णा
गुणट्ठाणाण परुणिदा ताणि गुणट्ठाणाणि तेहि पच्चएहि एदाओ पयडीओ वधति ति पुअ-
परुवणा णत्थि, भेदाणुअलभादो । अवा पुरिसपेदो गयपअओ, अवगदरेदेसु तअवधानु-
वलभाणे । कोधमजलणो सज्जलणकमायस्स तिवाणुभागोदयपअओ, उवसमसेडिहि कोध
चरिमाणभागोदयादो अणतगुणहीणेण वृणाणुभागोदयण कोअसजलणस्स अधाणुअलभादो ।
मिच्छाडडि सासणे च गिरयगईए रिणा पुरिसपेद निगइसजुत्त वधइ । गिरयगईए सइ
पुरिसपेदो रिण्ण उज्जेदे ? ण, अचताभाणेण पडिसिद्धतादो । सम्मामिच्छाडडि असज्ज
सम्मादिट्ठी च दुगइसजुत्त, तेमि गिरय निरिअगईए अधाभादो । सज्जदासअदप्पहुडि उवरिमा

धुअरधी प्रतियौके प्रत्ययोंके प्रत्ययोंका रूपांतर है । इसका कारण यह कि
मिथ्यादि और सासादन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रतियौका बन्ध पाया जाता है । यही बंध
निरन्तर भी है, क्योंकि, पक्ष पक्ष शुद्ध लेख्यागले तियच व मनुष्य मिथ्यादि और
सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें तथा सम्यग्मिथ्यादि आदि उपरिम गुणस्थानोंमें भी निरन्तर
बंध पाया जाता है ।

इन दोनों प्रतियौके प्रत्ययोंका प्रकरण करनेपर मूल, उत्तर तथा नाना व एक
समय सम्यग् ही प्रत्ययोंके भेदसे मिथ प्रत्यय प्रत्यय जो प्रत्यय जिन गुणस्थानोंके बंधे गये हैं वे
गुणस्थान इन प्रत्ययोंमें इन प्रतियौके राधेन है, जत इनकी प्रत्ययप्रकरण नहीं है,
क्योंकि, उनमें यहां कोई भेद नहीं पाया जाता । अथवा पुरुषपेद गतप्रत्यय है, अर्थात्
उसका प्रत्यय उत्तर उता ही चुक है, क्योंकि, अपगतपेदियोंमें उसका बन्ध नहीं पाया
जाता । सज्जलनरोधका पक्ष सज्जलनरूपयके तीव्र अनुभागादयनिमित्तक है, क्योंकि,
उपसमयेधेणोंमें बोधके अन्तिम अनुभागादयमें अथवा अनन्तगुणहानिसे हीन अनुभागादयसे
सज्जलनरोधका बंध नहीं पाया जाता ।

मिथ्यादि और सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके बिना पुरुषपेदको तीन गतियोंसे
संयुक्त राधते हैं ।

शका—नरकगतिर साथ पुरुषपेद क्या नहीं बधता ?

समाधान—नहीं बाधता, क्योंकि, वह अत्यन्ताभाव रूपसे प्रतिपिद्ध है ।

सम्यग्मिथ्यादि और असत्यतमस्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त राधते हैं, क्योंकि,
इनके नरकगति और नियमतिके रूपांतर अभाव है । सत्यतासंयतसे लेकर उपरिम जीव

देवगइसजुत्त, सेसगईण तत्थ वधाभावादो । अपुव्वकरणसत्तमसत्तभागप्पहुडि उवरिमा अगदिसजुत्त वर्धति, तत्थ गइकम्मस्स वधाभावादो । एव कोपमजलणस्म वि वत्तन् । णवरि मिच्छाड्ढी चउगइसजुत्त पधइ, तत्थ णिरयगईण सह वज्जविरोहाभावादो । पुरिसवेदवधस्स चउगइमिच्छाड्ढि सासणसम्माड्ढि सम्मामिच्छाड्ढि असुजदम्ममादिट्ठिणो सामी । दुगइसजदा-सजदा सामी, देव णिरयगईसु तदभावादो । उवरिमा मणुसगईण सामी, अण्णत्थ पमत्तादीण-मभावादो । पुरिसवेदवधो मच्चगुणट्ठणेषु साट्ठिणो अद्भुवो, पटिवस्सपयडीण वधुवलभादो । णियमेण सम्मामिच्छाड्ढिपहुडि उवरिमेसु ववणिणामदसणादो । कोऽसजलणस्म मिच्छाड्ढिमिह चउन्निहो नथो, धुवज्जित्तादो । उवरिमेसु तिप्पिहो, उवत्ताभावादो ।

माण मायसंजलणानं को वंधो को अवंधो ? ॥ २३ ॥

सुगममेद ।

देवगतिये सयुक्त राधते ह, क्योंकि, वहा जेव गतियोंका बन्ध नहीं होता । अपूर्वकरणके सातवें सप्तम भागसे लेकर उपरिम जीव जगतिमयुक्त पुरुषवेदको बाधते ह, क्योंकि, वहा गतिकर्मका बन्ध नहीं होता । इसी प्रकार सञ्चलनको उनके भी कहना चाहिये । विदोष इतना हे कि मिथ्यादृष्टि उसे चार गतियोंसे सयुक्त राधता हे क्योंकि, वहा नरकगतिके साथ उनके बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं हे ।

पुरुषवेदके बन्धके चारों गतियागले मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । दो गतियोंगले सयतासयत स्वामी ह, क्योंकि, देव व नरक गतिमें सयतासयताका अभाव है । ऊपरके जीव मनुष्यगतिके ही स्वामी ह, क्योंकि, दूसरी गतियोंमें प्रमत्तसयताविकोंका अभाव हे । पुरुषवेदका बन्ध सत्र गुणस्थानोंमें सादिक व अधुप हे, क्योंकि, वहा प्रतिपन्न प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है, नियमसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध विनाश देखा जाता है । सञ्चलनको वहा मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहा धुवज्जिवी है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता हे, क्योंकि, वहा ध्रुव बन्धका अभाव हे ।

सञ्चलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३ ॥

यह स्रज सुगम है ।

मिच्छाद्विषहृदि जाव अणियद्विवादरसांपराहयपविद्वज्वसमा
खवा वंधा । अणियद्विवादरद्वाए सेसे सेसे ससेज्जाभागं गंतूण वंधो
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवमेसा अवधा ॥ २४ ॥

‘मिच्छाद्विषहृदि जाव अणियद्विवादरमापराहयपविद्वज्वसमा खवा वधा’ एदेण
सुत्ताययेण उच्यमाण गद्यगण निष्ठा गुणद्वयगययधमामित्त च युत्त । ‘अणियद्विवादरद्वाए
सेसे सेसे ससेज्जाभाग गंतूण चयो योच्छिज्जदि’ एतेण सुत्ताययेण उच्यमाणद्विवादर पद्विद ।
कोपसत्तणे निणंठे जो अयंमेसा अणियद्विवादर ससेज्जभागो तस्मि मरोज्जे खडे करे
तत्थ बहुभागे गंतूण एयभागायमेस माणमत्तलमम् उग्गोच्छेदं । पुणो तस्मि एगसंडे
ससेज्जखडे रुदे तत्थ घट्टखडे गंतूण एगसंडायमेसे मायामत्तलमम् उग्गोच्छेदे ति । कथमेद
णखदे ? ‘सेसे सेसे ससेज्जे भागे गंतूणेति’ मिच्छाणिंदेसादो । कसायपाहुइसुत्तेणेद सुत्त
विरुज्जदि ति युत्ते सत्थ विरुज्जड, किंतु एयनग्गहो एत्थ ण कायज्जो, इदमेव त चेव

मिथ्याश्रित्ये लकर अनितृत्तिकरणनादरमापराहयपविद्व उपशमक व क्षपक तत्त
क्षपक ह । अनितृत्तिकरणनादरकालके शेष शेषमे सरयात् बहुभाग जाकर उन्न युच्छिज्ज होता
है । ये क्षपक ह, शेष जीव अनक्षपक है ॥ २४ ॥

‘मिथ्याश्रित्ये लकर अनितृत्तिकरणनादरमापराहयपविद्व उपशमक व क्षपक
तत्त उन्नयक है इस सूत्राययसे बन्धाध्यान जाव गतिगत बन्धस्वामित्तके बिना गुण
स्थानगत बन्धस्वामित्त भी कहा गया है । ‘अनितृत्तिकरणनादरकालके शेष शेषमे सरयात्
उत्तमत्त जाकर उन्नय उन्नय होता है’ इस सूत्राययव द्वारा उन्नयितस्थानकी
प्रकृषणा की गई है । स्वतन्त्राधक विनष्ट होलपर जो शेष अनितृत्तिकरणनादर
सरयात्तया भाग रहता है उसके सख्यात् खण्ड करनेपर उनमें बहुभागों की विताकर एक
भाग शेष रहनेपर सज्जलनमात्रा व ध-पुच्छेद होता है । पुन एक खण्डने सरयात्
खण्ड करनेपर उनमें रहत खण्डोंका विनाकर एक खण्ड शेष रहनेपर सज्जलनमात्राका
ध-पुच्छेद होता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—‘शेष शेषमे सरयात् बहुभाग जाकर’ इस चीन्सा जर्वात दो बार
निर्दशमे उक्त प्रकार दोनों प्रतियोगा व्युच्छेदकाल जाना जाता है ।

शंका—कथाप्रामाण्यके सूत्रसे तो यह सूत्र विरोधकी प्राप्त होगा ?

समाधान—येही शङ्का होनेपर कहते हैं कि सचमुचमें कथाप्रामाण्यके सूत्रसे
यह सूत्र निरुद्ध है, परन्तु यहाँ पक्षात्प्रवाद नहीं करना चाहिये, क्योंकि, ‘यही सत्य है’

सच्चमिदि सुदकेनलीहि पच्चन्खणाणीहि वा विणा अवहारिज्जमाणे मिच्छतप्पसगादो ।
 कथ सुत्ताण विरोदो ? ण, सुत्तोवसहारणमसयलसुदधारयाइरियपरतताण विरोहसभवदसणादो ।
 उवमहाराण कथ पुण सुत्तत्त जुज्जेदे ? ण, अमियमायरजलस्स अलिंजर-उड-धडी-सरावुदचण-
 गयस्स वि अमियचुवलमादो ।

सपहि एदेण सुदत्त्याणं परूवणा कीरदे । त जहा—एदासिं दोण पयडीण
 वधोदया अक्कमेण वोच्छिज्जति, उदए विणेठ्ठ वघाणुपलमादो । ण च उदयद्वाक्खएण
 उदयस्स विणासो एत्थ विवन्निअओ, सतोवसम-खएहि समुप्पण्णुदयाभावेण अहियारादो ।
 एदासिं सोदय-परोदएहि वधो, गिरतरवधीण सातरुदयाण सोदएणव नधत्तिरोहादो । गिरतर-
 वधीओ, धुवनधीहि सह पादादो । मिच्छाइडिणहुडि जे पच्चया मूलुत्तराणणिगसमपभेयभिण्णा
 पुच्च परूविदा तग्गुणविमिड्डीवा तेहि चेउ पच्चएहि एदाओ पयडीओ वधति, पच्चयतरा-

या 'वही सत्य है' ऐसा श्रुतकेवलियों अथवा प्रत्यक्षप्रानियों के विना निश्चय करनेपर
 मिथ्यावक्ता प्रसंग होगा ।

शुका—सूत्रोंके निरोध कैसे हो सक्ता है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, अन्य श्रुतके धारक आचार्योंके परतत्र
 सूत्र व उपसंहारोंके विरोधही सम्भानना देखी जाती है ।

शुका—उपसंहारोंके सूत्रपना कैसे उचित है ?

समानान—यह भी शका ठीक नही, क्योंकि, अलिंजर (उट्टिशोप), घट, उटी,
 शगव व उदचन आदिमें स्थित भी अमृतसागरके जलमें अमृतत्व पाया ही जाता है ।

अथ इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करने हैं । यह इस प्रकार है— इन
 दोनों प्रवृत्तियोंका बन्ध और उदय दोनों एक साथ व्युत्तिष्ठ होने हैं, क्योंकि, इनके उदयके नष्ट
 होनेपर फिर बन्ध नहीं पाया जाता । और यहा उदयकालके क्षयसे होनेवाला उदयका विनाश
 विवक्षित नहीं हैं, क्योंकि, मत्वोपशम या सत्प्रक्षयसे उत्पन्न उदयभावका अधिकार है ।
 इन दोनों प्रवृत्तियोंका स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, निरन्तररन्धी और सान्तर
 उदयवाली प्रवृत्तियोंके स्वोदयसे ही बन्ध होनेका निरोध है । ये निरन्तररन्धी प्रवृत्तिया हैं,
 क्योंकि, ये ध्रुवरन्धी प्रवृत्तियोंके साथ आती हैं । मिथ्यादृष्टिसे लेकर मूल, उत्तर व नाना
 पय एक समय समरन्धी भेदोंसे भिन्न जो प्रत्यय पूर्वमें कहे जा चुके हैं, उन गुण
 स्थानोंसे निदिष्ट जीव उन्हीं प्रत्ययोंसे इन प्रवृत्तियोंको बाधते हैं, क्योंकि, अन्य प्रत्ययोंका

॥ अप्रती ' सुषोवसवाता ' , आ अपला ' सुषोवसहागना ' इति पाठ ।

२ अ-आप्रत्यो ' सहृदयाण ' , अप्रती ' सहृदयाण ' इति पाठ ।

भावादो । अत्रा, एदासि मजलणोदयनिमेमो चेत् पञ्चओ, तेण विणा नधाणुत्तलभाणे ।

मिच्छादिद्वी चउगडमजुत्त, तस्स सज्जगडनधेहि विरोहाभावादो । मामणो तिगइमनुत्त, तस्स विरयगइनधेण मह विरोहाने । मम्मामिच्छाद्वी अमजदसम्मादिद्वी च दुगडमजुत्त नति, तेमि विरय तिग्गिगइहि मह विरोहादो । उपरिमा देवगड अगइमजुत्त वा नति, तेमि मेमगइहि सह विरोहादो । मिच्छाद्वी सामणमम्मामिच्छाद्वी अमजदसम्मादिद्वी चउगइया, दुगडमजदामजदा, मेमा मणुस्सगइया सामी । यत्तद्वाण वधनेच्छिण्णद्वाण च सुत्तुडिडिमिदि सुगम । मिच्छाद्विस्स चउविदो वधो, पुत्तवितादो । मेमाण विविदो, पुत्तताभावादो ।

लोभसजलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ २५ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विद्विप्पहुडि जाव अणियद्विवादरमांपराइयपविट्ठउत्तसमा सवा वंधा । अणियद्विवादरद्वाए चरिमसमय गत्तूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २६ ॥

अभाव है । अधवा, इन प्रतियोंका सज्जगनका उदयविशेष ही प्रत्यय है, क्योंकि, उसके बिना इनका उदय पाया नहीं जाता ।

मिथ्यादृष्टि है चार गतियोंसे संयुक्त बाधता है, क्योंकि, उसके साथ गतियोंके साथ कोई विरोध नहीं है । सामान्यतस्तत्त्वगदृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बाधता है, क्योंकि, उसके नरकगतियधने का उ विरोध है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि जोर अन्यतस्तत्त्वगदृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उनके नरक व तिर्यग्गतिन स्वाथ वन्ध होनेमें विरोध है । उपरि जीव देवगतिये संयुक्त या गतिमयोगसे रहित बाधने हैं, क्योंकि उनके दोष गतियोंसे साध व होनेमें विरोध है । मिथ्यादृष्टि, सामान्यतस्तत्त्वगदृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और अन्यतस्तत्त्वगदृष्टि चारों गतियोंवाले, दो गतियोंवाले संयुक्तसंयुक्त, और दोष गुणस्थानधर्ती जीव मनुष्यगतियां सामी हैं । उ बाधन और वध युच्छिस्तस्थान चूनि सूत्रप्रतिपादित है अत सुगम है । मिथ्यादृष्टिने इनका चारों प्रकारका उदय होता है, क्योंकि, वे ध्रुववर्णी प्रतिया हैं । दोष जीवों ध्रुववर्णका अभाव होनेसे तीन प्रकारका ही वन्ध होता है ।

सज्जतलोभसा कौन वन्धक और कौन अवधक है ? ॥ २५ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि लेका अनिवृत्तिनादरमाप्परायिकप्रविष्ट उपशमक और क्षयक तत्त्व वन्धक है । अनिवृत्तिनादरकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर वध व्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक दोष जीव अवधक है ॥ २६ ॥

‘मिच्छाइट्ठिप्पहुडि०’ एदेण सुत्तानयणेण वधद्धाण गुणट्ठाणगयसामित्तं च परूविद ।
 ‘अणियट्ठिचादर०’ एदेण वधविणट्ठद्धाणपरूवणा कदा । एदेसिं तिण्ण चैवत्थाण परूवणा
 कदा ति देसामासियसुत्तमेद । तेणेदेण सूइदत्थाण परूवणा कीरदे । त जहा—

वधो पुञ्च वोच्छिज्जदि पञ्चा उदओ, अणियट्ठिचरिमसमए वधे वोच्छिण्णे सुहुम-
 सापराइयचरिमसमए उदयवोच्छेदुवलभादो । लोभमजलणस्स सोदय-परोदएहि वधो, धुवो-
 दयत्ताभावादो । गिरत्तो नधो, धुवनधित्तादो । पञ्चयपरूवणाए माणसजलणभगो । गइमजुत्त-
 सामित्तद्धाण-नधवोच्छिण्णट्ठाणपरूवणाओ सुगमाओ । मिच्छाइट्ठिस्स चउव्विहो वधो, धुव-
 वत्तादो । सेसाण तिपिहो वधो, धुवत्ताभावादो ।

हस्स-रदि-भय दुगुंठाण को वंधो को अवंधो ? ॥ २७ ॥

सुगम ।

‘मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिशब्दरसाभ्युपगमप्रतिपक्ष उपशमक और क्षपक तक
 बन्धक है’ इस सूत्राज्ञ द्वारा बन्धाध्यान और गुणस्थानगत बन्धभ्रामित्वकी प्ररूपणा
 की गई है । अनिवृत्तिशब्दकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर उन्व न्युच्छिन्न होता है ।
 इस सूत्राज्ञा द्वारा न अ-बुद्धित्तिस्थानका निरूपण किया गया है । चूँकि सूत्र द्वारा इन्हीं
 तीन अर्थोंकी प्ररूपणा की गई है, अतएव यह देशात्मशक सूत्र है । इस कारण इसके द्वारा
 सूचित अर्थोंका निरूपण करते हैं । यह इस प्रकार है—

सज्जलनलोभका उन्ध पूर्वमें व्युत्तिन्न होता है, पश्चात् उदय, क्योंकि, अनिवृत्ति-
 करणके अन्तिम समयमें उन्धके व्युत्तिन्न होजानेपर सूक्ष्मसाभ्युपगमिके अन्तिम समयमें
 उदयना व्युच्छेद पाया जाता है । सज्जलनलोभका सोदय परोदयसे बन्ध होता है,
 क्योंकि, उसके द्वयोदयत्वका अभाव है । बन्ध उसका निरन्तर है, क्योंकि, वह ध्रुवग्रन्थी
 है । प्रत्यर्थोंकी प्ररूपणा सज्जलनमानके समान है । गतिसयुक्तता, स्वामित्व, अध्यान और
 बन्धन्युत्तिन्नस्थानकी प्ररूपणाए सुगम है । मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है,
 क्योंकि, वह ध्रुवग्रन्थी प्ररूपित है । शेष जीवोंके तीन प्रकारका उन्ध होता है, क्योंकि,
 उनके ध्रुवग्रन्थका अभाव है ।

हास्य, रति, भय और जुगुप्सा प्रकृतियोंका कौन उन्धक है और कौन अवन्धक
 है ? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

परोत्पण, किं सातर किं गिरतर किं मातर गिरतर, किं पञ्चएहि किं तेहि विणा, किं गइसहुत किमगइसहुत वज्जइ, एदम्म उधम्म कदिगदिया मामी असामी वा, किं वधडाण, किं चमिसमए वधो वोच्छिज्जदि किं पढममए किमपढम अचरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि, किं मादिया किमणादियो किं धुवो किमद्धुवो वधो ति एदावो पुच्छओ एत्थ कायव्वाओ । पुणे पुच्छिज्जदज्जाणुग्गहइ उत्तरसुत्त मणदि—

मिच्छाइट्ठी सोसणसम्माइट्ठी असंजदमम्माइट्ठी वंधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३० ॥

एत्थ वधद्वारा गुणद्वाराणि अस्तिदूषण वधसामित्त च उक्त, तेण इदरत्थाण परत्तणा कीरदे । त जहा— मसुम्माउअस्स पुत्र उयो वोच्छिज्जदि पञ्चा उदओ, अमज्जदसम्मा दिट्ठिहि णट्ठउधस्स मणुमाउअस्स अजोगिचरिमसमए उदयगोच्छेदुत्तभादो । मिच्छाइट्ठी सोसणसम्मानिट्ठिणो सोदएण पगेदएण वि मणुसाउअ वरति, अनिरोहादो । अमज्जदसम्मादिट्ठी पगेदएण, सोदएण सह तथ वधविरोहादो । गिरतरो वधो, उज्जमाणभये पडिवक्खपपडीए

वध सातर, क्या निरन्तर, या क्या सातर निरन्तर हे, क्या प्रत्यक्षांसे या क्या उनसे बिना ही रन्ध होता है क्या गतिसयुक्त या क्या अगतिसयुक्त बन्ध होता है, इसके बाधने कितनी गनियोगों के द्वारा अथवा अस्वामी है, वधाप्राप्त क्या है, क्या चरम समयमें वध व्युत्पन्न होता है क्या प्रथम समयमें, या क्या अप्रथम अचरम समयमें रन्ध व्युत्पन्न होता है, क्या सादित, क्या अनादिक, क्या ध्रुव या क्या अध्रुव वध होता है, इन प्रश्नोंको यहा करना चाहिये । फिरसे पूछायुक्त जनोंके अनुग्रहके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादष्टि, सामादनमम्यगदष्टि और अमयतमम्यगदष्टि रन्धक है । ये बन्धक हैं, जेप जीन अनन्धक है ॥ ३० ॥

इस सूत्रमें वधाप्राप्त और गुणज्ञानोंका आश्रयकर रन्धस्वामित्व ही कहा गया है, इसलिये अथ जयोंकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है— मनुष्यायुका पूर्वमें बन्ध व्युत्पन्न होता है पश्चात् उदय, क्योंकि, असंयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें मनुष्यायुके बाधके व्युत्पन्न होजानेपर भयोकके उत्पत्ति अन्तिम समयमें उदयका व्युत्पन्न पाया जाता है । मिथ्यादष्टि और सामादनमम्यगदष्टि स्वाभाव्य और परादयमे भी मनुष्यायुको बाधते हैं, क्योंकि, इसमें कोई निरोध नहीं है । अमयतमम्यगदष्टि परादयमे ही मनुष्यायुको बाधते हैं, क्योंकि, आदयक सात्र उच हातेरा इस गुणस्थानमें निरोध है । इसका वध निरन्तर है, क्योंकि, वध्यमान भयमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके बाधके बिना इसके बन्धकी

घषेण निणा ग्रहपरिसमत्तिदमणादो । ग्रहविरोहो अतरमिदि किण्ण घेष्पदे ? ण, षडिवक्ख-
पयडिनधरुदतरेण एत्थ पओजणादो । मिच्छादिद्विस्म मूलुत्तरणाणेगसमयजहणुक्कस्सपच्चया
णाणारणहि वुत्ता चेत्त होंति । णग्रि णाणामयउत्तस्सपच्चया तेत्त होंति, वेउज्विय-
मिस्स-कम्मइयाणमभावादो । मासणस्स णाणामयउत्तस्सपच्चया सत्तेतालीस, ओरालियमिस्स-
वेउज्वियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो । अमजदसम्माइद्विस्म मणुस्माउअ ग्रहमाणस्स मूलपच्चया
तिणिण, मिच्छताभावादो । एगसमयजहणुक्कस्सपच्चया णव सोल्लस । णाणामयउत्तरपच्चया
वादाल, ओगलिय-ओगलियमिस्स-वेउज्वियमिस्स कम्मइयाणमभावादो । तिणिण वि गुणट्टाणाणि
मणुस्सगइमजुत्त ग्रति, तन्नास्स अण्णगईहि मह विरोहदो । चउगइमिच्छाइद्वि-सामण-
सम्माइद्विणो सामी । दुगइअसजदसम्मादिद्विणो सामी, तिरिक्क-मणुस्सगइद्विअसजद-
सम्मादिद्वीण मणुस्माउअरेण विरोहदो । ग्रहट्टाण सुगम । ग्रहोत्तरेदो असजदसम्मादिद्विस्स
अपद्धम अचरिममए । मणुस्माउअस्स वओ सादि-अद्दुवो, ग्रहस्स सुवत्ताभावादो ।

समाप्ति देखी जाती है ।

शुका—ग्रन्थका विरोध ही अन्तर है, ऐसा क्या नहीं ग्रहण करते ?

ममाधान—ऐसा ग्रहण इसलिये नहीं करते कि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके ग्रन्थ
द्वारा किये गये अन्तरमे प्रयोजन है ।

मिथ्यादृष्टिके मूल और उत्तर नाना व एक समय सम्बन्धी जगत्प्रत्यय उत्कृष्ट
प्रत्यय ब्रह्मावरणमें ब्रह्म रूप ही होते हैं । विशेष इतना है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट
प्रत्यय तिरपण होते हैं, क्योंकि, वैज्ञानिकमिश्र और कार्मण काययोगका यहाँ अभाव है ।
सासादनसम्यग्दृष्टिके नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय सत्तालीस होते हैं, क्योंकि, यहाँ
औदात्तिकमिश्र, वैज्ञानिकमिश्र और कार्मण काययोगोंका अभाव है । मनुष्यायुको बाधने
वाले असयतसम्यग्दृष्टिके मूल प्रत्यय तीन होते हैं, क्योंकि, उसके मिथ्यात्वका अभाव है ।
एक समय सम्बन्धी जगत्प्रत्यय उत्कृष्ट प्रत्यय नौ और सोलह होते हैं । नाना समय सम्बन्धी
उत्तर प्रत्यय प्यालीस होते हैं, क्योंकि, यहाँ औदात्तिक, औदात्तिकमिश्र, वैज्ञानिकमिश्र
और कार्मण काययोगोंका अभाव है ।

तीनों ही गुणस्थान मनुष्यगतिमे संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उसके ग्रन्थका
अन्य गतियोंसे साथ विरोध है । चारों गतियोंवाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि
स्वामी हैं । दो गतियोंवाले असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यग्गति और मनुष्य
गतिमें स्थित असयतसम्यग्दृष्टियोंके मनुष्यायुग्रन्थमे विरोध है । ग्रन्थाधान सुगम है ।
ग्रन्थग्रन्थदे अयतसम्यग्दृष्टिके अग्रिम अचरम समयमें होता है । मनुष्यायुका ग्रन्थ
सादि अष्टय है, क्योंकि, उसके ग्रन्थके सुवत्ताका अभाव है ।

देवाउअस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ३१ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा
पमत्तसजदा अप्पमत्तमंजदा वधा । अप्पमत्तसंजदद्वाए संखेज्जदिभागं
गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३२ ॥

‘मिच्छाइट्ठिप्पहट्ठि’ एदेण सुत्तायणेण वरद्धाण गुणगयसामित्त च परुविद ।
‘अप्पमत्तमजदद्वाए’ एदेण वधणिण्डुद्धाण परुविद । तिण्ण चेन पम्भवणादो देसाभासिय
सुत्तमिण । तेणेदेण सुइदन्थे भणित्तामो । त जहा— एदस्स पुव्वमुदआ वोच्छिज्जदि पम्भ
वधो, देवाउअस्स अमजदयम्माइट्ठिचरिममपए वोच्छिण्णुदयस्स अप्पमत्तद्वाए सरोज्जदिभाग
गंतूण वधवोच्छेदुवलमादो । परोदएणेन नधो, सोदएणेदस्स तित्थयरस्सेव वधविरोद्धानो ।
गिरत्तो वधो, पडिक्खत्तपयडिक्खत्तयतराभागादो ।

मिच्छाइट्ठिम्म देवाउअ वधनस्स चत्ताणि मूलपञ्चया । एमममइयो जहण्णुक्कस्म

देवायुका कौन बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनमम्यगृष्टि, असयतमम्यगृष्टि, सयतामयत, प्रमत्तमयत, और
अप्रमत्तमयत बंधक है । अप्रमत्तसयतकालके सरयातनें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता
है । ये बन्धक हैं, शेष जीन अवन्धक हैं ॥ ३२ ॥

‘मिथ्यादृष्टि आदि अप्रमत्तसयत तक बंधक हैं’ इस सूत्राग द्वारा बन्धा
ध्यान और गुणस्थानगत स्वामित्वही प्ररूपणा की गई है । ‘अप्रमत्तसयतकालके
संस्थानवै भाग जाकर बंध व्युच्छिन्न होता है’ इससे बंधविनष्टस्थानकी प्ररूपणा की
है । इन तीन अर्थोंकी ही प्ररूपणा करनेसे यह सूत्र देशामर्शक है । इस कारण इससे
मूर्च्छित अर्थोंको कहते हैं । यह इस प्रकार है— देवायुका पूर्वमें उदय व्युच्छिन्न होता है
पश्चात् बन्ध, क्योंकि, असयतमम्यगृष्टिके अन्तिम समयमें इसके उदयके व्युच्छिन्न
होनेपर पश्चात् अप्रमत्तकालके सरयातनें भाग जाकर बंध व्युच्छेद पाया जाता है ।
इसका बंध पर्यायसे ही होता है, क्योंकि, तीर्थंकर प्रकृतिके समान स्रोदयसे इसके
बंध होनेका विरोध है । बन्ध इसका निरंतर है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिके बंधसे किये
गये अंतरका यहां अभाव है ।

देवायुको बांधनेवाले मिथ्यादृष्टिके मूल प्रत्यय चार होते हैं । एक समय सम्बन्धी

पञ्चया दस अट्ठारस । णाणासमयउक्कस्सपञ्चया एक्कवचास, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाण तत्थाभावादो । सासणसम्मादिट्ठिस्स पञ्चया देवाउअ-वन्माणस्स णाणावरणउधत्तुल्ला । णवरि णाणासमयउक्कस्सपञ्चया छादाल, वेउव्विय-वेउ-व्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । असजदसम्मादिट्ठिपञ्चयपरवणाए णाणावरणभगे । णवरि णाणासमयउक्कस्सपञ्चया चादाल, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरा-लियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । उवरिमेसु गुणइाणेषु पञ्चया देवाउअस्स णाणा-वरणत्तुल्ला ।

सव्वे देवगइसजुत्त, अण्णगइबधेण देवाउअबधस्स निरोहादो । तिरिक्ख-मणुस्सगइ-मिच्छाइड्डी मासणसम्माइड्डी असजदसम्माइड्डी सजदासजदा सामी । उवरिमा मणुसा चैव, अण्णत्थ महव्वयाणमणुगलभादो । वधइाण सुगम । अप्पमत्तइाए सप्पेज्जदिभागे गदे देवाउअस्स बधवोच्छेदो । अप्पमत्तइाए सखेजेसु भागेषु गदेषु देवाउअस्स बधो वोच्छिज्जदि-त्ति केषु वि सुत्तपोत्थएसु उवलम्भइ । तदे एत्थ उवएस लद्धण वत्तव्व । देवाउअस्स बधो मादिओ अद्भुवो, अद्भुववधित्तादो ।

जघन्य य उत्कृष्ट प्रत्यय क्रमशः वृक्ष और अटारह होते हैं । नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय इक्याधन होते हैं, क्योंकि, यथा वैकियिक, वैकियिकमिथ, औदारिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंका अभाव है । देवायुको राधनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टिके प्रत्यय ज्ञानावरणके बन्धके समान हैं । विशेष इतना है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय ध्यालीस होते हैं, क्योंकि, वैकियिक, वैकियिकमिथ, औदारिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंका यहा अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टिकी प्रत्ययप्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । विशेषतया यह है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय ध्यालीस हैं, क्योंकि, वैकियिक, वैकियिकमिथ, औदारिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंका यहा अभाव है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवायुके प्रत्यय ज्ञानावरणके समान हैं ।

समी जीव देवगतिसे सयुक्त राधते हैं, क्योंकि, जय गतियोंके बन्धके साथ देवायुके बन्धका निरोध है । तिर्यक् और मनुष्य गतिके मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि असयतसम्यग्दृष्टि और सयतामयत स्वामी हैं । उपरिम जीव मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, दूसरी गतियोंमें महावर्तोंका अभाव है । बन्धाधान सुगम है । अप्रमत्तकालके सख्यातवें भागके वीत जानेपर देवायुका बन्ध-युच्छेद होता है । अप्रमत्तकालके सख्यात बहुभागोंके वीत जानेपर देवायुका बन्ध व्युच्छिन्न होता है, ऐसा किन्ही सूत्रपुस्तकोंमें पाया जाता है । इस कारण यहा उपदेश प्राप्तकर कहना चाहिये । देवायुका बन्ध सान्निध्य अष्टय है, क्योंकि यह अष्टयबन्धी है ।

देवगइ पांचिदियजादि वेउव्विय तेजा कम्मइयसरीर -समचउरस
 संठाण वेउव्वियसरीरअगोअग वण्ण गध रस फाम देवगइपाओग्गाणु-
 पुव्वि अगुरुवलहुव-उपघाद परघाद-उस्साम-पसत्थविहायगइ-तस वादर
 पज्जत्त पत्तेयसरीर विर सुभ सुभग सुस्सर आदेज्ज णिमिणणामाण को
 वधो को अवधो ? ॥ ३३ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठिपहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्टउवसमा खवा बंधा ।
 अपुव्वकरणद्वाए ससेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,
 अवसेसा अनधा ॥ ३४ ॥

जणेदेण सुत्तेण नघट्ठाण गुणगयमामित्त यमणिइट्ठाण नि य वुत्त तेणेद देसामामिय ।
 तदो एदेण सूइदत्थपरुण्णा कीरदे— देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्विय
 अगोअगणामाण पुव्वमुदओ वोच्छिज्जदि पठा वयो, अमपदसम्मादिट्ठिन्दि णट्ठादयाणमेदामि
 चउण्ण पयडीणमपुव्वकरणद्वाए ससेज्जेसु भागेषु गदेसु नधो-च्छेदुवलभादो । तेजा कम्मइय-

देवगति, पचेन्द्रियजाति, वैकल्पिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरार्यमस्थान,
 वैकल्पिकशरीरागोपाग, वर्ण, गम, रस, स्वश, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुगु, उपघात,
 परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, यम, नादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग,
 सुस्वर, आदिय और निमाण, इन नामकर्म प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कौन अनन्धक
 है ? ॥ ३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्णकरणप्रतिष्ठ उपभक्त न क्षयक तत्त बन्धक है । अपूर्ण
 कालके मर्यादा बहुभागोंको विताकर इनका वृत्त व्युत्थित होता है । ये बन्धक है, शेष
 जीन अनन्धक है ॥ ३४ ॥

चूँकि इस सूत्रके द्वारा उपाध्याय, गुणस्थानगत सामित्य और उपाध्यायस्थानका
 ही निदर्श किया गया है अतएव यह देशामशक्त सूत्र है । इस कारण इससे द्वारा सूचित
 अर्थोंका प्ररूपणा करते हैं—देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैकल्पिकशरीर और वैकल्पिक
 शरीरागोपाग नामकर्मका पूरमें उदय-व्युत्थित होता है पश्चात् उध, क्योंकि, अमपदसम्य
 गदृष्टि गुणस्थानमें इन चारों प्रकृतियोंके उदयने नष्ट होजानेपर पश्चात् अपुव्वकरणकालके
 सत्यात बहुभागोंको विताकर इनका बन्धव्युच्छेद पाया जाता है । तैजस व कार्मण

सरीर समचतुरस्रसठाण वण्ण-गध रस फाम अगुरुअलहुअ उपघाद परघाद उस्सास-पसत्थविहाय-
गड-पत्तेयसरीर धिर सुभ सुस्सर-णिमिणणामाण पुव ववो वो छज्जदि पच्छा उदओ, अपुव-
करणहि णट्टवधाण एदामि पयडीण मज्जोगिचरिमसमयमि उदयभोच्छेदुअलभादो । पचिदिय-
जादि तस-चादर पज्जत्त सुभगादेज्जाण पि एवं चेव । उपरि एदासिमज्जोगिचरिममए उदओ
वोच्छिण्णो ।

देवगद-देवगडपाओग्गाणुपुत्ति-वेउत्तियसरीर-वेउत्तियसरीरअगोवगणामाण परोदएण
सत्त्वगुणट्टाणेषु नभो, परोदएण उज्जमाणएक्कासपयडीहि मह पादादो । तेजा कम्मइय उण्ण-
गध रस फास अगुरुअलहुअ धिर सुभ णिमिणणामाओ मोदएणेण उज्जति, धुओदयत्तादो । पचि-
दियजादि-तम-चादर पज्जत्ताण मिच्छाडडिहि ववो सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव,
तत्थ पडिउत्तुदयामाणादो । समचतुरस्रसठाण पसत्थाविहायगड सुस्सराण सत्त्वगुणट्टाणेषु
सोदय परोदओ, पडिउत्तुदयमभाणादो । सुभगादेज्जाण मिच्छाडडि-सामणमम्माडडि सम्मामिच्छा-
डडि अमजदसम्मादिडीसु सोदय परोदओ । उपरि मोदओ चेव, पडिउत्तुदयामाणादो । उवचाद-

समचतुरस्रसस्थान, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुअलहुअ, उपघात, परघात, उच्छ्वास,
प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुस्वर और निर्माण नामरुमना पूर्वमें उन्ध
युच्छिष्ठ होता है पश्चात् उदय, क्योंकि, अपूर्णरक्षणमें उन्धने नष्ट होजानेपर पश्चात्
सयोगनेउलीके अन्तिम समयमें इन प्रकृतियाका उदय युच्छेद पाया जाता है । पचेन्द्रिय-
जाति, तम, चादर, पर्याप्त, सुभग और आदेय, इनका भी उन्धोदय युच्छेद इसी प्रकार है ।
विशेषतया यह है कि इनका उदय अयोगकेउलीके अन्तिम समयमें व्युत्तिष्ठ होता है ।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, त्रिक्रियकशरीर और त्रैक्रियकशरीरागोपागना
उत्तर स्वर गुणस्थानोंमें परोदयमें होता है क्योंकि, ये प्रकृतिया परोदयमें उभनेवाली ग्यारह
प्रकृतियोंके साथ आतीं ह । तैजस उक्तामण शरीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुअलहुअ, स्थिर
शुभ और निर्माण, ये नामरुमप्रकृतिया स्त्रोदयसे ही उधनी ह, क्योंकि, ये धुआदयी ह ।
पचेन्द्रिय जाति, तम, चादर और पर्याप्त प्रकृतियोंका उत्तर मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्त्रोदय
परोदयसे होता है । इसके ऊपर स्त्रोदयसे ही होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष
प्रकृतियाके उदयका अभाव है । समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका
स्वर गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय उन्ध ह, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयकी
सम्भावना है । सुभग और आदेय प्रकृतियोंका उन्ध मिथ्यादृष्टि, सामाद्वनसम्यग्दृष्टि,
सम्पत्तिमिथ्यादृष्टि एवं असत्यतमस्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदयसे होता है । इसके
ऊपर स्त्रोदयमें ही होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

परघाद-उत्साम पतेयमरीरण मिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-असज्जदसम्मादिट्ठीसु सोदय परोदओ
 यधो, अपज्जत्तकाले परघादुत्सासाणमुदयाभावे वि, विग्गहगदीए उवघाद पतेयमरीरण
 उदयाभावे वि, मिच्छाइडिम्हि पतेयसरीरस्स साहारणसरीरोदए सते वि वधुवलभादो । अव
 सेसाण सोदओ चेव, अपज्जत्त साहारणसरीरादयाणमभावादो । णवरि परघादुत्सासाण पमत्तामि
 सोदय परोदओ यधो ।

तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गय रस-फास अगुरुबलहुव-उवघाद-णिमिणाण गिरतरो यधो,
 धुववधित्तादो । देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुत्ति वेउच्चियसरीर वेउच्चियसरीरअगोवगाण मिच्छा
 इडि-मासणमम्मादिट्ठीसु सातर गिरतरो । कुणो ? अमखेज्जवासाउअतिरिक्ख मणुस्सेसु गिरतर
 वधुवलभादो । उवरि गिरतरो चेव, एगसमएण वधुवरमाभावादो । समचउरससठाण-पमत्त
 विहापगइ सुभग सुस्स ओदेज्जाण सातर-गिरतरो मिच्छाइडि-मामणमम्मादिट्ठीसु, भोगभूमिएसु
 गिरतरवधुवलभादो । उवरि गिरतर, पडिवस्सपयडिअभावादो । पचिंदियजादि-त्तस बादर-

उपघात, परघात, उन्मत्तास और प्रत्येक शरीर प्रक्रतियोंका मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि,
 और असत्यतत्त्वम्यदृष्टि गुणस्थानोंमें स्वादय परोदय बन्ध है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें परघात
 और उन्मत्तास प्रक्रतियोंके उदयका अभाव होनेपर भी उनका बन्ध, त्रिग्रहगतिमें उपघात और
 प्रत्येक शरीरके उदयका अभाव होनेपर भी उनका बन्ध, तथा मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें
 प्रत्येक शरीरका साधारणशरीरके उदयके होनेपर भी बन्ध पाया जाता है । शेष गुणस्थान
 वनी जीवोंके उनका बन्ध स्वोदय ही है । क्योंकि, यहा अथर्थास और साधारणशरीरके
 उदयका अभाव है । विशेषता यह है कि परघात और उन्मत्तासका प्रमत्त गुणस्थानमें
 स्वोदय परोदय बन्ध है ।

तैजस य कार्मेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुबल, उपघात और निर्माण,
 इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, य ध्रुवगन्धी प्रक्रतिया है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी,
 वैश्विकशरीर और वैश्विकशरीरागोपाग, इनका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्य
 दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर है । इसका कारण यह है कि असत्यतत्त्वम्यदृष्टि
 और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । इसमें ऊपर निरन्तर ही बन्ध है, क्योंकि,
 एक समयसे बन्धका नाश नहीं होता । समचतुरस्रसमस्थान, प्रशस्त्वविहायोगति, सुभग,
 सुन्दर और आदेय प्रक्रतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर
 निरन्तर है, क्योंकि, भोगभूमिजीवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर
 निरन्तर ही बन्ध है । क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रक्रतियोंके बन्धका अभाव है । पचेन्द्रिय

पज्जत्त पत्तेयसरीराण मिच्छाद्विड्ढिमातर निरतरो वधो । कुदो ? सणक्कुमारादिदेव णेरइएसु भोगभूमिएसु च निरतरवधुवलभादो । सासणादिसु निरतरो, पडिवन्त्तपयडिवधाभावादो । परवादुस्सासाण मिच्छाद्विड्ढि सातर-निरतरो, देव-णेरइएसु भोगभूमि च निरतरवधुवलभादो । सासणादिसु निरतरो, अपज्जत्तवभाभावादो । थिर सुमाण मिच्छाद्विड्ढि जाव पमतो त्ति सातरो । उतरि निरतरो, निप्पडिवक्खपयडिवधादो ।

देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुच्चि-वेउव्वियदुगाण मिच्छाद्विड्ढि सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्स कम्मइय वेउव्वियदुगाभावादो एक्कवचास-छाएदालीसपच्चया । सम्मामिच्छा-दिट्ठिमि चोदालीसपच्चया, वेउव्वियकायजेगाभावादो । असज्जसम्मादिट्ठिमि चोदालीस-पच्चया, वेउव्वियदुगाभावादो । असेसाण पयडिण पच्चया सव्वगुणट्ठाणेसु [णाणावरण-] पच्चयतुल्ला, निसेसकारणाभावादो । जदि अत्थि तो चित्थिय वत्तव्वो ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुच्चिओ सव्वगुणट्ठाणजीवा देवगइसज्जत्त वधति, अण्णगईदि मह विरोहादो । वेउव्वियसरीर वेउव्वियसरीरअगोपगाणि मिच्छाद्विड्ढि देव णेरइयगइसज्जत्त ।

जाति, उप्त, रादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध है। इसका कारण यह है कि सन्तुष्टमारादि देवों, नारकियों और भोगभूमिजोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। सासादन आदि उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। परधान और उच्छ्वासका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, देव, नारकी और भोगभूमिजोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। सासादन आदि उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, यहा अपर्याप्तके बन्धका अभाव है। शिर और शुभ प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टिमें लेकर प्रमत्त तक सान्तर है। ऊपर निरन्तर है, क्योंकि, यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और वैकल्पिकछिन्नके प्रत्यय मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे इत्यागत और छयालीस ह, क्योंकि, यहा औदारिकामिध, कर्मण और वैकल्पिकछिन्नके प्रत्ययोंका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें छयालीस प्रत्यय ह, क्योंकि, यहा वैकल्पिक काययोगका अभाव है। असयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चयालीस प्रत्यय ह, क्योंकि, यहा वैकल्पिकछिन्नका अभाव है। शेष प्रकृतियोंके प्रत्यय सर्व गुणस्थानोंमें [ज्ञानावरणके] प्रत्ययोंके समान हैं, क्योंकि, विशेष कारणोंका अभाव है। और यदि हैं तो विचारकर कहना चाहिये।

देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सत्र गुणस्थानोंके जीव देवगतिसे सयुक्त बाधते ह, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध है। वैकल्पिकशरीर और वैकल्पिकशरीरगोपगको मिथ्यादृष्टि जीव देवगति वनरकगनिसे सयुक्त बाधते हैं। उपरिम

उपरिमगुणद्वारेणु देवगदमजुत्त पति, सेमगुणद्वाराण निरयगदमधेण सह विरोहादो ।
 पंचिदियनादि-तेना कम्मदय णण गण-रम-फाम-अगुरुअल्लुअ उपाद परपाद-उत्तास-तम-
 वादर पजत्त पत्तेयमरीर निमिणणामाओ मि-अड्डा चउगइमजुत्त, सामणो निगइमजुत्त,
 मम्मामिच्छादिदि-अमजदसम्मादिदिणो दुगइमजुत्त, उपरिमा देवगदमजुत्त पति । समचउत्त
 सठाण पसत्थविहायगद धि-सुभ सुभग सुस्सर आदेजणामाओ मिच्छादिदि सामणसम्मादिदिणो
 तिगइमजुत्त, निरयगद-ए अभावादो । सम्मामिच्छादिदि-असज्जदसम्मादिदिणो दुगइमजुत्त,
 निरय निरिक्कवगईणमभावादो । उपरिमा देवगदमजुत्त, नत्थ सेमगदं वधाभावाणे ।

देवगदि देवगदियाओगणुपुत्रि-वेउविचयमरीर वेउविचयमरीरअगोउगणामाण वधम्म
 निरिक्क मगुस्समग मिच्छादिदि-सामणसम्मादिदि मम्मामिच्छादिदि-असज्जदसम्मादिदि मज्झिमसंनदा
 सामी । उपरिमा मणुमा चेत्त, अण्णत्थ तेमिमभावादो । पंचिदियजादि-तेना-कम्मदयसरीर
 समउत्तसमठाण णण गण-रम-फाम-अगुरुअल्लुअ-उपाद-परपाद-उत्तास-यमत्थविहायगद
 तम-वात्त पजत्त-पत्तेयमरीर धि-सुभ सुभग सुस्सर आदेज निमिणणामाण चउगउमिच्छादिदि-
 सामणसम्मादिदि मम्मामिच्छादिदि अमजदसम्मादिदिणो, दुगइमज्झिमसंनदा, मणुमगदपमत्तादो

गुणद्वाराण देवगतिसंयुक्त बाधने ह, क्योंकि, देव गुणद्वाराण नरकगतियन्धने साथ
 गिरो है । पंचेन्द्रियजानि, तज्जस च कामण शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पृश, अगुरुअल्लु, उपपात,
 परपात, उच्छवास, व्रस, वादर, पयाण प्रत्येकशरीर और निर्माण नामकर्मोंके मिथ्याहृष्टि
 चाग गतियोंके संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तैज गतियोंके संयुक्त, सम्यग्मिथ्याहृष्टि च
 असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंके संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिके संयुक्त बाधने ह ।
 समचतुरस्रसंज्ञान, प्रशस्तविहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्सर और आदेय नाम
 कर्मोंके मिथ्याहृष्टि च सासादनसम्यग्दृष्टि तैज गतियोंके संयुक्त बाधने ह, क्योंकि, इनके
 बाधने मात्र इनके नरकगतिज उक्का अभाव है । सम्यग्मिथ्याहृष्टि और असंयतसम्यग्
 दृष्टि दो गतियोंके संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, इनके नरकगति और निर्यग्गतिके बाधका
 अभाव है । उपरिम जीव देवगतिके संयुक्त बाधते हैं क्योंकि, उनमें शेष गतियोंके बाधका
 अभाव है ।

देवगति, देवगतिप्राप्ते यानुपूर्वा, चैत्रियिकशरीर गते अक्रियिकशरीरागोपाण
 नामकर्मोंके उधके तिर्थे च समनुय गतिगले मिथ्याहृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या
 हृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत प्राप्ती ह । उपरिम जीव मनुष्य ही प्राप्ती
 है, क्योंकि, अन्यत्र प्रमत्तसंयतादिकोंका अभाव है । पंचेन्द्रियजानि, तज्जस च कामण शरीर,
 समचतुरस्रसंज्ञान, वण, गन्ध, रस, स्पृश, अगुरुअल्लु, उपपात, परपात, उच्छवास,
 प्रशस्तविहायोगति, व्रस वात्त, पयाण, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय
 निर्माण नामकर्मोंके बाधके चारों गतियोंगले मिथ्याहृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि,
 सम्यग्मिथ्याहृष्टि च असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंगले संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके

सामी । वनद्वान् सुगम । अपुन्यकरणद्व मत्तखडाणि काऊण ठखडाणि उपरि चडिय सत्तम-
खडावमेमे वधो वोच्छिज्जदि । सुत्ताभावे सत्त चेत्त खडाणि कीरति त्ति कथं णत्तदे ? ण,
आडरियपरपरागदुनदेमादो । तेजा-रुम्मडयमरीर-पण्ण गत्त रत्त फाम-अगुरुत्तलहुव-उत्तघाद-
णिमिण्णामाणं मि-अदिद्धिम्हि चउत्तिहो वधो, पुनरुत्तित्तदो न उपरिमणुणेषु तिक्किहो,
धुत्ताभावादो । अत्तमेमाओ पयडीओ मादि अद्धुवियाओ, पडिउत्तपयडिउत्तधसभवादो, पर-
घादुत्तमाणमपज्जत्तमजुत्त वत्तमाणत्तले पडिउत्तपयडिउत्तपयडीए जभावे वि वधाभावुत्तलभादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवगणामाणं को वधो को
अवंधो ? ॥ ३५ ॥

सुगममेद ।

अप्पमत्तसज्जदा अपुव्वकरणपइट्टुत्तवसमा खवा वधा । अपुव्व-
करणद्वान् संखेजे भागे गंतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा,
अवसेसा अवधा ॥ ३६ ॥

प्रमत्तसयतादिन स्त्रीमी ह । अत्तज्जान सुगम हे । अपूर्वकरणकालके सत्त खण्ड करे छह
खण्ड ऊपर अद्धुत्त सत्तये खण्डके शेष रहनेपर उनका बन्ध चुच्छिन्न होता है ।

शुक्रा—सूत्रके जभावे सत्त ही खण्ड किये जाते ह यह किस प्रकार शत
होता है ?

समाधान—नहीं, यह आचार्यपरम्परागत उपदेशसे ज्ञान होता ह ।

तेजस व जामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्तलहु, उपपात ओर निर्माण
नामकमौका मिथ्यादृष्टि गुणस्वान्तमें चारों प्रकारका बन्ध ह, क्योंकि, ये अत्यन्धी प्रकृतिया
ह । उपरिम गुणस्वान्तमें तीन प्रकारका बन्ध हे, क्योंकि, उहा ध्रुव बन्ध नहीं है । शेष
प्रकृतिया सावि व अधुव बन्धमे युक्त ह, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव
हे, परधान नार उच्छिन्नान्तमें अपर्याप्त अयुक्त पाधनेके कारणमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धके
अभावमें भी उनका बन्ध नही पाया जाता हे ।

आहारकरीर और आहारकरीरगोपाग नामकमौका कौन बन्धक और कौन
अवन्धक है ? ॥ ३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसयत और अपूर्वकरणप्रतिष्ठ उपश्रमक व क्षपक बन्धक हैं । अपूर्वकरण-
कालके सत्तयात बहुभागोंको विताकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हे, शेष जीव
अवन्धक हैं ॥ ३६ ॥

एद देसामामियसुत, उधद्वान, सामित्त निणद्वद्वान नि य' परूवणादो । तेणेदेण सुइदत्याण परूवणा कीरदे— एदामिसुदओ पुव्व वोच्छिजेज्जिदि पच्छ वधो, पमतमजम्मि णद्वेदयाणमेदासिमपुव्वमरणाम्मि वधोच्छेदुवलमादो । परोदएणेन एदाओ वज्जति, आहार दुगोदयमिहिदअप्पमतेसु चेन वधोउलमादो । णितर वज्जति, पडिवक्खपयडीण वधेण निणा वधमादो' । पच्चयपरूवणाए मूलुत्तरणाणेगममयजहणुक्कस्सपच्चया णाणारणस्येव वत्तया । [जदि] चहुमज्जलण णउणोक्कयाय-जोगा पाणीम चेव आहारदुगस्स पच्चया तो मव्वेसु अप्पमत्तापुव्वरूणेसु आहारदुगवधेण होदव्व । ण चेव, तद्वाणुलमादो । तदो अण्णेहि नि पच्चएहि होदव्वमिदि ? ण एम दोमो, इच्छिज्जमाणत्तादो । के ते अण्णे पच्चया जेहि आहार दुगस्स वधो होदि ति बुते बुच्छेदे— तित्थयराडरिय नहुसुद-पनयणाणुरामो आहारदुग पच्चओ । अप्पमात्ता नि, मप्पमादेसु आहारदुगवधस्माणुलमादो । अपुव्वस्सुवमिसत्तमभाणे

यह वेशमशोक सूत्र है, क्योंकि यह वन्धाधान, अग्रमित्त और उन्धयित्तद्वयानका ही प्ररूपण करता है । इसी कारण इस सूत्रमें सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— इन दोनों प्रकृतियोंका उदय पूर्वमें युच्छिज्ज होता है, पश्चात् वन्ध, क्योंकि प्रमत्तसयत्तमें इनके उदयके नष्ट होजानेपर अपूर्वकरणमें वन्ध युच्छेद पाया जाता है । ये दोनों प्रकृतिया परो वधसे वधनी है, क्योंकि, आहारद्विकके उन्धसे रहित अप्रमत्तसयत्तोंमें अघात अप्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें ही इनका उन्ध पाया जाता है । उक्त दोनों प्रकृतियोंका उन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वधके बिना इनके उन्धका सद्भाव पाया जाता है । प्रत्ययप्ररूपणमें मूल उ उत्तर नाना एव एक समय सन्धन्धी जघन्य उच्छेद प्रत्यय शानावरणके समान ही कहना चाहिये ।

शुका—चार सज्जलन, नौ नोकयाय और नौ योग, इस प्रकार यदि पाईस ही आहारद्विकके प्रत्यय हैं ना सत्र अप्रमत्त और अपूर्वकरण सयत्तोंमें आहारद्विकका वन्ध होना चाहिये । परन्तु ऐसा है नहा, क्योंकि, पैसा पाया नहीं जाता । अत एव अन्य भी प्रत्यय होना चाहिये ?

समाधान—यह कोई दाव नहीं है, क्योंकि, अय प्रत्ययोंका मानना अभीष्ट ही है ।

शुका—ये अन्य प्रत्यय जैनसे हैं निम्नके द्वारा आहारद्विकका उन्ध होता है ?

समाधान—इस शङ्कके उत्तरमें कहते हैं— तीर्थन्तर, आचार्य, बहुभुत अर्थात् उपाध्याय और प्रजयन, इनमें अनुगम करना आहारद्विकका कारण है । इसके अतिरिक्त प्रमादका अभाव भी आहारद्विकका कारण है, क्योंकि, प्रमाद सहिद जीरोंमें आहारद्विकका वन्ध पाया नहीं जाता ।

किण्ण वधो ? ण, तत्थ तित्थयराडरिय न्हुसुद-पवयणविमयरागजणिदससराराभावादो । देवगइसुजुत्तो आहारदुगणधो, अण्णमईहि सह तन्वधविरोहादो । मणुमा चैव सामी, अण्णत्थ तित्थयराडरिय-न्हुसुदरागस्स मंजममहियस्स अणुत्तलभादो । वधद्धान वधविणट्टाण च सुगम, सुत्तणिट्टितादो । मादिओ अट्टेवा च वधो, आहारदुगपच्चयस्स मादि-सपन्नवमाणत्त-दसणादो ।

तित्थयरणामस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ३७ ॥

सुगम ।

असंजदसम्माइट्ठिण्हुडि जाव अपुव्वकरणपइट्टवसमा खवा वंधा । अपुव्वकरणद्वाए संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३८ ॥

एद देसामामियसुत्त, मामित्त-वधद्धान-वधविणट्टाणाण चैव परूवणादो । तेणेदेण

शका—अपूव्वकरणके उपरि सप्तम भागमें इनका बन्ध क्या नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता, क्योंकि वहाँ तीर्थंकर, आचार्य बहुश्रुत और प्रयचन विषयक रागसे उत्पन्न हुए संस्कारोंका अभाव है ।

आहारछिका बन्ध देवगनिते सयुक्त होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्ध होनेका विरोध है । इनके बन्धके मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यत्र तीर्थंकर, आचार्य और बहुश्रुत विषयक राग समय सहित पाया नहीं जाता । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं, क्योंकि, ये स्थान ही निदिष्ट हैं । दोनों प्रकृतियोंका सादिक और अधुय बन्ध होता है, क्योंकि, आहारछिका प्रत्यय सादि जोर सपर्ययमान देखा जाता है ।

तीर्थंकर नामकर्मरु कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रतिष्ठ उपशमक और क्षपक तक बंधक हैं । अपूर्वकरणकालके सख्यात बहुभागोंमें निताकर बन्ध युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अवन्धक हैं ॥ ३८ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि वह नामित्त, बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थानका

सुदृढत्ववर्णन कर्म्मामो— तित्थयरस्स पुत्र यधो गोच्छादि पच्छा उदओ, अपुव्वकण
 छसत्तमभागचरिसममण णट्ठवधम्म तित्थयरम्म सजोगिपढमसमण उदयस्मादिं कादूण
 थनोमिचरिसममण उन्त्योत्तेदुत्तमादो । पगेदण्णेय यधो, तित्थयरकम्मदयमभाडाणेनु
 सनोमि-अनोमिजिणेषु तित्थयरनधाणुत्तमादो । निरनरो नओ, मगवधकाण्णे सते^१ अद्दामसएण
 यधुत्तरमाभाडादो । अमनदसम्मानिद्वी दगडमजुत्त ववति, तित्थयरनधम्म णिग्य तिरिक्खगइ
 यधेहि सह निरोद्दादो । उत्तरिमा देवगडमजुत्त, मणुमगद्विदजीजाण तित्थयरवधम्म देमगइ
 मोत्तण अण्णगइहि सह निरोद्दादो । तिगणिअमनदसम्मादिद्वी सामी, तिरिक्खगइ^२ तित्थयरस्स
 नधाभाडादो । मा होदु तत्त्व तित्थयरकम्मनस्स पारभो, निणाणमभाडादो । किंतु पुत्र
 यद्वनिरिक्खगइजाण पच्छा पडिणणसम्मत्तादिगुणेहि तित्थयरकम्म नधमाणाण पुणो तिरिक्खे
 लुण्णणाण नि ययरम्म यधस्स सामित्त रम्मत्ति ति युत्ते— ण, नद्धनिगिक्ख मणुस्माउभाण
 जीजाण नद्धणिरय देवाउजाण जीजाण व तित्थयरकम्मस्स वराभावादो । त पि

ही प्रवृत्त कर रहा है । इसी कारणसे इसका द्वारा सूचित अधोका घटन करते हैं—
 तीर्थंकर नामकमका पूर्वमें उन्ध भ्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उन्ध, क्योंकि अपूर्णकरणके छोटे
 सत्तम भागके अंतिम समयमें य धने नष्ट हो जानेपर तीर्थंकर नामकमका न्ययोगकेवशके
 प्रथम समयमें उदयका प्रारम्भ करने अयोग्यरूपसे अन्तिम समयमें उदयका भ्युच्छेद
 पाया जाता है । इसका उन्ध परोदयमें ही होता है, क्योंकि, जहां तीर्थंकरकमका उदय
 सम्भव है उा न्ययोग्यरूपका और अयोग्यरूपकी जिनामें तीर्थंकरका उन्ध पाया नहीं जाता ।
 यन्ध इसका निरंतर है क्योंकि, अपन कारणसे होकर कालक्षयसे यन्धका निश्चय
 नहीं होता । अमयतसम्यग्दाष्टि होने दो गतियोंमें सयुक्त राधने हैं, क्योंकि, तीर्थंकर प्रकृतिके
 यन्धका नष्ट न नियन्त्र गतिमें है न उके साय निरोध है । उपरिम जीव देवगतिमें सयुक्त
 पाधते हैं, क्योंकि मनुष्यगतिमें स्थित जीवोंके नायकर प्रकृतिके उन्धका देवगतिको
 छाद्यकर अय गतियोंके साय निरोध है । तीन गतियोंके अमयतसम्यग्दाष्टि जाय इसके
 कारणसे स्वामा है, क्योंकि, निर्यग्गतिके साय नायकरक यन्धका अभाव है ।

शुक्रा—नियग्गतिके तीर्थंकरकमके यन्धका प्रारम्भ भले हो न हो, क्योंकि, यहा
 जिनाका अभाव है । किंतु निर्यग्गतिमें पूर्वम नियग्गायुको बाध लिया है उसके पीछे सत्य
 क्यादि गुणोंके प्राप्त हो जानेसे नायकरकमका नायकर पुन तियन्धोंमें उत्पन्न होनेपर
 तीर्थंकरके यन्धका समाप्तिपना पाया जाता है ।

ममागान — इसके उत्तरमें कहते हैं कि ऐसा होना सम्भव नहीं है, क्योंकि,
 जिहोंने पूर्वमें निर्यग्ग व मनुष्य आयुका उन्ध कर लिया है उन जीवोंके नष्ट व देव आयुओंके
 यन्धसे सयुक्त जीवाका समान तीर्थंकरकमके उन्धका अभाव है ।

शुक्रा—उह भा कैसे सम्भव है ?

कुदे ? पारद्वतित्थयरनधममादा^१ तदियभवे तित्थयरसतकम्मियजीवाण मोक्खगमण-
णियमादो^२ । ण च तिरिक्ख मणुस्सेसुप्पणमणुससम्माइट्ठीण देवेषु अणुप्पज्जिय देव-
णेरइएसुप्पणणा व मणुस्सेसुप्पत्ती अत्थि जेण तिरिक्ख मणुस्सेसुप्पणमणुससम्माइट्ठीण तदियभवे
णिखुडे होज्ज । तम्हा^३ तिगइअसजदसम्माइट्ठिणो चेव सामिया त्ति सिद्ध । सादिओ
अदुवो च चरो, धधकारणाण मादि-मातत्तदसणादो । तित्थयरकम्मस्स पच्चयपरूवणइमुत्तर-
सुत्त भणदि—

समाधान —क्याकि, जिस भयमें तीर्थंकर प्रकृतिका उत्र प्रारम्भ किया गया है
उसस तृतीय भयमें तीर्थंकर प्रकृतिके सत्रयुक्त जीवोंने मोक्ष जानेका नियम है ।
परन्तु तियच जोर मनुष्योंमें उत्पन्न हुए मनुष्य सम्यग्दृष्टियोंकी देवोंमें उत्पन्न न होकर
वेच नारकियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके समान मनुष्योंमें उत्पत्ति होती नहीं जिससे कि तिर्यच
व मनुष्योंमें उत्पन्न हुए मनुष्य सम्यग्दृष्टियोंकी तृतीय भयमें मुक्ति हो सके । इस कारण
तीन गतियोंके जन्मयत्तसम्यग्दृष्टि ही तीर्थंकरप्रकृतिके उत्रके स्वामी हैं, यह बात सिद्ध
होती है ।

निशपार्थ—यहा शक्राकारण कहना है कि जिन जीवने पूर्वग तिर्यगायुको राध लिया
है वह यदि पश्चात् सम्यक् प्रादि गुणोंको प्राप्त कर तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध प्रारम्भ करे
और तत्पश्चात् मरणको प्राप्त होकर तिर्यचोंमें उत्पन्न हो तो वह तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका
स्वामी क्यों नहीं हो सकता ? इसके उत्तरमें आचार्य कहते हैं कि यह सम्भव नहीं है, कारण
कि तीर्थंकर प्रकृतिको पाधनेके भयसे तृतीय भयमें मोक्ष जानेका नियम है । परन्तु यह बात
उक्त जीवमें घन नहीं सकती, क्योंकि, तिर्यगायुको राधनेवाला जीव द्वितीय भयमें तिर्यच
होकर सम्यग्दृष्टि होनेसे तृतीय भयमें देव ही होगा, मनुष्य नहीं । अतः पर कोई भी तिर्यच
तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका स्वामी नहा होसकता ।

तीर्थंकर प्रकृतिका सादिक व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, उसके बन्धकारणोंके
सादि सान्तता देखी जाती है । तीर्थंकर कर्मके प्रत्ययोंके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

१ अत्रतो ' तित्थयरकम्मस्स ववामादा ' , आ तामया ' तित्थयरववामादा ' इति पाठ ।

२ एतच्च तीर्थंकरनामक मनुष्यगतायेन वर्तमान पुण्य स्त्री नपुंसकी वा तीर्थंकरवत्तत्त्वं पृथक् तृतीयमत्र
प्रायः बहुमासते । प्र सा १०, ३१३-१४

३ ग्रन्थि ' त जहा ' इति पाठ ।

कदिहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोद' कम्मं वंधति ?

॥ ३९ ॥

कः तित्थयरस्स णामकम्मावयवस्स गोदसण्णा ? ण, उच्चागोद-उपासिताभावित्तणेण तित्थयरस्स वि गोदत्तमिद्धीदो । मेसकम्माण पच्चय अभणिदूण तित्थयरणामकम्मस्सेव किमिदि पच्चयपरूवणा कीरदे ? सोलमकम्माणि मिच्छत्तपच्चयाणि, मिच्छत्तोदण्ण विणा एदेमि वधा भावादो । पणुसीमकम्माणि अणत्ताणुवधिपच्चयाणि, तदुदण्ण विणा तेसि वधाणुवलभादो । दस कम्माणि असज्जमपच्चयाणि, अपच्चस्साणावरणोदण्ण विणा तेमि वधाभावाणे । पच्चक्खाणावरणचटुस्स सगमामण्णोदयपच्चय, तेण विणा तत्रयाणुवलभादो । छत्तकम्माणि पमादपच्चयाणि, पमादेण विणा तेमि वधाणुवलभादो । देवाउअ मज्झिमविमोहिपच्चइय, अप्पमतद्वाए सखेत्तदिभागे गदे अउविमोहिद्वानमपादेदण मज्झिमविसोहिद्वाने चेव देवाउअस्स

किनने कारणेमे जीव तीर्थकर नाम गोत्रकर्मको नाथते है ? ॥ ३९ ॥

शुक्रा—नामकर्मक अत्रयवभूत तीर्थकर कर्मकी गोत्र स्वप्ता केमे सम्भव है ?

समाधान—यह शका डीक नहा, फ्योकि, उअ गोत्रके बन्धन अजिनाभापी होनेसे तीर्थकरकर्मको भी शाश्वत निश्च है ।

शुक्रा—बोप कर्मोंके प्रत्ययाकी न रहकर केवल तीर्थकर नामकर्मकी ही प्रत्यय प्ररूपणा क्या की जाती है ?

समाधान—मोल्ह कम मिध्यात्वनिमित्तक है, क्योंकि, मिध्यात्वके उदयके बिना इनके बंधनका अभाव है । पच्चोस कम अनन्तानुबन्धनिमित्तक है, क्योंकि, अनन्तानुबन्धी कणायक उन्ध बिना उनका उध नहीं पाया जाता । दश कर्म असत्यमितिमित्तक है, क्योंकि, अप्रत्याख्यानावरणके उदय बिना उनका बन्ध नहीं होता । प्रत्याख्यानावरण चतुष्क अपने ही सामान्य उन्धनिमित्तक है, क्योंकि, उसके बिना प्रत्याख्यानावरण चतुष्कका अभाव पाया नहीं जाता । छह कर्म प्रमादनिमित्तक है, क्योंकि, प्रमादके बिना उनका बंध नहा पाया जाता । देवायु मध्यम विगुद्धिनिमित्तक है क्योंकि, अप्रमत्तकालका सण्यातना भाग चीन जानेपर अविशय विगुद्धिके स्थानको न थाकर मध्यम विगुद्धि

१ तित्थयरणामगोत्रकम्म—तत्त्वस्वनिबन्धन नाम तीव्रकर्मक, तथा गान व कर्मविशेष प्रत्येकव्यवहाराय नाथकर्मकगोत्रम् । अ श पृ २३२३

२ अ गानयो 'तर्ज्जवाणाश्रुतमादो', कान्ती 'उद्वहणाश्रुतमादो' इति पाठ ।

वधवोच्छेददसणादो । आहारदुग्ग विसिद्धरागसमण्णदसजमपञ्चइय, तेण विणा तच्चधाणु-
वलभादो । परमवणिवधमत्तावीसकम्माणि हस्म-रदि भय-दुग्गुछा-पुरिसवेद-चदुसजलणाणि च
कमायविसेमपञ्चइयाणि, अण्णहा एदेसिं भिण्णद्वाणेषु वधवोच्छेदाणुववत्तीदो । सोलमकसायाणि
सामण्णपञ्चइयाणि, अणुमेत्तकसाए वि सते तेसिं वधुवलभादो । सादावेदणीय जोगपञ्चइय,
सुहुमजोगे वि तस्स वधुवलभादो । तेण मच्चकम्माण पञ्चया जुत्तिवलेण णव्वति ति ण
भणिदा । एदस्स पुण तित्थयरणामकम्मस्स वधपञ्चओ ण णव्वदे— णेद मिच्छत्तपञ्चइय,
तत्थ नधाणुवलभादो । णासजमपञ्चइय, सज्जेदेषु वि वधदसणादो । ण कमायसामण्णपञ्चइय,
कसाए सते वि वधवोच्छेददसणादो वधपारमाणुवलभादो वा । ण कसायमददा कारण,
तिव्वरूमाएसु णेरइएसु वि वधदमणादो । ण तिव्वकसाओ कारण, मदकसाएसु सव्वद्वदेवेषु
अपुव्वकरणेषु च वधदसणादो । ण सम्मत्त तन्नधकारण, सम्मादिट्ठिस्स' वि तित्थयरस्स
वधाणुवलभादो । ण केवल दसणविसुज्झदा कारण, खीणदसणमोहाण पि केसिं वि वधाणु-

स्थानमें ही देखाया वधव्युच्छेद देखा जाता है । आहारद्विक निशिष्ट रागसे संयुक्त
नयमके निमित्तमे वधता है, क्योंकि, ऐमे सयमके बिना उसका बन्ध नहीं पाया जाता ।
परमयनियन्धक सत्ताईस कर्म णव हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पुण्यवेद और चार सज्जलन
कपाय, ये सय कर्म कपायविशेषके निमित्तसे वधनेवाले हैं, क्योंकि, इसके बिना उनके
भिन्न स्थानोंमें बन्धव्युच्छेदकी उपपत्ति नहीं बनती । सोलह कर्म कपायसामान्यके
निमित्तसे वधनेवाले हैं, क्योंकि, अणुमात्र कपायके भी होनेपर उनका बन्ध पाया जाता
है । सातावेदनीय योगनिमित्तक है, क्योंकि, सूक्ष्म योगमें भी उसका बन्ध पाया जाता
है । इस प्रकार चूकि नत्र कर्मोंके प्रत्यय युक्तिबलसे जाने जाते हैं, अत उनका यहा कथन
नहीं किया गया । किन्तु इस तीर्थंकर नामकर्मका बन्धप्रत्यय नहीं जाना जाता— कारण कि
यह मिथ्यातन्निमित्तक तो हो नहीं सकता, क्योंकि, मिथ्यात्वके होनेपर उसका बन्ध नहीं
पाया जाता । असयमनिमित्तक भी नहीं है, क्योंकि, सयतामें भी उसका बन्ध देखा जाता
है । कपायसामान्यनिमित्तक भी यह नहीं है, क्योंकि, कपायके होनेपर भी उसका बन्ध
व्युच्छेद देखा जाता है, अथवा कपायके होनेपर भी उसके बन्धका प्राग्भूत नहीं होता । कपाय
मन्दतानिमित्तक भी इसका बन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि, तीव्रकपायवाले नारकियोंके
भी उसका वध देखा जाता है । तीव्र कपाय भी इसके बन्धका कारण नहीं है, क्योंकि,
मन्दकपायवाले सर्वार्थसिद्धिबिमानवासी देवों और अपूर्णकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंमें भी
उसका बन्ध देखा जाता है । सम्यक्त्व भी उसके बन्धका कारण नहीं है, क्योंकि, सम्य
गृष्टिके भी तीर्थंकर कर्मका बन्ध नहीं पाया जाता । केवल दर्शनविशुद्धता भी उसका
कारण नहीं है, क्योंकि, दर्शनमोहका क्षय करचुकेनेवाले भी किन्हीं जीवोंके उसका बन्ध

मलवदिरित्तमम्भसणभावो दमणविमुञ्जदा णाम । कथं ताण एक्काए चेव तित्थयरणाम-
कम्मस्स धधो, मरसम्माइद्दिण तित्थयरणामकम्मउपसगादो ति ? वुच्चदे— ण तिमूढा
वोदत्तमलवदिरोगेहि चेव दमणविमुञ्जदा सुद्धणयाहिप्पाण्ण होदि, किंतु पुत्तिल्लुगुणेहि
सरूव लद्धणं द्विदमम्भसणस्स माहण पासुअपरिच्छागे साहण समाहिमधारणे माहण वेज्जा
वच्चजेगे अरहतभत्तीए बहुसुदभत्तीए पवयणभत्तीए पयणवच्छल्लाए पयणे पहावणे
अभिन्खण णाणोउजेगल्लुत्तणे पयह्वाण विमुञ्जदा णाम । तीए दमणविमुञ्जदाए एक्काए
नि तित्थयरकम्म धधति ।

अथवा, विनयसम्पण्णदाए चेव तित्थयरणामकम्म धधति । त जहा— विणओ
तिनिहो णाण दमण चरित्तविणओ ति । तत्थ णाणविणओ णाम अभिन्खणभिन्खण णाणोव
जेगल्लुत्तदा बहुसुदभत्ती पयणभत्ती च । दमणविणओ णाम पयणेसुउड्डसच्चमारसद्धण
तिमूढादो जेमरणमद्धमलद्धणमरहत सिद्धभत्ती एण लवपडिउञ्जदा सद्धिसवेगसम्पण्णदा ।

सम्भ्यदर्शन भाव होता है उन्हे दर्शनविशुद्धता कहने है ।

शका—केवल उस एक दर्शनविशुद्धतासे ही तीर्थंकर नामकर्मका ग्रन्थ कैसे
सम्भव है, क्योंकि, जसा माननेसे सब सम्भ्यदृष्टियके तीर्थंकर नामकर्मके धधका प्रसंग
आवेगा ?

समाधान—इस शकाके उत्तरमें कहने है कि शुद्ध नयके अभिप्रायसे तीन
मूढताओं और आठ मगोंमें रहित होनेपर ही दर्शनविशुद्धता नहीं होती, किंतु
पूर्वोक्त गुणोंसे अर्पण निजम्भरूपको प्राप्तकर स्थित सम्यग्दर्शनकी साधुओंकी प्रासुक
परित्याग, साधुओंकी समाधिसधारणा, साधुओंकी वैषाद्युक्तिका संयोग, अरहतभक्ति,
बहुभुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचनवत्सलता, प्रवचनप्रमायना और अभीष्टज्ञानोपयोग
युक्ततामें प्रवर्तनेका नाम विशुद्धता है । उस एक ही दर्शनविशुद्धतासे तीन तीर्थंकर कर्मको
वाधते है ।

अथवा, विनयसम्पन्नतासे ही तीर्थंकर नामकर्मके धधने है । यह इस प्रकारम्—
ज्ञानविनय, दर्शनविनय और चारिणविनयके भदसे विनय तीन प्रकार है । उनमें चारपाए
ज्ञानोपयोगसे युक्त रहनेके साथ बहुभुतभक्ति और प्रवचनभक्तिका नाम ज्ञानविनय है ।
आगमोपादि सध पदार्थोंके अज्ञानके साथ तीन मूढताओंसे रहित होना, आठ भलोंको
छोड़ना, अरहतभक्ति, सिद्धभक्ति, क्षण स्मृतिशुद्धता और स्थिसवेगसम्पन्नताको दर्शन

१ प्रतिशु 'सरूवद्धण', यथा 'सरूवलद्धण' इति पाठ ।

२ वाक्यान्वयो 'वच्चजेण' इति पाठ ।

३ अ वाक्यो 'परिवसणदा', यावन्ती 'परिवसणदा' इति पाठ ।

च' । चरित्तिणिजो णाम सीलव्वदेसु णिरदिचारदा आयासएसु अपरिहीणदा जहाथामे तहा तवो च । साहूण पासुगपरिच्चाओ तेसिं समाहिस्साराण तेसिं वेज्जावच्चजोगजुत्तदा पवयण-वच्छल्लादा च णाण दसण-चरित्ताण पि विणओ, तिरियणम्मूहस्स साहु-पयण ति ववएसोदो । तदो विणयमपण्णदा एक्का वि होदूण सोलमावयवा । तेणेदीए विणयसपण्णदाए एक्काए नि तित्थयरणामरुम्म मणुआ वधति । देव णेरइयाण कधमेसा सभवदि ? ण, तत्थ वि णाण-दसणविणयाण सभवदसणादो । कध तिसमूहकज दोहि चेव सिज्जदे ? ण एस दोसो, मट्ठिया-जल सूरणकदेहिंतो समुप्पजमाणसूरणकटकुम्भस्स तक्कद दुदिणेहिंतो चेव समुप्पजमाणस्सुवल्लभादो, दोहि तुरगेहि कट्टिजमाणसदणस्स' थलत्तेणेकेणेव देणेण विज्जाहरेण मणुएण वा कट्टिजमाण-

नियम कहते हैं । शील जतोंमें निरतिचारता, आवश्यकोंमें अपरिहीनता अर्थात् परिपूर्णता, और शक्त्यनुसार तपका नाम चाग्निनियम है । साधुओंके लिये प्राप्त करनेवाले आहारद्विकका दान, उनकी समाधिका धारण करना, उनकी वैराग्यवृत्तिमें उपयोग लगाना, और प्रवचन-घत्सलता, यह ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र्य तीनोंको ही नियम है, क्योंकि, रत्नत्रय समूहको साधु व प्रवचन सब्बा प्राप्त है । इसी कारण चूँकि नियमसम्पन्नता एक भी होकर सोलह अवयवोंसे सहित है, अतः उस एक ही नियमसम्पन्नतासे मनुष्य तीर्थंकर नामरुमको याधते हैं ।

शुक्रा—यह नियमसम्पन्नता देव-नारकियोंने कैसे सम्भव है ?

समाधान—उक्त शका ठीक नहीं, क्योंकि, देव-नारकियोंमें भी ज्ञाननियम और दर्शननियमकी सम्भावना देखी जाती है ।

शुक्रा—तीनों नियमोंके समूहसे सिद्ध होनेवाला काय दोसे ही कैसे सिद्ध हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मट्टी, जल और सूरणकदसे उत्पन्न होने वाला सूरणकदका अकुर उसके कन्द और दुर्दिन अर्थात् वर्षासे ही उत्पन्न होता हुआ पाया जाता है, अथवा दो घोड़ोंसे खींचा जानेवाला रथ चलवान् एक ही देव, विद्याधर या मनुष्यसे

१ अरन्त मिद्ध चङ्ग्य सुदे य धम्मे य साधुग्गे य । आयरिय उवञ्चाण सुपवयणे दसण चावि ॥ मत्तो पूया वण्णजण च नामणमवण्णवादस्स । आपाणपरित्ता दमणविणजो ममाग्गे ॥ म आ ४७-४८,

२ प्रतिपु 'निरियव' इति पाठ ।

३ अत्रो 'कट्टिजमाणसेदसणस्स', अप्रतो 'कट्टिजमाणस्सेदसणस्स', अप्रतो 'कट्टिजमाणसे दसणस्स' इति पाठ ।

सुखलभादो वा । जदि दोहि चेव तित्थयरणामकम्म वज्जदि तो चरित्तिणिणो किमिदि तत्कारणमिदि बुद्धे ? ण एस दोमो, णाण दसणणिणयक-विरोहिचरणणिणो ण होदि ति पदुप्पायणफन्त्तादो ।

अथवा, सीलनदेसु णिरदिचारदाए चेव तित्थयरणामकम्म वज्जदि । त जहा—
हिंसालिय चोन्नम परिग्गेहेहिंतो निरदी वद णाम । वन्परिक्खण' सील णाम ।
सुराराण मासभक्खण सोह माण माया-लोह-हस्म रइ सोम मय द्रुगुल्लिन्वि-पुरिम णवुमपयेयापि
आगो अदिचारो, एदेसि णिणामो णिरदिचारो सपुण्णदा, तस्स भायो णिरदिचारदा' । तीए'
सीलव्वदेसु णिरदिचारदाए तित्थयरकम्मस्स धवो होदि । कथमेत्थ सेमपण्णरमण
सभवो ? ण, सम्मइमणेण राण लउपडिउज्जण लद्धिसमेगसपण्णत्त-साहुसमाहिसथा

लींआ गया पाया जाता है ।

शुका—यदि वो ही धिनयोसे तीथयर नामकर्म बाधा जा सकती है, तो फिर चारित्रविनयको उसका कारण क्यों कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, ज्ञान-वृद्धानधिनयके कायका 'विरोधी' चारित्रविनय नहीं होता, इस बातको सूचित करनेके लिये चारित्रविनयको भी कारण मान लिया गया है ।

अथवा, शील प्रतीमें निरतिचारतासे ही तीर्थंकर नामकर्म बाधा जाता है । यह इस प्रकारसे—हिंसा, असत्य, चौर्य, अमत्स्य और परिग्रहसे विन्त होनेका नाम धत है । प्रतीकी रक्षानो शील कहते हैं । सुरापान, मासभक्षण, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, शोक, भय, जुगुप्सा, लौंउद, पुण्यवेद एव नपुसकवेद, इनके त्याग न करनेका नाम अतिचार और इनके विनाशना नाम निरतिचार या सम्पूर्णता है, इसके भावको निरति चारता कहते हैं । शील प्रतीमें इस निरतिचारतासे तीर्थंकर कर्मका धन्य होता है ।

शुका—इसमें दोष पंद्रह भावनाओंकी सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह ठाक नहीं, क्योंकि क्षण लज्जप्रतिबुद्धता, लब्धि सवेगसम्पत्ता,

१ अपवी ' परिग्रहण ', आ कपला ' पतिव्रतण ' इति पाठ ।

२ अहिंसादिषु मतेषु तत्रनिषालनाधु च नोपवन्नादेषु शीलपु निरतया वृत्ति काठ मतचरतिचार ।
स वि ६, २४ चारित्रविकल्पेषु शील मतेषु निरवद्या वृत्ति शील मतेष्वनतिचार — अहिंसादिषु
मतेषु X X X निराया वृत्ति मायका मनसा शील मतेष्वनतिचार इति स्मृत । त रा-६, २४, ३ शालानि च
मवानि च शील मतम् अथापि समागच्छेद वस्मिन्, तत्र शीलानि उत्तराणा मतानि मूल्युणा तेषु निरतिचार
सद तीथकरनामकम वज्जतीति निश्चयेन । अत्र पृ ८३

३ अथवा ' निरदिचारदीण ', आ-आमया ' निरदिचार ती' इति पाठ ।

रण-चेजात्रच्चजोगजुत्त-पासुअपरिचाग-अरहत-बहुसुद पवयणभक्ति-पवयणपहाणल-स्खणसुद्धि-
जुत्तेण विणा मीलव्वदागमणदिचारत्तस्म अणुअत्तीदो । अमखेज्जगुणाए, सेडीए, कम्म-
णिज्जरुणहेदू वद णाम । ण च सम्मत्तेण विणा हिमालिय चोज्जन्मपरिग्गहविरुमेतेण सा
गुणसेडिणिज्जरा होदि, दोहिंतो चेवुप्पज्जमाणकज्जस्म तत्थेऊदो ममुप्पत्तिविरोहादो । होदु
णाम एदेसिं मभजो, ण णाणविणयस्म ? ण, ऊदव्व णअपदत्थसमूह-तिहुवणविसएण अभिक्खण-
मभिस्सणमुअजोगविसयमापज्जमाणेण णाणविणएण विणा सीलव्वदणिअणसम्मत्तुप्पत्तीए
अणुववत्तीदो । ण तत्थ चरणविणयामजो वि, जहायामतवाअसयापरिहीणत्त पवयणवच्छलत्त-
ल-स्खणचरणविणएण विणा सीलव्वदणिरदिचारत्ताणुअत्तीदो । तम्हां तदियमेद तित्थयर-
णामकम्मअधस्स कारण ।

आनामएसु अपरिहीणदाए— समदा अण-वदण-अडिक्कमण-पच्चस्खाण-विओसगभेएण

साधुसमाधिधारण, धेयात्रत्ययोगयुक्तता, प्राप्त्युपरित्याग, अरहतभक्ति, बहुश्रुतभक्ति,
प्रवचनभक्ति और प्रवचनप्रभाजना लक्षण शुद्धिसे युक्त सम्यग्दर्शनके बिना शील व्रतोंकी
निरतिचारता उन नहीं बनती । दूसरी बात यह है कि जो असंख्यत गुणित श्रेणीसे
कर्मनिर्जराका कारण है वही मत है । और सम्यग्दर्शनके बिना हिंसा, असत्य, चौर्य,
अग्रह और परिग्रहसे विन होंने मात्रसे वह गुणश्रेणीनिर्जरा हो नहा सकती, क्योंकि,
वोनोंसे ही उत्पन्न होनेवाले कार्यकी उनमेंसे एकके द्वारा उत्पत्तिका निरोध है ।

शका—इनकी सम्भाजना कहा भले ही हो, पर ज्ञानविनयकी सम्भाजना नहीं
हो सकती ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि छह द्रव्य, नौ पदार्थोंके समूह और त्रिभुजनको
विषय करनेवाले एन बार बार उपयोगविषयको प्राप्त होनेवाले ज्ञानविनयके बिना शील
व्रतोंके कारणभूत सम्यग्दर्शनकी उत्पत्ति नहीं बन सकती ।

शील व्रतविषयक निरतिचारतामें चारित्र्यविनयका भी अभाव नहीं कहा जासकता
है, क्योंकि यथाशक्ति तप, आयुष्यकापरिहीनता और प्रवचनवन्सरता लक्षण चारित्र्य
विनयके बिना शील व्रतविषयक निरतिचारताकी उपपत्ति ही नहीं बनती । इस कारण यह
तीर्थंकर नामकर्मके अन्धरा तीसरा कारण है ।

आयुष्यकर्ममें अपरिहीनतासे ही तीर्थंकर नामकर्म बधता है— समता, स्तर;

स्वुलभादो वा । यदि दोहि चेव तित्थयरणामकम्म वज्जादि तो चरित्तिणिओ किमिदि तक्काणमिदि बुचदे ? ण एम दोमो, णाण दमण्णिणयकञ्जविगेहिचरणणिणो ण (होदि ति पदुप्पायणफलतादो ।

अथवा, सीलव्धेसु गिरिन्धारदाए चेव तित्थयरणामकम्म वज्जादि । त जहा—
हिंसालिय चोज्जम्भ परिग्गेहिंतो गिरदी वद णाम । वटपरिन्खण' सील णाम ।
सुरावाण मासभन्खण कोह माण माया-लोह-हम्म रद सोग भय दुगुच्छिन्धि-पुरिम णवुमयेयापि
आगो अदिचारो, एदेसि णिणासो गिरिदिचारो मपुण्णदा, तस्म भाओ गिरिदिचारदा । तीए
सीलव्धेसु गिरिन्धारदाए तित्थयरकम्मस्स यवो होदि । कधमेत्थ सेमपण्णसण्ण
समवो ? ण, सम्महसणेण खण लपडिउज्जण लद्धिमयेगमपण्णत्त-साहुममाहिसथा

सींचा-माया पाया जाता है ।

शका—यदि दो ही चिनयोंसे तीयकर नामकर्म बाधा जा सकता है, तो फिर चारित्र्यविनयको उसका कारण क्यों कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, ज्ञान-वैज्ञानविनयके फायदा 'विरोधी' चारित्र्यविनय नहीं होता, इस बातको सूचित करनेके लिये चारित्र्यविनयको भी कारण मान लिया गया है ।

अथवा, शील प्रतीक निरतिचारत्तामे ही तीथकर नामकर्म बाधा जाता है । वह इस प्रकारसे—हिंसा, असत्य, चोरी, अग्रह और परिग्रहसे विरत होनेका नाम प्रत है । प्रतीक रक्षाको शील कहते हैं । सुरावाण मासभक्षण, क्रोध, मान, माया, लोभ, हान्य, रति, शोक, भय, जुगुप्सा, त्विदि, पुरुषवेद धन नपुसकवेद, इनके त्याग न करनेका नाम अतिचार और इनके विनाशका नाम निरतिचार या सम्पूर्णता है, इसने भावको निरति चारता कहते हैं । शीत प्रतीक इस निरतिचारत्तामे तीर्थकर कर्मका बन्ध होता है ।

शका—इसमें दोष पन्द्रह भावनाओंकी सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि क्षणलक्षप्रतिबुद्धता, लक्षि सचेतसम्पन्नता

१ अथवा 'परिग्रहण', या वास्तवो 'पतिव्रत' इति पाठ ।

२ अहिंसादि नेत्र तत्रतिपात्तायेषु च वाचकजन्येषु शब्देषु निरवया वृत्ति शील मनेजनविचार ।
य नि ६, २४ चारित्र्यविनयेषु शील व्रतेषु निरवया वृत्ति शील व्रतेजनविचार — आत्मादिषु
व्रतेषु × × × निरवया वृत्ति वाचकजन्येषु शील व्रतेजनविचार इति कथ्यते । त रा ६ २४, ३ शालादि च
मवानि च शीत व्रतम् अथवा सम्पन्नद, धर्मिक तन चीगनि उत्तरुणा मवानि मूल्युणा तेषु निरतिचार
रन् दीर्घनामकम व्रतात्ति निम्नपथा । प्रव पृ ८३

३ अथवा 'गिरिदिचारदीए', आ-काययो 'गिरिदिचार तीए' इति पाठ ।

महव्याण विणासण-मलोरोहणकारणाणि जहा ण होमति तहा करेमि ति मणेणालोचिय चउ-
रामीदिलस्खवदसुद्धिपडिग्गहो पच्चक्खाण' णाम । सरीराहारेमु' हु मण-चयण-पवुत्तीओ
ओसारिय ज्ञेयम्मि एअग्गेण चित्तणिरिहो विओसग्गो' णाम । एदेमि छणमावासयाण
अपरिहीणदा अपडदा आनामयापरिहीणदा । तीए आनासयापरिहीणदाए एक्काए वि
तित्थयरणामकम्मस्स ववो होदि । ण च एत्थ मेसकारणमभावो, ण च दसणविसुद्धि-
नियसपत्ति वदमालणिरदिचार एणलपडिगेह लद्धिसवेगसपत्ति-जहाधामतव-साहुममाहिसधा-
रण-वेज्जाअच्चजोग-पासुअपरि-चागारहत-वहुसुद पवयणभत्ति पयणअच्छल-प्पहावणाभिकखण-
णाणोवजोगजुत्तदाहि विणा छावासएमु णिरदिचारदा णाम समउदि । तम्हा एद तित्थयर-
णामकम्मअधस्स चउत्थकारण ।

एण-लपडिजुज्झणदाए— खण-लप णाम कालविसेसा । सम्मदमण णाण-वद सील-
गुणाणमुज्जालण कलकपस्सालण मधुक्खण वा पडिजुज्झण णाम, तस्म भायो पडिजुज्झणदा ।
एण लव पडि पडिजुज्झणदा खण लवपडिजुज्झणदा । तीए एक्काए वि तित्थयरणामकम्मस्स

मलेत्पादनके कारण जिस प्रकार न होने देसा करता है, ऐसी मनसे आलोचना करके
चौरासी लाख व्रतोंकी शुद्धिके प्रतिग्रहका नाम प्रत्याख्यान है । शरीर व आहारमें मन एव
प्रचनकी प्रवृत्तियोंको हटाकर ध्येय उस्तुकी ओर एकाग्रतासे चित्तका निरोध करनेको व्युत्सर्ग
कहते हैं । इन छह आवश्यकोंकी अपरिहीनता अर्थात् अलण्डताका नाम आवश्यकतापरि-
हीनता है । उस धर्म ही आवश्यकतापरिहीनतासे तीर्थंकर नामधर्मका उन्ध होता है । इसमें
क्षेप कारणोंका अभाव भी नहीं है, क्योंकि दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पत्ति, व्रत शीलनिरति-
चारता, क्षण लयप्रतिबोध, लघि सवेगसम्पत्ति, यथाज्ञाति तप, साधुसमाविम्वधारण,
धैर्यात्रत्ययोग, प्राप्तिरूपरित्याग, अरहन्तभक्ति, उद्बुधतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचनप्रसलता,
प्रवचनप्रमात्रता और धर्मक्षेप ज्ञानोपयोगयुक्तता, इनके बिना छह आवश्यकोंमें निरति-
चारता सम्भव ही नहीं है । इस कारण यह तीर्थंकर नामधर्मके उन्धका चतुर्थ कारण है ।

क्षण लयप्रतिबुद्धतासे तीर्थंकर नामधर्म उचता है— क्षण और लय ये कालविशेषके
नाम हैं । सम्यग्दर्शन, ज्ञान, व्रत आग शील गुणोंको उज्ज्वल करने, मलको धोने अथवा
जलनिका नाम प्रतियोगन और इसके मात्रका नाम प्रतियोगनता है । प्रत्येक क्षण व लयमें
होनेवाले प्रतियोगकी क्षण-रूपप्रतिबुद्धता कहा जाता है । उस एक ही क्षण लयप्रतिबुद्धतासे

१ णामादाण छण्ण अजोगपरिविजण नियरणेण । पच्चक्खाण णेय अणागय चागमे माले ॥ मूला २७
अनागतदोषोपादानं प्रत्याख्यानम् ॥ त रा ६, २४, ११

२ प्रतिपु 'सरीराहारेमु' इति पाठ ।

३ दवस्सियणियमादिह जडुत्तमाणेण उच्चालम्हि । जिणगुणधितणजुवो वाउस्सग्गो क्षुत्तिमग्गो ॥
मूला २८ परिमितसाविषया शरीरे ममन्ननिशुचि कायोमर्गे ॥ त रा ६, २४, ११

छावामया हेंति । मनु मित मणि-पाहाण सुवण्ण-मट्टियासु' राग देसाभागे ममदा नाम । तीदा
पागद-वट्टमाण कालविमयपचपरमेसराण भेदम-कऊण णमो अरहताण णमो जिणणमिवादिणमो
क्कागे दव्वट्टियणिउणो भवो' नाम । उसहाजिय समवाहिणदण-सुमइ-पउमप्पइ-सुपाण
चदप्पइ पुप्फदत्त-सीयल-सेयस-चासुपूज्ज विमलणत्त यम्म-सत्ति-कुधु अर-महि-सुणिमुव्वय-मि
णेमि-याम-वट्टमाणदिनिन्थयराण भरहादिकेउलीण आइरिय-चइत्तालयद्दीण मेय काऊण
णमोक्कारो गुणगयभेदमत्तीणो सहकलावाउलो गुणानुसरणसरूओ वा उदणा' नाम । पच
महव्वएसु चउरामीदिलक्कयगुणगण'कलएसु ममुप्पण्णकऊणपन्सारण पडिक्कमण' नाम ।

ध्वन्ना, प्रतिममण, प्रत्याप्यान और व्युत्सर्गके भेदसे छद् आवश्यक होते हैं । शशु भिन्न,
मणि-पापाण और सुवण मूर्त्तिकामें राग कण्ठने अभावसे समता रहते हैं । अर्थात्,
अनागत और वर्तमान काल त्रिषयक पाच परमेष्ठियोंके भेदको न करके 'अरहन्तोंको
नमस्कार, जित्तोंको नमस्कार' इत्यादि द्र-यावैकनिवन्धन नमस्कारका नाम स्तव है ।
ऋषभ, अजित, सम्मघ, अमित्त्वन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्थ्य, चन्द्रप्रभ, पुष्पदत्त,
दीप्तल, धेयास्त, पासुपूज्य, विमल, अनन्त, अम, शान्ति, कु-धु अर, महि, मुनिमुव्वत्त,
ममि, नेमि, पार्थ्य और वधमानादि तीवैकर तथा भरतादिन केचली, आचार्य एव चेत्यालया
विकीर्णे भेदको करके अथवा गुणगत भेदके आधित शब्दकलापसे द्वाप्त गुणानु
स्मरण रूप नमस्कार करनेकी ध्वन्ना कहते हैं । चारामी लाख गुणोंके समूहसे सयुक्त
पाच महाव्रतोंमें उत्पन्न हुए भलओ धेनेका नाम प्रतिममण है । महाव्रतोंके त्रिमास य

१ समदा धवा य वदण पणिकमण तद्द वाइन् । पचवत्ताण विसणो करणीया वमया इयि ॥
मूला २२ सामाए चउरामीध वदणय पणिकमण । पचवत्ताण च तदा काओमणो इयि उडो ॥ मूला
७, १५ वदणपणिकिया — सामाए चउरामीध वदना प्रतिममण प्रचारयान कायोसमिधेति । त रा
६, २४, ११ त किं त आइस्सय । जावत्तप छविह पणत्त त जहा — सामाए चउरामीध वदणय पण
कमण वाइस्सणो पचवत्ताण स त आइस्सय । नदाम्प ४४

२ अर्थात् 'पणिकासु', आ काययो 'मणियासु' इति पाठ ।

३ जीविदमणे त्माहाम सजोव विपज्जि य । वधुरि सुद दुक्खदिदु समदा सामाएय नाम ॥

मूला २३ त रा सामाए सवत्ताउपयमानवृत्तिल्लुण विउत्तम्यत्तन क्षान प्रणिबानम् । त रा ६, २४, ११

४ उसहादिजिणवराण नामणिदात्त गुणाव्रतेति च । मऊण जविबूण य तिसुदिपणमा धवा जेआ ॥
मूला ४४ चउरिणोत्तव तीयइत्ताणवृत्तनम् । त रा ६, २४, ११

५ अर्थात् 'गुणगयभेदमणियो', आ-काययो 'गुणगयममणिया' इति पाठ ।

६ अरहन् सिद्धपत्तिमा तव-सुद गुण गुरुण रादीण । किदियम्मोणिदराय य तियरणमजोवण पणमो ॥
मूला २५ वदना मिश्रिद्धि द्वात्मना चतु विउत्तननि द्वादसावतना । त रा ६, २४, ११

७ प्रविशु 'हत्तल्लगुणगा' इति पाठ ।

८ दन्वे खते कम् मारे य वयावराहसाणम् । विदण-गरहणवृत्तो मण वच कायेण पडिक्कमण ॥
मूला २६ ज्वीतदोषनिवृत्तम् प्रतिपण्णम् । त रा ६, २४, ११

कारणाण संभवादो, जदो जहायामो णाम ओघजलस्स धीरस्स' णाणदसणकल्हदस्स होदि ।
ण च तत्थ दसणपिसुज्झदादीणमभावो, तहा ततस्स अण्णहाणुववत्तीदो । तदो एद
सत्तम कारण ।

साहूण पासुअपरिचागदाए—अणतणाण-दसण वीरिय विरइ-सइयसम्मत्तादीण साहया
साहू णाम । पगदा ओमरिदा आसना जम्हा त पासुअ, अधवा ज णिरवज्ज त पासुअ ।
किं ? णाण दसण-चरित्तादि । तस्स परिच्चागो निसज्जण, तस्स भावो पासुअपरिच्चागदा ।
दयाउद्धीए माहूण णाण-दसण-चरित्तपरिच्चागो दाण पासुअपरिच्चागदा णाम । ण चेद
कारण घट्ठेसु संभवदि, तत्थ चरित्तामानादो । तिरयणोपदेसो णि ण घट्ठेसु अत्थि, तेसि
दिड्ढिवादादिउत्तरिमसुत्तोपदेसणे अहियाराभावादो । तदो एद कारण महेसिण चेव होदि ।
ण च एत्थ सेसकारणाणमसंभवो । ण च अगृह्णादिसु अभत्तिमते णउपदत्थविसयसद्वहणेणुमुक्के
सादिचारसीलज्वदे परिहीणावासए णिरज्जो णाण दसण-चरित्तपरिच्चागो संभवदि, विरोहादो ।
तदो एदमद्वम कारण ।

सभी शेष कारण सम्भव ह, क्योंकि, यथायाम तप ज्ञान-दर्शनसे युक्त सामान्य बलवान्
और धीर व्यक्तिके होता है, ओर इसलिये उसमें दर्शनविशुद्धतादिकोंका अभाव नहीं
होसकता, क्योंकि, ऐसा होनेपर यथायाम तप यन नहीं सकता । इस कारण यह तीर्थंकर
नामकमन्त्रका सातवा कारण है ।

साधुओंके द्वारा विहित प्रासुक अर्थात् निरवयव ज्ञान-दर्शनादिकके त्यागसे तीर्थंकर
नामकर्म बधता है—अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तवीर्य, विरति और क्षायिक
सम्यक्त्वादि गुणोंके जो साधक ह वे साधु कहलाते हैं । जिससे आकाश दूर हो गये ह
उसका नाम प्रासुक है, अथवा जो निरवयव है उसका नाम प्रासुक है । यह ज्ञान, दर्शन व चारित्र्य
दिक ही तो सकते हैं । उनके परित्याग अर्थात् विसर्जन करनेका प्रासुकपरित्याग और
इसके भावको प्रासुकपरित्यागता कहते ह । अर्थात् दयाबुद्धिसे साधुओं द्वारा किये जाने
वाले ज्ञान, दर्शन व चारित्र्यके परित्याग या दानका नाम प्रासुकपरित्यागता है । यह कारण
गृहस्थोंमें सम्भव नहीं है, क्योंकि, उनमें चारित्र्यका अभाव है । रत्नत्रयका उपदेश भी
गृहस्थोंमें सम्भव नहीं है, क्योंकि, दृष्टिवादिक उपरिमश्रुतके उपदेश देनेमें उनका अधिकार
नहीं है । अत एव यह कारण महर्षियोंके ही होता है । इसमें शेष कारणोंकी अमभावना
नहीं है, क्योंकि अगृह्णादिकोंमें भक्तिसे रहित, नौ पदार्थविषयक श्रद्धानसे उन्मुक्त,
सातिचार शील मतोंसे सहित और आवश्यकोंकी हीनतासे मयुक्त होनेपर निरवयव ज्ञान,
दर्शन व चारित्र्यका परित्याग विरोध होनेसे सम्भव ही नहीं है । इस कारण यह तीर्थंकर
नामकमन्त्रका आठवा कारण है ।

वधो । एतत् वि पुन्य व सप्तस्मरणायामतन्मात्रो दरिमेदव्यो । तदो एद तित्थयरणामकम्
वधस्म पचम कारण ।

लद्धिसर्गेसपण्णदाए— सम्मदमण णाण-चरणेसु जीवस्म समागमो लद्धी णाम ।
हरिमो मतो सरेगो णाम । लद्धीए मरेगो लद्धिमरेगो, तस्म सपण्णदा सपत्ती । तीए नित्थया
णामकम्मस्म एक्काए नि वधो । कए लद्धिमरेगसपयाए सप्तस्मरणायाम भवमो ? ण मेस
कारणेहि विणा लद्धिसर्गेसस सपया जुज्जन्दे, निरेहादो । लद्धिसर्गेगो णाम तित्थयणोदोहलो,
ण सो दसणनिमुज्जदार्दिहि विणा सपण्णो होदि, विणटिसेहादो हिरण्य-सुवण्णादीहि विणा
अङ्गो' एव । तदो अण्णो अतोत्तिमेमकारणा लद्धिसर्गेसपया छट्ट कारण ।

जहायामे तहा तवे— उलो वीरिय यामो इदि एयट्ठो । तरो टुविहो नहिरो अब्भ
तरो चेदि । वाहिरो अणसणादिओ, अन्नतरो विणयादिओ । एसो सब्बो वि तरो नारसविहो ।
जहायामे तहा तवे सेने तित्थयरणामकम् नज्जड । कुदो ? जहायामतरो मयलसेमतित्थय-

तीर्थंकर नामधर्मरा यन्ध होता है । इसमें भी पुर्यके समान दोष कारणोंका अन्तर्भाव
दिखलाना चाहिये । इसीलिये यह तीर्थंकर नामधर्मके यन्धरा पाचया कारण है ।

लद्धिमवेगसम्पन्नतासे तीर्थंकर नामधर्म यन्ध होता है— सम्यग्दर्शन, सम्यग्मान
और सम्यक्चारित्र्यमें जो जीवका समागम होता है उसे लद्धि कहते हैं, और हर्ष व
सन्तिग्ग भावका नाम सवेग है । लद्धिसे या लद्धिम सवेगका नाम लद्धिसर्गेग और
उसकी सम्पन्नताका नाम समागम है । इस एक ही लद्धिमवेगसम्पन्नतासे तीर्थंकर
नामधर्मका वध होता है ।

शका—लद्धिसर्गेगसम्पन्नतामें दोष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, दोष कारणोंके बिना विकृष्ट होनेसे लद्धिमवेगकी सम्पन्नता
संयोग ही नही होसकता । इसका कारण यह निरन्तरप्रयोजनित हर्षका नाम लद्धिमवेग है ।
और यह दर्शनविशुद्धतादिसेके बिना सम्पूर्ण होता नहीं है, क्योंकि, इसमें हिरण्य सुवर्ण
दिकोंके बिना धनाढ्य हाके समान विरोध है । अत एव दोष कारणोंको अपने अन्तर्गत
करनेवाली लद्धिमवेगसम्पन्नता तीर्थंकर नामधर्मका छटा कारण है ।

शक्त्यनुसार तपसे तीर्थंकर नामधर्म उच्यता है— वज्र, धीय और याम (स्थामन्)
ये समानाधिकार शब्द हैं । तप दो प्रकार है— ग्राह्य और आभ्यन्तर । इनमें अनशनादिकया
नाम ग्राह्य तप और विनयादिकया नाम आभ्यन्तर तप है । छह ग्राह्य तप छह आभ्यन्तर
इस प्रकार मिश्रित यह सप्त तप वारह प्रकार है । जैसा वज्र हो वैसा तप करनेपर तीर्थंकर
नामधर्म उच्यता है । इसका कारण यह है कि यथाशक्तितपमें तीर्थंकर नामधर्मके वधके

दमम कारण ।

अग्रहन्तभक्तीए— खनिदनादिकम्मा केवलणाणेण ढिदमन्वद्वा अरहता णाम । अधवा, णिद्विदद्वकम्माण घाइदवादिकम्माण च अरहतेति सण्णा, अरिहणण पडि दोण्ह भेदा-भावादो । तेसु भक्ती अरहन्तभक्ती । ताए तित्थयग्रकम्म उज्झड । कधमेत्थ सेसकारणाण सभयो ? बुच्चदे— अरहन्तनुत्ताणुड्डाणाणुवत्तण तदणुड्डाणपामो वा अग्रहन्तभक्ती णाम । ण च एसा दमणविसुज्झदादीहि विणा सभयड, विरोहादो । तदो एसा एककारमम कारण ।

यहुसुदमत्तीए— चारमगपारया नहुसुदा णाम, तेसु भक्ती-तेहि वक्ताणिद-आगमत्थाणुवत्तण तदणुड्डाणपामो वा- नहुसुदमत्ती । ताए नि तित्थयग्रणामकम्म उज्झड, दमणविसुज्झदादीहि विणा एदिस्से जमभयदो । एद चारमम कारण ।

चाहिये । इस प्रकार यह द्वाजा कारण है ।

अरहन्तभक्तिसे तीर्थकर नामकर्म बधता है— जिन्होंने घातियाकर्मोंको नष्ट कर कवल-ज्ञानके द्वारा सम्पूर्ण पदार्थोंको देख लिया है वे अरहन्त हैं । अथवा, आठों कर्मोंको दूर कर देनेवाले और घातिया कर्मोंको नष्ट करनेवालोंका नाम अरहन्त है, क्योंकि कर्म शत्रुके विनाशके प्रति दोनोंमें कोई भेद नहीं है । (अर्थात् 'अरहन्त' शब्दका अर्थ चूकि 'कर्म-शत्रुको नष्ट करनेवाला' है, अत एव जिस प्रकार चाण घातिया कर्मोंको नष्ट कर देनेवाले सयोगी और अयोगी भिन्न 'अरहन्त' शब्दके वाच्य हैं उसी प्रकार आठों कर्मोंको नष्ट कर देनेवाले सिद्ध भी 'अरहन्त' शब्दके वाच्य होसकते हैं, क्योंकि, निरस्त्ययकी अपेक्षा दोनोंमें कोई भेद नहीं है ।) उन अरहन्तोंमें जो गुणानुरागरूप भक्ति होती है वही अरहन्तभक्ति कहलाती है । इस अरहन्तभक्तिसे तीर्थकर नामकर्म बधता है ।

शका—इसमें शेष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—इस शकाका उत्तर देने हैं कि अरहन्तके द्वारा उपदिष्ट अनुष्ठानके अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानके स्पर्शको अरहन्तभक्ति कहते हैं । और यह दर्शनप्रियुक्ततादिकोंके विना सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है । अतएव यह तीर्थकर कर्मग्रन्थका ग्यारहवा कारण है ।

यहश्रुतभक्तिसे तीर्थकर नामकर्म बधता है— जो चाण्ह अगोंक पारगामी हैं वे यहश्रुत कहे जाते हैं, उनके द्वारा उपदिष्ट आगमार्थके अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानके स्पर्श करनेको यहश्रुतभक्ति कहते हैं । उससे भी तीर्थकर नामकर्म बधता है, क्योंकि, यह भी दर्शनप्रियुक्ततादिक शेष कारणोंके विना सम्भव नहीं है । यह तीर्थकर नामकर्मग्रन्थका बारहवा कारण है ।

साहूण समाहिमधारणदाए— दसण-णाण चरित्तिसु सम्ममज्झाण समाही णाम । सम्म साहूण धारण सधारण । समाहीण सधारण ममाहिमधारण, तस्य भागो समाहिमधारणदा । ताए तित्थयरणामकम्म उज्झदि ति । केण पि ऊरणेण पदति समाहिं ददुण सम्मादिद्री पवयण वञ्छलो पवयणप्पहायओ निणयसण्णो । सील-वदादिचारज्जिओ अरहतादिसु भत्तो सत्तो जदि धरेदि त समाहिसधारण । कुदो एदमुलभदे ? स-सहपउज्जणादो । तेण वञ्छदि ति वुत्त होदि । ण च एत्थ मेमकारणाणमभागो, तदत्थित्तस्म दरिसिदत्तादो । एवमेद णवम कारण ।

साहूण वेज्जापच्चजोगुत्तदाए— व्यापृते यत्तिकयेने तद्वैयापृत्यम् । जेण सम्मत्त-णाण अरहत उहुसुदभत्ति पयणउज्झत्तादिणा जीवो जुज्जइ वेज्जापच्चे सो वेज्जापच्चनोगो दसण विसुज्झदादि, तेण जुत्ता वेज्जापच्चजोगुत्तदा । ताए एवविहाए एक्काए वि तित्थयरणामकम्म धधइ । एव सेसकारणाण जहायभवेण अनग्भाओ वत्तयो । एवमेद

साधुओंकी समाधिसधारणतासे तीर्थंकर नामकर्म वधता है— दर्शन, ज्ञान व चारित्र्यमें सम्यक् वास्त्यानदा नाम समाधि है । सम्यक् प्रकारसे धारण या साधनका नाम सधारण है । समाधिः सधारण समाधिसधारण और उसके भाषका नाम समाधि सधारणता है । उससे तीर्थंकर नामकर्म वधता है । किसी भी कारणसे गिरती हुई समाधिकी देवदर सम्यग्दृष्टि, प्रवचनवत्सल, प्रवचनप्रभावक, विनयसम्पन्न, शील व्रता विचारयुजित और अरहतादिकोंमें भक्तिमान् होकर चूनि उसे धारण करता है इसीलिये यह समाधिसधारण है ।

शका—यह कहासे जाना जाता है ?

समाधान—यह 'सधारण' पदमें निये गये 'स' शब्दके प्रयोगसे जाना जाता है ।

इस समाधिसधारणसे तीर्थंकर नामकर्म वधता है, यह अभिप्राय है । इसमें शेष कारणोंका उल्लेख नहीं है, क्योंकि, उनका अस्तित्व कहा दिखाना ही चुके हैं । इस प्रकार यह नौवा कारण है ।

साधुओंकी वैयापत्ययोगयुक्ततासे तीर्थंकर नामकर्म उधता है— व्यापृत अर्थात् रोगादिसे यातुल साधुके त्रिपयमें जो लिया जाता है उसका नाम वैयापृत्य है । जिस सम्यक् व, ज्ञान, अरहन्तभक्ति, उहुत्तभक्ति एवं प्रवचनवत्सलत्वादिसे जीव वैयापृत्यमें गगता है वह वैयापत्ययोग अर्थात् दर्शनविशुद्धतादि गुण हैं, उनसे सयुक्त होनेका नाम वैयापत्ययोगयुक्तता है । इस प्रकारकी उम एक ही वैयापत्ययोग युक्ततासे तीर्थंकर नामकर्म उधता है । यहा शेष कारणोंका यथासम्भव अन्तर्भाव कहना

१ प्रणि 'सांयदादि' इति पाठ ।

२ आ-वाण्या 'पञ्जणादाण वत्तदि' इति पाठ ।

परयणपहानपदाए— आगमद्वस्स पवयणमिदि सण्णा । तस्स पहावण णाम वण्णजणण तव्वुद्धिरुण च, तस्स भागो परयणपहावणदा । तीए तित्थयरकम्म वज्झइ, उक्कट्टुपरयणपहानपदस्स दसणविसुज्झदादीहि अणिभावादे । तेणेद पण्णरसम कारण ।

अभिक्षणमभिक्षण णाणोपजोगुत्तदाए — अभिक्षणमभिक्षण णाम बहुवार-मिदि भणिद होदि । णाणोपजोगो ति भावसुद दव्वसुद वापेक्खदे । तेसु मुहुम्महुत्तदाए तित्थयरणामकम्म वज्झइ, दसणविसुज्झदादीहि णिणा एदिस्से अणुवसीदो । एदेहि सोलसेहि कारणेहि जीया तित्थयरणामकम्म वधति । अथया, मम्मदसणे सते सेसकारणाण मज्जे एग-दुगादिसजोगेण वज्झदि' ति उत्तम ।

जस्स इणं तित्थयरणामगोदकम्मस्स उदएण सदेवासुर-माणुसस्स लोकस्स अब्वणिज्जा वंदणिज्जा णमंसणिज्जा णेदारा धम्म-तित्थयरा जिणा केवलिणो हवन्ति ॥ ४२ ॥

प्रवचनप्रभावनासे तीर्थंकर नामकर्म यधता है— आगमावका नाम प्रवचन है, उसके वर्णजनन अर्थात् कीर्तिविस्तार या वृद्धि करनेको प्रवचनकी प्रभावना और उसके भावको प्रवचनप्रभावना कहते हैं । उससे तीर्थंकर कर्म वधता है, क्योंकि, उत्कृष्ट प्रवचनप्रभावनाका दर्शनविशुद्धतादिकोंके साथ अविनाभाव है । इसीलिये यह पद्महवा कारण है ।

अभीक्ष्ण अभीक्ष्ण छानोपयोगयुक्ततासे तीर्थंकर कर्म वधता है— अभीक्ष्ण अभीक्ष्णका अर्थ 'यद्युत वाग' है । छानोपयोगस भावश्रुत अथवा द्रव्यश्रुतकी अपेक्षा है । उन (भाव या द्रव्य श्रुत) में बार बार उद्युक्त रहनेसे तीर्थंकर नामकर्म वधता है, क्योंकि, दर्शनविशुद्धतादिकोंके बिना यह अभीक्ष्ण अभीक्ष्ण छानोपयोगयुक्तता बन नहीं सकती ।

इन सोलह कारणासे जीव तीर्थंकर नामकर्मको पावते हैं । अथवा, सम्यग्दर्शनके होनेपर शेष कारणोंमेंसे एक दो यादि कारणोंके संयोगसे तीर्थंकर नामकर्म वधता है, ऐसा कहना चाहिये ।

जिन जीवोंके तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मका उदय होता है वे उसके उदयसे देव, असुर और मनुष्य लोकके अर्चनीय, वदनीय, नमस्करणीय, नेता, धर्म-तीर्थके कर्ता जिन व केवली होते हैं ॥ ४२ ॥

१ तापेनानि पोत्थकाराणानि मग्गमायमानानि व्यस्तानि समस्तानि च तीर्थरत्नमस्माद्वरकाराणानि प्रसेतयानि ॥ मि ६, २४ त रा ६, २४, १३ तीर्थरत्नामस्मि पाञ्च त कारणायमूयनिसम् । यस्तानि समस्तानि च भवन्ति सद्भायमानानि ॥ इ पु ३४, १४९ एत गुणा समस्ता व्यस्ता वा तीर्थरत्नान्मा आसवा भवन्तीति । स सु भाय ६, २३

प्रयणभतीए— विद्वतो गारहगाणि प्रयण', प्रकृष्ट प्रकृष्टस्य वचन प्रयचनमिति व्युत्पत्ते । तस्मिन् भती नत्थ पदुप्पादिदत्थाणुद्धान । ण च अण्णदा तत्त्व भती ममउह, असुण्णे सपुण्णवहारविरोधादे । तीए तित्थयरणामरुम्म उज्जड । एत्थ मेमकाणाणमनन्माओ वतन्तो । एवमेद तेरमम कारण ।

प्रयणवच्छलदाए— प्रयण विद्वतो गारहगाड, तथ भता देस महव्वरणो अमउह सम्माइदिणो च प्रयणा । कुणे एत्थ जाकारस्य अस्मरण ? 'एण छन्व समाणा' ति' सुत्तेण आत्तिवुद्धिण कयअकारत्तादे । तेषु अणुगणो जाकरता ममेदमाओ प्रयणवच्छलदा णाम । तीए तित्थयररुम्म उज्जड । कुदो ? पचमहव्वदादिआगम धम्मियस्सुनरुद्धानुगम दमणविसुज्जन्तिहि अविणाभावादे । तेणे चोदसम कारण ।

प्रयचनभक्तिले तीर्थकर नामकर्म यधता ह— विद्वान्त या गारह अगोका नाम प्रयचन है, क्योंकि, 'प्रकृष्ट वचन प्रयचन, या प्रकृष्ट (सर्व) के घटन प्रयचन ह' ऐसी व्युत्पत्ति है । उस प्रयचनमें कहे हुए अध्या अनुष्ठान करना, यह प्रयचनमें 'भक्ति' कही जाती है । इसके बिना अन्य प्रकारसे प्रयचनमें भक्ति सम्भव नहीं है, क्योंकि, असम्पूर्णमें सम्पूर्णने व्यवहारका विरोध है । इस प्रयचनभक्तिमें तीर्थकर नामकर्म यधता है । इसमें शेष कारणोंका उन्तर्भाव कहना चाहिये । इस प्रकार यह तेरहवा कारण है ।

प्रयचनवत्सलताम तीर्थकर नामकर्म यधता है— विद्वान्त या गारह अगोका नाम प्रयचन है, इसमें होनेवाले देशप्रती, महाप्रती और असयतसम्पददृष्टि प्रयचन कहे जाते हैं ।

शुका—इसमें आचारका धरण क्यों नहीं होता, अर्थात् 'प्रयचनमें होनेवाले' इस विग्रहके अनुसार 'प्रयचन' होना चाहिये, न कि 'प्रयचन' ?

समाधान—'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ये छह स्वर और ए, ओ, ये दो सन्ध्यक्षर, इस प्रकार ये आठों स्वर अधिरोध भावने एतद् दूस्वरेके स्थानमें आदेशको प्राप्त होते हैं' । इस सूत्रमें आदि धुक्किय आ के स्थानपर अ का आदेश हो गया है ।

उन प्रयचनों अर्थात् दर्शनप्रती, महाप्रती और असयतसम्पददृष्टियोंमें जो अनुराग, आकांक्षा अथवा 'ममेद' बुद्धि होती है उसका नाम प्रयचनवत्सलता है । उसमें तीर्थकर कर्म यधता है । इसका कारण यह है कि पांच महाप्रतीतिरूप आगमार्थविषयक उत्तर अनुगमका दर्शनविशुद्धतादिमें साथ अग्निभाव है, अर्थात् उस प्रकार प्रयचनवत्सलता दर्शनविशुद्धतादि शेष गुणोंके बिना नहीं बन सकती । इसीलिये यह चौदहवा कारण है ।

१ प्रयचन शब्दका उद्भवपातनका सभा वा प्रयचनम् । प्रव पृ ८२

२ एण छन्व समाणा दोणि ॥ सन्त्यक्षरं सग अड । अण्णोणस्सविरोहा उरति सन्न समाणम् ।

आदेसेण गदियाणुवादेण गिरयगदीए गेरइएसु पंचणाणावरण-
छदंसणावरण-सादासाद-वारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-
मय-दुसुंछा-मणुसगदि-पचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-
समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग वज्जरिसहसघडण-वण्ण गंध-
रस-फास-मणुसगइपाओगगाणुपुवि-अगुरुलहुग-उवघाद-परघाद-
उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहा-
सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-
पचंतराइयाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ४३ ॥

एद देसामामियपुञ्जसुत्त, तेणेदेण मूइदमन्त्रपुञ्जाओ एत्थ वत्तन्वाओ । एव
पुञ्जिमिस्माणिन्धयजणणहुसुत्तरसुत्त भणदि—

मिन्हाइट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा,
अवंधा गत्थि ॥ ४४ ॥

एद देसामामियसुत्त, सामित्तद्धानाण चेत्त पक्खणादो । तेणेदेण सूइदत्थाण पक्खण

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणानुसार नरकगतिमे नारकियोंमें पाच ज्ञानावरण, छह
दर्शनावरण, सातावेदनीय, अमातावेदनीय, गारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक,
मय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, औदारिक तैजम व कर्मण शरीर, समचतुरस्रसस्यान,
औदारिकशरीरागोपाग, वज्रर्षमसहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्वर्ग, मनुष्यगतिप्रायोगयानुपूर्वी,
अगुरुअल्लुक, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तनिहायोगति, तस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येक-
शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण,
उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इन कर्मोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ४३ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसी कारण इसके द्वारा सूचित सब पृच्छाओंको
यहाँ कहना चाहिये । इस प्रकार पृच्छाभुक्त शिष्यके निश्चयजननार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिको आदि लेकर असयतमम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक
नहीं हैं ॥ ४४ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, यह बन्धस्वामित्व और बन्धाध्यानका ही निरूपण
करता है । इसी कारण इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— पाच ज्ञानावरणीय,

नित्यगणनामगोदरुम्हस्मेनि एव 'उदओ तेणेति' दोष्ण पदानम-ज्ञाहरो काययो,
अण्णहा अत्थाणुत्ताहो । जस्स जेमि जीणण टण णदस्स ति-वयरणामगोदकम्मम्म उदओ
तेण उदण्ण मदेवासु-माणुमम्म लोगस्स अच्चणिज्जा ति मयघो काययो । चरु यलि-पुष्प-
फण गव धूव-दीनादीहि मगमत्तिगामो अ-चणा णाम । एत्थि मह अउदवय-कप्परुस्स
महामह सन्वदोभदादिमहिमानिहाण पूना णाम । तुहु णिड्डियडुकम्मो केउलणाणेण दिट्ठसन्वदो
धम्ममुहमिड्डगाईए पुड्डाभयदाणे मिड्डारिउलओ दुट्ठणिग्गहस्सो देउ ति पसमा वदणा
णाम । परहि मुट्ठीहि तिणिंदचलणेसु णियदण णमवण । धम्मो णाम मम्मइमण-आण-
चरित्ताणि । एदेहि ससार सायर तरति ति एत्ताणि ति-य' । णदस्स वम्म-नित्यस्स कत्ताग जिणा
केउलिणो णेदारा च भवति ।

प्रभाराणुगमा समना ।

सूत्रमें 'तीर्थकर नाम गोत्ररमका' यहा 'उदय' और 'उससे' इन दो पदोंका
अपवाद रक्ता चाहिये, अन्यथा अर्थही उपर्युक्त नहीं होती। जिसके अर्थान् जिन
जीनोंमें, यह अंगान् इस तीर्थकर नाम गोत्ररमका उदय होता है जे उससे उदयसे देव,
अमुर एउ मनुष्योंमें परिपूर्ण लोके अर्चनीय होते ह, ऐसा स्वस्थ करना चाहिये। चरु,
यलि, पुष्प, फण, गव, धूव और दीप आदिकोंसे अपनी भक्ति प्रकाशित करनेका नाम
जगना है। इनके साथ पुण्ड्रपत्र, कल्पवृक्ष, महामह और सर्वलोभत्र, इत्यादि महिमा
विधानसे पूजा करते ह। आप अष्ट कर्मोंको नष्ट करनेवाले, केउलबानमें समस्त पदार्थोंको
दखनेवाले, धमामुख शिष्योंकी गोष्टीमें अभयदान देनेवाले, शिष्टपरिपालक और दुष्टनिग्रह
कारा देव ह, ऐसी प्रशंसा करनेका नाम उदना है। पाच मुखिया अर्थात् अगोंमें जिनें
देवसे चरणोंमें गिरनेको नमस्कार करते हैं। धमका अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और
सम्यक्चारित्र्य ह। चूँकि इनसे समार सागरको तरत है इसीलिये इन्हें तीर्थ कहा
जाता ह। इस वम तीर्थके कर्ता जिन, केउली और नेना होते हैं।

इस प्रकार गोत्रानुगम समाप्त हुआ।

१ मरुटि कान-वृत्तानि धम मय नरा मिदु । १ आ ३

२ य नरा दण चरित्तमायया तणियव्वमासाओ । यमाववा य चारु तण त भावओ तिभं ॥
दिना १०२८

असजदसम्मादिट्टीसु सोदय-परोदएहि वज्जति, अपज्जत्तकाले प्पेमिमुदयाभाजादो । णवरि पत्तेयसरीरस्स उवचादभगो, विग्गहगदीए चेव उदयाभाजादो । सेसेसु दोसु सोदएणेव एदासिं वधो, तेमिं तत्थ अपज्जत्तकालाभाजादो । पुरिसवेद मणुसगइ ओरालियमरीर-समचउरससठाण-ओरालियसरीरअगोवग पज्जरिमहमवडण मणुसगइपाओग्गाणुपुवि-पमत्थनिहायगइ सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जमकित्ति उच्चगोदाण चदुसु गुणट्ठाणेसु परोदएणेव नधो, गिरएनु एदामिमुदय-निरोहादो ।

पचणाणारणीय-उदमणावरणीय-वाग्मकपाय-भय दुगुछा-पचिदियजादि-ओरालिय-तेना-कम्मइयमरीर ओरालियसरीरअगोवग-वण्ण-मय रस फास अगुरुगलहुग-उवचाद-परघाद-उस्मास-तप-यादर-पज्जत्त पत्तेयमरीर-णिमिण पचतराडयाण गिरतरो वधो, गिरयगइमिह गिरतर-वधितादो । सादासाद-इस्स रदि-अरदि सोग-थिराथिर-मुभामुभ-जमकित्ति अजसकित्तीण सातरो वधो, सन्नगुणट्ठाणेसु पडिवक्खपयडीए वधुनलभादो । पुरिमवेद मणुसगइ समचउरससठाण पज्जरिसहसघटण-पमत्थनिहायगइ-सुभग मुम्मर आदेज्ज-मणुसगइपाओग्गाणुपुवि-उच्चगोदाण मिआदिट्ठि-मासणमम्मादिट्टीसु सातरो नधो, पडिवक्खपयडिवधुनलभादो । णवरि मणुसगइ-

प्रकृतिया मिथ्यादृष्टि और असत्यतत्त्वगृह्ये गुणस्थानोंमें स्रोदय परोदयसे वधती है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनका उदय नहीं रहता। विशेष इतना है कि प्रत्येकशरीरका वन्ध उपघातके समान है, क्योंकि, केवल निग्रहगतिमें ही उसका उदय नहीं रहता। शेष दो गुणस्थानोंमें स्रोदयमे ही इनका वन्ध होता है, क्योंकि, शेष दोनों गुणस्थान नारन्नियोंके अपर्याप्त-कालमें होते नहीं हैं। पुण्यवेद, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, समचतुरस्रसस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, वज्रपमसहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, प्रशस्तनिहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका चारों गुणस्थानोंमें परोदयसे ही वन्ध होता है, क्योंकि, नारन्नियोंमें इनके उदयका निरोध है।

पाच आनावरणीय, उह दर्शनावरणीय, वाग्म रूपाय, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय-जाति, औदारिक तैजस व कामेण शरीर, औदारिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, व्रम, रादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर वन्ध है, क्योंकि, ये प्रकृतिया नरकगतिमें निरन्तर वधती हैं। साता व असाता चेदनीय, हान्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति प्रकृतियोंका सान्तर वन्ध है, क्योंकि, सब गुणस्थानोंमें इनकी प्रतिपन्न प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है। पुण्यवेद, मनुष्यगति, समचतुरस्रसस्थान, पद्मपमसहनन, प्रशस्तनिहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र, इनका मिथ्यादृष्टि और सासादनमम्यगृह्ये गुणस्थानोंमें सान्तर वन्ध है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपन्न प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है। विशेषता इतनी है कि तीर्थंकर

कस्मात्—पचणाणावरणीय-ऊदमणावरणीय सात्त्विकमाद चारमरुमाय हस्म-रदि-अरदि सोग भय
दुगुच्छ-पचिदियजादि तेजा कम्मइयमरी-वण्ण-गध-रम-फास-अगुरुगलहुअ-उपघाद-परघाद-
उस्मास-तस-आदर-पञ्चत पत्तयसरीर धिराधिर-सुहासुह-अजमकित्ति-णिमिग पचतराइयाण एदेमि
मेत्थ वधोदयवोच्छेदे णत्थि, निरोहाभावादो । पुरिसवेद-मणुमगइ-ओरालियमरीर-ममचउत्त
सठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसचटण-मणुमगइपाओग्गाणुपुत्ति-पमत्थनिहायगइ-
सुभग-सुम्भ-आदेज्ज नमकित्ति उच्चगोदाणमुदओ एत्थ णत्थि चेव, निरोहादो । नम्हा एय
एदासु पयईसु वधोदयवोच्छेदाण पुत्तापुत्तविचारो णत्थि ।

पचणाणावरणीय चतुदमणावरणीय पचिदियजादि तेजा कम्मइय वण्ण गध रम-फास-
अगुरुअलहुअ-तस आदर पञ्चत धिराधिर सुभासुभ अजमकित्ति णिमिग पचतराइयाण 'सोदओ
वधो' । णिहा पयत्ता सात्त्विकमाद-नारसरुमाय हस्म-रदि अरदि-सोग भय दुगुच्छाओ सोदय परो
दएहि नज्जति, स-वगुगइणेमु परावतणोदयादो । उपघाद मिच्छाडिह असजदसम्मादिद्वीसु
सोदय-परोदएहि नज्जइ, निग्गहगदाए उदयाभावादो । सामणम्ममादिद्वि सम्मामिच्छादिद्वीसु
सोदण वज्जइ, तेमि नत्थ उपत्तोए अभावादो । परघादुस्मास-पत्तयसरीराणि मिच्छाडिह

छह दर्शनावरणीय, सात्त्विकदर्शनीय, जसात्त्विकदर्शनीय, चारह कपाय हास्य, रति, भरति,
शोक, भय, जुगुप्सा, पचिदियजाति, तेजस व कर्मण शरीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श,
अगुरुगलपु उपघात, परघात, उ-श्वास, व्रस, आदर पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,
शुभ, अशुभ, भयशर्काति, निर्माण और पाच अन्तराय, इनके वन्ध और उदयका यहा
मुच्छेद नहीं होता, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है अथवा इनका वन्धोदय-मुच्छेद
यथासम्भव उन उपरि गुणस्थानोंमें हाता है जो नररुगनिमें सम्भव नहीं है । पुरुषवेद,
मनुष्यगति, औदारिकशरीर, समचतुरस्रसम्भान, औदारिकशरीरलोपान, वज्रपभसहनन,
मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्व, प्रशान्तिविहायेगति, सुभग, सुम्भ, आवेय, यशस्कीर्ति और
उच्चगोत्र, इन कर्मोंका उदय यहा है ही नहीं, क्योंकि, नाराधियोंमें इनके उदयका विरोध
है । इसलिये यहा 'न प्रनियोमि' अथवा मुच्छेद और उदय-मुच्छेदकी पूर्वापरताका विचार
नहीं है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पचिदियजाति, तेजस उ कर्मण शरीर,
वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श अगुरुगलपु, व्रस, आदर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,
भयशर्काति, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका स्वोदय वन्ध है । निद्रा, प्रचला, सात्ता
स्वोदय-परोदयसे वधती है, क्योंकि, इनका सब गुणस्थानोंमें परिवर्तित उदय रहता है ।
उपघात प्रकृति मिथ्यादृष्टि और असत्यतत्त्वग्रहण गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे वधती
है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इसका उदय नहीं रहता । सामादनसम्प्रादृष्टि और सम्प्रागिमिथ्या
दृष्टि गुणस्थानोंमें यही प्रकृति स्वोदयसे वधती है, क्योंकि, सात्तादनसम्प्रादृष्टि और
सम्प्रागिमिथ्यादृष्टियोंकी नाराधियोंमें उत्पत्ति नहीं है । परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर

तदे एदामि पुत्र पच्छा ना वधोदयवोच्छेदनिचारो णत्थि, सत्तासत्ताण मण्णिकासविरोहादो ।
अप्पमत्थविहायगइ दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण पुत्र वधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ,
सासणम्मि णट्टनघाण अमज्जदमम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलमादो ।

अप्पमत्थविहायगइ-दुस्सर-अणताणुपधिचउक्काण सोदय-परोदण वधो, अद्भुवोदय-
चादो । णत्थि अप्पमत्थविहायगदि-दुस्सराण सासणमम्मादिट्ठिम्हि सोदओ चेव अत्थि ।
तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउसठाण चउमवडण-तिरिक्खगइपाओगाणुपुत्ति-उज्जो-धीणगिद्धि-
तियाण परोदणेष्व वधो, एत्थ एदेसिमुदयामावादो । दुमग अणादेज्ज णीचागोदाण सोदणेष्व
वधो, णेरइएसु एदेमि पडिजस्खाण उदयामावादो ।

धीणगिद्धितिय-अणनाणुपधिचउक्काण शिरतरो वधो । इद्विवेद-चउमठाण-चउसघटण-
उज्जो-अप्पमत्थविहायगइ दुमग-दुस्सर अणादेजाण सातरो वधो, पडिवस्खपयडिजधममवादो ।
तिरिक्खाउअस्स शिरतरो वधो, पडिजस्खपयडिजधेण विणा उवविरामुवलमादो । तिरिक्खगइ-
पाओगाणुपुत्ति तिरिक्खगइ णीचागोदाण मात शिरतरो वधो, छमु पुढीसु सातगे होदूण
सत्तमपुढनिम्हि शिरतरेण वधदमणादो । जदि पडिवस्खपयडिजधमस्मिदूण थक्कमाणवघा

है । इसीप्रकार इन प्रकृतियोंमें पूर्वमें अथवा पश्चात् स्वोदय-उदय-विचार नहीं है,
क्योंकि, सत्त और असत्त वस्तुके सन्निर्गमन विरोध है । अप्रशस्तविहायोगति, दुर्मग,
दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका पूर्वमें ग्रन्थ व्युत्पन्न होता है, पश्चात् उदय,
क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें ग्रन्थके नष्ट होजानेपर असयतनमग्नदृष्टि गुणस्थानमें इनका
उदय व्युत्पन्न पाया जाता है ।

अप्रशस्तविहायोगति, दुस्वर और अनन्तानुगन्धिचतुष्का स्वोदय परोदयसे
ग्रन्थ होता है, क्योंकि, ये अधुनोदयी प्रकृतियाँ हैं । विशेष इतना है कि अप्रशस्तविहायोगति
और दुस्वरका सासादनमग्नदृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय ही ग्रन्थ होता है । तिर्यगायु,
तिर्यगति, चार सस्थान, चार सहनन, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत और
स्थानगुडिप्रय, इनका परोदयने ही ग्रन्थ होता है, क्योंकि, यहा इनके उदयका अभाव
है । दुर्मग, अनादेय और नीचगोत्रका स्वोदयसे ही ग्रन्थ होता है, क्योंकि, नारकियोंमें
इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

स्थानगुडि आदिक तीन और अनन्तानुगन्धिचतुष्का निरन्तर ग्रन्थ होता है ।
स्वोदय, चार सस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्मग, दुस्वर और
अनादेय, इनका सान्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका ग्रन्थ सम्भव
है । तिर्यगायुका निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिके ग्रन्थके बिना इसके
ग्रन्थकी निश्चान्ति पायी जाती है । तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यगति और नीचगोत्रका
सान्तर निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, छह पृथिवियोंमें इनका सान्तर ग्रन्थ होकर सातवीं
पृथिवीमें निरन्तर रूपमें ही ग्रन्थ देखा जाता है ।

अद्भुतो चेन, अद्भुतवितादो ।

णिहाणिहा पयलापयला थीणगिद्धि-अणंताणुवंधिकोध-माण-
माया-लोभ इत्थिवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउसंघडण-
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि उज्जोव अप्पसत्थविहायगइ दुभग दुस्सर-
अणादेज्ज णीचागोदाण को वंधो को अवंधो ? ॥ ४५ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्वी सासणसम्माद्वी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा
॥ ४६ ॥

सत्त्वाणि नमामित्तमुत्ताणि देसामासियाणि त्ति दड्ढव्याणि । तेणेदेण सूदत्थपरुवण
कस्सामो । त जहा— अणताणुवधिचउक्खस्स वधोदया सम वोच्छिज्जति, सासणचरिमसमयमि
एदस्स सम वधोदयरोच्छेदुवलमादो । थीणगिद्धिनिय इत्थिवेद निग्गिक्खाउ-तिरिक्खगइ चउ-
सठाण चउसंघडण तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि-उज्जोवाण निरययदीए उदओ णत्थि, विरोहादो ।

प्रकृतियोंका बन्ध सादि अधुष ही है, क्योंकि, ये प्रकृतिया अधुषरन्धी हैं ।

निद्रा निद्रा, प्रचला प्रचला, स्थानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,
स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तियग्गति, चार मस्थान, चार सहनन, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत,
अप्रसस्तविहायोगति, दुभग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक
और कौन अवन्धक है ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सामादनमम्यगदृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी अवन्धक
हैं ॥ ४६ ॥

यपस्वामित्तके मय सूत्र देशमशक ह, ऐसा समग्रता चाहिये । इसी कारण
इस सूत्रमें मूर्खित अर्थकी प्ररूपणा करते ह । यह इस प्रकार है— अनंताणुवन्धि
चतुष्कका बन्ध और उदय दोनों मायमें व्युत्तिष्ठ होने हैं, क्योंकि, सामादनगुणस्थानके
चरम समयमें अनंताणुवन्धिचतुष्कका साथ ही चन्धोदय युच्छेद पाया जाता है । स्थान
गृद्धि भाविक नान, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तियग्गति, चार मस्थान, चार सहनन, तियग्गति
प्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनका नरकगतिके उदय नहीं है, क्योंकि, देसा होनेमें विरोध

तिरिस्खाउ-तिरिस्खगइ-तिरिस्खगइपाओग्माणुपुन्नि-उज्जेवाणि मिच्छाइडि-सासण-सम्मादिट्ठिणो तिरिस्खगइसजुत्तं वधति । सेसाओ दुट्ठाणपयडीओ दुगइसजुत्तं वधति । सच्चासिं पयडीण णेरइया सामी । उधद्धाण वधविणट्ठहाण च सुगम । थीणमिद्धितिय-अणताणुवधि-चउक्काण मिच्छाइडिम्हि चउविहो वधो । सासणे सादि-अद्दुवो । सेसाण पयडीण वधो सादि-अद्दुवो चेव ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्ठसरीरसंघडणणामाणं
को वंधो को अवंधो ? ॥ ४७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ४८ ॥

एदेण सुइदरथाण परूणा कीरदे— मिच्छत्तस्स वधोदया सम वोच्छिज्जति,
मिच्छाइडिचरिमसमए वधोदयवोच्छेददसणादो । णवुंसयवेद हुंडसंठाण असंपत्तसेवट्ठसरीरसंघडण-
णामाण पुव्व वधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, मिच्छाइडिचरिमसमए णट्ठनधाणमेदासिं
असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलभादो । णवरि अमपत्तसेवट्ठमरीरसंघडणस्स पुव्वावर-

तिर्यंगाणु, तिर्यंगति, तिर्यंगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि
एव सासादनमन्यदृष्टि तिर्यंगानिले संयुक्त याधते हैं । शेष छिन्धान प्रकृतियोंको दो
वर्तियाने संयुक्त याधते हैं । सब प्रकृतियोंके नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्यान और बन्ध
विनष्टस्थान सुगम हैं । स्थानगृह्णित्य और अनन्तानुबन्धचतुष्कका मिथ्यादृष्टि
‘गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासादनमें नादि और अधुच बन्ध होता है ।
शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि उ अधुच ही होता है ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तमृपटिकांशरीरसहनन नामकर्मका
कौन बन्धक और कौन अनबन्धक है ? ॥ ४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष नारकी जीव अबन्धक हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं — मिथ्यात्वप्रवृत्तिका बन्ध और
उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि ‘गुणस्थानके चरमे समयमें
इसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । नपुसकवेद, हुण्डसंस्थान और
असंप्राप्तमृपटिकांशरीरसहनन नामकर्मोंका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, परन्तु उदय,
क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके चरमे समयमें बन्धके नष्ट हो जानेपर असंयतसम्यग्दृष्टि
गुणस्थानमें इनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है । विशेष इतना है कि असंप्राप्त-

सातरवधपयडी बुच्चदि तो उज्जोत्तस्म पडिक्खत्तयधपयडीए अणुज्जोवसरुवाए अभावदो
उज्जोत्तेण गित्तरवधिणा होदन्मय यधनिणामो अन्धि ति यदि सातरत्त बुच्चदि तो तत्थ
यराहारदुगाउआण पि सातरत्त पमज्जदि ति ? गत्थ परिहारो बुच्चदे— ज बुत्त पडिक्ख-
पयडिक्खमस्सिदूण थक्कमाणनवा मानराधि ति त सातरयधीसु पडिक्खत्तयधपयडिक्खविणामाव
ददूण बुत्त । परमयदो पुण एगमय यधिदूण निदियममए जिस्से यधविरामो दिस्सदि सा
सातरवधपयडी । जिस्से यधक्कलो जहणो वि अनोमुहुत्तमेत्तो सा गित्तरवधपयडि ति
धेत्तव ।

पञ्चयपरुवणे कीरमाणे चउठाणियपयडिभगो । णवरि तिरिक्खाउअस्म मिच्छादिदिहि
एगुणरचाम पञ्चया, त्रेउच्चियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो ।

शुका—यदि प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका आश्रय करके बन्धविधामित्तको प्राप्त
होनेवाली प्रकृति सातरत्त प्रकृति कहाँ जाती है तो उद्योतकी प्रतिपक्षभूत अनुद्योत
स्वरूप प्रकृतिका अभाव होनेसे उद्योतको निरन्तररत्त प्रकृति होना चाहिये । अथवा
बन्धका विनाश है, इस कारणसे यदि सान्तरत्ता कहाँ जाती है तो फिर तीर्थकर, आहारविक
और वायु पर्योक्त भी सातरत्ताका प्रमग आता है ?

समाधान—यहां उपर्युक्त शक्यता परिहार कहते हैं — प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका
आश्रय करके बन्धविधामित्तको प्राप्त होनेवाली प्रकृति सान्तररत्त ही है, इस प्रकार जो
कहा है यह सातरत्त की प्रकृतियामें प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धके अविनाशको देखकर
कहा है । वास्तवमें तो एक समय यधत्तर द्वितीय समयमें जिस प्रकृतिकी बन्धविधामित्त
देखी जाती है वह सातरत्त प्रकृति है । जिसका बन्धकाल जघन्य भी अन्तर्मुहूर्तमात्र है
यह निरन्तररत्त प्रकृति है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

प्रत्ययप्ररूपणा करते समय चतुस्थानिक (चार गुणस्थानोंमें यधनेवाली)
प्रकृतियोंमें समान ही प्रत्ययप्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि तिर्यगायुक्ते
मिथ्यादृष्टि गुणरत्ताममें यहा उनचाम प्रत्यय है, क्योंकि, वैश्विकमिध और कामेण
प्रत्ययोंका अभाव है ।

१ प्रष्टु 'काल' इति पाठ ।

२ यानी प्राचीना पाठान समग्रान् बध, उत्पत्त समयाद्याय यावदतर्हर्तुं न परंत, ता
सातरत्ता अतर्हन्मय पि मानतो त्रिदेवक्षणानरूपितो बधो यानी ता सातरा इति श्रुत्यर्थः ।
अतर्हर्तुं परे त्रिदेवक्षणानरूपितो सातरत्ता इति प्रतिपक्षः । ××× जघनेनापि या अतर्हर्तुं
यधत्तरेणा बधते ता निरन्तरत्ता निरन्तरत्तामर्हन्मये ध्यवच्छेदक्षण यस्य तातो बधो यानामिति
श्रुत्यर्थः, अतर्हर्तुं यापि निरन्तरत्तामर्हन्मये इति यावत् । क प्र पू १४-१५

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वंधा । एदे
बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ५० ॥

एदेण सूइदत्थस्स परूवण कस्सामो—एत्थ वधोदयाण पुव्वावरवोच्छेदविचारो णत्थि,
वध मोत्तूण उदयाभावादो । परोदएण वधति, गिरयगदीए मणुस्साउअस्स उदयविरोहादो ।
गिरतर वधति, एगसमएण ब्रुवरमाभावादो । मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवण्णपच्चया, वेउ-
च्चियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । मामणस्स चोहाल असजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस
पच्चया । सेस सुगम । मणुमगइसजुत्त वधति । गेरइया मामी । वधद्धाण वधविणइट्ठाण च
सुगम । सादि-अद्धवो वधो, अद्धववधित्तादो ।

तित्थरणागकम्मस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ५१ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ५२ ॥

तित्थरवधस्स उदयादो पुव्व पच्छा वोच्छेदो होदि त्ति सण्णिकासो णत्थि, तित्थर-

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष
नारकी जीव अबन्धक हैं ॥ ५० ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं — यहा बन्ध और उदयके पूर्व या
पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, बन्धको छोड़कर नारकीयोंमें इसके उदय
नहीं रहता है । नारकी जीव इसे परोदयसे याधते हैं, क्योंकि, नरकगतिमें मनुष्यायुके
उदयका विरोध है । निरन्तर याधते हैं, क्योंकि, एक समयमें इसके बन्धका विश्राम नहीं
होता । मिथ्यादृष्टिके उनचास प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, वैकृतियिकमिश्र और कर्मण
प्रत्ययोंका यहा अभाव है । सासादनके चवालीस और असयतसम्यग्दृष्टिके चालीस प्रत्यय
होते हैं । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । मनुष्यायुको नारकी जीव मनुष्यगतिसे सयुक्त
याधते हैं । नारकी जीव स्वामी है । बन्धाघ्यान और बन्धविनष्टस्यान सुगम हैं । इसका
बन्ध सादि घ अघ्रव होता है, क्योंकि, यह अघ्रवबन्धी प्रकृति है ।

तीर्थकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी अबन्धक हैं ॥ ५२ ॥

तीर्थकर प्रकृतिके बन्धका उदयसे पूर्व अथवा पश्चात् व्युच्छेद होता है, इस प्रकार

वधोदययोच्छेदविचारो नृत्ति, वध मोक्षण उदयाभावादो ।

मिच्छत नृत्तुमयेद-हुडसठाणण सोदओ वधो । नररि हुडसठाणम्म स-परोदओ वि, विग्गहगदीए' तस्सुदयाभावादो । असपत्तमेवट्टमरीग्गमउडणस्स परोदओ वधो, तस्य सप ठणस्सुदयाभावादो । मिच्छनस्स गिरतरो उवो, धुववधित्तादो । सेमाण तिण्ण सानरो, एगमएण धधुवरमदसणादो ।

पञ्चया चउट्टाणियपयडिपञ्चणहि ममा । एदाओ पयहीओ चत्तारि वि दुग्गइसउव पञ्जति । गेरइया सामी । [वधद्वान्] वधरिणट्टद्वान् च सुगम । मिच्छतस्स चउव्विहो वधो, धुववधित्तादो । सेमाण मादि-अद्धो, धुववधित्ताभावादो ।

मनुस्साउअस्स को वधो को अवंधो ? ॥ ४९ ॥

सुगम ।

खुपाटिकाशरीरसहननके पूर्व या पश्चात् स्वोदयव्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, वन्धको छोड़कर वहा इसके उदयका अभाव है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकप्रेद और हुण्डसस्थानका उदय वन्ध होता है । विशेष यह है कि हुण्डसस्थानका वध स्वोदय परोदयसे भी होता है, क्योंकि, विग्रहगतियोंमें उसका उदय नहीं रहता । अस्वप्राप्तखुपाटिकाशरीरसहननका वन्ध परोदयसे होता है, क्योंकि, मारकियोंमें सहननका उदय नहीं रहता । मिथ्यात्वका वन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वह ध्रुवकी प्रकृति है । शेष तीन प्रकृतियोंका सातर वध होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके वधका विधाम देखा जाता है ।

ग्रन्थियोंकी प्रकृणा वस्तुस्थानिक प्रकृतियोंके ग्रन्थियोंके समान है । ये चारों ही प्रकृतियाँ दो गतियोंसे संयुक्त रहती हैं । नारकी जीव स्वामी हैं । [वन्धप्रधान] और वधविन्यस्थान सुगम हैं । मिथ्या-प्रकृतिका वध चारों प्रकारका होता है, क्योंकि, वह ध्रुवकी प्रकृति है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव वन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुववन्धी नहीं हैं ।

मनुष्यायुका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ४९ ॥

यह स्व सुगम है ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ५० ॥

एदेण सइदत्थस्स परूवण कस्सामो—एत्थ वधोदयाण पुञ्जानरवोच्छेदविचारो णत्थि, बध मोत्तूण उदयाभावादे । परोदएण बधति, नित्यरगदीए मणुस्साउअस्स उदयविरोहादे । नित्तर बधति, एगसमएण बधुअभावादे । मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवण्णपच्चया, वेउ-व्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादे । सासणस्स चोइल असजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया । सेस सुगम । मणुसगइसजुत्त बधति । नेरइया सामी । बधद्धाण बधन्निण्हड्डाण च सुगम । सादि-अद्धवो बगो, अद्धवबधित्तादे ।

तित्थरगणामकम्मस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ५१ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ५२ ॥

तित्थरवधस्स उदयादे पुञ्ज पच्छा वोच्छेदो होदि ति सणिक्कासो णत्थि, तित्थर-

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी जीव अबन्धक हैं ॥ ५० ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते ह — यहा उन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, बन्धको छोड़कर नारकीयोंमें इसके उदय नहीं रहता है । नारकी जीव इन्ने परोक्षसे याधते हैं, क्योंकि, नरकगतिमें मनुष्यायुके उदयका विरोध है । निरन्तर याधते हैं, क्योंकि, एक समयमें इसके उन्धका विश्राम नहीं होता । मिथ्यादृष्टिके उनचास प्रत्यय होते ह, क्योंकि, वैकित्तियक्किमिअ और कामेण प्रत्ययोंका यहा अभाव है । सासादनके चवालीस और असयतसम्यग्दृष्टिके चालीस प्रत्यय होते ह । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । मनुष्यायुको नारकी जीव मनुष्यगतितसे संयुक्त याधते हैं । नारकी जीव स्वामी ह । उन्धाध्यान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । इसका बन्ध सावि व अधुव होता है, क्योंकि, यह अधुवबन्धी प्रवृत्ति है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी अबन्धक हैं ॥ ५२ ॥

तीर्थंकर प्रकृतिके उन्धका उदयसे पूर्व अथवा पश्चात् व्युच्छेद होता है, इस प्रकार

लियसरीरअंगोवंग वज्जरिसहसंधडण वण्ण गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-
उवघाद परघाद-उस्सास पसत्थविहायगड-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-
धिराधिर-[सुहा-] सुह-सुगम सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति-णिमिण पंच
तराहयाणं को वधो को अवधो? ॥ ५५ ॥

सुगम ।

मिच्छादिट्ठिणहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा,
अवधा गत्थि ॥ ५६ ॥

एदेण देसापासियसुत्तेण मूढदत्थपरुवण कस्सामो— एत्थ उदयादो वधो पुन
पच्छा ना वोच्छिण्णो ति विचारो गत्थि, एत्थ तस्स असंजदो । पचणाणावरणीय चउदसणा
वर्णीय-परिदियनादि-तेजा कम्मडय-वण्ण गंध-रस-फास-अगुरुगल्हुग-तस वादर पज्जत्त धिरा-
धिर सुभासुभ अजसकित्ति णिमिण पचतराहयाण सोदओ वधो, एदेसिं धुवोदयत्तादो । णिहा
पयला सादासाद-धारसकमाय-रूप्प-रदि अरदि-सोग मय-टुगुळाण मोदय परोदओ वधो, अद्वो-
दयत्तादो । उवघाद-परघाद उस्सास पत्तेयमरीराण मिच्छादिट्ठिहि सोदय परोदओ वधो । सेसैसु

वज्रपद्मसहस्रन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायो
गति, व्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुगम, सुस्वर, आदेय,
यशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥५५॥

यह मूढ सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंजयम्यदृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अनन्धक नहीं
हैं ॥ ५६ ॥

इस देशामशोक सूत्रके द्वारा सूचित अथकी प्ररूपणा करते हैं— यहा उदयसे
वन्ध पूर्वमे या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, यहा उसकी
सम्भावना नहीं है । पांच बानावरणीय, चार दशनावरणीय, पचेन्द्रियजाति, तेजस व
वार्मण शरीर, वण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, व्रस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर,
शुभ, अशुभ, यशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्त्रोदय बन्ध होता है,
क्योंकि, य धुवोदयी प्रवृत्ति है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, वारह कपाय,
हास्य, रति, भरति, शोक, मय और जुगुप्साका स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि,
ये भुव्यादयी प्रवृत्ति है । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर, इनका मिथ्या

सोदओ चेर, तेसिमेत्य अपज्जत्तकाले अभावादो । पुरिसवेद-ओरालियेसरीर संचउरससठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीण परोदओ वधो, एदेसिमुदयस्स एत्थ विरोहादो ।

पचणाणावरणीय छदसणावरणीय वारहरुसाय-भय-दुगुछा-पचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा कम्मइयसरीर ओरालियसरीरअगोवग वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस वादर-पज्जत्त-यत्तेयसरीर णिमिण-यचतराइयाण णिरतरो बंधो, एत्थ धुववधितादो । सादा-साद हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकिति-अजसकित्तीण सातरो वधो, सव्वगुण-ङ्गाणेसु एदासिमेगाणेगसमयवधसमवादो । पुरिसवेद समचउरससठाण वज्जरिसहसघडण-पसत्थ-विहायगइ सुभग सुस्सर आदेज्जाण मिच्छादिङ्गि-मासणसम्मादिङ्गीसु सातरो वधो, एगाणेग-समयवधसमवादो । मम्मामिच्छादिङ्गि-असजदसम्मादिङ्गीसु णिरतरो वधो, पडिवक्खपयडीणं पघाभावादो ।

एदाओ पयडीओ वधतमिच्छाइङ्गिस्स मूलपच्चया चत्तारि । णाणासमयउत्तरपच्चया

दृष्टि गुणस्थानमें स्वेदय परोदय बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें स्वेदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिको छोड़कर शेष गुणस्थान यहा अपर्याप्तकालमें नहीं होते । पुरुषवेद, औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, यज्ञर्षभसहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशस्कीर्ति प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके उदयका यहा विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, वारह कषाय, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय-जाति, औदारिक तजस य कर्मण शरीर, औदारिकशरीरागोपाग, वर्णादिक चार, अगुरु लघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, व्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच भन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये प्रकृतिया यहा ध्रुवबन्धी हैं । साता य भसाना वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशस्कीर्ति और अयशस्कीर्ति प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सत्र गुणस्थानोंमें इनका एक और अनेक समय तक बन्ध सम्भव है । पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, यज्ञर्षभसहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर और आदेय, इन प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि य सासादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनका एक अनेक समय तक बन्ध सम्भव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

इन प्रकृतियोंको बाधनेवाले मिथ्यादृष्टि नारकीके मूल प्रत्यय चार, नाना समय

सपडण-तिरिक्खगइपाओग्माणुपुत्री-उज्जोवाण पुत्र पच्छा बधोदयनोच्छेदविचारी गत्ति,
एदामिमेत्थ उदयाभावादो ।

अणत्ताणुबध्चउक्कस्स सोदय परोदएण बधो, अद्धवोदयत्तादो । अप्सत्त्यविहायगइ-
दुस्मराण मिच्छाइद्विम्हि सोदय-येगदएण उधो, अपज्जनत्तकाले एदामिमुत्तयामागदो । सासणे
सोदएणेव बधो, तस्मे व अपज्जनत्तकालामागदो । दुमग अणादेज्ज-णीचागोदण सोदएणेव
बधो, धुवोदयत्तादो । धीणगिद्धितिय उरियवेद-तिरिक्खगइ-चउमपडण-चउमपडण तिरिक्खगइ
पाओग्माणुपुत्री-उज्जोवाण परोदएणेव बधो । कुदो ? विस्समादो ।

धीणगिद्धितिय अणत्ताणुबध्चउक्क निरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्माणुपुत्री-णीचा-
गोदण गिरत्तो उधो । कुदो ? एत्थ धुववधित्तादो । सेसाण सात्तो, एगसमएण हि बधवोच्छे-
दुवलमादो । पच्चया चउट्ठाणपयडिपच्चयममा । एदाओ सज्वपयईओ तिरिक्खगइसजुत्त
पथि । गेरइया सामी । बधद्धान बधविणइट्ठाण च सुगम । धीणगिद्धितिय-अणत्ताणुबधि
चउक्काण मिच्छाइद्विम्हि चउत्तिहो उधो, धुववधित्तादो । सासणम्मि सादि अद्धवो । सेसाण

ग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनके पूर्वमें या पश्चात् बन्धोदयमुच्छेद होनेका विचार नहीं है,
क्योंकि, यहा इनके उदयका अभाव है ।

अनन्तानुबध्चत्तुष्क स्त्रोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि ये अधुवोदयी
हैं । अमशस्तविहायोगति और दुस्मरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्त्रोदय परोदयसे बन्ध
होता है, क्योंकि, अपयाप्तकालमें इनका उदय नहीं रहता । सासादन गुणस्थानमें
स्त्रोदयसे ही इनका पत्र होता है, क्योंकि, इस गुणस्थानका यहा अपर्याप्तकालमें अभाव
है । दुर्मग, अनादेय और नीचगोत्र, इनका स्त्रोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, ये प्रकृतिया
ध्रुवोदयी हैं । स्थानगृहि आदिक तीन, स्वावेद तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार सहनन,
तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनका परोदयसे ही बन्ध होता है । इसका कारण
स्वभावा ही है ।

स्थानगृहि आदिक तीन, अनन्तानुबध्चत्तुष्क, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु-
पूर्वी और नीचगोत्र, इनका निरंतर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा ये ध्रुवबन्धी हैं । दोष
प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्ध मुच्छेद पाया जाता है ।
प्रत्ययोंकी प्रकृणा चतुस्थानिक प्रकृतियोंके समान है । इन सब प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिमें
सयुक्त बाधते हैं । नारकी और इनके बन्धके सामी है । बन्धाग्रान और बन्धाग्रानस्थान
सुगम हैं । स्थानगृहि आदिक तीन और अनन्तानुबध्चत्तुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें
चारों प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतिया हैं । सासादनगुणस्थानमें

वेउव्वियसरीरअंगोवग वण्ण गंध रस-फास-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी-
अगुरुवल्लुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-वादर-
पज्जत्त पत्तेयसरीर [थिरा-] थिर-सुहासुह सुभग सुस्सर-आदेज्ज-जस-
कित्ति-अजसकित्ति णिमिण-उच्चागोद पचंतराइयाणं को वंधो को
अवंधो ? ॥ ६३ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा वंधा । एदे वंधा, अवंधा
णत्थि ॥ ६४ ॥

। एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे — देवगइ-वेउव्वियसरीर वेउव्वियसरीरअंगोवग देवगइ-
पाओग्गाणुपुत्ति उच्चागोदाण तिरिक्खेसु उदयाभागादो पुव्व पच्छ वधोदयवोच्चेदविचारो
णत्थि, सतासताण सण्णिकामनिरोहादो । अउमेमपयडोसु पि एम विचारो णत्थि, अत्थगदीए
एदामि वधोदयवोच्चेदाभागादो । पच्चणाणारणीय-चटुदसणागणीय-वेउव्विय-तेजा कम्मइय-
सरीर वण्ण-गव रस फाम अगुरुवल्लुव [थिरा] थिर-सुभासुभ णिमिण पचतराइयाण सोदओ

व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगति-
प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपपात, परपात, उच्छ्राम, प्रशस्तनिहायोगति, त्रस, वादर,
पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति,
अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक
है ? ॥ ६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमें लेकर सयतासयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं
हैं ॥ ६४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरागोपाग,
देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा और उच्चगोत, इनका तिर्यचोर्ध्व उदय न होनेसे बन्धोदय-पुच्छेदकी
पूर्वापरताका विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्की समानताका विरोध है । शेष
प्रवृत्तियोंमें भी यह विचार नहीं है, क्योंकि, अर्थगतिके इनके बन्धोदय-पुच्छेदका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, वैक्रियिक तेजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध,
रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तराय,
४ व १५

सम्माभिच्छाहट्टी असंजदसम्माहट्टी वंधा । एदे वंधा, अवसेस
अबंधा ॥ ६२ ॥

एदस्स अत्थो बुच्चदे— एत्थ वंधादो उदओ पुव्व पच्छा वा वोच्छिण्णो ति
विचारो णत्थि, एदासिमेत्थ उदयाभावादो । एदासि परोदएणेव वधो, णिरयगदीए उदया
भावादो । णिरतो वधो, एगसमएण वधुक्कमाभावादो । पच्चया चउट्ठाणियपयडिपच्चयतुत्ता ।
मणुमगइसजुत्त सम्माभिच्छाहट्टि असंजदसम्मादिट्ठिणो वधति । णेरइया सामी । वधद्वाण
वधण्णिण्डद्वाण च सुगम । सादि-अद्धनग्धो, अद्धववणित्तादो सम्माभिच्छाहट्टि-असंजदसम्मा
इट्ठिणिच्चाणुगमणे णियमादो वा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पचिदियतिरिक्खा पंचिदियतिरिक्ख
पज्जत्ता पचिदियतिरिक्खजोणिणीसु पंचणाणावरणीय छदंसणावर
णीय सादासाद अट्ठकसाय पुरिसवेद हस्स रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुछा
देवगइ पचिदियजादि वेउन्निय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण

सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष गुणस्थानवर्ती
अबन्धक हैं ॥ ६२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— बन्धसे उदय पूर्वमें व्युत्पिच्छ होता है या पश्चात्, यह
विचार यहाँ नहीं है क्योंकि, इनका यहाँ उदय नहीं है । इनका परोदयसे ही बन्ध हाता
है, क्योंकि, नरकगतिमें इनके उदयका अभाव है । बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक
समयसे इनके बन्धका विश्राम नहीं होता । इनके प्रत्यय चतुस्थानिक प्रवृत्तियोंके प्रत्ययोंके
समान है । सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टि अनुप्यगतिसे संयुक्त पाँधते हैं ।
सारकी समीचीन है । बन्धापान और वधविनष्टस्थान सुगम है । सादि व अधुव बन्ध होता
है, क्योंकि ये अधुनग्धो हैं, अथवा सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टियोंके
मुक्तिगमनमें नियम होनेसे भी सादि व अधुन बन्ध होता है ।

तिर्यग्गतिमें तिर्यच, पचेन्द्रिय तिर्यच, पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यच
योनिमनियोंमें पाच ज्ञानारणीय, छह दर्शनारणीय, साता व असाता वेदनीय, आठ कषाय,
पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, मय, सुगुप्ता, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैकियिक तैजस

१ मित्तातिरिद उच्च मणुवदुग सत्तमे हवे नवा । मिच्छा सावणमम्मा मणुवदुगुच्च ण वधति ॥
२ अ काप्रयो 'णियमामावादो' इति पाठ ।

अमजदमम्मादिट्ठीसु उधो सोदयपरोदओ, एत्थ पडिवन्सुदयदसणादो । मज्झिमासज्जेसु सोदओ चेव, तत्थ पडिवन्खाणमुदयाभावादो । मिच्छादिट्ठि मामणसम्मादिट्ठि सम्मामिच्छादिट्ठि-असज्जदसम्मादिट्ठीसु अजमकित्तीए उधो सोदय-परोदओ, एत्थ पडिवक्खुदयदसणादो । सज्जदा-सज्जेसु परोदओ, तत्थ पडिवक्खुपयडीए चेव उदयदसणादो । देवगदि-वेउच्चियसरीर-वेउच्चियसरीरअगोपग-देवगदिपाओग्गाणुपुन्नी-उच्चागोदाण परोदओ उधो, एदासिमेत्थ उदय-विरोहादो ।

पचणाणारणीय छद्दसणाणरणीय-अट्ठकमाय-भय-दुगुछा तेजा कम्मइयसरीर वण्ण-गा-रस-फाम अगुरुगलहुव उज्जाद-णिमिण पचतराडयाण गिरतरो वधो, सुवन्धित्तादो । सादासाद-हस्म रदि-अरदि-सोग-धिराविर-सुभासुभ-जसकित्ति अजमकित्तीण सातरो वधो, एगसमएण उधुनरमदसणादो । पुरिसनेदस्म मिच्छादिट्ठि-मामणेषु सातरो गिरतरो च वधो, पम्म-सुक्क-लेस्मिएसु गिरतर-अधदमणादो । सेमगुणट्ठाणेषु गिरतरो, पडिवक्खुयडिक्खामाणादो । पच्चि-

हृष्टि, सात्तादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्निर्मल्याहृष्टि न असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सोदय परोदय होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका उदय देखा जाता है। सयतासयतोंमें इनका स्रोदय ही ग्रन्थ होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके उदयका अभाव है। मिथ्याहृष्टि, सात्तादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्निर्मल्याहृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें अवशकीर्तिका ग्रन्थ स्रोदय परोदय होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तिका भी उदय देखा जाता है। सयतासयतोंमें उसका परोदय ग्रन्थ होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तिका ही उदय देखा जाता है। देवगति, वेत्तिविकुशरीर, वेत्तिविकुशरीरानोपाग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र, इनका परोदय ग्रन्थ होता है, क्योंकि, निर्यचोंमें इनके उदयका विरोध है।

पाच ज्ञानारणीय, छद्द दर्शनाणरणीय, आठ कमाय, भय, दुगुच्छा, तेजस व कर्मण शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुगु, उपपात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, ये ध्रुवग्रन्थी प्रवृत्तिया हैं। सात्ता व असात्ता चेदनीय, हाम्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अनुभ, यशकीर्ति और अवशकीर्ति, इनका सान्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके ग्रन्थका विग्रह देखा जाता है। पुरुषवेदका मिथ्याहृष्टि और सात्तादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर व निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेख्यावाले जीवोंमें निरन्तर ग्रन्थ देखा जाता है। शेष गुण-स्थानोंमें निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके ग्रन्थका अभाव है।

वधो, उवोदयत्तादो । पिदा पयला सादामाद-अट्टकमाय पुरिसवेद-हम्स-रदि-अदि सोग भय
 दुगुछा समचउरमसठाण पसत्थविहायगड सुम्मगण मण्डाणेसु मोदय-परोदओ वधो । पत्ती
 जोणिणीसु पुरिसवेदनओ परोदओ । उवपादवधो मिच्छादिदि मिमणमम्मादिदि असजदसम्मा
 दिद्वीण सोत्थ परोदओ, विग्गहगदीए उवपादस्सुदयाभावादो । सम्मामिच्छादिदि सदा
 सजदाण सोदओ चेन, तेसिमपज्जत्तकालाभावादो । परचादुस्साम-पत्तयसरीराण मिच्छादिदि
 सासणसम्मादिदि-असजदसम्मादिद्वीसु मोदय परोदओ, एदामिमपज्जत्तकाले उदयाभावादो ।
 सेसदोगुणद्वारेणसु मोदओ वधो । पत्ती जोणिणीसु असजदसम्मादिद्वी एदाओ सोदण्व
 नधदि, तत्थेदस्स अपज्जत्तकालाभावादो । तम चादर पज्जत्त पचिंदियजादीओ मिच्छादिदि
 सोदय परोदएण वधड, पडिवक्खपयडीण उदययभावादो । अयमेसा सोदएणेन, तत्थ पडि
 वक्खपयडीणमुदयाभावादो । पचिंदियतिरिक्ख पचिंदियतिरिक्खपज्जत्त पचिंदियतिरिक्ख
 जोणिणीसु मोदएणेन सव्वगुणद्वारेणसु वधो, एत्थ पडिउम्भक्खपयडीणमुदयाभावादो । पत्ती
 पचिंदियतिरिक्खेसु मिच्छादिद्वीण पज्जत्तस्स मोदय-परोदओ वधो, तत्थ पडिवक्खपयडीए
 उदयसभावादो । सुमगादेज्ज जसकित्तीण मिच्छादिदि-सामणमम्मादिदि सम्मामिच्छादिदि

इनका सोदय उभ होता है, क्योंकि, उ उवोदयी प्रकृतिया हैं । निद्रा, प्रचला, साता व
 अमाता धेवनीय, आठ कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, भरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतु
 रक्षसस्थान, प्रशस्तविहायोगानि आर सुम्भ, इनका सत्र गुणस्थानोंमें स्त्रोदय-परोदय
 उभ होता है । विशेष इतना है कि योनिमती निर्यचोंमें पुरुषवेदका उभ परोदयसे होता
 है । उपधातका उभ मिथ्यादृष्टि, सामादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि जीनोंके
 स्त्रोदय परोदय होता है, क्योंकि, विप्रहगतिमें उपधातका उदय नहीं होता । नम्यग्मिथ्या
 दृष्टि और सयतासयतोंके स्त्रोदय ही उभ होता है, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव
 है । परचात, उच्छ्वास और प्रत्यङ्गरीरका उभ मिथ्यादृष्टि, सामादनसम्यग्दृष्टि और
 असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय होता है, क्योंकि, इन प्रकृतियोंका अपर्याप्त
 कालमें उदय नहीं होता । शय दो गुणस्थानोंमें स्त्रोदय उभ होता है । विशेषता यह है कि
 योनिमतियोंमें असयतसम्यग्दृष्टि जीव इन्हें स्त्रोदयसे ही वायता है, क्योंकि, योनिमतियोंमें
 अपर्याप्तकालमें असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानका अभाव है । वस, चादर, पर्याप्त और पचे
 न्द्रिय आति, इनमें मिथ्यादृष्टि जीव स्त्रोदय परोदयसे बाधता है, क्योंकि, यहा इनमें
 प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय सम्भव है । शय गुणस्थानमें स्त्रोदयसे ही बाधते हैं, क्योंकि,
 उन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । पचेन्द्रिय तिर्यच, पचेन्द्रिय
 तिर्यच पर्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंमें स्त्रोदयसे ही सत्र गुणस्थानोंमें बाध
 होता है, क्योंकि, इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । विशेषता यह है कि
 पचेन्द्रिय तिर्यचोंमें मिथ्यादृष्टियोंके पर्याप्त प्रकृतिका स्त्रोदय परोदय उभ होता है, क्योंकि,
 यहा प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है । सुमग, आदय और यथाकौतिका उभ मिथ्या

सन्ध्यामि पयडीण पंधस्स तिरिक्खा चेव सामी । वधद्वाण वधविणद्धाण च सुगम ।
पचणाणावरणीय छदसणावरणीय अडकसाय-भय दुगुछा तेजा रुमइय-वण्ण-गध-रस-फास-
अगुरुलहुव उवघाद-णिमिण पचतराडयाण मिच्छाद्विद्धि चउच्चिहो नभो, सेसेसु तिविहो
सुवामावादि । अरमेसाण पयडीण सादि अद्धवो ।

णिदाणिदा पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-
माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरा-
लियसरीर चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंधडण-तिरिक्खगइ-
मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-
अणादेज्ज णीचागोदाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ६५ ॥

सुगममेद ।

मिच्छाद्विद्धी सासणसम्माद्विद्धी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा
॥ ६६ ॥

सब प्रकृतियोंके बन्धके तियच ही स्वामी ह । बन्धाध्यान और बन्धविनष्टस्थान
सुगम है । पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व
कार्मण शरीर, घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय,
इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन
प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व
अधुय बन्ध होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचल, स्थानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,
द्वेष, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सस्थान, औदारिक-
शरीरागोपाम, पाच सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वा, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत
अप्रशस्तनिहायोगति, दुर्भग, दुस्कर, अनादेय व नीचगोन, इनका कौन बन्धक और कौन
अबन्धक है ? ॥ ६५ ॥

यह स्रष्टा सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक
हैं ॥ ६६ ॥

पचणावावणीय-छन्दमणावणीय-अडकसाय-अरदि-मोग भय-दुगुल-परिदिपआदि-
तेना-कम्मइयसरीर-वण्ण गध-रस-फाम-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्साम-तस-चादर पजत-
पत्तेयमगीर निमिण पचतराइयाण मिच्छाद्वी चउगइसजुत्ताण, सासणो गिरयगईए विणा तिगइ
सजुत्ताण, मेसा देवगइसजुत्ताण वयया । सादनेदणीय हस्म-रदीओ मिच्छाद्वी सामणो च गिय
गईए विणा तिगइसजुत्त, मेसा देवगइसजुत्त वयति । एव जसकिंति पि वयति^१, निसेमाभावो ।
अमादेवदणीय-अजसकिनीओ मिच्छाद्वी चउगइसजुत्त, सासणो तिगइसजुत्त, सेसा देवगइसजुत्त ।
पुरिसवेद मिच्छाद्वी सासणो च गिरयगईए विणा तिगइसजुत्त, सेसा देवगइसजुत्त यधनि ।
समचउरममठाण पस यनिहायगइ सुभग सुस्सर आदेज्जाणेमेव चेव चत्त व । देवगदि देव
गदिपाओगाणुपूर्वाओ सव्वे देवगइसजुत्त वयति । [वेउन्वियसरीर] वेउन्वियसरीर
अगोराणाणि मिच्छाद्वी देव-गिरयगइसजुत्त, सेसा देवगइसजुत्त । धिर सुभाण सादभो ।
अधिअसुहाण असादभो । उच्चगोद मिच्छाद्वी सासणसम्माद्विणो देव मणुसगइसजुत्त,
सेसा देवगइसजुत्त वयति ।

पाच भानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कपाय, अरति, शोक, भय, दुगुल्ल, पचेन्द्रिय आति, नैजस य कामंण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्लयु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, धस, घादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इन प्रवृत्तियोंके मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे सयुक्त, सामादनसम्पगदृष्टि नरकगतिके बिना तीन गतियोंसे सयुक्त, और शेष जीव देवगतिके सयुक्त बन्धक हैं । सातावेदनीय, हास्य और रतिके मिथ्यादृष्टि पर सामादनसम्पगदृष्टि नरकगतिके बिना तीन गतियोंसे सयुक्त, तथा शेष जीव देवगतिके सयुक्त बाधते हैं । इसी प्रकार यशस्वीतिके भी बाधते हैं, क्योंकि इसके कोई विशेषता नहीं है । अस्मात्वेदनीय और अयशस्वीतिके मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे सयुक्त, सामादन तीन गतियोंसे सयुक्त, और शेष जीव देवगतिके सयुक्त बाधते हैं । पुण्यवेदके मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्पगदृष्टि नरकगतिके बिना तीन गतियोंसे सयुक्त और शेष जीव देवगतिके सयुक्त बाधते हैं । समचतुरार सन्धान, प्रशस्तिहायगति, सुभग, सुस्वर और आदेश प्रवृत्तियोंका गतिसंयोग भी इसी प्रकार कहना चाहिये । देवगति और देवगतिप्रायोगानुपूर्वीको मय देवगतिके सयुक्त बाधते हैं । [वैत्रियिकशरीर] और वैत्रियिकशरीरागोपागको मिथ्यादृष्टि देव व नरकगतिके सयुक्त तथा शेष देवगतिके सयुक्त बाधते हैं । स्थिर और शुभ प्रवृत्तियोंका गतिसंयोग सातावेदनीयके समान है । अस्थिर और अशुभ प्रवृत्तियोंका गतिसंयोग अस्मात्वेदनीयके समान है । उच्चगोदके मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्पगदृष्टि देव व मनुष्य गतिके सयुक्त, तथा शेष तीर्थव ज्यगतिके सयुक्त बाधते हैं ।

भावाद्वा । सेसपयडीण वधो सादि अद्भुतो, अद्भुतवधित्तादो ।

मिच्छत्त णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय वीइंदिय तीइं-
दिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयगइपाओ-
ग्गाणुपुब्बि-आदाव-थावर-सुहुम अपज्जत्त साहारणसरीरणामाणं को
वंधो को अवंधो ? ॥ ६७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ६८ ॥

एदस्म अरथो वुच्चदे— मिच्छत्त एइंदिय-वीइंदिय-तीइंदिय चउरिंदिय आदाव-
थानर-सुहुम अपज्जत्त साहारणाण वधोदया सम वोळिउणा, मिच्छाइडि मोत्तूणेदासिं उवरिमेसु
उदयाभावादो । णवुसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तमेवट्टमघडणाण वधवोच्छेदो चेव णोदयस्स,
सन्त्रगुणेषुदयदसणादो । णिरयाउ णिरयगइपाओग्गापुब्बीण तिरिक्खगदीए उदयाभावादो पुब्ब
पच्छा वधोदयमोच्छेदमिचारे णत्थि ।

यन्ध सादि न नधुन होता हे, क्योंकि ये नधुवनन्धी हैं ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि-
न्द्रिय जाति, हुण्डमस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकाशरीरमहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप,
स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकमेंका कौन बन्धक और कौन अनन्धक
है ? ॥ ६७ ॥

यह सून सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक ह, शेष तिर्यच अवन्धक हैं ॥ ६८ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय,
आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनका बन्ध और उदय दोनों साथ
व्युत्तिष्ठत होते हैं, क्योंकि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें छोड़कर उपरिसे गुणस्थानोंमें इन
प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । नपुसकवेद, हुण्टमस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासहनन,
इनके बन्धका ही 'वुच्छेद' है, उदयका नहीं, क्योंकि सब गुणस्थानोंमें इनका उदय देखा
जाता है । नारकायु और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्विका तिर्यग्गतिमें उदय न होनेसे
इनके पूर्व या पश्चात् वन्धोदयव्युच्छेद होनेका विचार नहीं है ।

सातर-निरतरो ।

एदासि पन्चया मन्वगुणेषु पचट्टाणियपयडिपचएहि तुल्ला । णवरि तिरिक्ख
मणुस्साउआण मिच्छाइट्ठिहि कम्मइयपन्चओ णत्थि । पच्चिदियतिरिक्खपज्जत्त-पच्चिदिय
तिरिक्खजोणिणीसु ओगालियमिम्म कम्मइयपन्चया णत्थि । चउत्तिहेसु तिरिक्खेसु मामणे
ओगालियमिम्म कम्मइयपन्चया णत्थि, अपज्जत्तकाले तस्माउन गभावादो ।

धीणगिद्धितिय अणताणुअधिचउत्तकाण मिच्छाइट्ठि चउगइमज्जुत्त, मामणो तिगइ
संजुत्त वधओ । इत्थिदेद णिरयगइए विणा तिगइमज्जुत्त, मणुमाउ-मणुमगइपाओग्गाणुपुग्गीओ
मणुमगइसज्जुत्त, तिरिक्खाउ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुग्गी-उज्जोराणि तिरिक्खगइमज्जुत्त, ओग
लियसंरीर चउसठाण ओगालियसंरीरअगोउग-पच्चमवट्ठणाणि तिरिक्ख-मणुमगइसज्जुत्त, अपसत्थ
निहायगइ दुमग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाणि दग्गदीए विणा तिगइमज्जुत्त वधति । एदामि
पयडीण वधस्त तिरिक्खा सामी । वधद्धाण वधणिणट्ठडाण च सुगम । धीणगिद्धितिय
अणताणुअधिचउत्तकाण मिच्छाइट्ठिहि चउत्तिहो वधो । सामणे दुविहो, अणादि धुवा

सातर निरतर वध होता है ।

इन प्रतियोंके प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें पचस्थानिज प्रतियोंके समान है ।
विशेषता फल यह है कि तिर्यगायु और मनुष्यायुस मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें कामण प्रत्यय
नहीं होता । पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यच येनिमतियोंमें औदारिकमिथ
य कामण प्रत्यय नहीं हाते । चार प्रकारके तिर्यचोंमें सासादन गुणस्थानमें औदारिकमिथ
और कामण प्रत्यय नहीं होने, क्योंकि, अपयान्तकार्त्तमें उसके आयुस उन्ध नहीं होता ।

इ यागृद्धित्रय और अनन्तानुबध्निचतुष्कके मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त
और सामादनसम्बन्धदृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बन्धन है । स्वदेवदेवो नरकगतिके विना
तीन गतियोंसे संयुक्त, मनुष्यायु एव मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वको मनुष्यगतितसे संयुक्त ।
तिर्यगायु, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्यचगतिसे संयुक्त । औदारिकशरीर,
चार संस्थान, औदारिकशरीरारोगोपाग और पाच सहननको तिर्यगगति च मनुष्यगतितसे
संयुक्त, तथा अपशस्त्रविहायागति, दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रको देवगतिके
विना तीन गतियोंसे संयुक्त बाधन है । इन प्रतियोंके उधरे तिर्यच सामी हैं ।
वधाध्यान और वधाविनष्टस्थान सुगम हैं । स्थानगृद्धित्रय और अनन्तानुबध्निचतुष्का
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका वध हाता है । सामादन गुणस्थानमें दो प्रकारका
वध होता है, क्योंकि, वधा अनादि और धुन उन्धका अभाव है । दोष प्रतियोंका

१ प्रतियु ' इयिन्द ' इति पाठ ।

२ प्रतियु ' अपज्जत्त ' इति पाठ ।

च सुगम । मिच्छत्तस्म मादिओ अणादिओ धुवो अद्दवो ति चउत्तिहो वधो । सेमाण सादि-
अद्दवो, अद्दवमत्तितादो ।

अपच्चस्साणकोध-माण-माया लोभाणं को वंधो को अवंधो ?

॥ ६९ ॥

सुगम ।

मिच्छाडट्टिप्पहुडि जाव असजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ ७० ॥

एदेण सगहिदत्थाण पयामो कीरंद—एदामि उचोदया मम वोन्धिण्णा, दोण्हम-
सजदसम्मादिट्ठिहि निणासुलभादो । सोदय-परोदण वधो, अद्दवोदयत्ता । गिरतरो, धुव-
पधित्तादो । पच्चया तिरिक्खाण पचट्ठाणियपयडिपच्चएहि तुत्ता । मिच्छाडट्ठी चउगड-
मजुत्त, मामणसम्मादिट्ठी तिगडमजुत्त, सम्मामिच्छादिट्ठी अमजदसम्मादिट्ठी देवगइसजुत्त

म्यामी ह । उन्धाप्पान और उन्धप्पिनएस्थान सुगम ह । मिथ्यात्वका सादिक, अनादिक,
धुव और अद्दव चारों प्रकारका उन्ध होता है । दोष प्रतियोगीका मादि उ अद्दव उन्ध होता
है, क्योंकि, वे अद्दवउन्धी ह ।

अप्रत्यास्थानावरण क्रोध, मान, माया और लोभका कौन उन्ध और कौन अउन्धक
है ? ॥ ६९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि लेकर असयतमम्यग्दृष्टि तक उन्ध हैं । ये उन्ध हैं, दोष अउन्धक
है ॥ ७० ॥

इस सूत्रके द्वारा सगृहीत अर्थोंका प्रकाश करते हैं— इन चारों प्रतियोगीका उन्ध
और उदय दोनों माय व्युत्पन्न होते ह, क्योंकि, असयतमम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दोनोंका
विनाश पाया जाता है । इनका स्वोदय परोदयसे उन्ध होता है, क्योंकि, वे अद्दवोदयी
हैं । निरन्तर उन्ध होता है, क्योंकि, धुवउन्धी हैं । इनके प्रत्यय तिर्यच्चोंके पंचस्थानिक
प्रतियोगीके समान ह । मिथ्यादृष्टि तिर्यच्च इन्हें चारों गतिर्यासे संयुक्त, मासादनसम्यग्दृष्टि
तीन गतिर्यासे संयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असयतमम्यग्दृष्टि देवगतिसे संयुक्त

मिच्छत्तम्म सोदण्णेन, गिरयाउ गिरयगइ-गिरयगइपाओग्गाणुपुत्तीण परोदण्णेन, सेमाण सोदय परोदण्हि वधो। नपरि पचिंदियतिरिक्खतिथम्मि एइदिय नीइदिय-तीइदिय चउ जोणिणीसु अपज्जत्तस्स परोदण्ण वधो। जोणिणीसु णवुमयवेदस्स परोदण्ण वधो। मिच्छत्त गिरयाऊण गिरतरो वधो, एगममएण वधस्सुनरमाभाजाने। सेमपयडीण वधो सातरो, एगसमएण वधनरमदसणादो। मिच्छत्त-णवुमयवेद हुटसठण असपत्तमेवट्टमघडण गिरयगइ-गिरयगइ-पाओग्गाणुपुत्ती एइदिय नीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-आदान थावर-सुहुम-अपज्जत्त साहारणाण तेवण्ण पच्चया। जोणिणीसु एककाण्ण पच्चया। गिरयाउ-अस्म तिरिक्ख-पचिंदियतिरिक्ख पचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु एककाण्ण पच्चया। पचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु एगूणवचास पच्चया। मिच्छत्त चउगइसजुत्त, णवुसयवेद-हुटसठणाणि तिगइसजुत्त, गिरयाउ-गिरयगइ गिरयगइपाओग्गाणुपुत्तीओ गिरयगइसजुत्त, एइदिय-नीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-आदान थावर-सुहुम-साहारणे तिरिक्खगइसजुत्त, असपत्तमेवट्टसघडणमपज्जत्त च तिरिक्ख-मणुसगइ सजुत्त मिच्छाडड्डी वधति। एदासिं पयडीण वनस्म तिरिक्खा सामी विधद्धाण वधविण्हड्डाण

मिध्यातयका स्वेदयसे ही, नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदयसे ही, तथा शेष प्रतियौका स्वेदय परोदयसे ही व ध होता है। विशेषतया यह है कि पचेन्द्रियादिक तीन प्रकारके तिर्यचोंमें पचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय जानि, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण प्रतियौका परोदयसे बन्ध होता है। पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त और योनिमतियोंमें अपर्याप्तका परोदयसे बन्ध होता है। योनिमतियोंमें नपुंसकवेदका परोदयसे बन्ध होता है। मिध्यातय और नारकायुका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धना त्रिधाम नहीं होता। शेष प्रतियौका व ध मान्तर होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका त्रिधाम देखा जाता है।

मिध्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डमेस्थान, असप्राप्तसृष्ट्यादिकासहनन, नरकगति, नरक गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, पचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनके तिर्येपन प्रत्यय होते हैं। यानिमित्तियोंमें इक्यावन प्रत्यय होते हैं। नारकायुके तिर्यच, पचाद्रिय तिर्यच और पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तोंमें इक्यावन प्रत्यय होते हैं। पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंमें उनचाम प्रत्यय होते हैं।

मिध्यादष्टि तिर्यच मिध्यात्वको चारों गतियोंमें सयुक्त, नपुंसकवेद व हुण्ड सम्स्थानको तीन गतियोंमें सयुक्त, नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको नरकगतितसे सयुक्त, पचाद्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण, इनका नियमगतितसे सयुक्त तथा असप्राप्तसृष्ट्यादिकासहनन और अपर्याप्तका नियमगति व अनुप्यगतितसे सयुक्त ग्राह्य हैं। इन प्रतियौके

पंचिन्द्रियतिरिक्खअपज्जत्ता पञ्चणाणावरणीय णवेदसणावरणीय-
सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-
तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-एइदिय-वीडदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पंचिं-
दियंजादि ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंडाण-ओरालियसरीर-
अंगोवंग छसंडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओ-
ग्गाणुपुन्वी-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाउज्जोवि-दो-
विहायगइ-तस-यावर-चादर-सुहुम पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिरा-
थिर-सुहासुह-सुगभ-[दुभग-] सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जस-
कित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद पंचंतराहयाणं को बंधो को
अबंधो ? ॥ ७३ ॥

सुगम ।

सव्वे एदे बंधा, अवंधा णत्थि ॥ ७४ ॥

धीणगिद्धितिय-मणुस्साउ-मणुस्सगइ-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियंजादि-हुड-

पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोमे पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता
वेदनीय, मिध्यात्व, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति,
एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर,
छह सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गति व
मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वा, अगुरुष्ठु, उपपात, परपात, उच्छ्वाम, आताप, उद्योत, दो
निहायोगितिया, त्रम, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, प्रत्येक, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर,
शुभ, अशुभ, सुभग, [दुर्भग], सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनोदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति,
निर्माण, नीचगोत्र, ऊचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक
है ? ॥ ७३ ॥

। यह सूत्र सुगम है ।

ये सब पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ७४ ॥

स्थानगृह्णिय, मनुष्यायु, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

बधति । तिरिस्खा सामी । बधद्वाण बधविणद्वाण च मुगम । मिच्छाइट्टिमिद् चउगिहो ।
सेसगुणेषु तिविहो, धुवाभावादो ।

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ ७१ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी संजदासंजदा
बंधा । एदे बधा, अवसेसा अवधा ॥ ७२ ॥

एदस्मरयो बुच्चदे— यधोदयाणमेन्ध पुन पच्छा वोच्छेदविचारो गत्थि, तिरिस्ख
गइए देवाउअस्स उदयाभावादो । परोदएण यधो, यधोदयाणमक्कमेण उत्तिविगेहो ।
णिरतरो, एगमएण बधुअरमाभावादो । तिरिस्ख-पच्चिदियतिरिक्खा-पच्चिदियतिरिस्खपज्जत्तएमु
मिच्छाइट्टि-सामणमम्माइट्टि-अमजदमम्माइट्टि यजदामजदाण जहाकमेण एक्कावण्ण-छादल
भादल-सत्तवीसपच्चया हेंति । जोणिणीमु एगूणअचाम-चउवेदालीस-चालीस पचतीम
पच्चया । सेस सुगम । सन्ने देअगइमजुत्त बधनि । तिरिक्खा सामी । बधद्वाण बधविणद्वाण
च सुगम । देवाउअस्स यधो सन्नेत्थ मादि-अद्वो, अद्वुववधिनादो ।

बाधते हैं । तिरिच जीव इनके सामी है । उन्धा जान ओर उन्धजिनस्थान सुगम
हैं । मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन
प्रकारका बंध है, क्योंकि, उनमें ध्रुव बंधका अभाव है ।

देवायुका कौन बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ ७१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असयतसम्यग्दृष्टि और मयतामयत बन्धक है । ये
बन्धक हैं, शेष तिरिच अवधक हैं ॥ ७२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— यहा बन्ध और उदयका पूर्ण या अध्रान् व्युत्पेद होतेका
विचार नहीं है, क्योंकि, तिर्यग्गतिमें देवायुके उदयका अभाव है । देवायुना परोदयसे
बन्ध होता है, क्योंकि, उसके बंध और उदय दोनोंके एक साथ अस्तित्वका विरोध है ।
बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे बन्धविधामका अभाव है । तिर्यच, पचेन्द्रिय
तिर्यच और पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तकोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असयत
सम्यग्दृष्टि और सयतासयतोंके यथाक्रमसे इफवावन, छयालीस, ध्यालीस और सैतीस
प्रत्यय होते हैं । योनिमतिर्योमें उनचाम, चयालीस, चालीस और पैंतीस प्रत्यय होते हैं ।
शेष प्रत्ययप्रकरण सुगम है । मय तिर्यच देवायुको देवगतिसे मयुन बाधते हैं । तिर्यच
सामी हैं । बंधाध्यान और बंधविनष्टध्यान सुगम हैं । देवायुका बंध सर्वत्र सादि ब
अधुय होता है, क्योंकि, यह अधुयबन्धी प्रकृति है ।

विचारेसु नि ओघादो णत्थि भेदो । जत्थत्थि त परूणेमो — मिच्छाद्विस्म तेवण्ण पच्चया, सासणे अट्ठेत्तालीस, मम्मा मिच्छादिट्ठिम्हि वाएत्तालीस, अमज्जदसम्मादिट्ठिम्हि चोदालीस, वेउत्थियदुग्गभागादो । मणुसिणीसु एव चेव । णत्थरि सच्चवगुणट्ठणेषु पुरिस-णवुमयवेदा, असज्जदसम्माद्विट्ठिम्हि ओरालियमिस्स कम्मडया, जप्पमत्ते आहारदुग्ग णत्थि । मिच्छाद्वि चउ-गसज्जुत्त, सासणो तिगडसज्जुत्त, उवरिमा देवगडसज्जुत्त मणुसगडसज्जुत्त च वधति ।

णिदाणिदा-पयलापयला-वीणगिद्धि अणत्ताणुणधित्तउक्क-इत्थिवेद तिरिक्खत्ताउ मणुसाउ-तिरिक्खगड-मणुसगड-ओरालियसरीर-चउसठाण-ओरालियसरीरअगोवग-पचसघडण-तिरिक्खगड-मणुसगडपाओग्गणुपुत्थि-उज्जोव-अप्पमत्थनिहायगड-दुभग-दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाणि ति एदाओ एत्थ वेट्ठणपयडीओ । ओणनेट्ठणपयडीहितो जेण मणुस्माउ मणुसदुग्ग ओरालियदुग्ग-वज्जरिसहस्रघडणेहि अधियाओ तेण पच्चिदियतिरिक्खनेट्ठणमगो ति वुत्त ।

एत्थ वीणगिद्धित्थि इत्थिवेद-मणुस्माउ-मणुसगड-ओरालियसरीर-चउसठाण-ओरालियसरीरअगोवग-पचसघडण मणुसगडपाओग्गणुपुत्थि अप्पमत्थनिहायगड दुभग-दुस्सर-अणा-देज्जण पुच्च वधो वोच्छिण्णो पच्छा उदओ । अणत्ताणुणधित्तउक्कस्स वधोदया सम वोच्छि-

तया सादि आदि ऋणके विचारोंमें भी ओघसे कोई भेद नहीं है । जहां भेद है उसे कहते हैं— मिथ्यादृष्टिके तिरपेण प्रत्यय, सासादनमें अट्ठतालीस, सम्यग्मिथ्यादृष्टिमें ध्यालीस और असयतनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चत्तालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, यहां वैकल्पिक व वैकल्पिकमिश्र प्रत्यय नहीं होते । मनुष्यनियोंमें इसी प्रकार प्रत्यय होते हैं । विशेष इतना है कि सत्र गुणस्थानोंमें पुरुष व नपुंसक वेद, असयतनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्र व कर्मण, तथा अप्रमत्त गुणस्थानमें आहारद्विक प्रत्यय नहीं होते । मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके बिना तीन गतियोंसे संयुक्त और उपरिम जीव देवगतिके संयुक्त व मनुष्यगतिके संयुक्त बाधते हैं ।

निट्ठानिट्ठा, प्रचलाप्रचला, इयानगृद्धि, अनन्तानुण्धिचत्तुक्क, खीवेद, तिर्यग्गायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, पाच सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्त-विहायोगति, दुर्भंग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्र, ये यहां द्विस्थानिक प्रकृतिया हैं । ओघद्विस्थान प्रकृतियोंसे चूंकि यहां मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकद्विक और वज्जरमसहनन प्रकृतियोंसे अधिक है, अत एव 'पचेन्द्रिय तिर्यच्चोकी द्विस्थान प्रकृतियोंके समान प्ररूपणा हे' ऐसा कहा है ।

यहां स्थानगृद्धिअय, खीवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, पाच सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भंग, दुस्सर और अनादेय, इनका पूर्वमें उन्ध व्युत्पिन्न होना है, पश्चात् उदय । अनन्तानु

तिरिस्ता सामी । पञ्चदश पञ्चविण्दृष्टाण च सुगम । पञ्चणाणावरणीय णन्दमणावरणीय
मिच्छत सोलसकसाय भव दुगुल-तेजा-कम्मइयमरीर-वण्णचउक-अगुम्बल्हुन-उवपाद-
णिमिण पचनराइयाण चउविहो वधो, धुयधित्तादो ।

मणुमगदीए मणुस मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओध णेयव्व जाव
तिरिथयेरत्ति । णवरि निसेसो, वेट्टाणे अपच्चम्बलाणावरणीय जथा
पचिदियतिरिक्खभगो ॥ ७५ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे — ओषम्मि जामि पयडीण जे वयया परुत्तिदा ते चेत्तासि
पयडीण पयया एव नि होति त्ति ओषमिदि उच्च । मय्यद्वेणेषु ओषत्ते सपत्ते तण्णिमेह
वेट्टाणियपयडीण अपच्चम्बलाणावरणीयस्स च पचिदियतिरिक्खभगो त्ति परुत्तिद । एदेष
देसामामिण सुइदत्थपरुत्तण कस्सामो । त जहा — पञ्चणाणावरणीय-चउदसणावरणीय
जसक्ति-उच्चामोद-पचनराइयाण गुणगयवधमामित्तेण, वधोदयाण सुध्व पच्छा वेच्छेद
विचारेण, सोदय-परोदय सातर निरन्तरपञ्चिचारणाए, वधद्वान वधविण्दृष्टाण च सादि' आदि

वधवाचान और वधविनष्टस्थान सुगम ह । पाच शानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिध्यात्व,
सोह कपाय, भय, दुगुत्ता, तेजस व कामं शरीर, वर्णादिक चार, अगुम्बल्हु, उपघात,
निमोण और पाच अन्तराय, इनका चार प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, धुयधित्ती है ।

मनुष्यगतिं मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त एव मनुष्यनियोमें तीर्थकर प्रकृति तक ओषके
समान जानना चाहिये । विशेषता इतनी है कि द्विस्थानिक प्रकृतियों और अपत्याख्याना
वरणीयकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय तिर्यचोके समान है ॥ ७५ ॥

इस सूत्रका अर्थ करते हैं — ओषमें त्रिन प्रकृतियोंके जो बन्धक कहें गये हैं वे
ही उन प्रकृतियोंके बन्धक यहा भी हैं, इसीलिये सूत्रमें 'ओषके समान' ऐसा कहा है ।
सब स्थानोंमें ओषत्वके प्राप्त होनेपर उसके नियमार्थ 'द्विस्थानिक प्रकृतियों और
अपत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय नियमोंके समान है' ऐसा कहा है । इस
देशामाशय सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करने हैं । यह इस प्रकार है — पाच शाना
वरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशस्वित्ति, उच्चमोत्र और पाच जतराय, इनका गुणस्थानगत
वधवाचान, वध और उदयका पूव या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार, सोदय
परोदय वधका विचार, सातर निरन्तर वधका विचार, वधवाचान और वधविनष्टस्थान

१ अ जपयो 'वधद्वान वधविण्दृष्टाण सादि' कामो 'वधद्वान वधविण्दृष्टाण च सुगम सादि'
इति पाठ । भगवो स्वीकृतपाठ ।

देवेहिं तो मणुस्मेसुप्पण्णाणमतोमुहत्तकाल गिरतरत्तुलभादो । अउसेसाओ सातर वज्जति, एगसमएण वधुवरमदसणादो ।

एदामिं पंचया देसु नि गुणद्वारेणसु तिरिस्खवेद्वानियपयडिपच्चएहि तुल्ला । धीण-
गिद्धितिय अणताणुनविचउक्क च मिच्छाड्ढी चउगइसजुत्त, इरिथवेद दो वि गिरयगईए
विणा तिगइमजुत्त, तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जेवाणि तिरिक्ख-
गइसजुत्त, मणुम्साउ-मणुस्मगइ मणुस्मगइपाओग्गाणुपुव्वीओ मणुसगइसजुत्त, ओरालियसरी-
चउसठाण ओरालियसरीअगोवग-पचसघडणाणि तिरिक्ख मणुसगइमजुत्त अप्पसत्थविहायगइ-
दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाणि देवगईए विणा मिच्छाड्ढी तिगइमजुत्त, सामणो तिरिक्ख-
मणुसगइमजुत्त नइ ति ।

सत्वासिं पयडीण वधस्म मणुमा सामी । वधद्वान वधविणइद्वान सादि-आदिबिचारो
वि ओपतुल्लो ।

णिहा पयलाण पुव्वपच्छानधोदयवोच्छेद-सोदयपरोदय-सातरगिरतर वधद्वानं वध-
विणइद्वान सादि आदिनधपरिक्खा ओपतुल्ला । पंचया मणुसगईए परुविदपच्चयतुल्ला ।
मिच्छाड्ढी चउगइसजुत्त, सामणमम्मादिड्ढी तिगइसजुत्त, सेमा देवगइसजुत्त वधति ।

काल तक निरन्तरता पायी जाती है । शेष प्रकृतिया सान्तर वधती हैं, क्योंकि, एक
समयमें उनके उन्धका निश्राम देखा जाता है ।

इनके प्रत्यय दोनों ही गुणस्थानोंमें तिर्य्यचोंकी छिस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके
समान हैं । स्थानगृह्णय और अनन्तानुगन्धचतुष्कको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे
सयुक्त, स्थानिको मिथ्यादृष्टि ३ सामादनमस्यगृह्णय दोनों ही नरकगतिके बिना तीन
गतियोंसे सयुक्त, तिर्यगायु, तिर्यगगति, तिर्यगगतिप्रायोग्यानुपूर्वों और उद्योतको तिर्यगगतिके
सयुक्त, मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वोंको मनुष्यगतिके सयुक्त,
औदारिकशरीर, चार सस्थान, औदारिकशरीरगोपाय और पाच सहनन, इनको
तिर्यगगति व मनुष्यगतिके सयुक्त, तथा अग्रशस्तविहाययोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय
और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि देवगतिके बिना तीन गतियोंसे सयुक्त व सासादन-
सम्यगृह्णय तिर्यगगति ण्य मनुष्यगतिके सयुक्त गधते ह । सब प्रकृतियोंके बन्धके मनुष्य
स्वामी हैं । उन्धाध्यान उन्धनिष्ठस्थान और सादि आदिकका निचार भी ओघके समान है ।

निद्रा और प्रचलाना पूर्व या पश्चात् होनेवाला उन्धोदयव्युच्छेद, स्वादय परोदय
बन्ध, सातर निरन्तर उन्ध, बन्धाध्यान, उन्धनिष्ठस्थान और सादि आदि बन्धकी परीक्षा
ओघके समान है । प्रत्यय मनुष्यगतिके कहे हुए प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि चारों
गतियोंसे सयुक्त, सामादनमस्यगृह्णय तीन गतियोंसे सयुक्त, और शेष गुणस्थानवर्ती देव

ज्जनि, मासणे दोष्णमुच्छेददमणादो । तिरिक्खाउ- [तिरिक्खगइ-] तिरिक्खगइपाओग्गाणु पुञ्जी उज्जेवाण मणुस्सेसुदयाभावादो वधोदयाण पुञ्च पच्छा वोच्छेदविचारो णत्थि । णीवा गोदस्स पुञ्च वयो पच्छा उत्तवो वोत्तिष्णो, उधे मामणम्मि णट्ठे सने पच्छा मन्दासुनस्मि उदयवोच्छेददसणादो ।

मनुस्माउ मनुस्ममर्दओ सोदण्णेय उचति । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइ पाओग्गाणुपुञ्जी उज्जेवाण परोदण्णेय, मणुस्सेसु एदामिमुदयाभावादो । अवमेमाओ पयहीओ सोदय-परोदण्ण वज्जति, अद्वयोदयत्तादो काओ विग्गहगदीए उदयामावादो का वि तथेउदयादो ।

धीणगिद्धिनिय-अणनाणुअचिउत्तण णितरो वयो, युववधित्तादो । [मनुस्माउ] तिरिक्खाउआण पि णितरो, एगममण वधुवरमाभावादो । मनुमगइपाओग्गाणुपुञ्जी ओराण्यि सरीरे ओराण्यिमरीअगोउगाण सातर णितरो, सत्तव सातरस्म एदामि वधस्म आणदादि

वन्धवत्पुष्पका वन्ध और उदय दोनों साथ घुन्छित होते हैं, क्योंकि, सामादन गुणस्थानमें दोनोंका घुन्छेद देखा जाता है । तिर्यगायु, [तिर्यग्गति], तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु पूर्वा और उद्योत, इनका वृत्ति मनुष्योंमें उदय होता नहीं है अतः इनके वन्ध और उदयक पूरा या पश्चात् घुन्छेद होना या वहा विचार नहीं है । नीचगोत्रका पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उदय घुन्छित होता है, क्योंकि, सामादनमें उन्धके नष्ट होने जानेपर पश्चात् सयता मयनमें उदयका घुन्छेद देखा जाता है ।

मनुष्यायु और मनुष्यगति सौंदर्य ही प्रती है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वा और उद्योत प्रकृतिया परोदयसे ही वधनी है, क्योंकि, मनुष्योंमें इनके उदयका अभाव है । शेष प्रकृतिया सौंदर्य परोदयमें वधनी है, क्योंकि, ये अधुनोदयी हैं तथा कि-होने निग्रहगतिमें उदयका अभाव है तो कि-हाका वहा ही उदय रहता है ।

अन्यगुह्यत्रय और अनन्तानुअचिउत्तणका निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, व धुन्यधी प्रकृतिया है । [मनुष्यायु] और तिर्यगायुका भी निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके वन्धना निश्चय नहीं होता । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, औदारिकशरीर और औदारिकशरीरगोपागका सान्तरनिरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, इनके वन्धके सर्वत्र सान्तर होनेपर भी आनतान्त्रि देवोंमेंसे मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवाके अतर्मुहते

सोलसकसाय णणोऽस्माय-तिरिक्खाउ मणुस्साउ तिरिक्खगड-मणुसगड एइदिय-वेइदिय-
तीइदिय चउरिंदिय पचिंदियजादि ओरालिय तेजा कम्मइयसरीर ठसठाण ओरालियसरीरअगो-
वग छसघडण उण्ण-नाध रम फास तिरिक्खगड मणुमगडपाओग्माणुपूर्वी अगुरुअलहुव-उवघाद-
परघाद उस्सास आदाउज्जोअ दोविहायगड-तस-यानर-नादर सुहुम पज्जत्त अपज्जत्त पत्तेय साधारण-
सरीर [धिरा-]धिग सुहासुह सुभग दुभग सुस्सर दुस्सर आदेज अणादेज जसकित्ति अजमकित्ति-
णिमिण-णीचुच्चागोद पचतराडयाणि त्ति एदाओ एत्थ वज्जमाणपयडीओ । एत्थ धीणगिद्धि-
तिय इत्थि-पुरिसवेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगड-एइदिय-वीइदिय तीइदिय-चउरिंदियजादि-हुइ-
सठाणनिरिद्धिपचसठाण-असपत्तमेअट्टवदित्तपचसघडण-तिरिक्खगडपाओग्माणुपूर्वी-परघादु-
स्सास आदावुज्जोअ-दोविहायगदि यानर सुहुम-पज्जत्त साहारण सुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-
जसकित्ति-उच्चागोदाण उदयाभावादो वधोदयाण सतामताण सण्णिकामाभावादो पुच्च पच्छा
वधोदयवोच्चेदपरिक्खा ण कीरेदे । सेसपयडीण पि वधस्मेअ एत्थ उदयस्स वोच्चेदामावादो
ण कीरेदे ।

पचणाणानरणीय-चट्टदसणानरणीय मिच्छत्त णवुसयपेद मणुस्साउ मणुसगड-पचिंदिय-
जादि तेजा-कम्मइय-उण्णचउत्तक-अगुरुअलहुव-तस-यादर-अपज्जत्त-धिरायिर-सुमासुम-दुभग-

य असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, नो नोरुपाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु,
तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पचेन्द्रिय
जाति, औदारिक, तेजस य कर्मण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागो
पाग, छह संतनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्य
गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो
विहायोगतिया व्रस, स्वावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर,
स्थिर, अस्थिर शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयश
कीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, ऊच्चगोत्र और पाच अन्तराय, ये यहा अध्ययमान प्रकृतिया ह । इनमें
स्थानाद्वित्रय, रसवेद, पुष्पवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,
चतुरिन्द्रियजाति, हुण्टसस्थानसे रहित पाच सस्थान असंप्राप्तसृष्टादिकासहननको
छोडकर शेष पाच सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत,
दो विहायोगतिया, स्वावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारण, सुभग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय,
यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका उदयाभाव होनेसे विद्यमान रन्ध और अधिद्यमान उदयमें
समानता न होनेके कारण पूर्ण या पश्चात् होनेजाले रन्धोदय युच्छेदकी परीक्षा नहीं की
जाती है । शेष प्रकृतियोंके भी रन्धके समान यहा उदयका व्युच्छेद न होनेसे उक्त परीक्षा
नहीं की जाती ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, मनुष्यायु,
मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, तेजस व कर्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, व्रस,

मणुस्ता सामी ।

सादावेदणीयपरिकरा रि मूलोपतुल्य । नत्ररि पञ्चयभेदो सामिभेदो च णायव्यो ।
मिच्छाद्वितीय मायणमम्माड्वी मादावेदणीय निरयगईण निणा तिगइसत्तुत्त, उवरिमा देवगइमत्तुत्त
वधति । एव सव्वपेदेसु पञ्चयमत्तुत्तमामित्तभेदो चेन । सो रि सुगमो । अण्णप मूलोप
वेच्छिदूण ण कोत्ति भेदो अत्थि ति ण परुत्तिज्जदे । नत्ररि पचिंदिय-तस जादराण वधो
मिच्छाद्विद्विद्धि सोदओ सातर निरतरो । मणुसपज्जत्तणमु अपज्जत्तणधो परोदओ । एव
मणुसिणीसु वि वत्तव्व । नत्ररि उज्जाद परघाद-उस्साम पत्तेयसाराणममज्जदमम्मादिद्विद्धि
सोदओ वधो । पुरिम णवुमयवेत्ताण सत्त्वत्थ परोदओ । इत्थिवेदस्म मोदओ । खगसेट्ठीए
तिरथयरस्स णत्थि वधो, इत्थिवेदेण सह खगसेट्ठिमोहणे ममवामाजादो ।

मणुसअपज्जत्ताण पचिंदियतिरिस्सअपज्जत्तभगो ॥ ७६ ॥

एद वज्जमाणपयडिमस्साण समानत्त पेत्तिस्स पचिंदियतिरिस्सअपज्जत्तभगो' ति
वुत्त । पञ्चवद्वियणए अवलज्जमाणे भेने उज्जलव्वदे । त जहा— पचणाणानरणीय नत्रसणा

गतिसे सयुक्त याधते हैं । मनुष्य ब्रह्मात्मी है ।

सातावेदनीयकी परीक्षा भी मूलोपके समान है । विशेष यह है कि प्रत्ययभेद व
स्वामिभेद जानना चाहिये । मिच्छाद्वितीय और सासादनसम्यग्गद्वि सातावेदनीयको नरक
गतिके धिना तीन गतियोंसे सयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे सयुक्त याधते हैं ।
इस प्रकार मनुष्यमें प्रत्ययसयुक्त ब्रह्मात्मत्वभेद ही है । वह भी सुगम है । अन्यत्र
मूलोपकी अपेक्षा और कुछ भेद नही है, इसीलिये उसकी यहा प्ररूपणा
नहीं की जाती । धिनेपता यह है कि पचेन्द्रिय, वस् और वादरका वन्ध मिच्छाद्वि
गुणस्थानमें स्वेदय और सातर निरन्तर होता है । मनुष्य पर्याप्तकोंमें अपर्याप्तका
बन्ध परोदयमें होता है । इसी प्रकार मनुष्यगतियोंमें भी कहना चाहिये । विशेषता
केवल यह है कि उपघात परघात, उज्जवास और प्रत्येकशरीर, इनका असत्यतसम्यग्गद्वि
गुणस्थानमें स्वेदय वन्ध होता है । पुरुषवेद और नपुंसकवेदका सर्वत्र परोदय बन्ध
होता है । रुचिदका स्वेदय वन्ध होता है । क्षपकश्रेणीमें तीर्थंकरका वन्ध नहीं होता,
क्योंकि, त्रिदिके साथ क्षपकश्रेणी चढनेकी सम्भावना नहीं है ।

मनुष्य अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय त्रिर्घ अर्थात्तोंके समान है ॥ ७६ ॥

यह वक्ष्यमाण प्ररूपितियोंकी [१०९] सख्यासे समानताकी अपेक्षा करके 'पचेन्द्रिय
त्रिर्घ अपर्याप्तोंके समान है' ऐसा कहा गया है । पर्याप्तार्थिक नयका अर्थलक्षण करने
पर भेद पाया जाता है । वह इस प्रकार है— पाच ज्ञानावगणीय, नौ वशीतावरणीय, साता

सोलसकसाय णणोक्साय-तिरिक्खाउ-मणुस्माउ तिरिक्खगइ-मणुमगइ एइदिय-वेइदिय-
तीइदिय चउरिदिय-पचिंदियजादि ओरालिय तेजा कम्मइयसरीर छसठाण ओरालियसरीरअगो-
वग-छमघटण वण्ण-गघ रम फास तिरिक्खगइ मणुमगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुअलहुउ-उवघाद-
परघाद उस्सास आदाउज्जोउ दोविहायगइ-तस-थार-नादर सुहम पञ्जत्त-अपञ्जत्त पत्तेय साधारण-
मगीर [थिग-]थिर सुहासुह सुभग दुभग सुस्सर दुस्सर आदेज अणादेज जसकित्ति अजसकित्ति-
णिमिण-णीउच्चागोद पचतराइयाणि ति एदाओ एत्थ वज्जमाणपयडीओ । एत्थ धीणगिद्धि-
तिय इरिय-पुरिमवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइदिय-चीइदिय तीइदिय-चउरिदियजादि-हुड-
सठाणविरहिदपचमठाण-असपत्तमेउट्ट-अदिरित्तपचसघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि-परघाद-
स्सास आदाउज्जोउ-दोविहायगदि थावर सुहम-पञ्जत्त साधारण-सुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज-
जसकित्ति-उच्चागोदाण उदयाभावादो वगोदयाण मतासठाण सण्णिकासाभावादो पुब्ब पच्छा
वघेदियवोच्चेदपक्खिणा ण कीरदे । सेसपयडीण पि वगस्सेम एत्थ उदयस्स वोच्चेदाभावादो
ण कीरदे ।

पचणाणावरणीय-चदुदसणावरणीय मिच्छत्त णुसयवेद मणुस्माउ मणुसगइ पचिंदिय-
जादि तेजा-कम्मइय-वण्णचउत्त-अगुरुअलहुअ-तम-नादर-अपञ्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दुभग-

य असाता धेदनीय, मिथ्याय सोलह कपाय, नो नोरुपाय, तिर्यंगाया, मनुष्याया,
तियग्गाति, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय, हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय य पचेन्द्रिय
जाति, औदारिक, तेजस य कामेण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागो
पाग, छह सहनन, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्य
गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो-
विहायोगतिया तस, स्थावर, नादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर,
स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयश
कीर्ति, निमाण, नीचगोत्र, ऊचगोत्र और पाच अन्तराय, ये यहा उच्यमान प्रकृतिया ह । इनमें
स्थानगुह्यत्रय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, तिर्यंगाया, तियग्गाति, पचेन्द्रिय, हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,
चतुरिन्द्रियजाति, हुण्टसस्थानसे रहित पाच सस्थान, असंप्राप्तगुणादिकासहननको
छोडकर दोष पाच सहनन, तियग्गातिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत,
दो विहायोगतिया, स्थावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारण, सुभग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय,
यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका उदयाभाव होनेमें विद्यमान बन्ध और अविद्यमान उदयमें
समानता न होनेके कारण पूर्व या पश्चात् हानवाले बन्धोदय-न्युच्छेदकी परीक्षा नहीं की
जाती है । दोष प्रकृतियोंके भी बन्धके समान यहा उदयका न्युच्छेद न होनेमें उक्त परीक्षा
नहीं की जाती ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्याय, नपुसकवेद, मनुष्याया,
मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, तजस य कामेण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, तस,

अणादेज्ज अजसकित्ति निर्मिण-णीचागोद पचतगइयाण मोदओ नधो । जिहा पयटा-सादासाद
वीसकसाय-ओरालियसरीर-हुइसस्राण-ओरालियसरीरअगोवग-अमपत्तमेउट्ठमवडण-मणुसगा-
पाओरगाणुपुब्बि-उत्तघाद पत्तेयमरीराण मोदय परोदएण वधो, अट्ठवोदयत्तादो, कस्सिं च विग्गह
गदीए उदयाभासादो एम्किस्से विग्गहगदीए चेन उदयत्तादो । अवसेसाओ परोदएण
वञ्जति ।

पचणाणारणीय णवदमणारणीय मिच्छत्त सोलमकयाय-भय-दुगुछा-तिरिस्स-मणु-
स्माउ ओरालिय-तेजा रुमइयसरीर वण्ण गध रम फाम अगुत्तअलहुअ उत्तघाद-निमिण पचता-
इयाण गिरतरो वधो, एत्थ वणेण घउत्तिवादो । अवसेमाण सातरो नधो, एगममएण वधम्म
विरामइसणादो । [तिर्यग्गइ तिर्यग्गइपाओरगाणुपुब्बी] णीचागोदाण वधम्म सातर गिरतत्त
किण्ण उच्चदे ? ण, तेउ वाउकाइयाण सत्तमपुदरिगिरइयाण न मणुमेसुणत्तीए अभावदो ।

बादर, अपर्णात्त, हितर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयदासीति निर्माण,
नीचगोत्र और पाच अन्तराय, इनका स्वोदय ग्रन्थ होता है । निद्रा, प्रचला, साता व
असाता घेदनीय, वीस कपाय, औदारिकशरीर, हुण्डसस्थान, औदारिकशरीरागोशान,
असमाप्तखुपाटिकासहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात और प्रत्येकशरीर, इनका
स्वोदय परोदयसे उन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुवोदयी प्रवृत्तिया हैं । तथा किन्हींका
विग्रहगतिमें उदय नहीं रहता मार एकका विग्रहगतिमें ही उदय रहता है । शेष प्रवृत्तिया
परोदयसे ही वधती हैं ।

पाच ज्ञानारणीय, नौ वचनावरणीय, मिथ्याज्ञ, सोत्तह कपाय, भय, जुगुप्सा,
तियगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तेजस व कामण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुत्तलु,
उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, ग्रन्थकी
अपेक्षा ये प्रवृत्तिया भ्रूत हैं । शेष प्रवृत्तियोंका सान्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, एक समयमें
उनके ग्रन्थका विग्रह देखा जाता है ।

शंका—[तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और] नीचगोत्रके ग्रन्थमें सान्तर
निरन्तरता क्यों नहीं कहने ?

समाधान—नहीं कहने, क्योंकि, तेजःकायिक व त्रायुकायिक जीवोंकी सातवीं
पृथिवीके नारकियोंके समान मनुष्योंमें उपस्थित अभाव है ।

सुगममेद ।

मिच्छाद्विप्लवुडि जाव असंजदसम्माद्वी वंधा । एदे वंधा,
अबंधा णत्थि ॥ ७८ ॥

देसामासियसुत्तमे, तेणेदेण सूइदत्थपरुण कस्सामो— मणुमगइ ओरालिय
सरीर-अगोरगे वज्जरिसहमघडण मणुमगइपाओम्माणुपुव्वी अजमकित्तीणमुदयाभावादे वधो
दयाण पुत्र पच्छा वोच्छेदपरिक्खा ण कीरेदे । ण सेयाण पि, नयस्सेउ उदयम्म
वोच्छेदामावादे ।

पचणाणारणीय-चउदसणाणरणीय-पचिदियजादि-तेजा कम्मइयसरीर वण्ण गध रस
फास-अगुरुतरहुअ-तम-नादर-पज्जत्त-विराधिर सुभासुभ सुमग-आदेज्ज-जमकित्ति निमिण
उच्चागोद-पचतराइयाण सोदएणेउ पधो । णिहा पयत्ता मादामाद-वारमकमाय पुरिसवेद-हस्स
रदि-अरदि-सोग भय दुगुळाण सोदय परोदएण नओ, अद्दुवोदयत्तादो । समचउरससज्जण

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं
हैं ॥ ७८ ॥

यह सूत्र देशामशेष है, इमल्लिखे इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— मनुष्य
गति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरानोपाय, वज्रपभसेहनन मनुष्यगतिप्रायोग्यानु
पूर्वी और अपशकीर्ति इनके उदयका अभाव होनेसे ग्रन्थ और उदयके पूर्ण या पश्चात्
व्युत्प्रेक्ष्य होनेकी परीक्षा नहीं की जाती है । शेष प्रकृतियोंकी भी यह परीक्षा नहीं की जाती,
क्योंकि, यन्त्रके समान उनके उदयके व्युत्प्रेक्ष्यका अभाव है ।

पाच घाताणरणीय, चार दशनाणरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैजस्य ध कर्मण शरीर,
धर्म, गन्ध, रस स्पर्श, अगुरुलघु, वस, यादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,
सुमग, आदेय, यशकीर्ति, निमाण, उच्चगात्र और पाच अन्तराय, इनका स्वोदयसे ही
ग्रन्थ होता है । निद्रा, प्रचला, साता य असाता चेदनीय गच्छ कपाय, पुरुषवेद, ह्यम्,
रति, वरति, शोक, भय और जुगुप्सा, इनका स्वोदय परोदयसे ग्रन्थ होता है, क्योंकि,
ये अशुचोदय प्ररतिया हैं । समचतुरस्रसंज्ञान, प्रत्येकशरीर और उपघातका स्वोदय

१ कान्ठी 'आराउयनीराय' इति पाठ ।

२ श्रुति 'अद्दुवा अद्दुवादयत्ता' इति पाठ ।

पत्तेयसरीर उवघादाण सोदय परोदएण वधो, विग्गहगदीए उदयाभावादो । परघादुस्सास-
पसत्थविहायगदि सुस्सराण सोदय परोदएण वधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे वि वधदसणादो ।
णवरि सम्मामिच्छाडिट्ठिस्म ण्ढासि मोदएण वधो । मणुम्मगइ ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगो-
वग-वज्जरिसहसचडण मणुस्माणुपुञ्ची-अजसकित्तीण परोदएणेव वधो, तत्थेदेसिमुदयविरोहादो ।

पचणाणानरणीय-उदसणावरणीय-चारस-रुसाय-भय दुगुगळ ओरालिय तेजा कम्मइय-
सरीर वण्ण गग रम फास-अगुरुअलहुअ उवघाद उस्साम बादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर निमिण पच-
तराइयाण गिरतरो नधो, देवगदीए वधविरोहाभावादो । मादासाद हस्स-रदि-अरदि-सोग-
थिरायिर-सुभासुभ-जसकित्तीण सातरो वधो, एगसमएण वधनिरामुवलभादो । पुरिमवेद-सम-
चउरममठाण-वज्जरिसहसचडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्वर-आदेज्जुच्चागोदाण मिच्छाडिट्ठि-
सासणसम्माइट्ठीसु सातरो वधो, एगसमएण वधनिरामदमणादो । सम्मामिच्छाडिट्ठि-असजद-
सम्माइट्ठीसु गिरतरो, तत्थ पडिअक्खपयडीण वधाभावादो । पंचिंदियजादि-मणुस्सगइ-
मणुस्माणुपुञ्ची-ओरालियसरीरअगोवग-तसाण मिच्छाडिट्ठि सातर-गिरतरो । सासणसम्मादिट्ठि-
सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु गिरतरो, पडिअक्खपयडीण वधाभावादो । णवरि

परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, चिन्नहगतिमें इनके उदयना अभाव है । परघात,
उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति और सुम्भर, इनका म्योदय परोदयसे बन्ध होता है,
क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है । विशेषतः
यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि के इनका म्योदयसे बन्ध होता है । मनुष्यगति, औदारिकशरीर,
औदारिकशरीरागोपाग, वज्रर्पमसहनन, मनुष्यानुपूर्वी और अयशकीर्ति, इनका परोदयसे
ही बन्ध होता है, क्योंकि, देवोंमें इनके उदयना विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कपाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक,
तैजस्य का कर्मण शरीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुल्लघु, उपजात, उच्छ्वास, नादर, पर्याप्त,
प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, देव-
गतिमें इनके निरन्तर बन्धका विरोध नहीं है । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति,
शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और यशकीर्ति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
एक समयमें इनके उदयका विधाम पाया जाता है । पुरुषवेद, समचतुरस्त्रस्थान, वज्रर्पम
सहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका मिथ्यादृष्टि व
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका
विधाम देखा जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें निरन्तर
बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है । पंचेन्द्रिय जाति,
मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, औदारिकशरीरागोपाग और व्रस, इनका मिथ्यादृष्टि
गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है । सामादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष
प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है । विदोष इतना है कि मनुष्यादिकका सासादन गुणस्थानमें

तिरिस्ताउ-तिरिक्खगड-वउमउण-चउमघडण तिरिक्खगइपाओग्गानुपुञ्जी-उज्जेव अणसत्थ-
विहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज जीचागोदाण देवमुदयाभावादो यधोदयाण पुत्र पच्छा
येच्छेदपरिकमा ण कीरदे ।

अणत्तानुपधिचउत्तिकत्थिपेदा सोदय-परोदण, अवसेसाओ पयडीओ परोएणव
पज्जति । धीणगिद्धितिय-अणत्तानुपधिचउत्तिक तिरिक्खाउआण गिरतरो यधो । अवसेसाण
सातरो, एगसमएण नधुअस्सुवलभादो । कयावि दो तिणिममयादिकालपडिअद्धअपदमणादो
सातर गिरतरयधो किण्ण उच्चदे ? ण, एदासु पयडीसु गिरतस्वधणियमामाभादो । एदामि
पयडीण पच्चया देवगइचउट्टाणपयडिपच्चयनुत्ता । णवरि तिरिक्खाउअम्म पुच्चिलपच्चयसु
वेडिअयमिस्स कम्मइयपच्चया अणेदच्चा । तिरिक्खाउ तिरिक्खगड-तिरिक्खगइपाओग्गानु
पु वी उज्जेवाणि तिरिक्खगइसुत्त, अणसेसाओ पयडीओ मिच्छाडड्डी भासणसम्माइडी तिरिक्ख
मणुसगइसुत्त यधति, अविरोहादो । देवा मामी । यधद्वाण यधणिण्डडाण च मुगम । धीण

स्थानगृद्धिअय, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार अस्थान, चार सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी,
उद्योत, अमरास्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका देवोंमें
उदयाभार होनेमें बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युत्पत्तेद होनेकी परीक्षा नहीं की
जाती ।

अनन्तानुपधिचतुअ और अविदे स्थोदय परोदयसे तथा शेष प्रवृत्तिया परो
दयमें ही यधती हैं । स्थानगृद्धिअय, अनन्तानुपधिचतुअ और तिर्यगायुका निरन्तर यध
होता है । शेष प्रवृत्तियोंका मात्रात बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके यधका
विधाम पाया जाता है ।

शका—कदाचित् दो तीन समयादि काममें खयद यधके देखे जातेसे
मातर निरन्तर बन्ध क्यों नहा रहते ?

ममाधान—नहा कहते, क्योंकि इन प्रवृत्तियोंमें निरन्तर बन्धके नियमका
गभाव है ।

इन प्रवृत्तियोंके प्रत्यय देवगानिकी चतुस्थानिक प्रवृत्तियोंके प्रत्ययोंके समान हैं ।
विशेषता केवल यह है कि तिर्यगायुके पूर्वोक्त प्रत्ययोंमें वैकल्पिकमिध और कामण प्रत्ययोंको
कम करना चाहिये । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनकी तिर्य
ग्गतिसंयुक्त, तथा शेष प्रवृत्तियोंके मिच्छादादि व सासादनसम्यग्गति तिर्यग्गति और
मनुष्यगतिमें संयुक्त याधते हैं, क्योंकि, उसमें कोई विरोध नहीं है । देव स्वामी हैं । यन्वाध्वत

गिद्धितिय-अणताणुपधिचउक्काण' मिच्छाइडिम्हि चउज्विहो वधो । सासणे दुविहो, अणादि-
धुवत्तामाणादो । अवसेमाण पयडीण वधो सादि-अद्धो, अद्धवन्धितादो ।

मिच्छत्त णवुंसयवेद-एडदियजादि-हुंडसठाण-असंपत्तसेवट्टसंघ-
डण-आदाव-थावरणामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ८१ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ ८२ ॥

एदस्म अत्थो बुधेद — मिच्छत्तम्म चोदया सम वोच्छिज्जति, मिच्छाइडिम्हि चेव
तदुमयमुलभिय उवगि तदणुलभादो । णउमयवेद एडदियजादि-हुंडसठाण अमपत्तसेवट्टमय-
डण आदाव थावगणमेत्थुदयाभावादो चोदयाण पुज्जापुज्जोच्छेदपक्किवा ण कीरेद । मिच्छत्त
मोदएण, अणाओ पयडीओ परोदएणेव नज्जति, तहोवलभादो' । मिच्छत्त निरन्तर नज्जइ,
धुवन्धितादो । अणओ मातर नज्जति, एगमएण नुवसुवन्भादो । एदामि पच्चया

और बन्धनित्तस्थान सुगम हैं । स्थानवृद्धिप्रय और अनन्तानुबन्धित्तुष्का मिथ्यादृष्टि
गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता
है, क्योंकि, यहा अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतिर्थाका बन्ध सादि य
अधुन होता है, क्योंकि, ये अधुवन्धी प्रकृतिया हैं ।

मिथ्यात्व, नपुमकवेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डमस्थान, अमप्राप्तसृष्टिकामहनन,
आताप और स्थान नामकमौका कौन नन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ८१ ॥

यह सप्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि नन्धक है । ये नन्धक हैं, शेष देव अनन्धक है ॥ ८२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न
होते हैं क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों पाये जाते
हैं, ऊपर व नहीं पाये जाते । नपुमकवेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डमस्थान, अमप्राप्तसृष्टिकाम-
हनन, आताप और स्थान, इनके उदयमें यहा अभाव होनेसे बन्ध और उदयके पूर्व
या पश्चात् व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं की जाती । मिथ्यात्व प्रकृति स्वोदयसे और अन्य
प्रकृतिया परोदयसे ही बधती हैं, क्योंकि, वैसा पाया जाता है । मिथ्यात्व प्रकृति निरन्तर
बधती है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी है । अन्य प्रकृतिया सान्तर बधती है, क्योंकि, एक समयमें

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगड-चउमठाण-चउमघडण तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्नी-उज्जोव-अप्पमत्थ-
निहागइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाण देवेसुदयाभानादो वधोदयाण पुन्न पच्छा
वोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे ।

अणताणुअधिचउन्निकत्थिपेदा सोदय-परोदण्ण, अउमेमाओ पयडीओ परोदण्णव
वञ्जति । धीणगिद्धितिय-अणनाणुअधिचउन्नक निरिक्खाउआण गिरतरो वधो । अवसेसाण
सातरो, णगममण्ण वधुअमुवलमादो । कयावि दो तिण्णिममयादिकालपडिअद्धवधदसणादो
सातर गिरतरवधो किण्ण उच्चदे ? ण, एदसु पयडीसु गिरतरवधणियमामावादो । एदासि
पयडीण पच्चया देअगइचउट्ठाणपयडिपच्चयतुत्स । णवरि तिरिक्खाउअस्म पुव्विहपच्चण्णु
वेउत्थियमिस्स कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगड-तिरिक्खगइपाओग्गाणु
पुन्नी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसनुत्त, अउसेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी मासणसम्माइट्ठी तिरिक्ख
मणुमगइसल्लुअ वधति, अविरोहादो । देवा मामी । अथट्ठाण अथविणट्ठाण च सुगम । धीण

स्व्यानशुद्धिअय, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार नस्थान, चार सहजान, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी,
उद्योत, अमरास्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका देवोंमें
उदयामात्र होनेसे वध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की
जाती ।

अनन्तानुयन्धिअनुत्त और त्थीपेद एकोअ परोदयसे तथा दोष प्रवृत्तिषा परो
दयमे ही वधनी है । स्व्यानशुद्धिअय, अनन्तानुयन्धिअनुत्त और तिर्यगायुका निरन्तर पन्थ
होता है । दोष प्रवृत्तियोंका सान्तर अर्थ होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके वधका
विधाम पाया जाता है ।

शका—कदाचित् दो तीन समयादि कालमें सबद पन्थके देखे जानेसे
नातर निरन्तर वध क्यों नहीं करते ?

ममाधान—नहीं कहते, क्योंकि इन प्रवृत्तियोंमें निरन्तर पन्थके नियमका
अभाव है ।

इन प्रवृत्तियोंके प्रत्यय देवगतिरी अतुम्भानिक प्रवृत्तियोंके प्रत्ययोंके समान हैं ।
विशेषरता केअर्थ यह है कि तिर्यगायुके पूर्वोक्त प्रत्ययोंमें वैश्वियिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंको
ब्रह्म करना चाहिये । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनको तिर्य
ग्गतिमे अयुक्त, तथा शय प्रवृत्तियोंको मिथ्यादाष्टे च सासादनसत्त्वगदाष्टि तिर्यग्गति और
अनुत्पणनिस अयुक्त याघते हैं, क्योंकि, उन्में कोई निरोध नहीं है । देव भवामी हैं । पन्थाध्वान

ओरालियमिस्स-नेउवियमिस्स कम्मडय-णउंमयेनेदपच्चयाणमभावाणे । मणुमगइसजुत्त । देवा
सामी । वणद्वान वधाभावाण च सुगम । मम्मामिच्छत्तगुणेण जीना किण्ण मरति ? तत्थाउअस्स
वधाभावादे । मा वरउ आउअ, पुन्मण्णगुणद्वान्हि जाउअ' उधिय पच्छ मम्मामिच्छत्त
पडिवज्जिय तेण गुणेण ण्ण' काल कोदि ? ण, जेण गुणेणाउअयो ममअदि तेणेण गुणेण
मग्दि, ण अण्णगुणेणेति परमगुरूवदेमादे । ण उअमामेहि अण्यतो, मम्मत्तगुणेण आउअ-
वधात्रिरहिणा णिम्मग्णे रिगेहाभावादे । सादि अद्धुवो नो, अद्धुवनत्तिादे ।

तित्थयरणामकम्मस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ८५ ॥

सुगम ।

असंजदमम्माइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ८६ ॥

प्रयोगका अभाव है । मनुष्यायुको मनुष्यगतिमें संयुक्त बाधते हैं । देव सामी हैं ।
पशुस्थान और बन्धविमृष्टस्थान सुगम हैं ।

शुक्रा—सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानके साथ जीव क्या नहीं मरत ?

समाधान—चूंकि इस गुणस्थानमें आयुके बन्धका अभाव है, अतएव जीव यहा
मरण नहीं करते ।

शुक्रा—यहा आयुबन्ध भल ही न हा, फिर भी पहिले अन्य गुणस्थानमें आयुको
पृथक् और पश्चात्त सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्तकर उस गुणस्थानके साथ तो निश्चयत मरण
कर सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जिस गुणस्थानके साथ आयुबन्ध सम्भव है उसी
गुणस्थानके साथ जीव मरता है, अन्य गुणस्थानके साथ नहीं, ऐसा परमगुरुका उपदेश है ।
इस नियममें उपशामकोंके साथ अनेकान्तिक दोष भी सम्भव नहीं है, क्योंकि,
आयुबन्धके अविरोधी सम्यक्त्वगुणके साथ निकलनेमें कोई विरोध नहीं है । (देखते
जीवस्थान-चूल्का ९, सूत्र १३० की टीका) ।

मनुष्यायुका बन्ध साद्विष अशुच होता है, क्योंकि, यह अधुनबन्धी है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन अन्यक और कौन अवन्धक है ? ॥ ८५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टि देव बन्धक हैं । ये बन्धक हैं अप नैव अवन्धक हैं ॥ ८६ ॥

१ प्रतिपु 'जाउमवधिय' इति पाठ ।

२ पत्रती 'गुणणो', आ-काप्रत्यो 'गुणपणोण' इति पाठ ।

देवचउद्वाणपयडिपच्चयतुहा । मिच्छत-णउसयेवेद-हुडमंठाण असपत्तसेउत्सपडणाणि तिरिक्क-
मणुमगइसजुत्त, एइदियत्तादि आदान वातराणि तिरिक्खगइयहुत्त वञ्छाणि, सामानियादो ।
देवा सामी । बवद्धाण बधविणइद्दुण च सुगम । मिच्छतम्म वधो चउत्तिहो, धुमभित्तादो ।
मेसाण सादि-अद्दुभो, अद्दुवमधित्तादो ।

मणुस्साउअस्म को बंधो को अवधो ? ॥ ८३ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्टी सासणसम्माहट्टी असजदसम्माहट्टी वधा । एदे
बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ८४ ॥

एदस्म अत्थो चुचदे— देवेषु मणुस्साउअस्म उदयाभारादो वधोदयाण पुत्रावर
योव्हेणपरिक्का णत्थि । परोदण नत्ति, मणुस्साउअस्म देवेषु उदयभावविरोदो ।
गिरित्तो नवो, एगममण नधुममाभारादो । मिच्छादिहि सासणसम्मादिहि-असजदसम्मा
दिहिण जहाकमेण पचाम पंचत्तानीम [एक्केतानीम] पच्चया, सग-सगोषपच्चएसु ओरात्थि

उनका बन्धविधायक पाया जाता है । इन प्रकृतियाँ प्रत्यय देवोंकी चतुस्त्रयात्मिक प्रकृतियोंके
प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यात्र, मनुष्यकपेद, हुण्डमस्थान और असप्राप्तछपाटिकामहनन,
यतिर्यगति ॥ मनुष्यगतिने मनुष्य, नरा एकेन्द्रियजाति, जाताप और स्थावर, ये निय
गतिसे सम्युक्त बधनी हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । देव स्वामी हैं । उन्धाध्यान और बध
विनष्टयान सुगम है । मिथ्यात्रका बन्ध चार प्रकार होता है, क्योंकि, यह धुमपन्धी है ।
ये प्रकृतियाँ वच सादि न अव्यय होता है क्योंकि, ये अधुमपन्धी हैं ।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ८३ ॥

यह मनु सुगम है ।

मिथ्यादिष्टि, सामादनमम्यदिष्टि और अमयामम्यदिष्टि उन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष
त्रेव अबन्धक हैं ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवोंमें मनुष्यायुका उदय न होनेसे पूर्व या पश्चात्
बधदयपुच्छेदकी पराक्षा नहीं है । मनुष्यायुको परोदयसे जाधते हैं, क्योंकि, देवोंमें
मनुष्यायुके उदयका विरोध है । बन्ध उसका निम्नतर होता है, क्योंकि, एक समयमें
बन्धविधायकका धर्माव है । मिथ्यादिष्टि, सामादनमम्यदिष्टि और अमयामम्यदिष्टि
देवोंके बधान्तमे पचास, पचासीस [और इकतालीस] प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, अपने अपने
ओपप्रत्ययोंमें बधा बोद्धारिक, अन्तरिक्षस्थ, वैदिकस्थ, कर्मण और नपुंसकपेद

भावो । पचिंदिय तसणामाओ मिच्छादिद्विम्हि सांतर वज्झइ, एइदिय-थावरपडिवक्खपयडीण
सभावो । मणुसगइ-मणुसगइपाओगाणुपुच्चीओ मिच्छादिद्वि मासणसम्मादिद्विणो सातर
वधति । ओरालियसरीरअगोवग मिच्छाइद्विणो सातर वधति । एसो भेदो सतो वि ण कहिदो ।
एवविध भेद सतमकहतस्स कथ सुत्तमाओ ण फिट्ठे ? ण एस दोसो, देसामासियसुत्तेसु
एवविहभावाविरोहादो ।

सोहमीसाणकप्पवासियदेवाणं देवभंगो ॥ ८८ ॥

एदस्स अथो— जथा देवोघम्मि सज्जपयडीओ परुविदाओ तहा एत्थ नि परुवे-
दव्वाओ । एदमण्णसुत्त देसामासिय, तेणेदेण सूइदथो उच्चदे— पचिंदिय-तसणामाओ
मिच्छाइडी देवोघम्मि सातर गिरतर वधति, मणक्कुमारादिसु एइदिय-थावरवधाभावेण गिर-
तरयधोवलभादो । एत्थ पुण सातरमेव वधति, पडिवक्खपयडिभाअ' पडुच्च एगसमएण

और प्रस नामकर्म मिथ्यादृष्टि गुणस्वात्ममें सान्तर वधते ह, क्योंकि, उक्त देवोंके इस
गुणस्वात्ममें एकेन्द्रिय जाति ओर स्थावर रूप प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी सम्भावना है ।
मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वको मिथ्यादृष्टि य सासादनसम्यग्दृष्टि सान्तर
वाधते ह । ओदारिकशरीरागोपागको मिथ्यादृष्टि सान्तर वाधते है । यद्यपि उध्यमान
प्रकृतिभेदके साथ यह भेद भी है, तथापि देशामर्शक होनेसे यह सूत्रमें नहीं कहा गया ।

शङ्का—इस प्रकारके भेदके होनेपर भी उमे न कहनेवाले वाक्यका सूत्रत्व क्यों
नहीं नष्ट होता ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, देशामर्शक सूत्रोंमें इस प्रकारके
स्वरूपका कोई विरोध नहीं ह ।

मौवर्म व ईशान कल्पवासी देवोंकी प्ररूपणा सामान्य देवोंके समान है ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ— जिस प्रकार सामान्य देवोंमें सब प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की
गई है, उन्ही प्रकार यहां भी प्ररूपणा करना चाहिये । यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है,
इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थको कहते हैं— एचेन्द्रिय जाति और प्रस नामकर्मको
मिथ्यादृष्टि देव देवोघर्म सान्तर निरन्तर वाधते ह, क्योंकि, सनत्कुमारादि देवोंमें एकेन्द्रिय
और स्थावर प्रकृतियोंके वधना अभान होनेसे निरन्तर उध्य पाया जाता है । परन्तु
यहां उन्हें सान्तर ही वाधते हैं क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके सद्भावकी अपेक्षा करके

एत्थ यधोदययोच्छेदविचारो णत्थि, उदयाभावादो । नेणैतं काण्णेण' परोदाणं वञ्छइ ।
 निरतरो तित्थयरनयो, एगसमणं वधुपरमाभावादो । दसणनिमुञ्जदा-लद्धिमवेगमपण्णदा
 अरहताइरिय-रहसुद-पवयणमत्तीओ तित्थयरकम्मस्स तिसेमपच्चया । सेम सुगम । मणुमाइ
 मज्जुतो वधो । देम मामी । चरद्धाण सुगम । एत्थ न मणिणामो णत्थि । मादि-अट्ठो वधो,
 अणादि धुवमानेण अट्ठिदकारणाभावादो ।

भवणवासिय वाणवेतर जोदिसियदेवाणं देवभंगो । णवरि
 विसेसो तित्थयर णत्थि ॥ ८७ ॥

एदेण सुत्तेण देसामामिण 'नित्ययर णत्थि' त्ति नज्जमाणपयडिभेशे चव
 परुविदो पुहसुत्तचारणाए । ममचउत्तममठाण उरपाद पग्गाइ उत्तास-पत्तेयमर्गर-यसन्धविहाय
 गदि सुसण्णामाओ अमजदसम्मादिट्ठिभि सोदण्णेन नज्जति । वेउत्तियमिस्स कम्मइयपच्चण
 अमजदसम्मादिट्ठिभि अण्णेदत्ता, भरणसामिय वाणवेतर जोदिसिएसु सम्मादिट्ठीणमुत्तरादा

यहा तार्थकर नामत्रयक न धोदययच्छेदका विचार नहा ह, क्योंकि, देवोंमें
 उसके उदयका अभाव है । इसी कारण वह परोदयसे उचती ह । तीर्थकर प्रकृतिका उध
 निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयमें उसके वन्यविधामका अभाव है । दर्शनप्रशुद्धता,
 लघिलस्योगसम्पन्नता, अरहन्तभक्ति आचार्यभक्ति, बहुधृतभक्ति और प्रयत्नभक्ति, ये
 तीर्थकर कर्मक निशेष प्रत्यय हैं (जा सूत्र ८ में विस्तारमें कहे जा चुके हैं) ।
 शेष प्रत्यय सुगम है । मनुष्यगतिसे समुक्त बन्ध होता है । देव स्वामी है । उधाभान
 सुगम है । यहा व-वधिराग नहा है । मादि य अधुन बन्ध होता है, क्योंकि, अनादि य
 मृग रूपसे अरहियन रहनेके कारणोंका अभाव है ।

भवणवासी, वाणव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंकी प्ररूपणा सामान्य देवोंके समान ह ।
 विशेषता केवल यह है कि इन देवोंके तीर्थकर प्रकृतिका वन्य नहीं होता ॥ ८७ ॥

इस दशमोक्तक सचके द्वारा 'तीर्थकर प्रकृतिका उध नहीं होता' इस पृथक्
 उच्छारणात्ते वचन ग्रन्थमान प्रकृतियोंका अर्थ ही कहा गया है । समचतुरस्रसंस्थान,
 उपधात, परधात, उच्छ्वास, प्रत्येकशरीर, प्रशस्तप्रियायोगनि और सुस्वर नामकर्म
 अमयतसम्यग्दष्टि गुणग्यानमें स्वोदयसे ही उचते हैं । वैमिषिकमिश्र और कामण
 प्रत्ययोंकी असयतसम्यग्दष्टि गुणग्यानमें कम कम्ना चाहिये क्योंकि, भयनवासी,
 घानघ्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यग्दष्टियोंकी उत्पत्तिका अभाव है । पचेन्द्रिय जाति

१ अ कापया 'वाणव', व्यापन 'वाणव' इति पाठ ।

२ भवणनिष्ठ णत्थि तित्थयर ॥ जो क १११ जित्वाणा 'नह मवण वणे ॥ अममच ३, ११

३ प्रसिद्ध 'वधुत्तचारणाए' इति पाठ ।

षधामावादे ।

आणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु पंचणाणावरणीय
छदंसणावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-
दुगुंछा-मणुसगइ-पचिदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-सम-
चउरससंठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसंधण-वण्ण गंध-रस-
फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्साग-
पसत्थविहायगइ-तस-वादर पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-
सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण पंचतराइयाण को वंधो
को अबंधो ? ॥ ९० ॥

सुगममेद ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे बंधा,
अबंधा णत्थि ॥ ९१ ॥

एदेण सूइदत्थे भणिम्मामो— मणुमगइ-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसंधण-

छोड़कर नियमगतिविक्रम बंधका अभाव है ।

जानत कल्पमे लेकर नत्र त्रैवेयक तक निमानवामी देवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, छह
दर्शनावरणीय, माता न अमाता वेदनीय, नारह कयाय, पुरुषवेत्, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा,
मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तजस न कामण शरीर, समचतुरस्रमस्थान, औदारिक-
शरीरागोपाग, नजर्पभमहनन, वर्ण, मन्त्र, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु,
उपघात, परघात, उच्छ्रवाम, प्रशस्तनिहायोगति, नस, घादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर,
अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुगम, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण और पाच
अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्याद्यष्टिसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं
हैं ॥ ९१ ॥

इस सूत्रके द्वारा सूचिन अर्थोंको कहते हैं—मनुष्यगति, औदारिकशरीरागोपाग,

यधुत्तरमदसणादो । मिच्छादिद्वि सासणमम्मादिद्विणो मणुसगइदुग देवोघम्मि सातर गिरर
 यधति, सुत्तकलेस्सिएसु मणुसगइदुगस्म गिरतरनधदमणादो । एत्थ पुण मातर यधति,
 मणुसगइदुगगिरतरयधकारणाभावात्ते । ओरालियसर्सरअगोवग देवोघम्मि मिच्छाद्वि सातर
 गिरतर यधति, सणस्सुमारदिमु गिरतरनधुवल्लाभादो । एत्थ पुण मातरमेव, धावरयधकाले
 अगोवगस्म नमाभावादो ति ।

सणवकुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्मारकप्पवासियदेवाण पढ
 माए पुढवीए गेरइयाण भगो ॥ ८९ ॥

परि ए-४ पुरिमवेदस्स सोदण्ण ववो, अणवेदस्सुदयाभावादो । णउसयवेदस्स
 पढमाए पुढवीए सोदण्ण नगो, एत्थ पुण परोदण्ण । पच्चएसु णउसयवेदो इत्थिदेण
 सह अणेदेवो । सामणमम्माडिद्विह्मि उअवियमिस्स-कम्मइयपच्चया पन्निखविदव्वा, गेरए
 सासणेसु तेमिमभावादो । मदर सहस्मारदेवेसु मिच्छाद्वि-सासणमम्मादिद्विणो मणुसगइदुग
 सानर गिरतर' यधति, तत्पनणसुव्वेस्सिएसु मणुसगइदुग मोत्तण तिरिक्कगइदुगस्म

एव समपसे उन्वित्रिधाम ग्हा जाता है । मिथ्याद्वि ओर सासादनसम्पगद्वि
 मनुष्यगतिद्विकर वजाघमें सातर निरन्तर राधते है, क्योंकि, शुक्ललेदयावालेमें
 मनुष्यगतिद्विकर निरन्तर वन्ध देखा जाता है । परन्तु यहा सातर राधने ह, क्योंकि,
 मनुष्यगतिद्विकर निरन्तर उन्धे कारणोंका अभाव है । औदारिकशरीरागोपामको
 देवोघमें मिथ्याद्वि सातर निरन्तर राधते ह, क्योंकि, सनत्तुमारादि देवोंमें निरन्तर
 यन्ध पाया जाता है । परन्तु यहा सातर ही राधने है, क्योंकि, स्वात्तरनन्त्रकालमें
 रागापागना वन्ध नहीं होता ।

सनत्तुमारसे लेकर शतार-सहस्रार तक कल्पवासी देवोक्षी प्ररूपणा प्रथम पृथिवीके
 नारकियोंके समान है ॥ ८९ ॥

निशेष इतना है कि यहा पुरिमवेदका स्त्रोत्रयम् उन्ध होता है, क्योंकि, अय
 वेदक उदयरा अभाव है । नपुमकउदरा प्रथम पृथिवीमें स्त्रोत्रयमे वन्ध होता है । परन्तु
 यहा उसका परोन्त्यमे उन्ध होता है । प्रत्ययोंमें नपुमकवेदकी स्त्रीवेदके ग्राध कम करना
 चाहिये । सासादनसम्पगद्वि गुणस्थानम यहा चैत्रियिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंको
 ओदरा चाहिये, क्योंकि नारकी सासादनसम्पगद्वियोंमें उन्का अभाव है । शतार
 सहस्रारकल्पवासी देवोंमें मिथ्याद्वि और सासादनसम्पगद्वि मनुष्यगतिद्विको सातर
 निरन्तर राधते है, क्योंकि, उन कल्पोंके शुक्ललेदयावाले देवोंमें मनुष्यगतिद्विको

पथभावादो ।

आणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु पंचणाणावरणीय-
छदंसणावरणीय-मादासाद-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-
दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-सम-
चउरमसंउण-ओरालियसरीर-अगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-चण्ण गंध-रस-
फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-
पसत्थविहायगइ-तस-चादर पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-
सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण पंचंतराइयाणं को वंधो
को अवंधो ? ॥ ९० ॥

सुगममद ।

मिच्छाडट्टिप्पहुडि जाव असजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा,
अबंधा णत्थि ॥ ९१ ॥

एदेण सूइदत्थे भणिस्सामो— मणुसगइ-ओरालियसरीर-अगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-

छोड़कर नियगतिछिक्क घन्धक अभाव है ।

जानत रूपमे लेकर नत्र त्रैवेयक तक विमानचामी देनेमे पाच ज्ञानावरणीय, छह
दर्शनावरणीय, साता व अमाता वेदनीय, चारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा,
मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तेजस व कर्मण शरीर, समचतुरस्रमम्यान, औदारिक-
शरीरागोपाग, वज्रप्रभमहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु,
उपघात, पघात, उच्च्वास, प्रशस्तविहायोगति, व्रस, चादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर,
अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुगम, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण और पाच
अन्तराय, इनका कौन घन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादष्टिमे लेकर अमयतसम्यग्दष्टि तक घन्धक हैं । ये घन्धक हैं, अवन्धक नहीं
हैं ॥ ९१ ॥

इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंको कहते हैं—मनुष्यगति, औदारिकशरीरागोपांग,

धनुवरसदसणादो । मिच्छादिद्वि मासणमम्मादिद्विणो मणुसगइदुगं देवोधम्मि सातर-णिगार
 वधति, मुक्कलेस्सिएसु मणुसगइदुगस्स णिरतरउपदसणादो । एत्थ पुण सातर वधति,
 मणुसगइदुगणिगतरवधकारणाभावादो । जेरालियसररअगोगग देवोधम्मि मिच्छाईदी सातर
 णिरतर वधति, मणक्कुमारदिमु णिगतरउधुवलमादो । एत्थ पुण सातरमेव, थारवधकाले
 अगोगगस्स उवाभावादो ति ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवाण पट
 माए पुढवीए णेरइयाण भगो ॥ ८९ ॥

णवरि एत्थ पुरिसवेदस्स सोदगण वधो, अणणेदस्सुदयाभावादो । णउमयेदम्म
 पढमाए पुढवीए सोदगण उधो, एत्थ पुण परोदएण । पन्चएसु णउमयेवदो इत्थियेदेण
 मह अणणेद्वो । सासणमम्माइद्विग्दि नेउविमिस्म-उम्मइयपच्चया पन्निस्सविद्व्वा, णेरइ
 सासणेसु तेसिमभावादो । सदर सहस्सारदेवेसु मिच्छाईद्वि-मासणमम्मादिद्विणो मणुसगइदुग
 सातर णिरतर वधति, तत्थतणसुवलेस्सिएसु मणुसगइदुग मोत्तण तिरिकसगइदुगस्स

एक समयसे उपविधाम जाता जाता है । मिच्छादिद्वि ओर सासादनसम्यग्दृष्टि
 मनुष्यगतिद्विकका देवाधम सातर निरन्तर वाधते है, क्योंकि, शुक्ललेइयावाल्ले
 मनुष्यगतिद्विकका निरन्तर वाध देखा जाता है । परन्तु यहां सान्तर वाधते है, क्योंकि,
 मनुष्यगतिद्विकने निरन्तर उपरे कारणोंका उधार है । आन्तरिकशरीरागोपागको
 देवाधमे मिच्छादिद्वि सातर निरन्तर वाधत है, क्योंकि, सनत्कुमारादि देवोंमें निरन्तर
 वाध पाया जाता है । परन्तु यहां सान्तर ही वाधते है, क्योंकि, स्थावरवन्धकालमें
 आवापागका वध नही होता ।

मनत्कुमारेसे लेकर शतार-सहस्रार तक करानामी देवोंकी प्रख्याता प्रथम पृथिवीके
 नारिकियोंके समान है ॥ ८९ ॥

विशेष इतना है कि यहां पुरुषदेवका स्वोदयमे बन्ध होता है, क्योंकि, अथ
 वेद्व उन्मयका उभाव है । नपुंसकपुरुष प्रथम पृथिवीमें स्वोदयमे बन्ध होता है । परन्तु
 यहां उनका परोदयसे बन्ध होता है । प्रत्ययोंमें नपुंसकदेवों को स्वोदयके साथ बन्ध
 चाहिये । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्वात्म यह। धैर्यविकमिध और कामण प्रत्ययोंको
 जोड़ना चाहिये, क्योंकि नारिकी सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें उका उभाव है । शतार
 सहस्रारकपराती देवोंमें मिच्छादिद्वि और सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिद्विकको सान्तर
 निरन्तर वाधते है, क्योंकि, उन कल्पोंके शुक्ललेइयावाले देवोंमें मनुष्यगतिद्विकको

ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीर-अगोत्रग-वण्ण-गध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणु-
पुग्गी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद उस्सास-तस-जादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-णिमिण-पचतराइयाण
णितरो बधो, एत्थ धुववधित्तादो । सादामाद-हस्स-रदि अरदि सोग थिराथिर सुभासुभ-जस-
कित्ति-अजसकित्तीण मातरो, एगसमएण बधविगमदसणादो । पुरिमिनेद ममचउरससठाण-वज्जिरि-
सहसपडण पसत्थनिहायगड-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणि मिच्छान्तिहि मासणमम्मादिट्ठिणो
सांतर बधति, एगममएण बधपिरामुवलमादो । मम्मामिच्चादिट्ठि-अमजदमम्मादिट्ठिणो णितर
बधति, पडिचस्सपयडीण बधाभावादो ।

एदासि पच्चया देवोवपच्चयतुल्ला । णरि सत्तथ इत्थिपेदपच्चओ अण्णेदव्वो ।
सव्वे सव्वाओ पयडीओ मणुमगइमजुत्त बधति, अण्णमईण उवाभावादो । देवा सामी ।
बधद्वाण बधविण्डद्वाण च सुगम । पचनाणावरणीय छदमणावणीय-नारसरुमाय-भय-
हुगुळा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गध-रस फास अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण पचतराइयाण
मिच्छाडिहि चउविहो बधो । अण्णत्थ तिबिहो, धुवाभावादो । अउसेसाण पयडीण बधो
सव्वगुणद्वाणेषु मादि-अद्दुवो, अद्दुववधित्तादो ।

पंचेन्द्रियजाति, जैद्वारिक, तैजस व कामेण शरीर, आद्वारिकशरीरगोपाय, चर्ण, गन्ध, रस,
स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोगानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्रान्त भस्, यादर, पर्याप्त,
प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा
ये प्रकृतिया ध्रुवबन्धी हैं । साना व असाना वेदनीय, हान्य, रति, अरति, शोक, स्थिर,
अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशस्कीर्ति और अयशस्कीर्ति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है । पुरुषवेद, समचतुरस्रस्थान, वज्रपंभ-
सहनन, प्रशान्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनको मिथ्यादृष्टि
एव सासादनसम्यग्दृष्टि सान्तर बाधते है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम
पाया जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतत्त्वसम्यग्दृष्टि हैं तिर-तर बाधते है, क्योंकि,
उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवोद प्रत्ययोंके समान हैं । विशयता केवल इतनी है कि
सब अगह खीवेद प्रत्ययको कम करना चाहिये । उक्त सत्र देव सब प्रकृतियोंको
मनुष्यगतिते सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उनके अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । देव
स्वामी हैं । बन्धाज्ञान और बन्धचिन्तस्थान सुगम हैं । पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शना
वरणीय, बारह कपाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व कामेण शरीर, चर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श,
अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों
प्रकारका बन्ध होता है । अथय तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि यहा ध्रुवबन्धका
अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सब गुणस्थानोंमें सादि व अधुव होता है, क्योंकि,
ये अक्षुवबन्धी हैं ।

मणुस्साणुपुत्वी अन्नसकित्तीणमुदयाभावादो मेमपयडीण उदयमेच्छेदामावादो च बधेदयाण पठापन्नेच्छेदपरिक्खा ण कीरेदे ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-पुरिमवेद-परिचिदियजादि-तेजा रुम्माडयसरीर वण्ण-गध रम फास अगुरुल्लहु-तस-नादर-पत्त-धिराधिर-सुमासुभ-सुभग-अदेज-जमकिति निमिण उचागोद-पचतरायइयाण सोदएणेन यधो, धुवोदयत्तादो । णिहा-पयला सादासाद धारसकमाय हस्स रदि-अरदि सोग-भय-दुगुल्लण मोदय परोदएण उधो, अद्धुनेत्यत्तादो । ममचउरसमेठाण उवघाद परघाद-उत्तास पमत्थनिहायगइ पतेयसरीर सुस्मरणाभाओ मिन्हाइडि-मामासम्मा इडि-असन्नदसम्मादिडिणो मोदय परोदएण वरति । नम्मासिन्हाइडिणो मोदएणेव वधति, तेसिमपज्जत्तकाठाभावादो । मणुसगइ-ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोत्रय वज्जरिमहसपडण मणुस्साणुपुत्वी-अन्नसकित्तीण परोदएणेन यधो, देहेसु एदामि वधोदयाणमन्नमेण उचि विरोहादो ।

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-धारसरुमाय भय-दुगुल्ल-मणुसगइ परिचिदियजादि-

वज्रपभसहनन, मनुष्यानुपूर्वा गेर अयशरीरि, इनका उदयाभाव होनेसे तथा शेष प्रकृतियोंके उदय-पुच्छेदका अभाव होनेसे यहा उध और उन्धके पूय या पश्चात् प्युच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की जाती है ।

पाच शानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पुरुषवेद, पचेन्द्रिय जाति, तेजस व धार्मण शरीर, वण, गध, रस, स्पश, अगुरुल्लहु वस, धान्, पयाप्त, दिग्ग, अन्धिर, शुभ, अशुभ सुभग, अदिय, यशरीरि, निमाण उद्यगोत्र, और पाच अन्तराय, इनका स्वोदयमे ही उन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतिया ह । नित्रा, प्रचला, साता २ अमाता वेदनीय, धारह कयाय, हास्य, रति, जरति, शोक, भय और जुगुप्सा, इनका स्वोदय परोदयमे उन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतिया ह । समचनुरत्तसस्थान, उपघात, परघात, उन्नागम, प्रशस्तनिहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्तर नामकमौके मिथ्याइष्टि, सासादनसम्भगइष्टि और असयतसम्भगइष्टि स्वोदय परोदयसे बाधते हैं । मय्यग्निप्याहीष्टि देव स्वोदयसे ही बाधते हैं, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव है । मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपाग, वज्रपभसहनन, मनुष्यानुपूर्वी और अयशरीरिना परोदयसे ही उन्ध होता ह, क्योंकि, देवोंमें इन प्रकृतियोंके बाध और उदयके एक साथ अस्तित्वना निरोध है ।

पाच शानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, धारह कयाय, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति,

णिद्वाणिद्वा पयलापयला-धीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-
माया लोभ इत्यिवेद-चउसंठाण चउसंघडण अप्पसत्थविहायगह-दुभग-
दुस्सर-अणादेज्ज णीत्तागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ ९२ ॥

सुगम ।

मिच्छाडट्टी सामणसम्माहट्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा
॥ ९३ ॥

पदस्म अथो वुच्यदे— अणताणुवधिवउक्कस्स वधोदया मम वोच्छिज्जति,
सामणस्मि नदुभयवोच्छेददसणादो । अवमेमाण वधोदयवोच्छेदपरिकया णत्थि, तामिमेत्थु
दयामानादो । अणताणुवधिवउक्कस्स मोदय परोदण वधा, अद्धवोदयत्तादो । अवसेसाण
पयडीण परोदणेर, एत्थ तामि न्थेणुदयस्स अवट्ठाणविरोहादो । धीणगिद्धितिय-अणताणु-
वधिवउक्काण णित्तरो वधो, धुवधित्तादो । सेसाण मात्तरो, एगसमण वधविभामदसणादो ।
पच्चयाण सहस्सारभगो । ममे सव्वाओ पयटीओ मणुमगइमज्जुत्त वरति । देवा सामी ।
वधट्ठाण वरणिट्ठडाण न सुगम । धीणगिद्धितिय अणताणुवधिवउक्काण मिच्छादिट्ठिस्म

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, म्यानगुद्धि, अनन्तानुबन्धी मोध, मान, माया, लोभ,
स्निह, चार सस्थान, चार सहनन, अप्रमस्तबिहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और
नीरोग, इनका कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ ९० ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सामादनमभ्यगृहीत वधक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अनन्धक
हैं ॥ ९३ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— अनन्तानुबन्धिवउक्का बन्ध और उदय दोनों साथ
व्युच्छिद्य होते हैं क्योंकि, सामादन गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है ।
शेष प्रवृत्तियोंके वधोदयव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहा उनके उदयका
अभाव है । अनन्तानुबन्धिवउक्का उदय परोदयम बन्ध होता है क्योंकि,
ये वधोदय है । शेष प्रवृत्तियोंका वध परोदयसे ही होता है, क्योंकि, यहा उनके
वधके साथ उदयके अस्थानका विरोध है । म्यानगुद्धिवय और अनन्तानुबन्धि
वउक्का निरन्तर वध होता है, क्योंकि, धुववन्धी है । शेष प्रवृत्तियोंका मात्र बन्ध
होता है, क्योंकि, परममते उनका वधविभाम देखा जाता है । प्रत्ययरूपणा सहस्रार
देवोंके समान हैं । उक्त सब देव सब प्रवृत्तियोंके अनुप्यगतिते सयुक्त वांधते हैं । देव
स्वामी हैं । मन्थाप्यान और मन्थविनष्टम्यान सुगम है । म्यानगुद्धिवय और अनन्तानु

चउविहो घघो । अण्णत्थ दुविहो, अणादि-बुवाभावत्तादो' । सेमाण पयडीण सादि-अद्दुवो, अद्दुवनधित्तादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणणामाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ ९४ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ९५ ॥

एदस्स अत्थो बुच्चेद— मिच्छत्तस्म चोदया सम वोच्छिज्जति, मिच्छाइट्टिमिह तदुभयाभाजदसणादो । अग्गेसाण घघोदयवोच्चेदपरिक्खा णत्थि, एत्थेयतेणेदासिमुदयाभावादो । मिच्छत्त सोदएण वज्झइ । कुदो ? सामानियादो । अग्गेसाओ पयडीओ परोदएण । मिच्छत्त गिरतर वज्झइ, धुवबधित्तादो । अवमेसाओ सातरमद्दुवबधित्तादो । पच्चया सहस्मारपच्चयतुल्ला । मणुसगइसज्जत्त वज्झति । देवा सामी । बधद्धाण बधविणट्टट्टाण च सुगम । मिच्छत्तस्स घघो

बन्धित्युक्तका मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्यत्र दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, यहा अनादि ओर ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि घ अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवबन्धी प्रकृतिया हैं ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसुपादिकासहनन नामरुमोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ९५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— मिथ्यात्वका बन्ध ओर उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंके बन्धोदयव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहा नियममें इनके उदयका अभाव है । मिथ्यात्व प्रकृति स्वोदयसे बधती है । इसका कारण स्वभाव है । शेष प्रकृतिया परोदयसे बधती हैं । मिथ्यात्व प्रकृति निरन्तर बंधती है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी है । शेष प्रकृतिया सान्तर बधती हैं, क्योंकि, ये अध्रुवबन्धी हैं । प्रत्ययप्ररूपणा सहस्रार-देवोंके प्रत्ययोंके समान हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त याधते हैं । देव स्वामी हैं । बन्धाध्यान और बन्धविनष्टस्थान सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है, क्योंकि,

पउब्बिहो, धुवनधित्तादो । सेमाण सादि अद्भुवो, अद्भुवधित्तादो ।

मणुस्साउअस्स को वधो को अवंधो ? ॥ ९६ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ ९७ ॥

एदस्स अत्थो — वधोदयाण वोच्छेदपरिक्खा एत्थ णत्थि, उदयाभावादो । परोदण्ण वज्झइ, वधेणुदयस्स एत्थ अवट्ठाणारोहादो । गिरत्तो वधो, एगसमएण वधुवरमाभावादो । मिच्छाइट्ठिस्स एगणवचास, सासणस्स चउएत्तालीस, असजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया । मणुसगइसजुत्त । देवा सामी । वधद्वान्ण वधणिणइट्ठाण च सुगम । सादि-अद्भुवो वधो, अद्भुवधित्तादो ।

तित्थयरणाकम्मस्स को वंधो को अवधो ? ॥ ९८ ॥

सुगम ।

ष्टयवन्धी है । शेष प्रवृत्तियोंका सादि व अधुव वन्ध होता है, क्योंकि, वे अष्टयवन्धी है ।

मनुष्यायुका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९६ ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्याद्ये, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष देव अवन्धक हैं ॥ ९७ ॥

इसका अर्थ — वन्ध और उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा यहां नहीं है, क्योंकि, मनुष्यायुके उदयका देवोंम अभाव है । वह परोदयसे वधती है, क्योंकि, यहां उसके वधके साथ उदयके अवस्थानका विरोध है । निरंतर वध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके वधविधामका अभाव है । मिप्याद्येके उनचास, सासादनसम्यग्दृष्टिके चयालीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके चालीस प्रत्यय होते हैं । मनुष्यगतिसे अयुक्त वन्ध होता है । वय स्थामी हैं । वधाध्यान और वधविनष्टस्थान सुगम है । सादि व अधुव वध होता है, क्योंकि, वह अधुववन्धी प्रवृत्ति है ।

तीर्थकर नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९८ ॥

यह सब सुगम है ।

असंजदसम्मादिह्री वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ९९ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—बधोदयाण वोच्चेदविचारो णत्थि, सत्तासंताण साणियास-
विरोहादो । परोदएण बधो, सच्चत्थ तित्थयरक्कम्मबधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो । पिरत्तरो
बधो, सखेज्जावलियादिकालेण विणा एगसमएण बधुवरमाभावादो । एदस्स पच्चया देवोघ-
पच्चयतुहा । उत्तरोत्तरपच्चया पुण अरहताडरिय-उहुसुद-पवयणमत्ति-लद्धिसवेगसपत्ति-दसण-
विसुद्धि-पवयणप्पहानणादओ । मणुसगइससुत्तो बधो । देवा सामी । बधद्दाण बधविणइद्दाण
च सुगम । सादि-अद्दुवो बधो, अद्दुवबधितादो ।

अणुदिस जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेषु पंचणाणावरणीय-
छंदसणावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-
सोग-भय दुगुंछा-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिदियजादि-ओरालिय-तेजा-
कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसह-
संधण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-

असयतसम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ९९ ॥

इसका अर्थ कहते हैं—बन्ध और उदयके व्युत्प्रेदका निचार यहा नहीं है,
क्योंकि, सत् और असत् बन्धोदयकी समानताका विरोध है । परोदयसे बन्ध होता है,
क्योंकि, सर्वत्र तीर्थंकर कर्मके बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है ।
निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, संप्र्यात आवली आदि कालके बिना एक समयसे
उसके बन्धविधामका अभाव है । इसके प्रत्यय देवोघ प्रत्ययोंके समान हैं । परन्तु
इसके उत्तरोत्तर प्रत्यय अरहन्तभक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति,
लब्धिसवेगसम्पत्ति, दर्शनविशुद्धि और प्रवचनप्रभाचनादिक हैं । मनुष्यगतिसे सयुक्त
इसका बन्ध होता है । देव स्वामी है । बन्धाध्यान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं ।
सादि-अधुय बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुयबन्धी प्रकृति है ।

अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तरुके विमानवासी देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह
दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, 'पुरुषवेद', 'हास्य', 'रति', 'अरति',
'शोक', 'भय', 'लुगुंछा', 'मनुष्यायु', 'मनुष्यगति', 'पचेन्द्रिय जाति', 'औदारिक', 'तैजस व कार्मण
शरीर', 'समचतुरस्रस्थान', 'औदारिकशरीरागोपाग', 'वज्रपर्यसहनन', 'वर्ण', 'गन्ध', 'रस', 'स्पर्श',

उवधाद परधाद-उस्सास पसत्थविहायगह-तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-
थिराथिर-सुहासुह सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति
णिमिण-तित्थयर उच्चागोद-पंचतराइयाणं को वंधो को अवंधो ?
॥ १०० ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठी वधा, अवधा गत्थि ॥ १०१ ॥

एदस्त अत्थो परुत्तिज्जे— मणुसाउ मणुमगइ ओराणियसरीर-ओराणियसरीरअगोवग-
वज्जरिसहसचडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति तित्थयराण उदयामावादो अवसेसाण
च पयडीणमुदयवोच्चेदाभावादो 'वधादो उदयस्म किं पुव्व किं वा पच्छा वोच्चेदो होदि' ति
एत्थ परिक्खा गत्थि ।

पचणाणानरणीय-चउदसणावरणीय-पुरिसवेद-पचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-
गध रस-कास-अगुरुअलहुअ-तस-वादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-
णिमिणुच्चागोद-पचतराइयाण सोदओ धवो, एत्थ धुओदयत्तादो । निद्रा-पयला सादासाद-

मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अगुरुलघु, उपधात, परधात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस,
धादर, पर्याप्त, त्रलेकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति,
अयशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र और पाच अतराय, इनका कौन बन्धक और
कौन अवन्धक है ? ॥ १०० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दष्टि बन्धक है, अवन्धक नहीं है ॥ १०१ ॥

इसके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं—मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर,
औदारिकशरीरागोपाग, धर्मपमसहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अयशकीर्ति और
तीर्थकर, इनके उदयका अभाव होनेसे, तथा शेष प्रवृत्तियोंके उदयव्युच्छेदका अभाव
होनेसे 'य-वसे उदयका क्या पूर्वमे या क्या पश्चात् व्युत्पेद होता है' इस प्रकारकी
यद्वा परीक्षा नहा है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पुरुषपद, पचेन्द्रियजाति, तैजस च
वामन शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर,
शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पाच अतराय, इनका
व्योदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये यद्वा धुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, साता च असाता

वास्तकसाय-हस्त रदि-सोग-भय-द्रुगुलण सोदय परोदण वंधो, अद्धुवोदयतादो । परघादुत्सास-
पसत्यविहायगड-सुस्तराण मोदय-परोदण वंधो, अपज्जत्तकाले उदयामावे वि वधुवलमादो ।
समचउरसमठाणुपघाद-पत्तेयसरीराण पि सोदय परोदण वंधो, निग्गहग्दीए उदयामावे वि
वधदसणादो । मणुसाउ-मणुमगड-ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसघडण-
मणुम्मगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति तित्थयराण परोदण वंधो, एत्थेदासिमुदयामावादो ।

१. पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-नारसकमाय पुरिमवेद-भय द्रुगुत्र मणुसाउ मणुसगइ-
पचिंदियजादि ओरालिय तेजा-कम्मइयसरीर समचउरसमठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसह-
सघडण-वण्ण गध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुस्वलहुव-उपघाद-परघाद-उत्सास-
पसत्यनिहायगइ तम नादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर सुभग-सुस्सर-आदेज्ज निमिण-तित्थयरुच्चागोद-
पचतराइयाण गिरतरो वंधो, एदासिमेगसमएण वधुवरमामावादो । सादासाद हस्त-रदि-अरदि-
सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीण मातरो वंधो, एगसमएण वधुवरमादो' ।

वेदनीय, यारह, कपाय, हास्य, रति, शोक, भय और जुगुप्साका स्योदय परोदयसे बन्ध
होता है, क्योंकि, ये अद्धुवोदयी प्रकृतिया हैं । परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति
और सुन्धरका स्योदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उदयका अभाव
होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है । समचतुरस्रस्थान, उपघात और प्रत्येकशरीरका
भी स्योदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, विप्रहगतिमें उदयके अभावे होनेपर भी
बन्ध देखा जाता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपाग,
वज्रर्पमन्हनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अयशकीर्ति और तीर्थंकरका परोदयसे बन्ध
होता है, क्योंकि, यहा इनके उदयका अभाव है ।

पाच क्षानायरणीय, छह दर्शनावरणीय, यारह कपाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा,
मनुष्यायु, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कामेण शरीर, समचतुरस्र-
स्थान, औदारिकशरीरांगोपाग, वज्रर्पमसहनन, घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति
प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुस्वलु, उपघात, परघात, उच्छ्वासे, प्रशस्तविहायोगति, वस, घादर,
पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पाच
अन्नराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनके एक समयसे बन्धविश्रामका
अभाव है । साताघ असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ,
अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे
इनका बन्धविश्राम है ।

एतथ असत्तदसम्मादिद्विहि नाएत्तालीय पञ्चया, ओघपञ्चएसु ओसालियदुगिनि
णत्तुसयवेदपञ्चयाणमभावादो । सेस सुगम । एदासि पयडीण वधो मणुसगइमज्जतो । देवा
सामी । पधद्वाण सुगम । वण्णिणामो एत्थ जत्थि । पचणाणावरणीय छदमणावरणीय नाम्म
कमाय मय-दुगुछा-त्तेजा-कम्मइयमरी वण्ण गध रस फाम-अगुसुगलहुग-उत्ताद-णिमिण-पच
तरायाण निविहो वधो, धुवाभावादो । सेसाण पयडीण सादि अद्दुवो, अधुववधित्तो ।

इंदियाणुवादेण एइदिया वादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता
वीइंदिय-त्तीइदिय-चउरिंदिय पज्जत्ता अपज्जत्ता पचिदियअपज्जत्ताण
पचिदियतिरिक्खअपज्जत्तभगो ॥ १०२ ॥

एन्मत्तणामुत्त' देवामामिय, वज्जमाणपयडीण सखमवेक्खिय अवद्विट्ठादो ।
तेयेदेण सुइदत्तपरुवण कत्तामो । त जहा— एत्थ ताव वज्जमाणपयडिणिदेस कत्तामो ।
पचणाणावरणीय-अवदमणावरणीय सादामाद मिच्छत्त-सोलसकमाय णत्तणोक्ताय तिरिक्खाउ-

यहां असंयतमध्यगृहि गुणस्थानमें प्यालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमेंसे
औदारिकद्विक, स्त्रीषेद और नपुंसकषेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययप्रकरण सुगम
है । इन प्रतियोंका वध अनुप्यगातिले संयुक्त होता है । देय स्वामी हैं । बन्धाध्यान सुगम
है । पचयिनाश यहा है नहीं । पाच जानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय,
भय, अगुप्ता, तैजस्य व कर्मण शरीर, घर्ण, गन्ध, रस, स्पृश, अगुल्लघु, उपघात, निर्माण
और पाच भन्तराय, इनका तीन प्रकारका वध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव
है । शेष प्रतियोंका सादि व अघ्र वध होता है, क्योंकि, ये अध्रवबन्धी हैं ।

इन्द्रियमार्गणानुसार एकेन्द्रिय, वादर, सूक्ष्म, इनके पर्याप्त व अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय,
त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त तथा पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय
निर्यप अपर्याप्तोंके समान है ॥ १०२ ॥

यह अर्पणासूत्रदेशामर्शकहै, क्योंकि, वर्धमान प्रतियोंकी [१०२] संख्याकी अपेक्षा
करके अवस्थित है । इसी कारण इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार
है— यहाँ पहिले वर्धमान प्रतियोंका निर्देश करते हैं । पाच जानावरणीय, नौ दर्शना
वरणीय, गाना व अमाना वेदनीय, मिथ्याग्य, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, त्रियगाय,

१ अग्नी 'वज्जिदिपपञ्चअ अपज्जत्ता पचिदियपञ्चअ अपज्जत्ताण', आपनी 'वज्जिदिपपञ्चअ
अपज्जत्ता' । वज्जि 'वज्जिदिपपञ्चअ अपज्जत्ताण' इति पाठ ।

२ अग्नी 'सुपपञ्चअ' । आपनी 'सुपपञ्चअ' इति पाठ ।

मनुस्माउ-तिरिक्खगइ-मनुसगइ एहदिय-वीहदिय-तीहदिय-चउरिंदिय पचिंदियजादि-ओरालिय-
तेजा-कम्मइयसरीर-छसठाण-ओरालियसरीर-अगोवग-छमषडण-वण्ण-गध-रस फास तिरिक्खगइ-
मनुस्मगइपाओग्गाणुपुच्ची अगुरुलहुग-उत्ताद-परचाद-उस्साम-आदावुजोव-दोविहायगइ-त्तम-
थावर-यादर-सुहुम पज्जत्तापज्जत्त पत्तेयसरीर-साधारण थिराथिर-सुहासुह-सुमग-दुमग-सुस्सर-
दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जमकित्ति-अजसकित्ति णिमिण णीचुच्चागोद-पचत्तराडयपयडीओ एत्थ
पज्जमाणियाओ । एडदियमस्मिदूण एदामिं परूण कस्सामो— इत्थि-भुरिसवेद-मनुस्माउ-
मनुसगइ-वीहदिय-तीहदिय-चउरिंदिय-पचिंदियजादि-अणत्तिमपचमंठाण-ओरालियमरीर-अगोवग-
छमषडण मनुमगइपाओग्गाणुपुच्ची-दोविहायगदि-त्तस सुमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं
उदयाभावादो मेसाणमुदयवोच्छेदामादादो ' उदयादो यधो किं पुत्र वोच्छिज्जदि किं पच्छा
वोच्छिज्जदि ' ति विचारो णत्थि, सनामत्ताण सण्णियासन्निहादो ।

पचणाणारणीय चउदसणावरणीय मिच्छत्त णवुसयवेद-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइ- एह-
दियजादि-तेजाकम्मइयसरीर-वण्ण गध रस फास अगुरुलहुग-थावर-थिराथिर-सुहासुह-दुमग-

मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय
जाति, औदारिक, तैजस य कार्मण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरगोपाग, छह सहनन,
घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलहु,
उपघान, मरघान, उच्छ्रयास, आताप, उद्योत, दोनों विहायोगतिया, व्रत, स्थावर, यादर,
सुस्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग,
दुमग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशस्कीर्ति, अयशस्कीर्ति, निर्माण, नीच य उच्च गोत्र
और पाच मन्तराय मरनिया यहा पध्यमान प्रकृतिया हैं । एकेन्द्रिय औदारिक आध्याय
करके इनकी प्रकृषणा करते हैं— त्र्यवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय,
त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, अन्तिम सस्थानको छोड़कर पाच सस्थान,
औदारिकशरीरगोपाग, छह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, दो विहायोगतिया, व्रत,
शुभग, अशुभ, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और उच्छ्रयोत्र, इनके उदयका अभाव होनेसे, तथा दोष
ग्रहतिथीके उद्भयव्युच्छेदका अभाव होनेसे यहा ' उदयमे यन्ध कया पूर्वमे व्युच्छिन्न
होता है या कया पश्चात् व्युच्छिन्न होता है ' यह विचार नहीं है, क्योंकि, सन् और
असत्की समानताका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु,
तियगगति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस य कार्मण शरीर, घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलहु,

अणोदेज्ज णिमिण णीचागोद-पचतराइयाण सोदओ वधो, एत्थ एदासिं उरोदयदमणादो । सादासादं-मोलमकमाय छण्णोकमाय आदावुज्जोव चादर सुहुम पज्जत्त-अपज्जत्त पत्तेय माहा-रणसरीर-जसकित्ति-अजसकित्तीण सोदय-परोदओ उचो, अद्धवोदयत्तादो । ओरालियसरीर-हुडसठाण उवघादाण पि सोदय-परोदओ वधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि उधुवलभादो । तिग्गिखगइपाओग्गाणुपुव्वीण नि मोदय-परोदओ, गहिदमरीरेसु उदयाभावे वि उधदसणादो । परघादुस्सामाण पि सोदय-परोदओ वधो, अपज्जत्तद्धाण उदयाभावे नि वधदसणादो । अरसेमाण परोदओ उचो, एत्थ तामिं मच्चदो उदयाभावादो ।

पचणाणाउरणीय णउदसणावरणीय मिच्छत्त मोलसकमाय-भय-टुगुछा-तिरिक्ख-मणुस्माउ-ओरालिय-त्तेजा-कम्मइयमरीर वण्ण-गध रम फाम अगुरुगलहुग-उवघाद-णिमिण पचतराइयाण गिरत्तो वधो, एगममण्ण वधुउग्गमाभावादो । सादामाद-मत्तणोकमाय मणुमगइ एडिय पीडिय-त्तीडिय-चउगिदिय पचिदियजादि-उमठण-ओरालियसरीरअगोवग-उमघडण-मणुमगइ

स्थावर, स्थिर अस्थिर, शुभ, अनुभ, दुःख, अनन्दय, निर्माण, नीचगोत्र और पाच अतराय, इनका सोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनका धुय उदय देखा जाता है । साता व असाता वेदनीय, सोलह क्पाय, छह नोकपाय, माताप, उद्योत, वादर, सुद्धम, पर्याप्त, अपर्याप्त प्रत्येक, साधारण शरीर, यशस्वीति और अयशस्वीति, इनका सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि ये अधुवोदयी प्रकृतिया हैं । ओदारिकशरीर, हुण्डसस्थान और उपघातका भी सोदय परोदय बन्ध होता है क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध पाया जाता है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्विका भी सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, जिन जीवोंने शरीर ग्रहण करलिया हैं उनके तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्विके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है । परघात और उरुट्यासका भी सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उदयाभावे होनेपर भी उनका बन्ध देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वहा उनके उदयका सर्वदा अभाव है ।

पाच ज्ञानारणीय, नी दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह क्पाय, भय, जुगुप्सा, तिरयायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैत्तस व धार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अतराय, इनका निरत्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके पर्याप्तधामका अभाव है । साता व असाता वेदनीय सात नोकपाय, मनुष्यगति, पकेन्द्रिय, क्षीन्द्रिय, श्रोत्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचिन्द्रिय जाति, छह सस्वान, औदारिक

१ श्रुति 'पचणाणाउरणीय-सादस्य' इति पाठ ।

२ श्रुति 'आरा' इति पाठ ।

पाओग्माणुपुञ्जी आदावुञ्जोत्र दोनिहायगड तस धानर-सुहुम अपञ्जत्त साहाग्णसरीर-यिरायिर-
सुभासुम-सुभग दुभग-सुस्पर-दुस्पर आदेज्ज-अणादेज्ज-जमकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाण
सातरो वधो, एगममएण वधुपरमसणादो । तिरिक्खगड-तिरिक्खगडपाओग्माणुपुञ्जी-
णीचागोदाण मातर-णित्तरो नधो, सवेइदिएसु मातरनधानमेदामि तेउ-चाउकाइएसु णित्तर-
वधुउलभादो । परघादुस्साम जादग्-पञ्जत्त-पत्तेयसरीराण नधो मातरं णित्तरो । कथ णित्तर ?
एइदिएसुपण्णत्तेवाणमतोमुहुत्तकाल णित्तरनधदसणादो ।

एइदिएसु मिच्छतामजम-कमाय जोगभेदेण चत्तारि मूलपच्चया । पचमिच्छत्तपच्चया ।
कुदो ? पचमिच्छतेहि सह णाणामणुस्माणमेइदिएसुपण्णण पचमिच्छत्तुवलभादो । एगो
एइदियासजमो, उप्पाणासजमा, कमाया सोलम, इत्थि-पुरिससेदेहि विणा णोकमाया सत्त,
ओरालियदुग्-कम्मइयमिदि तिणिं -जोगा, एदे मग्गे वि अट्ठत्तीस उत्तरपच्चया । णवरि
तिग्गिर मणुस्माउआण कम्मइयपच्चएण विणा सत्तत्तीम पच्चया । एक्कारस अट्ठारस

शरीरागोपाग, छह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उचोत्त, दो विहायोगतिया,
त्रम, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग,
दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशस्कीर्ति, अयशस्कीर्ति और उच्चगोत्र, इनका
सात्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनका बन्धविधाम देखा जाता है ।
तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्र, इनका सान्तर निरन्तर बन्ध होता
है, क्योंकि, सर्व एकेन्द्रियोंमें सान्तर बन्धवाली इन प्रकृतियोंका तेजकायिक व प्रायु
कायिक जीर्णोर्मि निरन्तर बन्ध पाया जाता है । परघात, उच्छ्वास, रादर, पर्याप्त और
प्रत्येकशरीर प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर निरन्तर होता है ।

शक्रा—इनका निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

ममाधान—क्योंकि एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए देवोंके अन्तमुहूर्त काल तक इनका
निरन्तर बन्ध देखा जाता है ।

एकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व, असंयम, कपाय और योगने भेदसे चार मूल प्रत्यय
होते हैं । उत्तर प्रत्ययोंमें पाच मिथ्यात्व प्रत्यय, क्योंकि, पाच मिथ्यात्वोंके साथ
एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए नाना मनुष्योंके पाच मिथ्यात्व प्रत्यय पाये जाते हैं । एक
एकेन्द्रियासंयम, छह प्राणिअसंयम, सोल्ह कपाय, ग्री और पुरुष वेदके बिना सात
नाकपाय, तथा दो ओशरिक व कर्मण ये तीन योग, ये सब ही अट्ठत्तीस उत्तर प्रत्यय
एकेन्द्रियोंमें होते हैं । विशेषना केवल यह है कि तियगायु व मनुष्यायुके कर्मण प्रत्ययके
बिना सत्तीस प्रत्यय होते हैं । ग्यारह व अठारह एक समय सम्मधी जघन्य और उच्छ्रेष्ठ

वज्रमाणपयडीओ वधमाणेसु 'वधादो उदओ किं पुन किं न पच्छा वोच्छिण्णो' ति विचारो गति ।

पञ्चणाणां प्रणीय-च उदमणा प्रणीय-मिच्छत्-अनुस्ययेद-निस्सिद्धाउ-निस्सिद्धगड-
धीदियजादि-नेजा-कम्मडयसीर उण्ण-ग-र स्म फाम अगुस्सल्लह-तम नादर धिगाथिर-सुभा-
सुभ दुभग-अणोदल निमिण जीचामेद पचतरायइयाण सोदओ वधो, एत्थ एदामिं उवोदयत्त-
दमणादो । निदाणिश पयटापयल मादासाद-मोत्तमकमाय उणोक्कमाय-पञ्चत्तापञ्चत्त जम-
अजमकितीण मोत्तय-परोदओ उधो, उभयथा रि वधम्म विरोहाभासादो । ओरात्तियसीर-
हुडमठाण ओरात्तियसीरअगोत्रग-अमपत्तमेउट्टमघडण उरघाद-पत्तेयमगीण पि मोदय-परोदओ,
निग्गहगदीए उदयाभावे रि नुउलभादो । तिरिक्कमदिपाओग्गाणुपुत्रीण रि मोदय परोदओ
वधो, निग्गहगदीदो अण्ण व उदयाभावे [रि] वधत्तमणादो । परघादुम्मासुओर-अपमत्तयनिहाय-
ग-हुस्सराण पि मोदय परोदओ वधो, अपञ्चत्तकाले उदयाभावे रि वधदसणादो, उणोत्त-
उज्जेनेत्तयनिरहिन्निरहिदसु नुउलभातो । इत्थि पुग्गि मणुम्माउ-मणुमगइ एडदिय तीडदिय-

निमच अपर्याप्तके द्वारा उध्यमा प्रगतिथामो न उनेराल ईन्डिय जीरामे 'न अस् उन्त्य
क्या पुनं या क्या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है यह विचार नहीं है ।

पञ्च नातारणीय, चार शनारणीय, मिथ्या, नपुंसक, निर्यगायु, निय-
गति, धीदिय जानि, तैजस व धार्मणारीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुस्सल्लु, व्रस,
घादर, सिग्ग, धस्सियर, शुभ, अनुभ दुर्भस, जनात्तेय निर्माण, नीचगान और पाच
अतराय, इनका स्त्रोदय न व होता है, क्योंकि, यहा इनका ध्रुव उदय देखा जाता है ।
निद्रानिद्रा, प्रचत्तमत्त, सत्ता व असत्ता घेत्तय, मोत्तह कपाय, उह नेक्कयाय,
पर्याप्त, अपर्याप्त, यशस्तीति, अर अयशस्तीति, इनका स्त्रोदय परोदयसे वध होता है,
क्योंकि दोनों प्रकारसे भी इनके व धका विरोध नहा है । औदारिकशरीर, एण्टस्स्थान,
औदारिकशरीरगोपाग, जसमाप्पयपट्टिक्कमहनन उपवात और प्रत्येकशरीर इनका
भी स्त्रोदय परोदय वध होता है, क्योंकि विग्रहगतिम उदयका अभाव होनेपर भी इनका
वध पाया जाता है । तिर्यग्गतिप्रयोग्यानुपूर्विका भी स्त्रोदय परोदय वध होता है, क्योंकि,
विग्रहगतिसे छोडकर जयन उत्तरा उदयाभाव होनेपर मा न व देखा जाता है ।
पग्गान, उच्छवास, उद्योत, अग्रशस्त्रनिहायेगति और हुस्सरका भी स्त्रोदय परोदय वध
होता है क्योंकि, अपर्याप्तकार्ये इनका उदयाभाव होनेपर भी वध देखा जाता है, तथा
उत्प्रांश उद्योतक उदयसे रहित और उससे सहित जायेंगे उसका व व पाया जाता है ।
स्त्रोद, पुग्गयेद, मणुयायु, मणुयगति, एक्केन्दिय, वीट्टिय, चउरिडिय, वचेडिय जाति,

पञ्जत्तणामस्स सोदओ, अपञ्जत्तणामस्स परोदओ वओ । एवमपञ्जत्ताण पि वत्तन्व ।
णवरि श्रीणगिद्धितिय-परघादुस्सास-उज्जोव-अणमत्थविहायगइ-पञ्जत्त-दुस्स-जसकित्तीण पगे-
दओ वओ । अपञ्जत्त-अजमकित्तीण सोदओ । अपञ्जत्ताणमट्ठत्तीम पन्चया, ओरालिय-
क्रायाम-चमोमवचिजोगाणमभावादो ।

तीहृदियाण तीहृदियपञ्जत्तापञ्जत्ताण च तीहृदिय तीहृदियपञ्जत्त-तीहृदियअपञ्जत्त-
भओ । णवरि घाणिदिण्हण मह तेहृदियपञ्जत्ताणमेक्केतालीस पन्चया । अपञ्जत्ताणमेगूण-
चालीम, ओरालियक्रायसच्चमोमवचिजोगाणमभावादो । तीहृदियणामम्म सोदओ वओ ।
अनसेमिदियणामाण परोदओ ।

चउरिदियाणमेव चेव वत्तन्व । णवरि चउरिदियजादिदओ सोदओ । सेमिदियजादि-
नओ परोदओ । यादालीसुत्तरपन्चया, चरित्तदियप्पेमाओ । अपञ्जत्ताण चालीम पन्चया,

उनके पर्याप्त नामकर्मका स्त्रोत्र्य और अपर्याप्त नामकर्मका परोत्र्य ग्रन्थ होता है । इसी
प्रकार इंद्रिय अपर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये । विशेष यह है कि स्त्यानगृह्णिय,
परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अमशस्तनिहायोगति, पर्याप्त, दुस्वर और यशकीतिका
परोदय ग्रन्थ होता है । अपर्याप्त और अयशकीतिका स्त्रोत्र्य ग्रन्थ होता है । अपर्याप्तोंके
अङ्गत्तीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, औदारिक काययोग और असत्य मृग्य वचनयोगका
उनके अभाव है ।

ब्रीन्द्रिय, श्रीन्द्रिय पर्याप्त और श्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा ब्रीन्द्रिय,
ब्रीन्द्रिय पर्याप्त और ब्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान है । विशेषता इतनी है कि घ्राण
इन्द्रियके साथ ब्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके इकनालीस प्रत्यय होते हैं । अपर्याप्तोंके
उनतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके औदारिक काययोग और असत्य मृग्य वचनयोगका
अभाव है । ब्रीन्द्रिय नामकर्मका स्त्रोत्र्य ग्रन्थ होता है । शेष इन्द्रिय नामकर्मोंका परोत्र्य
ग्रन्थ होता है ।

चतुरिन्द्रिय जीवोंका भी इसी प्रकार ही कथन करना चाहिये । विशेष इतना है
कि उनके चतुरिन्द्रिय जातिका स्त्रोत्र्य ग्रन्थ होता है । शेष इन्द्रिय जातियोंका ग्रन्थ परोत्र्य
होता है । यहा चक्षु इन्द्रियका प्रवेश होनेसे ध्यालीस उत्तर प्रत्यय होते हैं । अपर्याप्तोंके

१ आपत्ती 'ओरालियक्रायसच्चमोम' इति पाठ ।

२ प्रतिपु 'तीहृदियाण तीहृदियपञ्जत्ताण तीहृदियअपञ्जत्ताण चउरिदिय-वाहृदियपञ्जत्त', ममतो
'तीहृदियाण तीहृदियपञ्जत्तापञ्जत्ताण च तीहृदियपञ्जत्त' इति पाठ ।

३ प्रतिपु 'ओरालियक्रायसच्चमोम' इति पाठ ।

तिरिस्खगइ तिरिस्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणीचागोदाण सातर निरतरो यधो । कथ निरतरो ?
ण, तेउ बाउकाइएहिंतो धीडिदिएसुप्पण्णाणमतोमुहुत्तकालमेदामि निरतरयधुवलमादो ।

एदासिं मत्पच्चया चत्तारि । पच मिच्छत्त, दोडदियासजमा, छप्पाणासजमा, सोलस
कमाया, सत्त णोकमाया, चत्तारि जोगा, मव्वेदे धीडदियस्स चालीमुत्तपच्चया । णवरि
तिरिस्ख मणुस्माउआण कम्मइयपच्चएण विणा एग्गणचालीस पच्चया । एक्कारस अट्टारस
एगसमइयजहण्णुककम्मपच्चया ।

तिरिक्खाउ तिरिस्खगइ एइदिय गीइदिय-तीइदिय चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओ-
ग्गाणुपुव्वी आदापुजोव थावर सुहुम-साहारणण तिरिक्खगइसजुत्तो यधो । मणुस्माउ-मणुस्सगइ-
मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी उच्चागोदाण मणुसगइमजुत्तो यधो । मेमाण पयडीण तिरिक्ख मणु-
स्सगइमजुत्तो यधो । कुदो ? दोहि गदीहि मह विरोहाभावादो । यधद्वाण सुगम । यधवोच्छेदो
णरि । धुनियाण चउन्विहो यधो । अणमेसाण मादि-अट्टवो । एउ पज्जत्ताण । णवरि

तियग्गति, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी तैर नीचगोत्रका सान्तर निरन्तर बन्ध
होता है ।

शका— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

ममाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, तेजकायिक भार घातुकायिक जीवोंमेंसे
आन्त्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अतर्मुह्यत कारण तब इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इनके मूल प्रत्यय चार होते हैं । पाच भिन्नात्त, दो इन्द्रियान्त्यम, छह प्राणि
भस्यम, सोलह कयाय, सान नोकयाय और चार योग, ये सब आन्त्रिय जीवोंके चालीस
उत्तर प्रत्यय होते हैं । विशेषता केवल इतनी है कि निर्यगायु व मनुष्यायुके कर्मण प्रत्ययके
बिना उनतात्तम प्रत्यय होते हैं । त्यागह व अट्टारह क्रमसे एक समय समन्तर्धा अघन्य
और उत्तह्य प्रत्यय होते हैं ।

तियगायु, निर्यग्गति, पकेन्द्रिय, अन्त्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गति
प्रायोग्यानुपूर्वी, ज्ञाताय, उद्योत, स्थावर, सुहम और साधारण इनका तिर्यग्गतिते
मयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका
मनुष्यगतिते समुक्त बन्ध होता है । शेष प्रवृत्तियाँ तिर्यग्गति और मनुष्यगतिते समुक्त
बन्ध होता है क्योंकि, दोनों गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध नहीं है । बन्धाध्वान
सुगम है । बन्धवुच्छेद नहीं है । अथ प्रवृत्तियोंका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष
प्रवृत्तियोंका मादि व अघुष बन्ध होता है ।

इसी प्रकार अन्त्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रवृत्ति है । विशेषता केवल इतनी है कि

गोशण पगेदाण नरो, एवमिमन्थ उदयपिगहादे ।

पचणाणावरणीय-णउदमणावर्णीय मिच्छत्त मोरुमकमाय-भय-दुगुछा-निग्विउ-मणु-
म्माउ-ओगलियन्तेना-कम्मडयमरीर-वण्ण-भा-रम फाम अगुरुलहुअ-उपघाद-णिमिण-पचतरा-
इयाण पिरतरो नधो, एन्थ एदामि धुपनचित्तादो । सादामाद-मत्तणोकमाय मणुसगड-एइन्द्रिय-
चीडदिय-तीडदिय-चउगिदिय पचिदियजट्टि-छसटाण-ओरान्मियमरीरअगोरा-छमघटण-मणुसगड
पाओरगाणुपुत्थी परघादुस्साम-आणउज्जाव-दोविहायगट तम थाय-नादर-सुहुम पञ्जत्तापञ्जत्त-
पत्ते-साहारणमरीर-धिगधिर-सुहासुह-सुभग-टुभग सुम्मर-दुम्मर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जमकित्ति-
अजमकित्ति-उच्चागोदाण सातेग नरो, एवममण्णेदामि नुपुनरमदमणादो । तिग्विखगड-
निग्विखगडपाओरगाणुपुत्थी पीचागोदाण सातर पिरतरो नधो । कध पिरतरो ? ण, तेउ-वाउ-
काडण्हितो पचिदियअपञ्जतएसुपण्णाणमतोमुहुत्तकालमेवमि पिरतगधुपलमादो ।

पचिदियअपञ्जत्ताणमेदाओ पयडीओ वधमाणाण पच मिच्छत्ताणि, नागम अमजम,

होता है, क्योंकि, यहा इनक उन्धका विरोध है ।

पाच शानावरणीय, नौ दर्शनावर्णीय, मिथ्या, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा,
नियगायु, मनुष्यायु, औदारिक, नैजस उ कर्मण शरीर, घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श,
अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
यहा ये धुपन्यो है । साता उ असाता वेदनीय, सात नोकषाय मनुष्यगति, पचेन्द्रिय,
डीन्द्रिय, प्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, छह सम्मान, औदारिकशरीरागोषाग,
छह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उन्धयाम, आनाप, उघात, दो
विहायगनिया, घन, स्थान, नादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण शरीर,
स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुम्य, दुस्मर, आदेय, अनादेय, यशस्कीर्ति,
अयशस्कीर्ति और उच्चगोत्र, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमे इनका
रन्धधिग्राम देखा-जाता है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका
सातर निरन्तर बन्ध होता है ।

शका—निरन्तर बन्ध कैस होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, तेजसायिक और वायुकायिक जीवोंमें
पचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अतमुहर्न काल तक इनका निरन्तर बन्ध
पाया जाता है ।

इन प्रतियोगी बाधनेवाले पचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके पाच मिथ्यात्व, सारह

ओरालियकायासचमोमयचिनागाणमभावादेशे ।

पचिंदियअपज्जत्ताण भणिम्मामो — एत्थं वज्जमाणपयहीओ पचिंदियनिरिक्ख
अपज्जत्तेहि वज्जमाणाओ चेत्थ, ण जण्णाओ । एत्थं एत्थमि उदयात्ते वरो पुंन पत्तं न
पौच्छिण्णो ति विचारो णत्थि, मत्तामत्ताण वरोदयाणमेत्थ पौच्छिण्णभावादेशे ।

पराणापराणीय चउदमणापराणीय मिउत्त-णुमयउद पचिंदियजादि तेजा कम्मइय
सगीर जण गउ-रम फाम अगुरुअत्तहुअ तम जादर अपज्जत्त धिगाधिर मुहायुह दुमग अणाइ-ज्ज
अनमत्तिति णिमिण णीरागोद पत्तरात्ताण मोदओ वधो, धुजोदयत्तादेशे । णिहा पयला मादा
साद मालमरमाय उणोरुमाय निगिम्माउ-मणुम्माउ-तिरिक्खणइ-मणुमगदपाओगाणुकु रीण
मोदय परोदओ वधो, उदण विणा वि, मने वि उदण वउवलभादेशे । ओगत्तियमरीर हुट्ट
मठाण ओरालियमरीरअगायग अमपत्तमेउदमघडण उपपाद पत्तियमरीगण मोदय परोदओ नधो,
विग्गहगदीण उदयाभोउ वि अण्ण-उदण मने वि उदमणात्ता । धीणगिद्विनिय-उत्थि
पुरिमोद एदिय-वीइदिय तीइदिय चउरिंदिय परमठाण-वचमघडण पराउत्ताम आदाउत्ता
देनिहायगइ याउर-मुहुम-पज्जत्त माहारणमरीर मुभग मुस्सर दुस्सर आदेज्ज-नमत्तिति-उत्ता-

चालीस प्रत्यय हात हैं, क्योंकि, उनका औपचारिक वायदाग और अमत्य सुपा घननयोगका
अभाव है ।

पचा द्वय अथवा तोंकी प्ररूपणा करत है— यहा वध्यमान प्ररुतिपा पचद्वय
तियव अथवा तों ठारा वार्धा जानेवाली हा है, अथ नहीं है । यहा 'इमपा उदयसे वध
पूरमे या पश्चात् युच्छिउन्न हाता है' यह विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और अतत्
उधोदयने युच्छेदका यहा अभाव है ।

पाच पानापरणीय, चार वदनावरणाय, मिथ्यात्त, नपुंसकउद, पंचेन्द्रियजाति,
तैजस व कामज शरीर, वण, ग-य, रस, स्पृहा, अमुग्ग-तु, घन, याउर, अपर्याप्त, स्थिर
अस्थिर, पुंन अशुभ, दुमग, अनादेय अय-णीति, निमाण, नीचगोत्र और पाच
अंतराय, इनका मोदय वध हाता है, क्योंकि, ये धुजोदयी प्ररुतिया हैं । निद्रा, प्रचला,
साता व अमाता वेदनीय, सोलह कषाय, छह नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु और
नियगति य मनुष्यगतिप्रयोग्यापुर्णी, इनका मोदय परात्त व य होता है, क्योंकि,
उदयके घिना भी, तथा उदयने होनेपर भी इनका वध पाया जाता है । आंदारिकशरीर,
हुण्डसस्थान, औदारिकशरीरागोपाय, अमप्राप्तसृष्टाटिकासहनन, उपधात और प्रत्यय
शरीरका मोदय परोदय वध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें उदयाभावके होनेपर भी,
तथा अयथ उदयके होने हुए भी इनका वध देखा जाता है । स्थानशृद्धिप्रय, त्वीउद,
पुण्यवेद, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, पाच सस्थान, पाच सहनन,
परमात, उच्छवास, आताप, उद्योत, दो त्रिहस्योगतिपा, स्थावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारण
शरीर, मुभग, मुस्सर, दुस्सर, आदेय, यज्ञकीर्ति और उच्छगोत्र, इनका परोदयसे वध

मिच्छाइही बधओ किं सासणो बधओ किं सम्मामिच्छाइही बधओ किमसजदसम्माइही बधओ किं सजदासजदो किं पमत्तो किमपमत्तो किमपुच्चो किमणियट्ठी किं सुहुमसापराइयओ किमुव-
सत्तकसाओ किं स्त्रीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिमडारओ बधओ ति एवमेसो
एसजजोगो । सपधि एत्थ दुसजोगादीहि अक्खसचार करिय सोलहसहस्स-तिणिसय-तेया-
सीदि-पण्णभगा उप्पाएयन्वा । किं पुग्गेदासिं बधो वोच्छिज्जदि किमुदओ किं दो वि समं
वोच्छिज्जति एवमेत्थ तिणि भगा । किं सोदएण बधो किं परोदएण किं सोदय-परोदएण
एत्थ नि तिणि भगा । किं सातरो बधो किं णिरतरो [किं] सातर-णिरतरो ति एत्थ वि
तिणेष भगा । एदामिं किं मिच्छत्तपच्चओ बधो किमसजमपच्चओ किं कसायपच्चओ किं
जोगपच्चओ बधो ति पण्णारस मूलपच्चयपण्हभगा^१ हवति । एत विनयीय-मूढ-सदेह-
अण्णाणमिच्छत्त चक्खु सोद-घाण जिन्हा पास मण-पुढ गीकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउ-
काइय वणप्फदिकाइय तसकाइयामजम-सोलमरुमाय णणोरुसाय पण्णारसजोगपच्चए द्विविय

करते हैं । यह इस प्रकार है—क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या सासादनसम्यग्दृष्टि
बन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या असयतसम्यग्दृष्टि बन्धक है, क्या
सयतान्यत, क्या प्रमत्त, क्या अप्रमत्त, क्या अपूर्णकरण, क्या अनिरुत्तिकरण, क्या
मूलमसाम्परायिक, क्या उपशान्तनयाय, क्या स्त्रीणरूपाय, क्या सयोगी जिन, या क्या
अयोगी भट्टारक बन्धक हैं, इस प्रकार ये एकसयोगी भग हैं । अब यहा ठिसयोगादिकोंके
द्वारा अक्षसचार करके सोलह हजार तीन सौ तेरासी प्रश्नभग उत्पन्न कराना चाहिये ।
क्या पूर्वेम इन्का बन्ध व्युत्तिउन्न होता है, क्या उदय, या क्या दोनों एक साथ व्युत्तिउन्न
होते हैं, इस प्रकार यहा तीन भग होते हैं । क्या स्त्रोदयसे बन्ध होता है, क्या परोदयसे
या क्या स्त्रोदय परोदयसे, इस प्रकार यहा भी तीन भग होते हैं । क्या सान्तर बन्ध
होता है, क्या निरन्तर बन्ध होता है, या क्या सान्तर निरन्तर, इस प्रकार यहा भी तीन
ही भग होते हैं ।

इन्का बन्ध क्या मिथ्यात्वप्रत्यय है, क्या असयमप्रत्यय है, क्या कपायप्रत्यय है,
या क्या योगप्रत्यय बन्ध है, इस प्रकार पन्द्रह मूल प्रत्यय निमित्तक प्रश्नभग होते हैं ।
एकान्त, विपरीत, मूढ [विनय], सन्देह और अज्ञान रूप पांच मिथ्यात्व, चक्षु, श्रोत्र,
घ्राण, जिह्वा, स्पर्श, मन, पूर्वास्तीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, धनस्पति-
कायिक और व्रसकायिक, इनके निमित्तमे होनेवाले धारह असयम, सोलह कपाय, नौ

सोलस कमाय, सत्त णोकसाय दोण्णि जोग ति वादालीस पच्चया होति । तिरिम्स-मणुस्माउ-
आण एकैतालीस पच्चया, रुम्मइयपच्चयाभावादे । सेम सुगम ।

तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-एइदिय-धीइदिय-तीइदिय-चउरिदियजादि-तिरिक्खगइ-
पाओग्गाणुपुन्वी-आदाउज्जोव-याअर-मुहुम माहारणसरीराण तिरिक्खगइसजुत्तो वधो । मणुस्माउ
मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुन्वी उच्चामोदाणं मणुसगइसजुत्तो । सेसाण पयडीण वधो
तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्तो । पचिदियअपज्जत्ता सामी । बधद्धान सुगम । वधवोच्छेदो णरिध ।
पचणाणावरणीय णउदसणावरणीय मिच्छत्त-मोल्मरुमाय-भय दुगुछा-तेजा-रुम्मइयमरीर वण्ण-
गव-रस-फास अगुरुलहुव-उपघाद-णिमिण पचतगइयाण चउत्विहो वधो, धुअवधित्ताने ।
सेसाण सादि-अद्दवो ।

पचिदिय पचिदियपज्जत्तएसु पचणाणावरणीय चउदसणावर-
णीय-जसकित्ति-उच्चामोद-पचतराइयाणं को वधो को अवंधो ?
॥ १०३ ॥

एद पृच्छासुत्त देसामासिय, तेण्णेण सूइदत्थाण परूवणा कीइदे । त जहा — किं

भसयम, सोलह कपाय, सात नांकपाय और दो योग, इस प्रकार व्यालीस प्रत्यय होते हैं । तियगायु और मनुप्यायुके इक्तालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके कर्मण प्रत्ययका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है ।

तियगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तियग्गति प्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और माधारण शरीर, इनका तियग्गतिसे संयुक्त बध होता है । मनुप्यायु, मनुप्यगति, मनुप्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका मनुप्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष प्रतियौका बध तियग्गति व मनुप्यगतिसे संयुक्त होता है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव इत्थमी है । बधाभान सुगम है । बध-मुच्छेद यहा है नहीं । पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यातर, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व कर्मण शरीर, वण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अंतराय, इनका चार प्रकारका बध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबधो ह । शेष प्रतियौका सादि व अधुअ बध होता है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशस्विनि, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बधक और कौन अवन्धक है ?
॥ १०३ ॥



यह पृच्छासुत्त देशामर्शक है, इसलिये इसके द्वारा सूचिन अर्थोंकी प्ररूपणा

मिच्छाद्वी वधओ किं सासणो वधओ किं सम्मामिच्छाद्वी वधओ किमसजदसम्माद्वी वधओ किं सजदासजदो किं पमत्तो किमपमत्तो किमपुत्रो किमणियद्वी किं सुहुमसापराइयओ किमुव-
सतकमाओ किं खीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिमडारओ वधओ त्ति एवमेसो
एगसजोगो । सपथि एत्थ दुसजोगादीहि अक्खसचार करिय सोलहमहम्म-तिणिसय तेया-
सीदि-पण्णमगा उप्पाएयन्वा । किं पुच्चमेदासिं वधो वोच्छिज्जति किमुदवो किं दो वि समं
वोच्छिज्जति एवमेत्थ तिणिं भंगा । किं सोदएण वधो किं परोदएण किं सोदय-परोदएण
एत्थ वि तिणिं भगा । किं सातरो वधो किं णिरतरो [किं] सातर-णिरतरो त्ति एत्थ वि
तिण्णेन भगा । एदामि किं मिच्छत्तपच्चओ वधो किमसजमपच्चओ किं कसायपच्चओ किं
जोगपच्चओ वधो त्ति पण्णारस मूलपच्चयपण्हमगा^१ हवति । एतत्त निपरीय-मूढ-सन्देह-
अण्णाणमिच्छत्त चक्खु-सोद घाण जिन्मा-पास-मण-पुट्ठीकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउ-
काइय वणफ्फिकाइय तमकाइयासजम-सोलमकमाय णणोक्रसाय पण्णारसजोगपच्चए द्विविय

करते ह । यह इस प्रकार है— क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या सासादनसम्यग्दृष्टि
बन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या अनयतसम्यग्दृष्टि बन्धक है, क्या
सयतानयत, क्या प्रमत्त, क्या अप्रमत्त, क्या अपूर्वकरण, क्या अनित्यसिक्करण, क्या
सुखसाम्परायिक, क्या उपशान्तरूपाय, क्या शीणरूपाय, क्या संयोगी जिन, या क्या
अयोगी भट्टारक बन्धक ह, इस प्रकार ये एकसंयोगी भग हैं । अब यहाँ द्विसंयोगादिकोंके
द्वारा अक्षसंचार करके सोलह हजार तीन सौ तेरासी प्रश्नभग उत्पन्न कराना चाहिये ।
क्या पूर्वमें इनका बन्ध व्युत्पिन्न होता है, क्या उदय, या क्या दोनों एक साथ व्युत्पिन्न
होते हैं, इस प्रकार यहाँ तीन भग होतें हैं । क्या स्वोदयमे बन्ध होता है, क्या परोदयमे
या क्या स्वोदय परोदयमे, इस प्रकार यहाँ भी तीन भग होतें ह । क्या सान्तर बन्ध
होता है, क्या निरन्तर बन्ध होता है, या क्या सान्तर निरन्तर, इस प्रकार यहाँ भी तीन
ही भग होतें हैं ।

इनका उन्त्र क्या मिथ्यात्वप्रत्यय है, क्या असयमप्रत्यय है, क्या कयायप्रत्यय है,
या क्या योगप्रत्यय उन्त्र है, इस प्रकार पन्त्रह मूल प्रत्यय निमित्तक प्रश्नभग होते हैं ।
एकान्त, निपरीत, मूढ [विनय], सन्देह और अज्ञान रूप पांच मिथ्यात्व, चक्षु, श्रोत्र,
घ्राण, जिह्वा, स्पर्श, मन, पूर्णजीकायिक, अष्फायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, घनस्पति-
कायिक और व्रसफायिक, इनके निमित्तमे होनेवाले गारह असयम, सोलह कपाय, नौ

सोलस कमाय, सत्त जोकमाय दोण्णि जोग ति नादालीस पच्चया होति । तिरिक्ख मणुस्माउ आण एक्केतालीस पच्चया, कम्मइयपच्चयाभानादो । मेम सुगम ।

तिरिक्खत्ताउ तिरिक्खगइ-एइदिय-धीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइ-पाओग्माणुपुन्नी-आदाउज्जेण थावर-सुहुम साधारणसरीराण तिरिक्खगइसजुतो वधो । मणुस्माउ मणुसगइ मणुमगडपाओग्माणुपुन्नी उच्चागोदाण मणुसगइसजुतो । सेमाण पयडीण नधो तिरिक्ख-मणुसगइसजुतो । पंचिंदियअपज्जत्ता सामी । बधद्धान सुगम । नधवेच्छेदो णत्थि । पचणाणावरणीय-णउदसणावरणीय मिच्छत्त-सोलसकमाय-भय-दुगुछा तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-गध-रम-कास-अगुस्सलहुन-उवघाद-णिमिण पचतगइयाण चउत्तिहो नधो, धुवनेधित्तादो । सेमाण सादि अद्दुवो ।

पचिंदिय-पचिंदियपज्जत्तएसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद पचतराइयाणं को वधो को अवधो ?
॥ १०३ ॥

एद पुच्छासुत्त देवामासिय, तेणेदेण सुद्धत्थाण परूवणा कीरेदे । त जहा — किं

असयम, सोलह कपाय, सात नाकपाय और दो योग, इस प्रकार व्यालीस प्रत्यय होते हैं । तिर्यगायु और मनुष्यायुके इकतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके कर्मण प्रत्ययका समाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है ।

तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एवेन्द्रिय, णीन्द्रिय, व्रीन्द्रिय, चतुर्तिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण शरीर, इनका तिर्यग्गतिले संयुक्त बंध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका मनुष्यगतिले संयुक्त, तथा शेष प्रवृत्तियोंका बंध तिर्यग्गति ॥ मनुष्यगतिले संयुक्त होता है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वामी है । बन्धा-जान सुगम है । बन्ध-युच्छेद यहा है नहीं । पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कर्मण शरीर, धर्म, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुस्सलहु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका चार प्रकारका बंध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । शेष प्रवृत्तियोंका सादि व अधुव बंध होता है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ?
॥ १०३ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा

मिच्छाद्वि वधओ किं सासणो वधओ किं सम्मामिच्छाद्वि वधओ किमसजदसम्माद्वि वधओ किं सजदासजदो किं पमत्तो किमपमत्तो किमपुत्तो किमणियद्वि किं सुहुमसापराइयओ किमुव-
सत्तकमाओ किं खीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिमहारओ वधओ ति एवमेसो
एगसजोगो । सपवि एत्थ दुसजोगादीहि अवस्ससचार करिय सोलहसहस्स-तिणिणसय-तेया-
सीदि-पण्णभगा उप्पाएयच्चा । किं पुच्चमेदामिं वओ वोच्छिज्जदि किमुदओ किं दो वि सम
वोच्छिज्जति एवमेत्थ तिणिण भगा । किं सोदण्ण वधो किं परोदण्ण किं सोदय-परोदण्ण
एत्थ नि तिणिण भगा । किं सातरो वधो किं गिरतरो [किं] सातर-गिरतरो ति एत्थ वि
तिण्णेय भगा । एदामिं किं मिण्ठत्तपच्चओ वधो किमसजमपच्चओ किं कसायपच्चओ किं
जोगपच्चओ वधो ति पण्णारस मूलपच्चयपण्णभगा^१ हजति । एतत्त विग्रीय-मूढ-सदेह-
अण्णाणमिच्छत्त-चक्खु-सोद घाण जिन्मा पास-मण-पुढीकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउ-
काइय वणप्फदिकाइय तसकाइयासजम-सोलसरसाय णवणोकमाय पण्णारसजोगपच्चए द्विविय

करते हैं । यह इन प्रकार है— क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या सासाधनसम्यग्दृष्टि
बन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या असत्यतत्त्वसम्यग्दृष्टि बन्धक है, क्या
सत्यतत्त्वतः, क्या प्रमत्त, क्या अप्रमत्त, क्या अपूर्णकरण, क्या अनिर्गुणिकरण, क्या
सूक्ष्ममात्रप्रायिक, क्या उपशान्तरूपाय, क्या क्षीणरूपाय, क्या सयोगी जिन, या क्या
अयोगी भट्टारक बन्धक है, इस प्रकार ये एकसयोगी भग हैं । अब यहाँ द्विसयोगादिकोंके
द्वारा अक्षसचार करके सोलह हजार तीन सौ तेरासी प्रश्नभग उत्पन्न कराना चाहिये ।
क्या पूर्वमें इनका बन्ध व्युत्तिष्ठ होता है, क्या उदय, या क्या दोनों एक साथ व्युत्तिष्ठ
होते हैं, इस प्रकार यहाँ तीन भग होते हैं । क्या स्वोदयमे बन्ध होता है, क्या परोदयसे
या क्या न्योदय परोदयमे, इस प्रकार यहाँ भी तीन भग होते हैं । क्या सान्तर बन्ध
होता है, क्या निरन्तर बन्ध होता है, या क्या सान्तर निरन्तर, इस प्रकार यहाँ भी तीन
ही भग होते हैं ।

इनका बन्ध क्या मिथ्यात्वप्रत्यय है, क्या असत्यमप्रत्यय है, क्या कषायप्रत्यय है,
या क्या योगप्रत्यय बन्ध है, इस प्रकार पन्द्रह मूल प्रत्यय निमित्तक प्रश्नभग होते हैं ।
एकान्त, त्रिपरीत, मूढ [चिन्तय], सन्देह और अज्ञान रूप पांच मिथ्यात्व, चक्षु, श्रोत्र,
घ्राण, जिह्वा, स्पर्श, मन, भूतृषीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, वनस्पति-
कायिक और प्रसफायिक, इनके निमित्तमे होनेवाले चारह असत्यम, सोलह कषाय, नौ

चौदससदएकेतालीसकोडाकोडी-पण्णारसलकख अट्टारससहम्म-अट्टसय सत्तकोडी'-अट्टपचास-
लकख पचवचामसहम्म-अट्टसय एककट्तरिउत्तरपच्चयपण्णमगा' उप्पाएदव्वा १४४११५
१८८०७५८५५८७१ । किं णिरयगइमजुत्त वज्जति किं तिरिक्खगइसजुत्त किं मणुस्सगइसजुत्त
[किं देवगइसजुत्त] इदि एत्थ पण्णारम पण्हमगा उप्पाएदव्वा । अट्टाणमगपमाण सुगम ।
किमपिदगुणैट्ठाणस्तादिए मज्जे अते वधो वोच्छिज्जदि ति णक्केनकम्हि गुणट्ठाणे तिण्णि
णिणि भगा उप्पाएयव्वा । सव्वउधमोच्छेदपण्हममामो वाएत्तालीस । किं मात्थिओ वधो
किमणादिओ किं खुवो किमद्वयो ति णय पण्णारम पण्हमगा उप्पाएयव्वा ।

मिच्छावट्ठिपहुडि जाव सुहुमसापराडयसुद्धिसंजदेसु उवसमा
खवा वधा । सुहुमसापराडयसुद्धिसजदद्वाए चरिमसमय गंतूण वधो
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १०४ ॥

एदस्म अत्थो उच्चदे— पचणाणारणीय चउदमणारणीय पचतराडयाण पुध्न उधो

नाकपाय और पट्टह याग, इन प्र ययोंको स्थापित कर चौदह सो इक्तालीस कोडाकोडी,
पन्द्रह लाख, अट्टारह हजार, आठ सौ मात करोड, अट्टावन लाख, पचवन हजार, आठ सौ
इक्तर उत्तर प्रत्यय निमित्तक प्रधानभग उत्पन्न कराना चाहिये । १४४११५१८८०७५८५८७१ ।

ये क्या नरकगतिसे सयुक्त वधम है, क्या तिर्यग्गतिसे सयुक्त वधते है, क्या
मनुष्यगतिसे सयुक्त वधते है, [या क्या देवगतिसे सयुक्त वधते है,] इस प्रकार यहा
पट्टह प्रधानभग उत्पन्न कराना चाहिये । वन्धाध्यानका भगप्रमाण सुगम है । क्या विपश्चित
गुणस्थानके आग्नि, मध्यम या अन्तमें उध व्युच्छिन्न होता है, इस प्रकार एक एक
गुणस्थानमें तीन तीन भग उत्पन्न कराना चाहिये । उध-व्युच्छेदके प्रधानविषयक सर्व
'मर्गोंका योग स्थानीय होता है । क्या मादि, क्या अनादि, क्या ध्रुव और क्या अध्रुव वध
होता है, इस प्रकार यहा पट्टह प्रधानभग उत्पन्न कराना चाहिये ।

मिध्यावृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिमयतोंमें उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं ।
सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिमयतकालके अन्तिम समयको जाकर उध व्युच्छिन्न होता है । ये
बानरु हैं, शेष अनधक हैं ॥ १०४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— पांच ज्ञानारणीय, चार दानापरणीय और पांच

१ त्रिगु 'सत्त सत्तकोडी' इति पाठ ।

२ त्रिगु 'पचवचा पण्णमगा' इति पाठ ।

३ अ आध्या 'किमपिदगुण', वाग्रता 'किमपिदगुण' इति पाठ ।

पञ्चा उदओ वोच्छिज्जदि, सुहुमसापराइयचरिमसमयमिह णट्ठयघाणेमेदासिं खीणकसायचरिम-
समयमि उदयवोच्छेदुवलभादो । जसकित्तीए उच्चागोदस्स य पुच्च बघो पञ्चा उदओ
वोच्छिज्जदि, सुहुमसापराइयचरिमसमयमि णट्ठयघाण अजोगिचरिमसमयमि उदय-
वोच्छेदुवलभादो ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराइयाण सोदओ बंधो । जसकित्तीए
मिञ्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असजदमम्माइट्ठि ति सोदय-परोदण बघो, एदेसु अजसकित्तीए वि
उदयदमणादो । उवरि मोदएणेव, पडिवन्नुदयाभावादो । मिञ्छाइट्ठिप्पहुडि जाव मज्झि-
सजदो [ति] उच्चागोदस्स सोदय परोदण बघो, एदेसु नीचागोदस्स ति उदयदमणादो ।
उवरि मोदओ, पडिवन्नुदयाभावादो ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय पचतराइयाण गिरतरो बघो, सच्चगुणट्ठाणेषु
वि एगमएण बंधवोच्छेदाभावादो । जसकित्तीए सातर गिरतरो-बघो, मिञ्छाइट्ठिप्पहुडि जाव
पमत्तमजदो ति मातरो नघो, एदेसु पविक्खपयडिवधदमणादो, उवरि गिरतरो, पडिवक्ख-

अन्तरायका पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक
गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धके नष्ट हो जानेपर क्षीणकथाय गुणस्थानके अन्तिम
समयमें उनका उदय युच्छेद पाया जाता है । यदाकीर्ति और उच्चगोत्रका पूर्वमें बन्ध और
पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें
बन्धके नष्ट हो जानेपर अयोगिके गलीके अन्तिम समयमें इनका उदय युच्छेद पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वेदय बन्ध
होता है । यदाकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि तक स्वेदय परोदयसे बन्ध
होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें अयशकीर्तिका भी उदय देखा जाता है । ऊपर इसका
स्वेदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, उहा अयशकीर्तिके उदयका अभाव है । मिथ्यादृष्टिसे
लेकर सयतासयत तक उच्चगोत्रका स्वेदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इन
गुणस्थानोंमें नीचगोत्रका भी उदय देखा जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें उसका स्वेदयसे
बन्ध होता है, क्योंकि, वहा नीचगोत्रके उदयका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध
होता है, क्योंकि, सब गुणस्थानोंमें ही एक समयसे इनके बन्ध युच्छेदका अभाव है ।
यदाकीर्तिका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक
इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध देखे जानेसे सान्तर बन्ध होता है और इससे ऊपर

पयडीए वधाभावादो । उच्चागोदस्स मिच्छाद्दि सासणेसु सातर निरतरो । असत्तज्जनासाउअ-
तिरिक्ख-मणुस्सेसु, सखेज्जवामाउअसुद्धतिलेस्सिएसु निरतरपधदसणादो । उअरिमणुणेसु
निरतरो, पडिअत्तपयडीए वधाभावादो । पच्चयाण मूलेधमगो । गइमजुत्तादि उअरि
जाणिय वत्तय ।

णिद्वाणिद्वा पयलापयला श्रीणगिद्धि-अणंताणुवंधिकोध-माण-
माया लोभ इत्थिवेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउसंघडण-
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बी उज्जोअ-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-
अणादेज्ज नीचागोदाण को वधो को अवंधो ? ॥ १०५ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्दि सासणमग्गाद्दि वधा । एदे वधा, अवमेसा अवधा

॥ १०६ ॥

प्रतिपक्ष प्रकृतिके वधका अभाव होनेसे उसका निरन्तर वध होता है । उच्चगोत्रका
मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सातर निरन्तर वध होता है, क्योंकि,
यहां असंख्यानवर्णायुष्क तिर्यक्ष ष मनुष्योंमें, तथा मर्यादत्रयायुष्क तीति शुभ लेख्या
धालोंमें उसका निरन्तर वध देखा जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध
होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृति वधका अभाव है । प्रत्ययोंकी प्ररूपणा मूलोपके
समान है । गतिमयुक्तादि उपरिम पूछा तौने त्रिपयमें जानकर कहना चाहिये ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,
स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार महानन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत,
अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्तर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका कौन वधक और कौन
अवधक है ? ॥ १०५ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये वधक हैं, शेष अवधक हैं
॥ १०६ ॥

एदस्स अन्थो वुच्चदे—धीणगिद्धितियस्स पुत्र वधो पच्छ उदओ वोच्छिज्जदि,
 सामणम्मोड्डि पमत्तसज्जेसु जहासखाए वधोदयवोच्छेददसणादो । अणताणुपविचउत्तस्स
 दो पि सम वोच्छिज्जति, सामणे तदुभयामात्रदसणादो । इतिवेदस्स पुत्र वधो पच्छ
 उदओ वोच्छिज्जदि, सासणाणियट्ठीसु जहासखाए वधोदयवोच्छेदुवलभादो । तिरिक्खाउ-
 तिरिक्खगइ-उज्जेर णीचागोदाण पुत्र वधो पच्छ उदओ वोच्छिज्जदि, सामणसम्मादिट्ठि-
 मन्नामज्जेसु तेसि दोण्ण वोच्छेदुवलभादो । चउसठाणाण पुत्र वधो पच्छ उदओ वोच्छि-
 ज्जदि, सासण सजोगीसु तेमि दोण्ण वोच्छेदुवलभादो । एउ चदुसपडणाण पि वत्तव,
 सामणे किट्ठपधानमण्णमत्तुवसत्तकसाएसु पढम निदियमधडणदुगोदयवोच्छेददसणादो । एव
 तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुत्वी-दुभग अणादेज्जाण वत्तव सासण-असजदसम्मादिट्ठीसु वधोदय-
 वोच्छेददसणादो । एवमण्णमत्तविहायगइ-दुस्मराण वत्तव, सासण-मजोगीसु वधोदयवोच्छेद-
 दसणादो ।

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— स्थानगृह्णयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय
 व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसयत गुणस्थानमें यथाक्रमसे इनके
 बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । अनन्तानुबन्धचतुष्का बन्ध और उदय दोनों
 एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाय देखा जाता
 है । त्रयीवदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादन और
 अनिष्टसिक्खण गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।
 तिर्यग्गयु, तिर्यग्गति, उद्योत और नीचगोत्र, इनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय
 व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सयतामयत गुणस्थानोंमें क्रमशः उन
 दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । चार सस्यानोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय
 व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादन और भययोगकेवली गुणस्थानोंमें उन दोनोंका
 व्युच्छेद पाया जाता है । इसी प्रकार चार सहननोंके भी पूर्व पश्चात् बन्धोदयव्युच्छेदको
 कहना चाहिये, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें बन्धके नष्ट हो जानेपर अप्रमत्त व
 उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें क्रमसे उक्त चार सहननोंके प्रथम व, द्वितीय युगलके
 उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार तिर्यग्गतिप्राप्त्यानुपूर्वी, दुर्भग और
 अनादयके भी कहना चाहिये, क्योंकि, सासादन व असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें
 क्रमशः इनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार अप्रशस्तविहायोगति
 और दुस्सग्गे भी कहना चाहिये, क्योंकि, सासादन और भययोगकेवली गुणस्थानोंमें
 इनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

धीणगिद्धितियादीणि सन्नासिं पयडीण वधो सोदय-परोदओ, उभयथा नि विरोहा भारादो । धीणगिद्धितिय अणताणुनिचउत्तक तिरिक्खाउआण गित्तगे वधो, एगममण्ण वधुवरमामारादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुत्ती जीचागोदाण सातर गिरतरो वधो । कथ गिरतरो ? ण, तेउ-वाउक्काइयचरपचिदियमिच्छाईईसु सत्तमपुटनीमिच्छाईई-सामण-मम्माईईणरइएसु गिरतरनधुवलमादो । सेमाण सातरो वधो, एगममण्ण वधुवरमदमणादो । पच्चया ओधपच्चयतुल्ला । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुत्ती-उज्जोवाणि दो नि तिरिक्खगइसजुत्त, इरियेद गिरयगईए विणा तिगइसजुत्त, चउसठाण चउसचइणाणि दो नि तिरिक्ख-मणुपगइसजुत्त, अप्पमत्थविहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज जीचागोदाणि मिच्छाईई तिगइसजुत्त यधइ देवगईए विणा, सासणो तिरिक्ख मणुसगइसजुत्त । मेमाणो पयडीओ मिच्छाईई चउगइसजुत्त सामणो तिगइसजुत्त । सेम चिनिय वत्तव्व ।

स्थानगृहित्रय आदिक सब प्रतियोंका बन्ध स्तोत्रय परादय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उनके बन्धका विरोध नही है । स्थानगृहित्रय, अन-तानुबन्धितुक् और नियगायुका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविधामका अभाव है । नियगाति, नियगातिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सातर निरन्तर बन्ध होता है ।

शका—निरन्तर बन्ध कने जाता है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, तेजकायिक व रायुकायिक-जीयोंमेंसे आकर पचइय मिथ्यादृष्टियोंमें उत्पन्न हुए जीयों तथा स्वप्नम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्प्रदाष्टि नारकियोंमें उक्त प्रतियोंका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

शेष प्रतियोंका सातर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धका विधाम देखा जाता है । प्रत्येकी प्ररूपणा ओघप्रत्ययोंके समान है । तियगायु, तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको दोनों ही गुणस्थानवर्ती जीय तियग्गतिके सयुक्त बाधते हैं । रात्रिको नरकगतिके विना तीन गतियोंमें सयुक्त बाधते हैं । चार सस्थान और चार सहननको दोनों ही तियग्गति व मनुष्यगतिके सयुक्त बाधते हैं । अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनदेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि-देवगतिके विना तीन गतियोंमें सयुक्त बाधते हैं, तथा सासादनसम्प्रदाष्टि तियग्गति-व मनुष्यगतिके सयुक्त बाधते हैं । शेष प्रतियोंको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंमें सयुक्त और सासादनसम्प्रदाष्टि तीन गतियोंमें सयुक्त बाधते हैं । शेष विचार कर कहना चाहिये ।

णिदा-पयलाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १०७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्टसुद्धिसंजदेसु उव-
समा खवा वंधा । अपुव्वकरणसंजदद्वाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण
वधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १०८ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे—उपो एदासिं पुव्व वोच्छिज्जदि पच्छा उदधो, अपुव्व-
पीणकसाएसु कमेण वधोदययोच्छेददसणादो । सोदय-परोदएण सव्वगुणट्ठाणेषु वधो,
अद्भवोदयत्तादो । गिरत्तरो, धुव्वधित्तादो । पच्चया सव्वगुणट्ठाणेषु ओघपच्चयत्तुल्ला ।
मिच्छाइट्टी चउगइसजुत्त, सासणो तिगइसजुत्त, सम्मामिच्छाइट्टी असजदसम्माइट्टी दुगइसजुत्त,
सेसा देवगइसजुत्त । गइसामित्तद्वाण-वधयोच्छेदद्वाणाणि सुगमाणि । मिच्छाइट्टिस्स चउ-
न्निहो वधो । सेसेसु तिनिहो, धुवत्ताभावादो ।

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ १०९ ॥

निद्रा और प्रचलाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १०७ ॥

यह सुत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्टशुद्धिमयतीमें उपशमक व क्षपक तक बन्धक
हैं । अपूर्वकरणमयतकालके सख्यातीमें भाग जाकर बन्धव्युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं,
शेष अबन्धक हैं ॥ १०८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— इनका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है और उदय
पश्चान्, क्योंकि, अपूर्वकरण व क्षीणकपाय गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध और उदयका
व्युच्छेद देखा जाता है । जब गुणस्थानोंमें इनका बन्ध सोदय परोदयसे होता है, क्योंकि,
ये अधुवादयी हैं । गिरत्तर बन्ध होता है, क्योंकि, धुव्वधो है । प्रत्यय सत्र गुणस्थानोंमें
ओघप्रत्ययोंके समान है । मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंमें सयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन
गतियोंमें सयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे सयुक्त, तथा शेष
गुणस्थानवर्ती देवगतिसे सयुक्त पाधते हैं । गतिस्वामित्व, अध्यान और बन्धव्युच्छेदस्थान
सुगम है । मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका वध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका
बन्ध होता है, क्योंकि, यहा ध्रुव वधका अभाव है ।

मातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १०९ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टुहडि जाव सजोगिकेवली वधा' । सजोगिकेवलि-
अद्वाए चरिमसमय गतूण वधो' वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा
अवधा ॥ ११० ॥

एदस्म अत्थो उच्चैद— वधो पुञ्च पच्छा उदथो वोच्छिज्जो, सजोगिकेवलि-
अजोगिकेवलीसु जहाकमेण वधोदयरोच्छेददमणादो । सोदय-परोदएण वधो, मध्यगुणद्वारेण
अद्भवोदयत्तादो । मिच्छाद्विष्टुहडि जाव पमत्तमज्जदो सि सातरो वधो, एगसमएण वधुवरम-
दसणादो । उतरि गिरतरो, पडिवन्नसपयडीए वधामारादो । प-चया सच्चगुणद्वारेण ओघपच्चय-
तुल्ला । मिच्छाद्विष्टि सामणसम्मादिष्टिणो तिगदमज्जुत्त, गिरयगडिए सह सादवधाभावादो । सेम
सच्चमोघतुल्ल ।

असादावेदणीय-अरदि सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाण
को वधो को अवधो ? ॥ १११ ॥

यह खूब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम
समयको जाकर वधव्युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ११० ॥

इस मूलका अर्थ कहते हैं— सातावेदनीयका बन्ध पूर्वमें और उदय पश्चात्
व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके
बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि,
यह सब गुणस्थानोंमें अभ्युदयी है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सान्तर
बन्ध होता है, क्योंकि, यहां पर समयसे उसका बन्धविधाम देखा जाता है ।
प्रमत्तसयतसे ऊपर निरंतर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके बन्धका
अभाव है । प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें ओघप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि और सासादन
सम्प्रवृत्ति तीन गतियोंसे संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ सातावेदनीयका
बन्ध नहीं होता । शेष सब प्ररूपणा ओघसे समान है ।

असादावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशस्वीति नामकर्मका कौन
बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ १११ ॥

१ प्रतिशु 'वधा' इति पाठ ।

२ अ-काययो 'वधा' इति पाठ ।

[सुगम ।]

मिच्छाइटिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति वंधा । एदे वंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ ११२ ॥

असादानेदणीयस्स पुब्ब वधो पच्छ उदओ वोच्छिण्णो, पमत्त-अजोगिकेवलीसु जहा-
कमेण वधोदयवोच्छेदुवलभादो । एवमरदि-सोगाण वत्तन्व, पमत्तापुब्बकरणेसु वधोदयवोच्छेद-
दसणादो । एव चेव अधिर-असुहाण वत्तन्व, पमत्त-सजोगिकेवलीसु वधोदयवोच्छेदुवलभादो ।
अजसकित्तीए पुनमुदओ पन्था वधो वोच्छिण्णो, पमत्तसजद अमजदमम्मादिट्ठीसु वंधोदय-
वोच्छेदुवलभादो ।

असादानेदणीय अरदि-मोगाण सोदय-परोदएण सन्वगुणङ्गाणेसु वधो, परावत्तणोदय-
त्तादो । अधिरामुभाण स वत्थं सोदएण वधो, धुवोदयत्तादो । अजसकित्तीए मिच्छाइटिप्पहुडि
जाव अमजदमम्मादिट्ठि त्ति सोदय परोदएण वधो, एदेसु पडिअस्खोदएण वि वधुवलभादो ।

[यह सद्य सुगम है ।]

मिथ्यादृष्टिमे लेकर प्रमत्तसयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक
हैं ॥ ११२ ॥

असातायेदनीयका पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि,
प्रमत्तसयत और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद
पाया जाता है । इसी प्रकार अरति और शोकके कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त और
अपूर्णकरण गुणस्थानोंमें प्रमत्ता इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी
प्रकार ही अस्थिर और अशुभके भी कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त और सयोगकेवली
गुणस्थानोंमें उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । अयशकीर्तिका पूर्वमे
उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तसयत और असयतसम्यग्दृष्टि
गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

असातायेदनीय, अरति और शोकका सब गुणस्थानोंमें स्रोदय परोदयसे
बन्ध होता है, क्योंकि, इनका उदय परिवर्तनशील है । अस्थिर और अशुभका सर्वत्र
स्रोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर
असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्रोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष
प्रवृत्तिसे उदयके साथ भी उमका बन्ध पाया जाता है । इसके ऊपर परोदयसे

उर्वरि परोदण, जसकितीए चेउ तत्थोदयदसणादो । एदासिं छण्ह पयडीण सातरो नधो,
दो-निणिणममयादिकालपडिपद्धवधणियमामाणादो । पच्चया सुगमा । एदाओ छण्यडीओ
मिच्छाइटी चउगइसजुत्त, सामणो तिगइसजुत्त, सम्मामिग्गइटी असउदसम्माइटी दुगइसजुत्त,
उर्वरिमा देवगइसजुत्त वधति । उर्वरि ओघभणो ।

मिच्छत्त णवुसयवेद णिरयाउ णिरयगइ-एइदिय-वीइदिय-तीह-
दिय-चउरिदियजादि हुडसठाण-असपत्तसेवट्टसघडण-णिरयाणुपुब्बी-
आदाव थावर सुहुम-अपज्जत्त साहारणसरीरणामाण को वधो को
अवधो ? ॥ ११३ ॥

सुगम ।

मिच्छाइटी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ११४ ॥

‘ एदे वधा ’ ति णिदेसो अणत्थओ, अगददुपकवणादो । ण एम दोसो,

वध होता है, क्योंकि, उक्त यशस्वीतिरा ही उदय देखा जाता है । इन छह प्रकृतियोंका
मातर वध होता है, क्योंकि, दो-तीन समयादि रूप कालसे सम्बद्ध इनके वधके
नियमना अभाव है । प्रत्यय सुगम है । इन छह प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि चार गतियोंसे
संयुक्त, सामान्यसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असत्यसम्यग्दृष्टि
दो गतियोंसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव इवगतिसे संयुक्त बाधते हैं । उपरिम प्ररूपणा
बाधके समान है ।

मिथ्यात्त, नपुमकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,
चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डसस्थान, अमप्राप्तमृपाटिकामहनन, नरकानुपूर्वी, आताप, म्थावर,
सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकमका कौन वन्धक और कौन अनन्धक है ?
॥ ११३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ ११४ ॥

शुद्धा—‘ ये वन्धक हैं ’ यह निर्दोष अनन्धक है, क्योंकि, यह ज्ञात अथवा
प्ररूपण करता है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मेधायन्तित अर्थात् मूल जनकों

१ प्रति ‘ तत्तदय इति पाठ ।

मेहावज्जियजणानुगहद्ध तण्णिदेसादो । मिच्छत्त-अपज्जत्ताण वधोदया सम वोच्छिज्जति,
मिच्छाडडिम्हि चेन तदुभयवोच्छेददसणादो । एइदिय-नीडदिय तीडदिय चउरिदियजादि-
आदाव-थार-सुहुम-साहारणाणमेम विचारो णत्थि, पंचिदिएसु तेसिमुदयाभावादो । णवरि
पंचिदियपज्जत्तएसु अपज्जत्तस्स वि एसो विचारो णत्थि ति वत्तच्च । णवुसयवेदस्स पुव्व वधो
पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, मिच्छाडडि-अणियट्टिगुणेषु^१ वधोदयवोच्छेददसणादो । एव
णियाउ-णिरयगइ-णिरयाणुपुव्वीण वत्तच्च, मिच्छाडडि-असजदसमादिहीसु वधोदयवोच्छेददस-
णादो । एव हुडसठाणस्स वत्तच्च, मिच्छाडडि-सजोगिकेउलीसु वधोदयवोच्छेददसणादो ।
एवममपत्तसेवट्टसघडणस्स वि वत्तच्च, मिच्छाडडि अपमत्तेसु वधोदयवोच्छेदुवलभादो ।

मिच्छत्तस्स सोदएण वधो, धुवोदयत्तादो^२ । णवुमयवेद-अपज्जत्ताण सोदय परोदओ,
अधुवोदयत्तादो । णवरि पंचिदियपज्जत्तएसु अपज्जत्तस्स परोदओ वधो, तत्थ तदुदयाभावादो ।

अनुग्रहके लिये यह निदेश किया गया है ।

मिथ्यात्व और अपर्याप्तका बन्ध व उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं,
क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है । एकेन्द्रिय,
द्वैन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय जाति आताप, स्वावर, सूक्ष्म और साधारण, इन
प्रकृतियोंके यह विचार नहीं है, क्योंकि, पंचेन्द्रिय जीवोंमें उनके उदयका अभाव है ।
विशेष इतना है कि पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें अपर्याप्त प्रकृतिके भी यह विचार नहीं है,
ऐसा कहना चाहिये । नपुंसकचेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है,
क्योंकि मिथ्यादृष्टि और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें क्रमशः उसके बन्ध और उदयका
व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार नारकायु, नरकगति और नरकानुपूर्वीके कहना
चाहिये, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और असयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध
और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार हुण्डसंस्थानके भी कहना चाहिये,
क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और सयोगकेउली गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद
देखा जाता है । इसी प्रकार असंप्राप्तस्पाटिका सहननके भी कहना चाहिये क्योंकि,
मिथ्यादृष्टि और अप्रमत्त गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

मिथ्यात्वका स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि वह धुवोदयी है । नपुंसकचेद और
अपर्याप्तका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवोदयी हैं । विशेष इतना है कि
पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्तके

१ आश्रती 'अणियट्टिगुणेषु' इति पाठ ।

२ व-आश्रयो 'धुवोदयादो' इति पाठ ।

मासणेसु सातरो वधो । उरि गिरतो, पडिअसपयडाण वसाभासादो । पच्चया सुगमा ।
उरि मूलेषभगो ।

पच्चस्त्राणावरणकोध-माण-माया-लोभाणं को वधो को
अवंधो ? ॥ ११७ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विषहृदि जाव सजदासंजदा वधा । एदे वंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ ११८ ॥

एद पि सुगम ।

पुरिसवेद कोधमजलणाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ११९ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विषहृदि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्ठवसमा
खा वधा । अणियद्विवादरद्दाए सेसे सखेज्जाभागे' गतूण वधो
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेमा अवंधा ॥ १२० ॥

होता है । ऊपर उसका निरंतर रंध होता है, क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तियों के रंधका
अभाव है । प्रथम सुगम है । उपरिम प्ररूपणा मूलेषके समान है ।

प्रन्यायानावरण कोध, मान, माया और लोभका कौन बन्धक व कौन अवन्धक
है ? ॥ ११७ ॥

यह मूल सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि लेकर सपतामयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक
हैं ॥ ११८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

पुरुषवेत् और सन्वत्नकोधका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ११९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि लेकर अनिशुक्तिकरणवादरसांपरायिकप्रतिष्ठ उपशमक व क्षपक तक
बन्धक हैं । अनिशुक्तिकरणवात्तकात्तके शेषमें सख्यात बहुभागोके बीत जानेपर वध
व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ १२० ॥

एद पि सुगम ।

माण-माया संजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १२१ ॥

सुगम ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा खवा बंधा ।
अणियट्ठिवादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गतूण बंधो वोच्छिज्जदि ।
एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १२२ ॥

सुगम ।

लोभसंजलणस्स को वधो को अबंधो ? ॥ १२३ ॥

सुगम ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा खवा बंधा ।
अणियट्ठिवादरद्धाए चरिमसमयं गतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ १२४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

मज्जलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिरूप उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अनिवृत्ति-
पादरकालके शेष शेषमें मर्यादात नहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं,
शेष अबन्धक है ॥ १२२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मज्जलन लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १२३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिरूप उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अनिवृत्ति-
करणपादरकालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष
अबन्धक है ॥ १२४ ॥

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव अपुव्वकरणपइडउवसमा खवा वधा ।
अपुव्वकरणद्वाए सखेज्जे भागे गत्तण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ १३२ ॥

एदस्मर्यो बुच्यदे— देवगड वेउज्वियसरीर-अगोउग देवगडपाओग्गाणुपुव्वीण पुव्व
मुदओ पच्छा नधो वोच्छिण्णा, अपुव्वरुणामजदमम्मान्डीमु वधोदयवोच्छेदुवलभादो ।
पचिंदियजादि-त्तस पादर पज्जत्त-सुमग आदेज्जाण पुव्व नधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि,
अपुव्वकरणाओगीसु नधोदयवोच्छेदुवलभादो । तेजा कम्मडय-ममचउरसमठाण वण्ण गध-रस-
फास-अगुरुवलहुव उरघाद-परघाद-उस्माय-पमत्थनिहायगइ-पतेयसरीर-धिर-सुभ-सुस्सर-
णिमिणणामाणमेव चेउ उत्तव, अपु-उरुण मजोगीसु वधोदयवोच्छेदुवलभादो ।

देवगड वेउज्वियसरीर वेउज्वियसरीर-अगोउग-देवगडपाओग्गाणुपुव्वीण परोदओ वधो,
उदए सते एदासिं वधोउरोहादो । पचिंदिय-तेजा कम्मडयसरीर-वण्ण गध रस फास अगुरुव
लहुव तम घाद-पज्जत्त-धिर मुह-णिमिणण मोदएणेव नधो, धुवोदयत्तादो । परघादुम्माय

मिध्यादष्टिमे नेरु अपूर्वकरणप्रविष्ट उपगमक व क्षारक तरु बन्धक हैं ।
अपूर्वकरणकालके सरयात बहुभाग जाकर नध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष
अधक हैं ॥ १३२ ॥

इम सूत्रका अर्थ कहते हैं—देवगति, वैत्रियिकशरीर, वैत्रियिकशरीरागोपाय
और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्विका पूर्वमें उदय और पश्चात् वध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि,
अपूर्वकरण और असयतसम्यग्दष्टि शुणस्थानोंमें क्रमशः उनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद
पाया जाता है । पचेन्द्रियजाति त्रस, वादर, पर्याप्त, सुमग और आदेय, इनका पूर्वमें
वध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और अयोगकेबली
शुणस्थानोंमें क्रमसे इनके वध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । तैजस व कामेण
शरीर, समचतुरस्रस्थान वण, गध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात,
उच्छ्वास, प्रशस्तिनिहायोगनि, प्रत्यक्षशरीर, स्थिर, शुभ, सुस्वर और निर्माण नामकर्म,
इनके भी वध व उदयका व्युच्छेद इसी प्रकार कहना चाहिये, क्योंकि अपूर्वकरण
और सयोगकाही शुणस्थानोंमें इनके वध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

देवगति, वैत्रियिकशरीर, वैत्रियिकशरीरागोपाय और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्विका
परोदय वध होता है, क्योंकि, उदयके होनेपर इनके वधका विरोध है । पचेन्द्रियजाति,
तैजस व कामेण शरीर, वण, गध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, वादर, पर्याप्त, स्थिर,
शुभ और निर्माण नामकर्मका व्योदयसे ही वध होता है, क्योंकि, वे धुवोदयी हैं । परघात,

पसत्थविहायगइ सुस्सर-आदेज्जाण सोदय परोदओ वओ, अपञ्जत्तकाले उदयाभावे पि धधुवलभादो, पसत्थविहायगइ-सुस्सराणमद्दुवोदयत्तदसणादो, आदेज्जस्म मिच्छाडड्डिपहुटि-जाव असज्जदसम्मादिट्ठि ति उदयस्म भयणिज्जत्तुलभादो, उवरि सन्वत्थ धुवोदयत्त-दसणादो च । समचउरसमठाणुवघाद-पत्तेयसरीराणमेव चेव उत्तव्व, विग्गहगदीए उदया-भावे वि धधुवलभादो, समचउरसमठाणोदयस्म भयणिज्जत्तदसणादो च । एव सुभग-पञ्जत्ताण पि वत्तव्व, पचिदिण्णसु पडिवस्खपयडीए उदयदसणादो । णव्वि पचिदियपञ्जत्तएमु पञ्जत्तस्म मोदएणेव वओ, तत्थ पडिवस्खपयडीए उदयाभावादो । एवमंद मिच्छाडड्डीण परूविद । सामणसम्मादिट्ठि-असज्जदसम्मादिट्ठीणमेव चेव परूवेदव्व । णवरि पञ्जत्तस्म मोदए-णेव' वधो । एव सम्मामिअदिट्ठिआदिउपरिमगुणट्ठाणाण पि वत्तव्व । णवरि उवघाद-परघाद-उत्ताम पञ्जत्त पत्तेयमरीराण पि मोदएणेव वधो, तत्थ अपञ्जत्तकालभावादो ।

तेजा कम्मडय-वण्ण गव-रस फाम अगुरुअलहुअ-उवघाद णिमिणाण मन्गुणट्ठाणेसु

उच्छ्वास, प्रशस्त्रविहायंगानि, सुस्सर और आदिय, इनका स्त्रोत्रय परोदय ग्रन्थ होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकार्ममें उदयके न होनेपर भी इनका ग्रन्थ पाया जाता है, प्रशस्त्र विहायंगानि और सुस्सर प्रकृतियोंका अधुनादय देखा जाता है, तथा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक आदियका उदय भजनीय अर्थान् प्रकल्पने पाया जाता है, और इनसे ऊपर सर्वत्र धुयोदय देखा जाता है । समचतुरस्त्रसंस्थान, उपघात और प्रत्येकशरीरके भी इसी प्रकार कहना चाहिये, क्योंकि, विग्रहगतिम उदयके न होनेपर भी ग्रन्थ पाया जाता है, तथा समचतुरस्त्रसंस्थानका उदय भजनीय देखा जाता है । इसी प्रकार सुभग और पर्याप्तके भी कहना चाहिये, क्योंकि, पचेन्द्रियोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय देखा जाता है । विशेष इतना है कि पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें पर्याप्त प्रकृतिका स्त्रोत्रयने ही ग्रन्थ होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । इस प्रकार यह मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणा हुई । सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार करना चाहिये । विशेषतया यह है कि पर्याप्तका स्त्रोत्रयसे ही ग्रन्थ होता है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि उपरिम गुणस्थानोंके भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उपघात, परघात, उच्छ्वास, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका भी स्त्रोत्रयसे ही ग्रन्थ होता है, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें अपर्याप्तकाल्पना अभाव है ।

तेजस ध कर्मण शरीर, जर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, धौर

गिरतरो बधो, ध्रुवबधितादो । पचिदियजादीण मिच्छाड्ढीसु मातर-गिरतरो । कथ गिरतरो ?
ण, मणस्कुमारादिदेवेषु णेरडएसु असंगेज्जयासाउअ सुहत्तिलेस्मियतिरिक्ख-मणुस्मेषु च
गिरतरबधुवलमादो । मायणादीसु गिरतरो नधो, तत्थ एइदियजादिआदीण वधाभावादो ।
एव परघादुस्साम तस-यादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण पि वत्तन्न, भेदामावादो । समचउरसमठाण-
पसन्धविहायगइ सुभग-सुस्सर आदेज्जाण मिच्छाड्ढि मासणेसु मातर गिरतरो बधो । कथ
गिरतरो ? ण, अमखेज्जवामाउण्णु एदामिं गिरतरनधुवलमादो । उव्वरि गिरतरो,
पडिक्खपयडीण वधाभावादो । धिर सुभाण मिच्छाड्ढिप्पहुडि जाअ पमत्तसज्जो त्ति सातरो,
पडिक्खपयडीण नधसभमादो । उअरि गिरतरो । देवगइ-वेउअवियसरीर वेउअवियसरीरअगोवग-
देवगइपाओगाणुपुवीण मिच्छाड्ढि-सामणेसु मातर गिरतरो, सुहत्तिलेस्मियतिरिक्ख मणुस्मेषु
गिरतरबधुवलमादो । उव्वरि गिरतरो । पच्चया सुगमा । मेम ओपमगो ।

निर्माण, इनका सब गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबधो है । पचेन्द्रिय
जातिका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शुक्रा—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, मान-कुमारादि दैव, नारकी, अमृत्यातयर्षी
युष्म और शुभ तीन लेख्यावाले तिर्यच व मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासादनमम्यदृष्टि आदि उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
इन गुणस्थानोंमें एकन्द्रियजाति आदिकोंका बन्ध नही होता । इसी प्रकार परघात,
वच्छ्रयान, प्रम, यादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरके भी कहना चाहिये, क्योंकि, इनके
कोई विशेषता नहीं है । समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोंगति, सुभग, सुस्सर और
आदयका मिथ्यादृष्टि व सासादनमम्यदृष्टि गुणस्थानोंमें सा-तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शुक्रा—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, अमृत्यातयर्षीयुष्म इनका निरन्तर
बन्ध पाया जाता है ।

उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके
बन्धन यहा अभाव है । स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तमयत तक सा-तर
बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तिका बन्ध सम्भव है । इससे ऊपर निरन्तर
बन्ध होता है । देवगति, वैविधिकशरीर, वैविधिकशरीरागोपाण और देवगतिप्रायोग्यानु
पूर्विका मिथ्यादृष्टि और सासादनमम्यदृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता
है, क्योंकि, शुभ तीन लेख्यावाले तिर्यच व मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।
इससे ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । प्रत्यय सुगम है । शेष प्रकृषणा ओषके समान है ।

आहारसरीर-आहारअंगोवंगणामाणं को बंधो को अवंधो ?

॥ १३३ ॥

सुगम ।

अपमत्तसंजटा अपुव्वकरणपइट्टुवसमा खवा वंधा । अपुव्व-
करणद्वाए संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ १३४ ॥

सुगम ।

तित्थयरणामाए को वंधो को अवंधो ? ॥ १३५ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिपहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्टुवसमा खवा
बंधा । अपुव्वकरणद्वाए संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १३६ ॥

आहारकजरीर और आहारकजरीरगोपाग नामरूपाका कौन बन्धक और कौन
अबन्धक है ? ॥ १३३ ॥

यह सुन सुगम है ।

अप्रमत्तमयत और अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । अपूर्वकरण-
कालके मर्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक है
॥ १३४ ॥

यह सुन सुगम है ।

तीर्थकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १३५ ॥

यह सुन सुगम है ।

अमयतमम्यग्दष्टिमे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तरु बन्धक हैं ।
अपूर्वकरणकालके सख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष
अबन्धक है ॥ १३६ ॥

एद पि सुगम ।

कायाणुवादेण पुढरिकाइय-आउकाइय वणप्फादिकाइय णिगोद जीव वादर सुहुम पज्जत्तापज्जत्ताण वादरवणप्फादिकाइयपत्तेयसरीर-पज्जत्तापज्जत्ताणं च पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तभगो ॥ १३७ ॥

एदमपणासुत्त नेमामामिय, तेणेदेण सुइदत्थाण परूणणा कीरदे— तत्थ ताव पुढरिकाइयाण भण्णमाण पचणाणारणीय णउदसणाउरणीय-मादामाद-मिठत्त-सोलसकमाय णवणोक्कमाय तिरिस्सुआउ मणुस्माउ तिरिस्सगइ मणुस्सगइ एइदिय श्रीइदिय-तीइदिय-चउरि दिय पंचिदियजादि ओगालिय तेजा कम्मइयमरीर-छमठण-ओगालियमरीरअगोउग-छमघइण वण्ण गध रम फास तिरिक्खगइ मणुमगइपाओग्माणुपुत्ती-अगुरुलहुन उउचाद परचाद उस्साम आणुवुजोउ दोनिहायगइ-तम वानर वादर सुहुम पज्जत्त अपज्जत्त-पत्तेय-माहारणसरीर धिराधिर-सुहासुह सुभग [दुभग] सुस्सर दुस्सर अदेउच अणादेउज-जमकित्ति-अजसकित्ति णिमिण णीवु चागोद-पचतराइयपयडीओ पुढरिकाइएरि उज्जमाणाओ उदेत्ता । एत्थ पधोदयवोच्छेद-विचारो णत्थि, तद्दुभयसो छेदाभावाद्दो ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

कायमार्गणासुमार पृथिवीकायिक, अष्कायिक, वनस्पतिकायिक और निगोद जीव वादर सुक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त तथा वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त जीवोक्की परूणणा पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान है ॥ १३७ ॥

यह गणणासूत्र देवगामशक है, अत एव इन्में सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं—उनमें पहले पृथिवीकायिक जीवाकी प्ररूपणा करत समय पाच ज्ञानाउरणीय, नौ वर्शनाउरणीय, साता व असाता वेदनीय मिथ्याउ, सोलह कषाय, नौ नोक्कमाय, तिर्यगायु मनुष्यायु, तिर्यगगति, मनुष्यगति, एकाद्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, जीवारिक, तेजस व कामण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहनन, उण, ग ध, रम, स्पश, तिर्यगगति व मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आनाप, उद्योन, दो निहायोगनिया, वस, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पमान, अपमान, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अनुभ, उच्चगोत्र और पाच अतराय प्ररतिया पृथिवीकायिक जीवों द्वारा बध्यमान स्थापित करना चाहिये । यहा वच और उदके छेदका विचार नहीं है, कयाकि, दोनोंके छ्युच्छेदका यहा अभाव है ।

पचणाणारणीय च उदंसणाणणीय-मिच्छत-णउमयनेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एहदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गध रम-फाम-अगुरुअल्लुअ-वावर-यिगयिर-सुहामुह-दुभम-अणादेज्ज णिमिण णीचागोद-पचतराडयाण सोदओ वधो, एत्थ एदासिं भुजोदयत्तादो । इत्थि-पुरिसनेद मणुस्साउ-मणुस्सगइ-वीडदिय-तोडदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-पचमठाण-ओरालियसरीरअगोत्रग ठसवडण-मणुसगडपाओग्माणुपुत्री-साहारण-दोविहायगइ-तस-सुभग-सुस्मर-दुस्मर-आदेज्जुचागोदाण पगेदओ वधो, एदामिमेत्थ उदयत्रोहादो । पचदसणा-वरणीय-सादामाद-मोलमकमाय ठणोकसाय-नादर मुहुम-पज्जत्तापज्जत-जमकित्ति-अजस-कित्तीण सोदय परोदओ वधो, अद्दुवोदयत्तादो । ओरालियसरीर-हुडमठाण-उनवाद-पत्तेय-मरीर-आदानुज्जोनाण पि सोदय-परोदओ, निग्गहगदीए उदयाभावादो अद्दुवोदयत्तादो च । परघादुस्सामाण पि सोदय-परोदओ वधो, एदासिमुदयाणुदयसहिदपज्जत्तापज्जतद्धासु वधदमणादो । तिरिक्खगडपाओग्माणुपुत्रीए सोदय परोदओ वधो, सोदयाणुदयविग्गहानिग्गह-गदीसु वधुवलभादो ।

पचणाणारणीय णउदसणाणणीय-मिच्छत सोलसकमाय-भय-दुगुठा-तिरिक्ख-मणु-

“ “ “

पाच ज्ञानारण, चार दर्शनावरण, भिव्यात्त, मनुसरुवेद, तिर्यंगात्त, तिर्यग्मात्ति, ऐकेन्द्रिय जाति, तज्जस च कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्लु, स्थावर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ, दुर्भग, अनादय, निर्माण, नीचगोत्र और पाच अन्तराय, इनका स्त्रोदय वन्ध होता है, क्योंकि, यहा ये प्रकृतिया ध्रुवोदयी हैं । लोचिद, पुण्यवेद, मनुष्यात्त, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, पाच संस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, उह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, साधारणशरीर, दो विहायोगतिया, व्रस, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदिय और उच्चगोन, इनका परोदयस्ते वन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनके उदयका विरोध है । पाच दर्शनावरणीय, सात्ता च असात्ता धेदमीय, सोलह कपाय, उह नोकपाय, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, यशकृति और अयशकृति का स्त्रोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी हैं । औदारिकशरीर, हण्टसस्थान उपघात, मत्तेयशरीर, आताप, ओर उद्योतका भी स्त्रोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है, तथा ये अध्रुवोदयी भी हैं । परघात ओर उच्छ्वासका भी स्त्रोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, क्रमश इनके उदय और अनुदय सहित पर्याप्त च अपर्याप्त कालोंमें उनका वन्ध देखा जाता है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्विका स्त्रोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, क्रमश अपने उदय च अनुदय सहित विग्रह च अविग्रह गतियोंमें उनका वन्ध पाया जाता है ।

पाच ज्ञानारणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्त, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा,

स्साउ ओरालिय तेजा कम्मडियसरीर उण्ण गव-रस फास अगुसुलहुअ उअघाणि मिमिण पचतरा-
इयाण निरतरो वधो, एगममण्ण वधुअरमाभाशदो धुअरधित्तादो च । सात्तामाद सत्तणोअसाय
मणुमगइ एइदिय वीडिअ तीइदिय चउडिदिय पचिदियजादि उअउण ओरालियमरीअओवग-
छसघटण मणुमगइपाओग्गाणुपु-री आदाउज्जोअ दोअिहायगइ तस आअर सुअम अपज्जत्त साहा-
रणमरीर विराथिर सुभासुअ सुभग दुभग सुस्सर दुस्सर आदेज्ज जमकित्ति अजसकित्ति -उअचा-
ओटाण सातरो वधो, एगममण्ण वधुअरमदमणादो । तिरिअगइ-तिरिअगइपाओग्गाणुपुव्वी
णीचाओदाण सातर निरतरो । कअ निरतरो ? ण, तेउ-आउअइअहिओ पुअअिआइअसुअण्ण
निरतरअअलभादो । पअादअ्मास आदर पज्जत्त अत्तेअसरीराण पि मातर निरतरो वधो । अथ
निरतरो ? ण, देअण पुअअिआइअसुअण्ण मुहुत्तस्मत्ते निरतरअअलभादो ।

एअमि पअया एअदियपअअहि अमा । तिरिअआउ तिरिअगइ एइदिय-वीइदिय

नियगायु, मनुअ्यायु, ओअरिअ, तेअस अ कामण गरीर, वण, ग अ, रस, अअर्श, अगुअअधु,
अअत्त, निमाण आअ पाअ अत्तराय अअरा निरतर अअ होता है, क्योंकि, एक
समयसे अने अअत्रिअमअ अमाच है, तअये धुअरधी भी है । साता अ असाना
अदनीय, सात नोअपाय, मनुअ्यगति, अकअिअ, अीअिअ, अीअिअ, अतुरिअिअ,
अचेअिअ जाति, अह सस्थान, अीअरिअशरीरागापाग, अह सहनन, मनुअ्यगति
अत्योअ्यानुअूर्ती, अताप, उअोन, अे विहायोगनिया, अम, अ्यावर, अूअम, अपर्याअ,
आअरणशरीर अिअर, अरिअर, अुअ, अगुअ, सुभग, दुभग, सुस्सर, दुस्सर, आदेअ,
अशरीरिअ, अयशरीरिअ ओअ उअगोअअ अा तर अ अ होता है, क्योंकि, अअ समयसे
अनअ अअत्रिअम अेअा जाता है । नियगति, तियगतिअत्योअ्यानुअूर्ती ओअ अीअगोअअ
सातर निरतर अ अ होता है ।

शरीर—निरतर अ अ कैसे होता है ?

अमाधान—अह अीअ नहीं, अ्याअि तेअ अ आयु अथिकोंअेसे अृअिअीअथिकोंअे
उत्पन अुअ अीअोंअ निरतर अअ पाया जाता है ।

परघात, उअ्अास, आदअ, पर्याअ ओअ अत्येअशरीरअ भी सातर निरतर
अअ होता है ।

शरीर—निरतर अअ कैसे होता है ?

अमाधान—अह अीअ नहीं, क्योंकि, अृअिअीअथिकोंअे उत्पन अुअ अीअोंअे
अतमुहत तक निरतर अअ पाया जाता है ।

अन अतनियोंअे अत्यय अत्येअिअप्रत्ययोंअे अमान है । तिर्यगायु, तियगति,

तीव्रदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुवी आदावुज्जेन-धानर-सुहुम-साहारप्पसरीराणि
तिरिक्खगइसजुत्त पज्जति । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुमगइपाओग्गाणुपुवी-उच्चागोदाणि मणुस-
गइसजुत्त पज्जति । सेसाओ पयडीओ तिरिक्ख मणुमगइमजुत्त । तिरिक्खा सामी । वधद्धाण
सुगम । एत्थ ववरोच्चेदो णत्थि । धुववधीण चउच्चिहो ववो । सेसाण सादि-अद्धवो ।

चादरपुढनिकाइयाणमेव चेव वत्तव । णवरि चादरस्म सोदएण ववो, सुहुमस्स
परोदएण । चादरपुढनिकाइयपज्जत्ताण पि एव चेव वत्तव । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ,
अपज्जत्तस्स परोदओ ववो । चादरपुढनिकाइयअपज्जत्ताण पि चादरपुढनिकाइयभगो । णवरि
पज्जत्त धीणगिद्धित्थि परघादुस्साम-आदावुज्जेन-जमकित्तीण परोदओ, अपज्जत्त-अजसकित्तीण
सोदओ ववो । परघादुस्साम तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण सातरो ववो, अपज्जत्तएसु
देवाणसुवादाभावादो । पच्चया सत्तत्तीस, ओरालियकायजोगपच्चयम्माभावादो ।

सुहुमपुढनिकाइयाण पुढनिकाइयभगो । णवरि चादर आदाउज्जेन-जसकित्तीण
परोदओ, सुहुम-अजमकित्तीण सोदओ ववो । परघादुस्साम चादर-पज्जत्त-पत्तेयमरीराण सातरो

एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत,
स्थानर, सूक्ष्म और सधारणशरीर, इनको तिर्यग्गतिसे संयुक्त पावते हैं । मनुष्यायु,
मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योगोत्पत्ति मनुष्यगतिसे संयुक्त पावते हैं ।
शेष प्रकृतियोंको मनुष्य व तिर्यग्गतिसे संयुक्त पावते हैं । नियच स्वामी है । उन्धाध्वान
सुगम है । यहा बन्ध-युत्तेद है नहीं । धुववधी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध
होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अद्युय बन्ध होता है ।

चादर पृथिवीकायिकोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष
इतना है कि चादरका स्तोदय और सूक्ष्मता परोदयसे बंध होता है । चादर पृथिवीकायिक
पर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये । विशेषता इतनी है कि पर्याप्तका
स्तोदय और अपर्याप्तका परोदय बंध होता है । चादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंकी
भी प्ररूपणा चादर पृथिवीकायिकोंके समान है । विशेषता यह है कि पर्याप्त, स्थान-
गृह्णित्य, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत और यशस्वीतिता परोदय, तथा अपर्याप्त
और अयशस्वीतिता स्तोदय बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास, व्रम, चादर, पर्याप्त
और प्रत्येकशरीरका सात्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तोंमें देवोंकी उत्पत्ति नहीं
होनी । प्रत्येक संतीम होते हैं, क्योंकि, उनके औदारिककाययोग प्रत्येकका अभाव है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंकी प्ररूपणा पृथिवीकायिकोंके समान है । विशेष यह
है कि चादर, आताप, उद्योत और यशस्वीतिता परोदय, तथा सूक्ष्म और अयशस्वीतिता
स्तोदय बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास, चादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सात्तर

धधो, सुहुमेइदिएसु देवाणमुत्तादाभातादो णित्तमपधामाया । सुहुमपुढनिकाइयपज्जत्ताणमेव
चेव वत्तव । णवरि पज्जत्तस्म सोदओ, अपज्जत्तस्म परोदओ वधो । सुहुमपुढनिकाइयअप-
ज्जत्ताणमेव चेव वत्तव । णवरि अपज्जत्तस्म सोदओ, पज्जत्त वीणगिद्वितिय परघादुस्सामाण
परोदओ वधो । मन्वआउत्ताइयाण जहापन्चासण्णपुढनिकाइयमगो । णवरि आदावस्स
परोदओ वधो, पुढनिकाइय मोत्तण अण्णत्थ आदावस्सुदयामातादो ।

पचणाणावरणीय-णउदसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-मोलमकसाय णवणोक्कमाय
तिरिक्खाउ मणुस्साउ तिरिक्खगइ-मणुमगइ पचजादि-ओराणिय तेजा-कम्मइयमरीर-छसठाण-
ओराणियसरीरअगोवग छसपण्ण-वण्णचउत्त-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्माणुपुत्ती-अगुरुव-
लहुवचउत्त-आदाउत्तजोव-दोविहायगइ तस धारर धादर सुहुम पज्जत्तापज्जत्त पतिय साहारण-
सरीर थिराथिर सुहासुह सुधम दुधम सुस्सर दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-असकित्ति-अजसकित्ति-
णिमिण णीवुच्चागोद पचतराइयपयडीओ ठणिय वण्णफदिक्काइयाण परवणा कीरदे-
धधोदयाण पुत्तापुत्तकालगयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, वधोदयाणमेत्थ वोच्छेदामावादो ।

धध होता है, क्योंकि, सूक्ष्म एकोनविंशत्यो देवोंकी उत्पत्ति न होनेसे यहा निरन्तर उधका
अभाव है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोकी इसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिये ।
विशेषता इतनी है कि पर्याप्तता सेोदय और अपर्याप्तता परोदय धध होता है । सूक्ष्म
पृथिवीकायिक अपर्याप्तोकी भी इसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना
है कि अपर्याप्तता सेोदय और पर्याप्त, स्थानगृह्णय, परघात व उच्छेदवासका परोदय
धध होता है । सब अपकायिक जीवोंकी प्ररूपणा अपनी अपनी प्रत्यासत्तिके अनुसार
पृथिवीकायिकोंके समान है । विशेषता यह है कि आनापका परोदय धध होता है,
क्योंकि, पृथिवीकायिकोंको छोडकर अन्यत्र आताप कर्मका उदय नहीं होता ।

पाच ज्ञानावरणीय, नो दशनावरणीय, साता व असाता वेदनीय मिथ्याय,
सोलह कपाय, नो नोक्कपाय, तियगायु, मनुग्यायु, तियग्गति, मनुप्पगति, पाच जातिया
औदारिक, तेजस व कामण शरीर, उह सस्सन, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहनन,
पणादिक चार, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुप्पगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु आदिक
चार, आताप, उद्योत, दो विहायेगतिया, वस, स्थार, तादर, सूधम, पर्याप्त, अपर्याप्त,
प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुधम, दुधम, सुस्सर, दुस्सर,
आदेय, अनोदय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, उच्चगोत्र और पाच अ तराय
प्रवृत्तियोंको स्थापित कर जनस्पनिकायिकोंकी प्ररूपणा करते हैं— धध और उदयके पूर्व
व अपव कालगत युच्छेदकी परीक्षा नहा है, क्योंकि, यहा व ध और उदयके व्युच्छेदका
अभाव है ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-मिच्छत्-णुससयेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्सगइ-
 एइदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुलहुव-यावर-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-
 अणादेज्ज-णिमिण-गीचागोद पचतराइयाण सोदओ वधो, अत्यगईए धुवोदयत्तादो । इत्थि
 पुरिसवेद मणुसाउ मणुसगइ-वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पचिंदियजादि पचसठाण-ओरालिय-
 सरीरअगोवग-छसघडण मणुसगइपाओग्माणुपुच्ची आदान-दोविहायगइ-तस सुभग-सुस्सर दुस्सर-
 आदेज्जुच्चागोदाण परोदओ वधो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोलमकसाय-छण्णोकसाय-
 हुडसठाण-ओरालियसरीर-तिरिक्खाणुपुच्ची-उवघाद-परघादुस्सासुज्जोव-नादर-सुहम-पज्जत्ता-
 पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-जसकित्ति-अजमकित्तीण सोदय-परोदओ वधो ।

पचणाणावरणीय मिच्छत्-सोलसऊसाय-भय-दुगुछा-तिरिस्ख मणुसाउ-ओरालिय-तेजा-
 कम्मइयसरीर वण्णचउक्क अगुरुलहुव-उवघाद-णिमिण-पचतराइयाण णिरतरो वधो । सादासाद-
 सत्तणोकमाय-मणुस्सगइ-एइदिय वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पचिंदियजादि-छसठाण-ओरा-
 लियसरीरअगोवग-छसघडण मणुसगइपाओग्माणुपुच्ची-आदावुज्जोव-दोविहायगदि-तम-यावर-
 सुहम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग सुस्सर-दुस्सर-अदेज्ज-अणादेज्ज-

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, तिर्य-
 गगति, एकेन्द्रिय जाति, तेजस व कामर्ण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, स्थावर, स्थिर,
 अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तरायका स्वोदय
 वन्ध होता है, पर्याप्ति, अर्थापत्तिसे ये प्रकृतिया ध्रुवोदयी ह । स्त्रीवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु,
 मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, पांच सस्थान, औदारिक-
 शरीरागोपाग, उह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, दो विहायोगतिया, व्रस
 सुभग, सुस्सर दुस्सर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका परोदय बन्ध होता है । पांच
 दर्शनावरणीय साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय, छह नोकपाय, हुडसस्थान,
 औदारिकशरीर, तिर्यगानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, वादर, सूक्ष्म,
 पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका स्वोदय
 परोदय बन्ध होता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु,
 औदारिक, तेजस व कामर्ण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और
 पांच अन्तरायका निरंतर बन्ध होता है । साता व असाता वेदनीय, सात नोकपाय,
 मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, छह सस्थान,
 औदारिकशरीरागोपाग, उह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो
 विहायोगतिया, व्रस, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,
 सुभग, दुर्भग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका

जसकित्ति अजसकित्ति उच्चागोदाण भानरो वधो, एगसेमएण बधुवरमुणलभादो । तिरिक्खगइ-
निरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बी णीचागोदाण सातर-णिरतरो । कुदो ? तेउ गउकाइएहिंतो वणफदि
काइएमुप्पण्णाण मुहुत्तस्सतो^१ णिरतरनधुवलभादो । परघादुस्सास-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण
सातर णिरतरो वधो । कप्प णिरतरो ? ण, देवेहिंतो णणफदिकाइएमुप्पण्णाण मुहुत्तस्सतो
णिरतर नधुवलभादो । पच्चया सुगमा । गइसजुत्तादिउवरिमेइइदियपरूवणातुल्ला ।

एव वाटरवणफन्निक्काइयाण च वत्तन्^२ । णरि वाटरस्स सोदओ वधो, सुहुमस्स परो
दओ । वादर [णणफदि-] पज्जत्ताण वादरणणफदिभगो । णरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स
परोदओ वधो । वादरणणफदिअपज्जत्ताण वादरेइदियअपज्जत्तमगो । सुहुमणणफदिपज्जत्तापज्जत्ताण
सुहुमेइदियपज्जत्तापज्जत्तमगो^३ । तसअपज्जत्ताण पचिंदियअपज्जत्तमगो । णरि वाइदिय-
तीइदिय चउरिंदिय पचिंदियाण सोदय परोदओ वधो । णिगोदजीयाण तेसिं^४ वादर सुहुम

—

सा तर व ध होता है, क्योंकि इनका एक समयमें अधिष्ठान पाया जाता है । तिर्यग्गति,
निर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नाचगोत्रा सातर निरन्तर व ध होता है, क्योंकि, तेन
व पायु कायिकोंमेंसे वनस्पतिकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर व ध
पाया जाता है । परधान, उद्घास, वादर, पयाप्त और प्रत्येकशरीरका सातर निरन्तर
व ध होता है ।

शरी—निरन्तर व ध केने होना है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, देवोंमेंसे वनस्पतिकायिकोंमें उत्पन्न हुए
जीवोंके अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर व ध पाया जाता है ।

प्रत्यय सुगम है । गतिसयुक्तता गति उपरिम प्ररूपणा पदेन्द्रिय प्ररूपणाके
समान है ।

इसी प्रकार वादर वनस्पतिकायिकोंके भी कहना चाहिये । विशेषता केवल
इतनी है कि वादरका स्त्रोत्र व ध होता है और सूक्ष्मता परोदय । वादर वनस्पति
कायिक पयान्तोंकी प्ररूपणा वादर वनस्पतिकायिकोंके समान है । विशेषता यह है कि
पयान्तका स्त्रोत्र और अपयान्तका परोदय व ध होता है । वादर वनस्पतिकायिक
अपयान्तोंकी प्ररूपणा वादर पचेन्द्रिय अपयान्तोंके समान है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक
पयान्त व अपयान्तोंकी प्ररूपणा सूक्ष्म पचेन्द्रिय पयान्त व अपयान्तोंके समान है । व्रस
अपयान्तोंकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय अपयान्तोंके समान है । विशेषता यह है कि द्वीन्द्रिय,
त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पचान्द्रियका स्त्रोत्र परोदय व ध होता है । निगोद जीव व

१ अत्रि 'मुहुत्त' इति पाठ ।

२ अत्रि 'व वत्तन्', जायतो 'वच-व' इति पाठ ।

३ अत्रि 'सुहुमदिपज्जत्तमगो' इति पाठ ।

४ अत्रि 'तसि' इति पाठ ।

चउरिंदिय पंचिदियाण सोदय-परोदओ वधो । तस-चादराण सोदओ चेव । एइदिय-थावर-सुहुम-साहारणादावाण परोदओ चेव वधो । अवसेसाण पंचिदिय-पंचिदियपञ्जत्ताण उति-निहाणेण वत्तव्व ।

**जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि कायजोगीसु ओघं
णैयव्वं जाव तित्थयरेत्ति ॥ १४० ॥**

ओघम्मि उत्तसत्तारसण्ह सुत्ताणमत्थो ससुत्तो एत्थ णिरवयवो वत्तव्वो, भेदाभावादो । णवरि पच्चयगदो भेदो अत्थि त परूवेमो— मणजोगे णिरुद्धे छाएत्तालीस एकेत्तालीम सत्ततीस [सत्ततीस] वत्तीस उणवीस^१ सत्तारस सत्तारस एक्कारस दस णव अट्ठ सत्त छ पच [पच चत्तारि चत्तारि] दोण्णि मिग्गइड्डिप्पहुड्डिमन्त्रगुणट्ठाणाणं जहाकमेण एदे पच्चया होंति । अण्णो वि विसेसो मणजोगे णिरुद्धे सते अत्थि— चटुजादि चत्तारिआणुपुव्वी-आदार थावर-सुहुम-अपञ्जत्त साहारणाण परोदएण^२, उवघाद-परघादुस्मास-तस-चादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर-पंचिदियजादीण सोदएण वधो ति वत्तव्व । एव चेव चटुण्ह मणजोगाण परूवणा

हैं— छीन्द्रिय, व्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पचेन्द्रियका स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ब्रस और यादरका स्वोदय ही बन्ध होता है । एकेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण और आतापका परोदय ही बन्ध होता है । दोष प्रकृतियोंके पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्ररूपणाके अनुसार कहना चाहिये ।

योगमार्गणानुसार पाच मनोयोगी, पाच वचनयोगी और काययोगियोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान जानना चाहिये ॥ १४० ॥

ओघमें कहे हुए सत्तरह (५ वें सूत्रसे ३८ में सूत्र तक १७+१७=३४) सूत्रोंका अर्थ ससूत्र यहा सपूर्ण कहना चाहिये, फ्योंकि, ओघसे यहा विशेषताका अभाव है । विशेष यह है कि प्रत्ययगत जो कुछ भेद है उसे यहा कहते हैं— मनोयोगके निरुद्ध होने अर्थात् उसके आश्रित व्याख्यान करनेपर छयालीस, इक्तालीस, सेंतीस, [सेंतीस] वत्तीस, उणीस, सत्तरह, सत्तरह, ग्यारह, दश, नौ, आठ, सात, छह, पाच, [पाच, चार, चार] और दो, इस प्रकार ये क्रमसे मिथ्यादृष्टि आदि सय गुणस्थानोंके प्रत्यय होते हैं । मनोयोगके निरुद्ध होनेपर और भी विशेषता है— चार जातिया, चार आनुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनका परोदयसे तथा उपघात, परघात, उच्छ्वास, ब्रस, यादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और पचेन्द्रिय जातिका स्वोदयसे बन्ध होता है, ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकार ही चार मनोयोगोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

१ अतिष्ठ ' सप्तारस ' इति पाठ ।

२ मण-वयणमदणे ण हि ताविगिगिल च थावरायवओ ॥ गो क ३१०.

मुदयामात्रो, तत् तदणुमलभादो । न तेउकाइण्णु तदमात्रो, पचस्तेणुमलभमाणतादो ?
एत्थ परिहारो बुचंहे — न ताव तेउकाइण्णु जादाओ अत्थि, उण्हण्हण्णु तथाभादादो ।
तेउमिहि वि उण्हत्तमुमलभड च्चे उमलभड णाम, [न] तस्म आदानमण्णो, किंतु
तेजामण्णा, “ मूलोण्णवती प्रभा तेज, सत्तांगयाप्युण्णवती प्रभा आताप, उण्णरहिता
प्रभोयोत, ” इति तिण्ह भेदोमलभादो । तम्हा न उज्जेओ वि तत्थत्थि, मूलुण्हुज्जेओमस्स
तेजवण्णसादा । एत्तिओ चेर भेदो, न अण्णत्थ कथ वि । नगरे मन्त्रामि पयडीण
तिरिस्सगइससुत्तो धयो ।

तसकाइय तसकाइयपज्जत्ताणमोघ णेदव्व जाव तित्थयरे त्ति

॥ १३९ ॥

एद देसामामियण्णसुत्त, तेणेदेण सूइदत्थपक्खणा कीरदे — गीइदिय तीइदिय

उनमें यह पाया नहीं जाता । किंतु तेजसायिक जीयोंमें उन मेंनोंका उदयामात्र सम्भव
नहीं है, क्योंकि, यहा उनका उदय प्रत्यक्षमें देखा जाता है ।

समाधान — यहा उक्त शकाका परिहार कहते हैं — तेजसायिक जीयोंमें आतापका
उदय नहीं है, क्योंकि, रहा उण्ण प्रभाका अभाव है ।

शका — तेजसायमें भी ता उण्णता पायी जाती है, फिर यहा आतापका उदय
क्यों न माना जाय ?

समाधान — तेजसायमें भले ही उण्णता पायी जाती है, परंतु उसका नाम आताप
[नहीं] हो सकता, किन्तु ‘तेज’ सदा होगी, क्योंकि, मूलमें उण्णवती प्रभाका नाम तेज,
सत्तांगयापी उण्णवती प्रभाका नाम आताप, और उण्णता रहित प्रभाका नाम उद्योत है,
इस प्रकार तीनोंके भेद पाया जाता है ।

इसी कारण रहा उद्योत भी नहीं है, क्योंकि, मूलोण्ण उद्योतका नाम तेज है [न
वि उद्योत] । केवल इतना ही मन् है, और वहाँ भी कुछ भेद नहीं है । विशेष इतना है कि
सब प्रदितियोंका तिपग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है ।

तसकायिक और तसकायिक पर्याप्तोंके तीर्थकर प्रकृति तत्त ओषके ममान
हे नाना चाहिये ॥ १३९ ॥

यद देशामशर अण्णसूत्र है, इसलिये इससे सूचिन अर्थकी प्ररूपणा करते

१ प्रतिशु ‘ मुदयामात्रादा ’ इति पाठ ।

२ सूउण्हण्णु अर्था अताओ हादि उण्हण्हण्णु । जाइव तत्थि उण्हण्हण्णु हु उजाओ ॥

क ३३

३ अ-आपयो ‘ वृण्णसुत्त ’ इति पाठ ।

ओघमि 'अवसेसा अवधा' ति उक्त । एत्थ पुण 'अवंधा णत्थि' ति वत्तव्व,^१ जेतप्पणादो । ण च सजेमिंसे अजेमा होंति, विप्पडिसेहादो । जदि एत्थियमेत्तो चेव भेदो तो एत्थियमेत्ते णिहेसो किण्ण कदो ? ण एस दोसो, थूलबुद्धीणं पि सुद्धग्गहणद्ध तथोवेदसादो ।

ओरालियकायजोगीणं मणुसगइमंगो ॥ १४२ ॥

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय पचतराइयाण वधोदयवोच्छेदे मणुसगदीदो णत्थि विसेसो, विसेमकारणाभावादो । जमकित्ति-उच्चागोदेसु विसेसो अत्थि, तेसिमेत्थुदयवोच्छेदा-भावादो । मणुसगदीए पुण उदयवोच्छेदो अत्थि, अजोगिचरिमसमए मणुसगदीए सह एदासिमुदयवोच्छेददसणादो । सोदय-परोदय-सातर णितरपरिक्खासु णत्थि भेदो, भेदकार-णाणुवलमादो । पच्चएसु अत्थि भेदो, ओरालियमिस्स कम्मइय वेउअ्वियदुग-चदुमण-वधिपच्चएहि निणा मिच्छाइडिहि सासणे च जहाक्रमेण तेतालीस अट्ठतीसपच्चयदसणादो,

ओघमें 'अवशेष अग्रन्धक है' ऐसा कहा गया है । परन्तु यहा 'अग्रन्धक कोई नहीं है' ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, यहा योगकी प्रधानता है । और सयोगियोंमें अयोगी होते नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है ।

शुका—यदि केवल इतनी मात्र ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, थूलबुद्धि शिष्योंके भी सुखपूर्वक ग्रहण हो, एतदर्थ उक्त प्रकार उपदेश किया गया है ।

औदारिककाययोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इन प्रकृतियोंके पन्धोदयव्युच्छेदमें मनुष्यगतिके कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, विशेष कारणोंका यहा अभाव है । यशस्वीति और उच्चगोचरमें विशेषता है, क्योंकि, यहा उनके उदय-व्युच्छेदका अभाव है । परन्तु मनुष्यगतिके इनका उदयव्युच्छेद है, क्योंकि, अयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उदयव्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय परोदय और सान्तर निरन्तर बन्ध की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, यहा विशेषताके उत्पादक कारणोंका अभाव है । प्रत्ययोंमें विशेषता है, क्योंकि औदारिक-मिथ, कामेण, धैर्यमिथकद्विक, चार मनोयोग और चार वचनयोग प्रत्ययोंके जिना मिथ्या एहि और सासादन गुणस्थानमें यथाक्रमसे तेतालीस और अट्ठतीस प्रत्यय देखे जाते हैं,

कायव्या । णरि एनकम्हि मणनेगे निरुद्धे अवमेमसज्जोगा मूलोद्युत्तरपञ्चएसु अण्णेदव्या । अवसेसा निरुद्धमणनेगीण पञ्चया होति । णत्थि अण्णत्थ कथं वि विमेमो ।

वचिजोगीणमेव चेव वत्तव, सानर-णित्तर सोदय परोदय सामितपञ्चयादिहि मणनेगीहिंता वचिजोगीण भेदाभावादो । णरि चीडदिय तीडदिय चउत्तिदिय-पचिदियाण सोदय-परोदओ उयो ति वत्तव । अमच्च मोमवचिनेगीण वचिजोगिभगो । णरि सञ्चगुणाण उत्तरपञ्चएसु अमच्च मोसवचिनेगी मोत्तण सेसमवजोगा अण्णेदव्या । सच्च-मोस सच्चमोम वचिनेगीण मच्च मोम मच्चमोममणनेगीभगो, विमेमाभावादो ।

कायजोगीण वि ओउभगो चेव । णरि सञ्चगुणद्वानाणमोघपञ्चएसु मण-वचिजोगद्व पञ्चया अण्णेदव्या । मचोगिपञ्चएसु दोहोमण वचिजोगपञ्चया अवणेदव्या । णत्थि अण्णत्थ विसेमो । ओघम्मि पुव्वुत्तमत्तरमसुत्तेसु चउत्थसुत्तम्मि भेदपदुप्पायणद्वमुत्तरसुत्त भणदि—

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवधो ? मिच्छाद्विट्ठिपहुडि जाव सजोगिकेवली वधा । एदे वंधा, अवधा णत्थि ॥ १४१ ॥

-विशेषता यह है कि एक मनोयोगके निरुद्ध होनेपर शेष सब योगोंको मूलोद्य उत्तर प्रत्ययोंमें कम करना चाहिये । इस प्रकार शेष रहे निरुद्धमनोयोगियोंके प्रत्यय होते हैं । अन्यत्र ओर कहाँ विशेषता नहीं है ।

वचनयोगियोंके भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये, क्योंकि सात्तर निरन्तर, सोदय परोदय, इत्यादि और प्रत्ययादिकोंकी अपेक्षा मनोयोगियोंके वचनयोगियोंके कोई भेद नहीं है । विशेष इतना है कि द्विन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय आतिका सोदय परोदय उच्च होता है ऐसा कहना चाहिये । असत्यमृदावचनयोगियोंकी प्ररूपणा वचनयोगियोंके समान है । विशेषता यह है कि सब गुणस्थानोंके उत्तर प्रत्ययोंमेंसे असत्यमृदावचनयोगको छोड़कर शेष सब योगोंको कम करना चाहिये । सत्य, मृदा और नयमृदा वचनयोगियोंकी प्ररूपणा सत्य, मृदा और सत्यमृदा वचन योगियोंके समान है, क्योंकि, कोई विशेषता नहीं है ।

काययोगियोंकी भी प्ररूपणा ओघके समान ही है । विशेष इतना है कि सब गुणस्थानोंके ओघ प्रत्ययोंमेंसे चार भनायोग और चार वचनयोग, इस प्रकार आठ प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । अन्यत्र विशेषता नहीं है । ओघमें-पूर्वोक्त सत्तरव सत्त्वोंमें चतुष सूत्रमें ओघ प्ररूपणाय उत्तर सूत्र कहने हैं—

साना वेदनीयका कौन बंधक और कौन अवधक है ? मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेतली तर बंधक है । ये बन्धक हैं, अवधक नहीं हैं ॥ १४१ ॥

१ प्रविश 'अजित' इति पाठ ।

ओधम्मि 'अवसेसा अनधा' ति उच्च । एत्थ पुण 'अनधा' ति वत्तन्व, जोगप्पणादो । ण च सज्जेगसु अजोगा हँति, विप्पडिमेहादो । जदि एत्थियमेत्तो चेव भेदो ते एत्थियस्सेन णिद्देसो किण्ण कदो ? ण एस दोसो, थूलुद्धीण' पि सुहग्गहणइ तथेवेदसादो ।

ओरालियकायजोगीणं मणुसगइभंगो ॥ १४२ ॥

पंचणागरणीय-चउदसणावरणीय पचतराह्याण धोदयवोच्छेद मणुसगदीदो णत्थि विसेमो, विसेसकारणामादो । जसकित्ति-उच्चगोदेसु विसेसो अत्थि, तेसिमत्थुदयवोच्छेदा-भावादो । मणुसगदीए पुण उदयवोच्छेदो अत्थि, अजोगिचरिमसमए मणुसगदीए सह - एदासिमुदयवोच्छेददसणादो । सोदय-परोदय-मातर णितरपरिक्खामु णत्थि भेदो, भेदकार-णाणुवलभादो । पच्चएसु अत्थि भेदो, ओरालियमिस्स कम्मइय-वेउज्वियदुग-चदुमण-वचिपच्चएहि विणा मिच्छाइडिग्गि मासणे च जहाकमेण तेदालीम अट्ठसीसपच्चयदसणादो,

ओधम्मं 'अत्रशेष अग्रन्धक है' ऐसा कहा गया है । परन्तु यहा 'अग्रन्धक कोई नहीं है' ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, यहा योगकी प्रधानता है । और सयोगियोंमें अयोगी हात नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है ।

शुक्रा— यदि केवल इतनी मान ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, स्थूलबुद्धि शिष्योंके भी सुखपूर्वक ग्रहण हो, एतदर्थ उक्त प्रकार उपदेश किया गया है ।

औदारिकरूपयोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तराय, इन प्रकृतियोंके पधोदयव्युच्छेदमें मनुष्यगतिके कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, विशेष कारणोंका यहा अभाव है । यदाकीर्ति और उच्चगोत्रमें विशेषता है, क्योंकि, यहा उनके उदय व्युच्छेदका अभाव है । परन्तु मनुष्यगतिके इनका उदयव्युच्छेद है, क्योंकि, अयोगकेजली गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उदयव्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय परोदय और सान्तर निरन्तर उच्च की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, यहा विशेषताके उत्पादक कारणोंका अभाव है । प्रत्ययोंमें विशेषता है, क्योंकि औदारिक-मिथ, कामेण, वैत्रियिकद्विष, चार मनोयोग और चार वचनयोग प्रत्ययोंके बिना मिथ्या एहि और सामादन गुणस्थानमें यथाक्रमेण तेदालीम और अट्ठसीस प्रत्यय देखे जाते हैं,

दुग्धा-यंचिंदियजादि-तेजा कम्मडयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण गंध
 रस-फास अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-
 वादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिराथिर सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-
 जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद पचतराडयाण को बंधो को अवधो ?
 ॥ १४४-॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी बंधा । एदे बधा,
 अवसेमा अवधा ॥ १४५ ॥

परघादुस्सास पसत्थविहायगइ-सुस्सराणमेत्थुदयाभारादो बधोदयाण पुत्रावरकाल
 सपथिवोच्चेद्विचारो णत्थि । अवसेसाण पयडीण बधोत्था मम वोच्छिज्जति, अमनदसम्मा
 दिट्ठिन्दि तदुमयाभारदसणादो ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-तेजा-कम्मडयसरीर-वण्ण गंध रस-फास-अगुरु-
 लहुअ-उवघाद थिराथिर-सुहासुह णिमिण-पचतराडयाण सोदओ बधो, एत्थ धुवोदयतादो ।

व कर्मण शरीर, समचतुर्गुणसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात,
 उन्मत्तास, पशस्तविहायोगनि, रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,
 सुभग, सुस्सर, आदेय, यशक्रीति, निर्माण, उच्चागोद ओर पाच अन्तराय, इनका कौन बधक
 और कौन अवन्धक है ? ॥ १४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादष्टि, सामादनसम्यग्दष्टि और असयतसम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,
 शेष अवन्धक हैं ॥ १४५ ॥

परघात, उच्छास, प्रशस्तविहायोगनि और सुस्सरका यहा उदयाभाव होनेसे
 बध व उदयके पूर्व और उपर काठ समझी व्युच्छेदका विचार नहीं है । शेष
 महितियोंका बध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असयतसम्यग्दष्टि
 गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दशनावरणीय, तेजस व कर्मण शरीर, वर्ण, गन्ध,
 रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तराय,
 इनका सोदय बध होता है, क्योंकि, यहा ये धुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, धारह कषाय,

निहा-पयला-वारसकमाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय दुगच्छा असादवेदणीय-उच्चागोदाण सोदय परोदओ बधो । कधमुच्चागोदबधो सम्मादिट्ठीसु परोदओ ? ण, - तिरिक्सेसु पुच्चाउअवसेणुण्णसइयसम्मादिट्ठीसु परोदएणुच्चागोदस्म बधुअलभादो । पुरिसवेद-समचउ-रससठाण-सुभगादेज्ज-जमकित्तीण मिच्छाडिट्ठि-सासणेसु सोदय-परोदओ । असजदसम्मादिट्ठिहि मोदओ । पचिंदियजादि-त्तस नादर पज्जत्त पत्तेयसरीराण मिच्छाडिट्ठिहि सोदय परोदएण बधो । सासणसम्मादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु सोदएण । परघाहुस्सास-पसत्थविहायगइ-अप्पसत्थ-विहायगइ-सुस्मराण तिसु नि गुणट्ठाणेषु परोदएण बधो । अजसकित्तीए मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदएण बधो, अमजदसम्मादिट्ठीसु परोदएण ।

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-वारसकमाय-भय दुगुच्छा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गध रस फास अगुरुलहुव-उपघाद-णिमिण-पचतराइयाण णिरतरो बधो । असाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-जसकित्ति-अजमकित्ति-थिराथिर-सुमामुमाण सातरो बधो, तिसु नि गुणट्ठाणेषु एगसमएण बधुवरमदमणादो । पुरिसवेद समचउरसमठाण-सुभगादेज्ज-उच्चागोद-पसत्थविहाय-

हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, असाता वेदनीय और उच्चगोत्रका स्वेदय परोदय बन्ध होता है ।

शका—सम्यग्दृष्टियोंमें उच्चगोत्रका परोदय बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, पूर्व आयुबन्धके वगसे तिर्यच्चोंमें उत्पन्न हुए क्षाधिकसम्यग्दृष्टियोंमें परोदयसे उच्चगोत्रका बन्ध पाया जाता है ।

पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, सुभग, आदेय और यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सोदय परोदय बन्ध होता है । अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका स्वेदय बन्ध होता है । पनेन्द्रिय जानि, वस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वेदय परोदयसे बन्ध होता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वेदयसे बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, अप्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका तीनों ही गुणस्थानोंमें परोदयसे बन्ध होता है । अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वेदय परोदयसे और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें परोदयसे बन्ध होता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह क्पाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व कामण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है । असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, स्थिर, अस्थिर, शुभ और अशुभका मान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तीनों ही गुणस्थानोंमें इनका एक समयसे बन्धविधाम देखा जाता है । पुरुषवेद, समचतुरस्र संस्थान, सुभग, आदेय, उच्चगोत्र, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका मिथ्यादृष्टि व

गद सुस्सराण मिच्छादिद्वि सामणसम्मादिद्वीसु मातरो वधो, असज्जदमम्मादिद्विहि गिरतरो ।
 पण्डियत्तस जादर पज्जत्त पत्तेयमरीर-पग्गदुम्मामाण मिच्छाद्वीसु सातर-गिरतरो वधो ।
 कथ गिरतरो ? तिरिक्ख मणुस्समुपणमणत्कुमारान्दिनाण जेरडयाण च गिरंतरेनधुवलमादो ।
 सामणसम्मादिद्वि अमज्जमम्मान्द्वीसु गिरतरो ।

मिच्छाद्विस्म तेदालीम पञ्चया, ओघपञ्चणमु ओरालियमिस्सकायचोगवदिग्गि
 धारसचोगाणमभावादो । सामणम्म अट्ठीस, अमज्जमम्माद्विस्म धत्तीम पञ्चया, तेसिं
 चैय जोगाणमभावादो अमज्जसम्मादिद्वीसु त्थीणमुमयेदेहि सह धारसचोगाभावादो ।
 एदाओ सञ्चपयडीओ असज्जसम्मान्द्विणो देजगडमज्जत्त वधति । मिच्छाद्वि-सासणमम्मा
 दिद्विणो उच्चगोण मणुमगइसज्जत्त, सेमाओ सञ्चपयडीओ तिरिक्ख-मणुमगइसज्जत्त वधति ।
 देव गिरयगईओ मिच्छादिद्वि सासणसम्मादिद्विणो किण्ण वधति ? ण, अपज्जत्तद्धाए तासिं
 वधाभावादो ।

सासादनसम्यग्दष्टि गुणज्ञानोंमें सातर व ३ होता है, असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें
 निरन्तर बन्ध होता है । पचेन्द्रिय, धन, जादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, परधात और
 उच्छ्वासना मिथ्यादृष्टियोंमें सातर निरन्तर बन्ध होता है ।

शका—निरन्तर बन्ध कैसे हाता है ?

समाधान—क्योंकि, निर्वैच व मनुष्योंमें उत्पन्न हुए सान्तुमादि देवों और
 नारकियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दष्टि और असयतसम्यग्दष्टि गुणज्ञानोंमें निरन्तर बन्ध होता है ।

मिथ्यादृष्टि तेदालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, ओघ प्रत्ययोंमेंसे उसके और
 रिक्मिध काययोगेण छेदक अन्य जादर योगोंका अभाव है । सासादनसम्यग्दष्टिक
 अभाव और असयतसम्यग्दष्टिके वत्तीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उहीं योगोंका यहां भी
 अभाव है, चूंकि असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्त्री और नपुंसक वेदोंके साथ जादर योगोंका अभाव
 है । इन सब प्रवृत्तियोंका असयतसम्यग्दष्टि देवगतिसे संयुक्त बाधते हैं । मिथ्यादृष्टि व
 सासादनसम्यग्दष्टि उच्चगात्रका मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष सब प्रवृत्तियोंको
 तियगगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बाधते हैं ।

शका—देवगति व तत्त्वगतिको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दष्टि क्यों नहीं
 बाधते ?

समाधान—नहीं बाधते, क्योंकि, अपर्याप्त कालमें उनका बन्ध नहीं होता ।

तिरिक्ख-मणुस्मा सामी । बन्धनान् वधनिण्डुडान् च सुगम । पचणाणावरणीय-
छदसणावरणीय-चारमकमाय-भय-दुगुल-तेजा-कम्मडय-वण्णचउम्क-अगुरुलहुव-उववाद्-
णिमिण-पचंतराड्याण मिच्छाद्दिग्धि' चउन्निहो वमो । मेमेसु ति विहो, उवन'भावादे ।
अवसेमाण मच्चपयडीण तिसु वि गुणट्ठाणसु नमो मादि-अद्दुमो ।

णिट्ठाणिट्ठा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुवधिकोध-माण-
माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-
ओरालियसरीरअंगोवग-पंचसंघटण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणु-
पुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज'णीचागोदाणं
को वंधो को अवंधो ? ॥ १४६ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्दिग्धि सासणसम्माड्ढी वंधा । एदे वंधा अवसेसा अवंधा
॥ १४७ ॥

तिर्य्येच न मनुष्य स्वामी है । न ज्ञान और बन्धनस्थान सुगम हैं । पाच
मानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, गह रुपाय, भय, जुगुप्सा, तजस व कामेण शरीर,
घर्णादिक चार, अगुरुलहु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि
गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । जेप के गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध
होता है, क्योंकि, उहा धुन नन्धका अभाव है । जेप सब प्रक्रियाओंका बन्ध तीनों ही
गुणस्थानोंमें नादि व अधुच होता है ।

निट्ठानिट्ठा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तालुनन्ती कोव, मान, माया, लोभ,
स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सम्थान, औदारिकशरीरमोपाग, पाच
महनन, तिर्यग्गति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपत्ती, उद्योत, अप्रग्रस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर,
अनदेय और नीचगोत्रका कोन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १४६ ॥

यह सत्य सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनमम्यगृष्टि वन्धक है । ये वन्धक हैं, जेप अवन्धक
है ॥ १४७ ॥

पुष्पीण मणुमगइसजुतो, सेसाण तिरिक्ख-मणुमगइमजुतो वधो । तिरिक्ख मणुसमिच्छाद्वि-
सासणसम्मादिद्विणो सामी । वधद्धान वधणिणट्टाण न सुगम । श्रीणगिद्वितिय अणत्ताणुनि-
चउक्काण मिच्छाद्विद्विहि वधो चउत्तिहो । सामणे दुत्तिहो, अणादि-भुवत्ताभावादो । सेसाण
पयडीण मन्वत्थ सादि-अडुवो ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १४८ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विणी सामणमम्माद्विणी असजदसम्माद्विणी सजोगिकेवली
वंधा । एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ १४९ ॥

सादावेदणीयस्स उपादो उदओ पुच्च पच्छ [या] वोच्छिण्णो ति विचारो णत्थि, चदस
गुणद्विणेषु तदुभयवोच्छेदाणुत्तभादो । मिच्छाद्वि मिच्छासणमम्माद्वि-असजदसम्माद्वि-सजोगीसु
वधो सोदय परोदओ, पराउत्तणुदयत्ताणे । मिच्छाद्वि-सासणसम्माद्वि-असजदसम्माद्विणीसु
वधो मातरो, एगममण्ण पणुममण्णसादो । सजोगीसु णित्तरो, पडिउत्तपयडीण

मथा इतर प्रवृत्तियारा नियमगति व मनुष्यगतिसं सयुक्त वध होता है । नियंत्र और
मनुष्य मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्पददृष्टि स्वामी है । उन्धापान और वधयित्तस्थान
सुगम है । स्वयत्तगुणिय और जनतानुयाधवत्तुष्का वन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें
चारों प्रकारका होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका होता है, क्योंकि, यहा
अनादि और धुव उक्का गमान है । नेप प्रवृत्तियोंका वध सर्वत्र सादि और अघुन
होता है ।

साता वेदनीयका कोन वधक और कौन अवधक है ? ॥ १४८ ॥

यद सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्पददृष्टि, असयतमम्पददृष्टि और सयोगकेवली वधक है । ये
वधक हैं, अवधक नहीं हैं ॥ १४९ ॥

साता वेदनीयका उद्य वधने पूरम या पश्चात् व्युत्तिउण हाता है, यह विचार
नहीं है, क्योंकि, चारा गुणस्थानोंमें उन दोनोंका व्युत्तेद पाया नहीं जाता । मिथ्यादृष्टि,
सासादनसम्पददृष्टि, असयतमम्पददृष्टि और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें सोदय परोदय
वध होता है क्योंकि, यहा पत्तिगति होकर अ वर भी उद्य होता है । मिथ्यादृष्टि सासा
दनसम्पददृष्टि और असयतमम्पददृष्टि गुणस्थानोंमें साता वेदनीयका सांतर वध होता है,
एक समयमें यहा उक्का उक्का वधप्रथाम देखा जाता है । सयोगकेवलीमें निरन्तर

वधाभावादो । मिच्छाइट्ठि-सासणमम्माइट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु जहाकमेण तेदालीस-अट्ठीस-
धत्तीसपच्चया । सजोगिम्हि एकको चेव ओरालियमिस्सकायजोगपच्चओ । सेस सुगम ।
मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो दुगइसजुत्त, असजदसम्मादिट्ठिणो देवगइसजुत्त, सजोगिजिणा
अगइसजुत्त वधति । तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि असजदसम्मादिट्ठिणो
मणुसगइसजोगिजिणा सामी । वधद्धान्ण वधणिणइद्धान्ण च सुगम । सादानेदणीयस्स वधो
सव्वत्थ सादि-अद्दुतो, अद्दुववत्तितादो ।

मिच्छत्त-णउंसयवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-चदुजादि हुंडसंठाण-
असंपत्तसेवट्ठसंघडण आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-
णामाणं को वधो को अवंधो ? ॥ १५० ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी वंधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ १५१ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— वधोदयाणमेत्थ वोच्छेदो णत्थि, उवलभादो । अधवा,

नय होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । मिथ्यादृष्टि, सासादन
सम्यग्दृष्टि और असयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें यथाक्रमसे तेतालीस, अट्ठीस और वत्तीस
प्रत्यय होते हैं । सयोगके उर्ल, गुणस्थानमें एक ही औदारिकमिश्रकृत्ययोग प्रत्यय होता है ।
शेष प्रत्ययरूपणा सुगम है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि दो गतियोंमें सयुक्त,
असयत्तसम्यग्दृष्टि देवगतिसे सयुक्त, और सयोगी जिन अगतिस्सयुक्त पाधते हैं ।
तिर्यगति य मनुष्यगतिके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयत्तसम्यग्दृष्टि, तथा
मनुष्यगतिके सयोगी जिन ग्रामी हैं । बन्धाग्रान और बन्धनिनष्टस्थान सुगम हैं ।
साता वेदनीयका नव सर्वत्र सादि न अक्षय होता है, क्योंकि, वह अधुवचन्धी है ।

मिथ्यात्व, नपुमकप्रेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, चार जातिया, हुंडस्थान, असप्राप्त-
सृष्टिकासहनन, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन
बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १५० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— बन्ध और उदयका यहा व्युच्छेद नहीं हैं, क्योंकि,

एदमप्यणासुत्त देसामामिय, तेणेदेण सुइदत्थपरूवणा कीरदे— पचणाणारणीय-
छदमणारणीय सादामाद-नारसकसाय पुरिसनेद हस्स रदि-अरदि-सोग मय-दुगुच्छा मणुसगइ-
पचिंदियजादि-ओरालिय तेना कम्मइयमरीर-ममचउरससठाण ओरालियसरीरअगोउग वज्जरिसइ-
मघडण-वण्णचउत्तक मणुसाणपुव्वी अगुरुअलहुअचउत्तक-पमत्थविहायगइ-तसचउत्त थिराथिर-
मुहामुह-सुमग सुस्सर-ओदज्ज जमकित्ति अजसकित्ति णिमिणुच्चागोद-पचतराइयपयडीओ एत्थ
चदुस गुणइणेषु वधपाओग्गाओ । एत्थ पुब्ब वधो उदओ वा वोच्छिण्णे त्ति विचारो णत्थि,
मणुसगइ ओरालियमरीर ओगलियमरीरअगोउग-वज्जरिमहमघडण मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणु
पुव्वी अजमगित्तीणमुदयाभाउओ मेमाण पयडीणमुदयउच्छेदाभाउओ च ।

पचणाणारणीय चउदसणावरणीय-पचिंदियजादि तेना-कम्मइयसरीर उण्ण-गध-रस-
फाम अगुरुअलहुअ-उउघाद परघादुस्साम तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयमरीर-थिराथिर-मुहामुह-
णिमिण पचतराइयाण सोदओ वधो, वेउत्तियकायजोगमिह एदासिं धुओदयत्तदसणाओ । णवरि
सम्मामिच्छादहिं मोत्तूण उण्णत्थ उस्सासस्स' सोदय परोदओ वधो, सरीरपज्जत्तीए

यह अपणासूत देशामशय ह, इसलिये इसस सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते
ह— पाच शानावरणीय, उह दशनावरणीय साता व असाता वेदनीय, नारह कपाय,
पुरयवेद, हास्य, रति, अरति, शोभ, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति,
औदारिक, तैत्तस व कामेण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, अन्तरिश्शरीरागोपाग, वज्जर्यम
महन्न, पणात्तिक चार, मनुष्यानुपूर्वा, अगुरुलघु जादिक चार, प्रशन्तविहायोगति,
अस आदिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय, यशस्कीति,
अयशस्कीति निमाण, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय प्रकृतिया यहा चार गुणस्थानोंमें
यन्धके योग्य है । यहा पूर्वमें उध या उदय उच्छिउत्त होता है, यह विचार नहा है,
क्योंकि, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग वज्जर्यममहन्न, मनुष्यगति,
मनुष्यगतिप्रार्थन्यानुपूर्वी और अयशस्कीति, इनका उदयाभाव तथा शेष प्रकृतियोंके
उदयन्युच्छेदका अभाज है ।

पाच शानावरणीय, चार दशनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैत्तस व कामेण शरीर,
यण, गध, रस स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्रवाम, अस, वादर, पयात्त
प्रत्यक्षशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका स्वोदय
वध होता है, क्योंकि, चैत्रियकसाययोगमें इनका धुओदय देखा जाता है । विशेष
इतना है कि सम्यग्मिच्छादष्टिको छोडकर अन्य उच्छ्रवासका स्वोदय परोदय वध

पञ्जत्तस्म अतोमुहुत्त गतूण आणापाणपञ्जत्तीए पञ्जत्तयदस्स उस्सासस्सोदयदंसणादो ।
 णिद्वा-पयला सादामाद धारमकमाय-सत्तणोऊमाय-ममचउरससठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-
 सुस्सर आदेज्ज-असकित्ति-अजसकित्ति उच्चागोदाण सोदय-परोदओ वधो, असुहाण णेरइएसु
 उदयदसणादो । मणुसगइ ओरालियसरीरअगोण वज्जरिमहसघडण-मणुसगइपाओगाणुपुव्वीण
 परोदओ वधो, वेउत्तियकायजोगम्मि एदामिसुदयनिरोहादो ।

पचणाणारणीय-छदसणारणीय-रारसरुसाय-भय-दुगुछा-ओरालिय-तेजा कम्मइय-
 सरीर-वण्ण-गध-रस-फास-अगुस्सल्लुप-उवघाद-परघादुस्सास-यादर-पञ्जत्त पत्तेयसरीर-
 णिमिण-पचतराडयाण णिरतरो वधो, एत्थ बुववधित्तादो । सादासाद हस्म-रदि-अरदि-सोग-
 धिराधिर सुहासुह-जमकित्ति-अजसकित्तीण सातरो वधो, एगसमएण वधुवरमदमणादो ।
 पुरिसवेद-समचउरससठाण-वज्जरिसहसघडण-पमत्थविहायगइ सुभग सुस्सर आदेज्ज-उच्चागोदाण
 मिच्छाडडि सासनसम्मादिट्ठीसु सातरो वधो, पडिउस्सल्लपयडिउवधसमवादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-
 असजदमम्मादिट्ठीसु णिरतरो, पडिउक्कपयडिउवाभावादो । पच्चिदियजादि-ओरालियसरीर-

होता है, क्योंकि, शरीरपर्याप्तिमे पर्याप्त हुए जीवके अतर्मुहर्त जाकर आनप्राणपर्याप्तिसे
 पर्याप्त होनेपर उच्छ्वासका उदय देखा जाता है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता
 वेदनीय, धारह कपाय, सात नोकपाय, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग,
 सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका उदय परोदय बन्ध
 होता है, क्योंकि, नारदियोंमें अशुभ प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । मनुष्यगति,
 औदारिकशरीरगोपाग, चर्जर्यममहनन और मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्विका परोदय बन्ध
 होता है, क्योंकि, वैकृत्यिककाययोगमें इनके उदयका निरोध है ।

पाच प्राणारणीय, छह दर्शनारणीय, धारह कपाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक,
 तैजस व कामंज शरीर, धर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुस्सल्लुप उपघात, परघात,
 उच्छ्वास, यादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध
 होता है, क्योंकि, यहा ये ध्रुवगर्धी हैं । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति,
 शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमा मान्तर बन्ध होता है,
 क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविधाम देखा जाता है । पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान,
 चर्जर्यमसहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि
 व मासादनमम्यदृष्टि गुणस्थानोंमें मान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष
 प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतमम्यदृष्टि गुणस्थानोंमें
 निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पचेन्द्रिय

अगोत्रग तसणामाण मिच्छादिदिहि सातर-निरतरो । कथ निरतरो ? ण, णेरइएसु सणहु
 मारादिदेवेसु च निरतरवधुवलभादो । सासणसम्मादिदिहि सम्मामिच्छादिदिहि असत्तदसम्मादिदीसु
 निरतरो, पडिवत्तपयडिवधामावादो । मणुमगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चीण मिच्छादि
 सासणसम्मादिदीसु सातर निरतरो । कथ निरतरो ? ण, आणदादिदेवेसु निरतरनधुवलभादो ।
 सम्मामिच्छादिदिहि-असजदसम्मादिदीसु निरतरो, पडिवत्तपयडिवधामावादो ।

मिच्छादिदी एदाओ पयडीओ तेदालीसपच्चणहि, सासणो अट्ठतीसपच्चणहि,
 सम्मामिच्छादिदिहि-असजदसम्मादिदिहिओ चौत्तीसपच्चणहि वधति, मूलोघपच्चणसु नारसत्रो
 पच्चयाभावादो । सेस सुगम ।

मणुमगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुच्ची-उच्चागोदाणि मिच्छादिदिहि-सामणसम्मादिदिहि-
 सम्मामिच्छादिदिहि असत्तदसम्मादिदिहिओ मणुमगइसजुत्त । अवसेससत्तपयडीओ मिच्छादिदिहि

जाति, औदारिकशरीरागोपाग ओर व्रत नामकमका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सातर
 निरतर बध होता है ।

शुका—निरतर बध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि नारकियों और सनत्तुमारादि देवोंमें उनका निरतर
 बध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें
 निरतर बध पाया जाता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उभयका अभाव है ।
 मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि
 गुणस्थानोंमें सातर निरन्तर बध होता है ।

शुका—निरतर बध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ज्ञानतादि देवोंमें उनका निरतर बध देखा
 जाता है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बध होता है,
 क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उभयका अभाव है ।

मिथ्यादृष्टि इन प्रकृतियोंको तेदालीस प्रत्ययोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि अठतीस
 प्रत्ययोंसे, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि चार्तीस प्रत्ययोंसे बाधते हैं,
 क्योंकि, मूलोघ प्रत्ययोंमें बारह योग प्रत्ययोंका यहा अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा
 सुगम है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगात्रको मिथ्यादृष्टि, सासादन
 सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बाधते हैं । शेष

सामणमम्मादिट्ठिणो तिरिस्स मणुमगइमज्जत्त, सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसज्जत्त धधत्ति ।

देव-णेरट्टया सामी । वधद्धाण सुगम । वप्रणिणासो णत्थि । पचणाणावरणीय-छदमणापरणीय-चारमकसाय भय-दुगुळा-तेजा-कम्मइय-वण्णचउत्तक-अगुरुअलहुअ-उववाद्-णिमिण-पचतराडयाण मिच्छाइट्ठिम्हि चउत्तिहो नो । अण्णत्थ तिनिहो, धुननधिताभाभादो । सेममत्रपयडीओ सन्वत्थ सादि-अद्धाओ ।

वीणगिट्ठित्ति-अण्णताणुनधिचउत्तक-इत्थि-वेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउसघडण-तिग्गिस्सगइपाओग्गाणुपुच्ची-उज्जोअ अण्णमत्थविहायगइ-दुभग दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि वेट्ठानियपयडीओ । एदासु अण्णताणुनधिचउत्तकस्स उधोदया सम वोच्छिण्णा, सामणम्मि तदुभयाभावेदसणादो । इत्थि-वेद अण्णमत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण पुच्च उदओ वोच्छिज्जदि, सामणमम्मादिट्ठि असजदसम्मादिट्ठिसु उधोदयओच्छेददसणादो । अउसेमाण ऐसा परिक्खा णत्थि, उदयाभाभादो ।

सय प्रहृतिथोको मिथ्याहृष्टि य सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एव मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्याहृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त पाद्यते है ।

देव और नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धविनाश है नहीं । पाच धानापरणीय, उह दर्शनापरणीय, चारह स्थाय, भय, जुगुप्सा, तजस व कामर्ण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तरायका मिथ्याहृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका रन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें उनका तीन प्रकारका रन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनके ध्रुव रन्धका अभाव है । शेष सब प्रकृतिया सर्वत्र सादि व अध्रुव रन्धवाली ह ।

स्थानगृहित्रय अनन्तानुबन्धितुष्क, रत्तीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोन, ये द्विम्यानित्र प्रकृतिया हैं । इनमें अनन्तानुबन्धितुष्कका रन्ध और उदय दोनों नाथर्म व्युच्छिन्न होते ह, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । रत्तीवेद, अप्रशस्तविहायोगति दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोनका पूर्वमें रन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्रमश इनके रन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंके यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, उनका उदयाभाव है ।

अणताणुअधिचउक्क-इथिउद-अणसत्यत्रिहायगइ-हुमग दुस्मग-अणदेउ-णीचा-
गोदाण सोदय परोदओ वधो, त्रेउन्वियकायनोगम्मि पडिउक्कुदयदसणादो । अवसेसाण
पयडीण परोदओ वधो, तामिमेत्तुदयत्रिहादो । वीणगिद्धितिय-अणताणुअधिचउक्क
तिरिक्खाउआण गिरतरो वधो, एगसमएण वधुवरमाभावादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइ
प्राओग्गाणुपुन्नी णीचागोदाण सातर-गिरतरो वधो । कथ गिरतरो ? ण, सत्तमपुढगिणेरइएसु
गिरतरवधुउलभादो । अवसेसाण पयडीण वधो सातरो, एगममएण वधुवरमदमणादो ।
पच्चया सुगमा । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइप्राओग्गाणुपुन्नी उज्जोवाणि तिरिक्खगइ-
सजुत्त, सेमसच्चपयटीओ तिरिक्ख-मणुसग, सजुत्त नगति । देउणेरइया मामी । वधद्वान
वधणिणद्वद्वान च सुगम । सत्तण्ट धुपयडीण मिच्छाइद्विहि चउविहो वधो । सासणे
द्विहो नयो ।

मिच्छत-णुसयउद-एइदियजादि-हुडमठण-अमपत्तमेउदमधडण-आदान-धावर-
पयटीओ मिच्छाइद्विहा वज्जुमाणिथाओ । एत्थ मिउत्तस्स वधोदया सम वोच्छिज्जति,

अनताणुअधिचउक्क, खीउद, अमशस्तत्रिहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनदेय और
नीचगोनका सोदय परोदय वध होता है, क्योंकि, वैत्रियिरूकाययोगमें इनकी प्रतिपक्ष
प्रवृत्तियोंका उदय देखा जाता है । शेष प्रवृत्तियोंका परोदय उन्ध होता है, क्योंकि, यहा
उनके उदयका निरोध है । रुयानगृद्धितय, अनस्ताणुअन्वियनतुक्क और तियगायुका
निरन्तर वध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके उधयिआमका अभाव है । तिर्यग्गति,
तिर्यग्गतिप्रायोगानुपूर्वी और नीचगोनका सातर निरन्तर वध होता है ।

शस्त्रा—निरन्तर वध कैसे होता है ?

समाधान —यह शस्त्राटीकनहीं, क्योंकि सत्तम धृष्टिके नारकियोंमें उनका निरन्तर
वध पाया जाता है ।

शेष प्रवृत्तियोंका वध सातर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनका वध
विधाम देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है । तिर्यगायु तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोगानुपूर्वी
और उद्योतको तिर्यग्गतिसे सयुक्त, तथा शेष सप्त प्रवृत्तियोंको तिर्यग्गति वध मनुष्यगतिसे
सयुक्त बाधते हैं । देव व नारकी स्वामी हैं । वधाच्छान और व धधिनप्रस्थान सुगम है ।
सात ध्रुवप्रवृत्तियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्वानमें चारा प्रकारका वध होता है । म्हासादनमें
दो प्रकारका वध होता है ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, एनेन्द्रियजाति, हुण्डसस्थान, असम्प्राप्तस्वपाटिकासहनन,
आताप और स्वावर, ये मिथ्यादृष्टिके द्वारा उध्यमान प्रवृत्तिया हैं । यहा मिथ्यात्वका
वध और उदय दोनों मिथ्यादृष्टि गुणस्वानमें साथ ही व्युत्पन्न होते हैं, क्योंकि, उपरिस

उवरिमगुणेषु तदुभयाणुबलभादो । णवुसयवेद-हुडसठाणाण पुच्च वधो पच्छा उदओ
 वोच्छिज्जदि, मिच्छाडडि-असजदसम्मादिट्ठीसु तदुभयाभाउदसणादो । सेसासु एसो विचारो
 णत्थि, उदयाभावादो । मिच्छत्तस्स सोदएण, णवुसयवेद-हुडसठाणाण सोदय-परोदओ,
 असेसाण परोदओ वधो । मिच्छत्तस्स वओ णिरतरो, अउमेसाण सातरो । पच्चया सुगमा ।
 णरि एइदियजादि-आदान थावराण णवुसयवेदपच्चओ अवणेदव्वो, णेरइएसु एदामि
 वधाभावादो । मिच्छत्त णवुसयवेद-हुडसठाण-असपत्तसेवट्ठसघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्त,
 असेसाओ पयडीओ तिरिक्खगइसजुत्त वज्झति । एइदियजादि-आदान-थानराण वधस्स
 देवा मामी, अउमेसाण वरस्स देव-णेरइया सामी । वधद्वाण वणणिण्डडाण च सुगम ।
 मिच्छत्तस्म चउन्विहो वधो, अउमेसाण सादि-अट्ठवो ।

मणुसाउअस्स वधो उदयादो' पुत्र पच्छा वा वोच्छिज्जदि चि णत्थि [विचारो], संता-
 सताण सणियासनिरोहादो । परोदओ वधो, वेउन्वियकायजोगमि मणुसाउअस्स उदयविरोहादो ।
 णिरतरो वधो, एगसमएण वयुनरमाभावादो । मिच्छाडडि सासणसम्माडडि-असजदसम्मादिट्ठीण

गुणस्थानोंमें ये दोनों पाये नहीं जाते । नपुसकवेद और हुण्डसस्थानका पूर्वमें बन्ध और
 पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, मिथ्यादाष्टि और असयतसम्यग्दाष्टि गुणस्थानमें
 क्रमसे उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंमें यह विचार नहीं है, क्योंकि,
 उनका उदयाभाव है । मिथ्यात्वका म्योदयसे, नपुसकवेद और हुण्डसस्थानका रोदय-
 परोदयसे, तथा शेष प्रकृतियोंका परोदयसे बन्ध होता है । मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर
 और शेष प्रकृतियोंका सान्तर होता है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय-
 जाति, आताप और स्वादरके प्रत्ययोंमें नपुसकवेद प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि,
 नागक्रियोंमें इनके बन्धका अभाव है । मिथ्यात्व, नपुसकवेद, हुण्डसस्थान और
 भस्मप्राप्तसृपाटिकासहनन, तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसंयुक्त, तथा शेष प्रकृतिया
 तिर्यग्गतिसंयुक्त वधती है । एफन्द्रियजाति, आताप और स्वादरके बन्धके त्रेय स्वामी
 है । शेष प्रकृतियोंके बन्धके द्वय व नारकी स्वामी है । वन्धप्राप्तान और वन्धविनष्टस्थान
 सुगम हैं । मि/या वका बन्ध चारों प्रकारका, तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व अष्टव
 होता है ।

मनुष्यायुषा व ध उदयसे पूर्व या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहा नहीं
 है, क्योंकि, सत् (बन्ध) और अमत् (उदय) की तुलनाका विरोध है । परोदय बन्ध होता है,
 क्योंकि, धर्मियकदाययोगममनुष्यायुके उदयका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
 एफ समयसे इसके बंधविग्रामका अभाव है । मिथ्यादाष्टि, सासादनसम्यग्दाष्टि और असयत-

परोदधो । मामणं परोदधो, देवगदीए तिस्रे उदयामात्रादो ।

पचणाणावरणीय छदसणावरणीय वासकन्याय भय दुमुखा ओरात्तिय तेजा कम्मइयमरीर-
वण्ण गध रस-काम अगुरुअलहुअ-उपघाद परघाट्मसाम नादर-पज्जत पत्तेयमरीर-णिमिण
पचतराडयाण णितरो वधो, एत्थ धुअनधितादो । सादासाद-हरस-रदि-[अदि-] सोम-धिराधिर-
सुहासुह-अमकिसि अजयकितीण सातरो वधो, एगसमएण अधुअरमदसणादो । पुरिमवेद-समचउ-
रससठाण वज्जरिमहमचटण पमयनिहायगइ सुभग-सुम्बर ओदेज्जुन्चागोदाण मिच्छाइडि-
सासणसम्मादिद्वीसु वधो सातरो । अमज्जदसम्मादिद्वीसु णितरो, पडिवज्जपयडीण यथा
भावादो । पचिंदियजादि-आरात्तियसरीरअगोवग तसणामाण मिच्छाइडिअ सातर णितरो ।
कथ णितरो ? ण, सणस्सुमारदिदेवेसु णेरइएमु च णित्तअनुवलभादो । सासणसम्मादिद्वि-
अमज्जदसम्मादिद्वीसु णितरो, पडिवज्जपयटीण यथाभावादो । मणुअगइ-मणुसाणुपु-णीण

है । सासादन गुणस्थानमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिमें उसके उदयका
अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दशनावरणीय, राख बपाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक,
तैजस व कार्मण शरीर, वण, गन्ध रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात उच्छ्वास,
वाहर, पयाप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है,
क्योंकि, यहा य भ्रुचरन्धी है । साता व अमाता वेदनीय, हास्य, रति, [अरति], शोक, स्थिर,
अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशस्कीर्ति और अयशस्कीर्ति सातर बन्ध होता है, क्योंकि, एक
समयसे इनका बन्धविगम देखा जाता है । पुरुषवद समचतुरस्रसन्धान, धर्म्यम
सहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्छगोत्र, इनका मिध्याहृष्टि
और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सातर बन्ध होता है । असप्तसम्यग्दृष्टियोंमें
निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है । पचेन्द्रिय
ज्ञानि, औदारिकशरीरागोपाग और अस नामकर्मका मिध्याहृष्टि गुणस्थानमें सातर
निरन्तर बन्ध होता है ।

शुक्रा—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि सनत्कुमारगदि देवों और नारकियोंमें उनका निरन्तर
बन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असप्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है
क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्यगति और मनुष्यगति

‘मिच्छाङ्घ्रि-सासणमम्मादिट्ठीसु’ मातर-णितरो । कथं णितरो ? न, आणदादिदेवेषु णितरवधुत्तलभादो । असजदसम्मादिट्ठीसु णितरो, पडिक्खपयडीण धमाभावादो ।

मिच्छाङ्घ्रिस्म तेदालीम पच्चया, ओषप चएसु चदुमण-वचि-कायजोगपच्चयाणम-मावादो । सामणस्म मत्तसीसुत्तरपच्चया, मिच्छाङ्घ्रिपच्चएसु पचमिच्छत णवुसयवेदाणमभावादो । अमजदसम्मादिट्ठीसु तेतीस पच्चया, मिच्छाङ्घ्रिपच्चएसु पचमिच्छताणताणुणविचउत्तिकत्थि-वेदाणमभावादो । सेस सुगम ।

मणुसगइ-मणुसाणुपुत्ती-उच्चागोदाण मणुसगइसजुत्तो, अवसेसाण पयडीणे धधो मिच्छाङ्घ्रि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख मणुसगइसजुत्तो, असजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसजुत्तो । मिच्छाङ्घ्रि अमजदसम्मादिट्ठीणो देव णेरइया सामी । सामणमम्मादिट्ठीणो देवा चेव सामी ।

प्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि ओर सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शुद्धा—निरन्तर न बंधे होता है ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

असयतसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है ।

मिथ्यादृष्टिके तेतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, ओषप्रत्ययोंमें यहा चार मनोयोग, चार उचनयोग और चार नाययोग प्रत्ययोंका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टिके सतीस उत्तर प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिके प्रत्ययोंमेंसे यहा पाच मिथ्यात्व और नपुसकत्रेदका अभाव है । अन्यतसम्यग्दृष्टियोंमें तेतीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिके प्रत्ययोंमेंसे यहा पाच मिथ्यात्व, अनतानुबन्धचतुष्क और स्त्रीवेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है ।

मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका बन्ध मनुष्यगतिके संयुक्त, तथा श्रेष्ठ प्रवृत्तियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि पर सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिके संयुक्त, और असयतसम्यग्दृष्टियोंमें मनुष्यगतिके संयुक्त होता है । मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि देव व नारकी स्वामी हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि देव ही स्वामी हैं । बन्धा

वेद हुडमठाणाणः पुत्र यधो पञ्च उदयो वोच्छिज्जदि, मिच्छाद्वि-अमज्जदमम्मादिद्वीसु कमेण यधोदयवोच्छेददसणादो । अममेसासु एसो विचरो णत्थि, यधस्मेकस्सेन दसणादो ।

मिच्छतस्त सोदण, णुमयेद-हुडमठाणाण सोदय परोदण, अमसेसाण परोदण यधो । मिच्छतस्म गिरतरो । अममेसाण पयडीण सातरो, यधमद्दामयसग्गाणियमाणुवठभादो । पच्चया सुगमा । णरि एदिय आदाय धारणाण णुमयेदपच्चओ णत्थि ति दुग्गममेय समोदव्व । एदियजादि-आदाय धारणाणि निरिस्सग्गहमज्जुत्त, मेमाओ निरिक्ख मणुमगइसज्जुत्त पज्जति । एदिय आदाय धारणा देवा सामी । सेसाण देव गेग्गया । यधद्वाण यधविण्डुद्वाण च सुगम । मिच्छतस्म यधो चउत्तिहो । सेमाण सादि-अद्दुवो ।

तित्थयरस्स यधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, यधमइत्तिकयादो । परोदयो यधो, सयोगिभट्टारय मोत्तूण तित्थयरस्सण्ण-युदयाभाजादो । गिरतरो यधो, एग्गमएण यधुवरमा-

धे दोनों पाये नहीं जाने । नपुंसकप्रेद और हुण्डसस्थानका प्रथम यध आर पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और असत्यसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें प्रमत्तसे उनके उध और अन्यका व्युच्छेद देखा जाता है । शेष प्रवृत्तियोंमें यह विचार नहीं है, क्योंकि, उनका केवल एक यध ही देखा जाता है ।

मिथ्यात्वका स्त्रोदयसे नपुंसकप्रेद उ हुण्डसस्थानका स्त्रोदय परोदयसे, तथा शेष प्रवृत्तियोंका परोदयसे उन्व होता है । मिथ्यात्वका निरन्तर उन्व होता है । शेष प्रवृत्तियोंका सातर यध होता है, क्योंकि उन्वकालमें उनकी सत्त्वाका नियम पाया नहीं जाना । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि एकद्विजजाति, आताप और स्थावरका नपुंसकप्रेद प्रत्यय नहीं है, इस दुग्गम यातना स्मरण रखना चाहिये । एकद्विजजाति, आताप और स्थावर प्रवृत्तिया तिर्यग्गतिसे सयुक्त आर शेष प्रवृत्तिया तिर्यग्गति य मनुष्यगतिसे सयुक्त पधती है । एकद्विजजाति, आताप और स्थावर प्रवृत्तियोंके देव स्वामी हैं । शेष प्रवृत्तियोंके देव य नारकी स्वामी हैं । यथाध्यात और यन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका यध चारों प्रकारका होता है । शेष प्रवृत्तियोंका सादि य यधुन यध होता है ।

तीर्थंकर प्रवृत्तिके यध य उदयेके व्युच्छेदका विचार नहीं है, क्योंकि, उसका एक यध ही होता है । परोदय यध होता है, क्योंकि, सयोगी भट्टारकको छोड़कर अन्यत्र तीर्थंकर प्रवृत्तिके उदयका अभाव है । निरन्तर यध होता है, क्योंकि, एक समयसे

मानादो । पञ्चया सुगमा । मणुसगडमजुतो वधो । देव-भेरडयअसजदसम्मादिंही सामी ।
वधद्धाण वधणिणद्धाण च सुगम । मादि-अद्दुओ उधो । पयडिअधगयविसेसपरूणणडमुत्तर-
मुत्त भणदि—

णवरि विसेसो वेद्धानियासु तिरिक्खाउअं णत्थि मणुस्साउअं
णत्थि ॥ १५६ ॥

कुदो ? देव भेरडयाणमपज्जत्तद्धाए आउववधनिरोहादो ।

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पञ्चणाणावरणीय-
छदंसणावरणीय-सादासाद-चटुसजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-
सोग-भय दुगंछा देवाउ-देवगइ-पंचिदियजादि-वेजव्विय-तेजा-कम्मइय-
सरीर-समचउरससठाण वेजव्वियसरीरअगोवंग-वण्ण-गंध रस फास-देव-
गइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवल्लहुव-उवघाद-परघाटुस्सास-पसत्थविहाय-
गइ तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग सुस्सर-
आदेज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंत-
राइयाण को वंधो को अवधो ? ॥ १५७ ॥

वन्धविधामका अभाव हे । प्रत्यय सुगम ह । मनुष्यगतित्थे सयुक्त वन्ध होता हे । देव व
नारकी असयत्तसम्यग्दष्टि स्वामी ह । उन्धाध्यान ओर वन्धयिनप्रस्थान सुगम ह । सादि च
अधुव वन्ध होता हे । प्रकृतिवन्धगत विशेषके प्ररूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

निशेपता केवल इतनी हे कि द्विस्थानिक प्रकृतियोंमें तिर्यगायु नहीं है और मनुष्यायु
नहीं है ॥ १५६ ॥

इसका कारण यह हे कि देव व नारकियोंके अपर्याप्तकालमें आयुअन्धका विरोध हे ।

आहारकाययोगी और आहारमिश्रकाययोगियोंमें पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय,
साता व असाता वेदनीय, चार सज्जलन, पुरुषोद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा,
देवासु, देवगति, पचेन्द्रियजाति, वैकियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रस्थान,
वैकियिकशरीरागोपाय, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुल्लघु, उपघात,
परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, अस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,
शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्सर, आदिय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र
और पाच अन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १५७ ॥

सुगम ।

पमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अवंधा णत्थि ॥ १५८ ॥

एदस्सत्थो उच्चदे — एत्थ वधो उदओ वा पुत्थ वोच्छिण्णो वि विचास ण्णि,
एक्कगुणहाणमि शुच्चावरभावाभावादो । पचणाणारणीय चउदसणारणीय पुत्थिरेद-
पचिदियजादि तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वण्णचउत्तक-अगुरुवलहुवचउत्तक-पसत्थ-
विहायगइ-तत्तचउत्तक विहायि-सुहासुह-सुभग-सुस्सर ओदेज्ज-जसकिंति-णिमिण-उच्चगोदे
पचतराइयाण सोदओ वधो । विहा-ययला सादामाद-चदुसजलण-छण्णोरुमायाण सोदय-परोदज
वधो, उभययावि वधविरोहाभावादो । देवाउ-देवगइ-वेउच्चियमरीर वेउच्चियसरीरोगोवप
देवगइपाओगाणुपुत्थी अजसकिंति तित्थयगण परोदओ वधो, आहारकायजोगीसु एदमिमुदय
विरोहादो ।

पचणाणावरणीय-उदसणावरणीय-चदुसजलण-पुग्गिमेद मय दुगुठा देवाउ-देवगइ-
पचिदियजादि वेउच्चिय तेजा कम्मइयसरीर समचउरससठाण-वेउच्चियसरीरअगोवग-वण्णचउत्त
देवगइपाओगाणुपुत्थी-अगुरुवलहुवचउत्तक-पसत्थविहायगइ तमचउत्तक-सुभग सुस्सर ओदेज्ज

यह सत्य सुगम है ।

प्रमत्तमयन वधक है । ये वधक हैं, अवधक नहीं हैं ॥ १५८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— यहा वध पूर्वमें उच्छिष्ट होता है वा उदय, यह
विचार नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें पूर्वापरभावना अभावा होता है । पाच
ज्ञानावरणीय, चार दशनायरणीय, पुग्गमेद, पचिदियजाति, तेजस व कामण शरीर,
समचतुरस्रसंस्थान, यणादिक चार, अगुरुत्तु आदि चार प्रशस्तविहायोगनि, प्रसादिक
चार, विषय, अस्मिन्, शुभ अशुभ सुभग सुस्वर, आदेश, यशकर्मति, निर्माण, उच्चगोत्र
और पाच अंतराय, इनका स्त्रोत्रय वध होता है । निद्रा, प्रचला, साता व अस्ताता मेदनीय,
चार सज्जलन और छह नौ कपायोंका स्त्रोत्रय परोदय वध होता है, क्योंकि, दोनों ही
प्रकारसे वध होलेमें कोई विरोध नही है । देवापु, देवगति, वैमियिकशरीर, वैमियिक
शरीरागोपाय, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अयशकीनि और तीर्थरुक्ता परोदय वध होता
है, क्योंकि, आहारकाययोगियोंमें इनका उदयका विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दशनायरणीय, चार सज्जलन, पुग्गमेद, मय, जुगुत्ता,
देवापु, देवगति, पूर्वादयजाति वैमियिक, तेजस व कामण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान,
वैमियिकशरीरागोपाय, यणादिक चार, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुत्तु आदिक चार,
। प्रशस्तविहायोगनि, प्रसादिक चार, सुभग, सुस्वर, आदेश, निर्माण, ताथरुद, उच्चगोत्र

णिमिण तित्थयर-उच्चगोद-पचतराइयाण-णिरतरो वधो, एगसमएण वधुवरमाभावादो । सादासाद-हस्म-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर सुहासुह-जमकित्ति अजसकितीण सातरो वधो, एगममएण वधुवरमदमणादो ।

चदुसजलण पुरिसणेद हस्म रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुछा-आहारकायजोगेहि वारस-पच्चएहि एदाओ पयडीओ वज्जति । सेम सुगम । एदामि वधो देवगदिसुत्तो । मणुसा सामी । वनद्धाण सुगम । वधजेच्छेदो णत्थि । धुपपययडीण तिविहो वधो, धुवाभावादो । भग्नेमाण सादि-अद्धो ।

एगमाहारमिस्सकायजोगीण पि वत्त न । णरि परघादुस्सास-पसरथिनिहायगड-दुस्सराण परोदओ वधो । पुच्चमोरालियमरीरस्स उदए सते एदामि सतोदयाण कधमेत्थ अकारणेण उदयजेच्छेदो होज्ज ? ण, ओरालियसरीरोदएणोदइल्लाण तदुदयाभागेणोदासिमुदया-भाउस्स णाइयत्तादो । पच्चएसु आहारकायजोगमग्गेदूण आहारमिस्सकायजोगो पक्खिखिदिच्चो । एत्तिओ चेव भेदो, णत्थि अण्णत्थ क व नि ।

और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्ध विश्रामका अभाव है । साता न असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशस्वीनि और अयशस्वीतिंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है ।

ये प्रकृतिया चार सज्जलन, पुरुषेन्द, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और आहारकाययोग, इन गारह प्रत्ययाने पधती ह । शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है । इनका बन्ध देवगतिसे सयुज होता है । मनुष्य स्वामी ह । बन्धाघ्नान सुगम है । बन्धव्युत्तेद नहीं है । ध्रुवप्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि न अधुव बन्ध होता है ।

इसी प्रकार आहारमिश्रकाययोगियोंके भी रहना चाहिये । विशेषता केवल इतनी है कि इनके परप्रात, उच्छ्रान्त, प्रशस्तविहायोगति और दुम्बरका परोदय बन्ध होता है ।

शक्रा—चूँकि पुर्णमें औदारिकशरीरके उदयके होनेपर इनका उदय था, अतएव अब यहा उनका निष्कारण उदय युत्तेद क्यों हो जाता है ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, औदारिकशरीरके उदयके साथ उदयको प्राप्त होनेवाली इन प्रकृतियोंका उससे उदयका अभाव होनेसे उदयभावा न्याययुक्त है ।

प्रत्ययोंमें आहारकाययोगको कम करके आहारमिश्रकाययोगको जोड़ना चाहिये । केवल इतना ही भेद है, और कहीं कुछ भेद नहीं है ।

कम्मइयकायजोगीसु पचणाणावरणीय छदंसणावरणीय-असादा-
वेदणीय-वारसकसाय-पुरिसवेद हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय दुगुठा
मणुसगइ पंचिंदियजादि-ओरालिय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-
संठाण ओरालियसरीरअंगोवग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण गध रस फास
मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी अगुरुवलहुव-उवघाद परघादुस्सास-पसत्थ-
विहायगइ-तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-
सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पचतराइयाण
को वधो को अवधो ? ॥ १५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सामणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी वधा । एदे वंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ १६० ॥

एदस्सत्यो पुच्चंद— एत्थ वधो उदओ वा पुच्च वोच्छिण्णो ति णत्थि विचारो,
एत्थ ओरालियदुग समचउरससंठाण वज्जरिसहसंघडण उवघाद परघादुस्साम पसत्थविहायगइ

कार्मणकाययोगियोम पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असातवेदनीय,
नारह क्पाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति,
औदारिक, तेजस ३ कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरामोपाग, वज्रपर्मसहनन,
वण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्ति, अगुरुलु, उपघात, परघात, उच्छ्वास,
प्रशस्तनिद्यायोगति, तस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग,
सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोन और पाच अन्तराय, इनका कौन
बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ १५९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सामादनसम्यग्दृष्टि और अमयतसम्यग्दृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं,
ये अवधक हैं ॥ १६० ॥

इसका अर्थ कहने हैं— यहा वध या उदय पूर्वमे व्युच्छिन्न होता है, यह विचार
ही है, क्योंकि, यहा औदारिकद्विष, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रपर्मसहनन, उपघात,

पत्तियसरीर-सुस्तराणमेयतेण उदयाभावादो, सेसाणमुदयमभावादो च । पचणाणारणीय-
चउदमणारणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउत्त-अगुरुवलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-
पचतराइयाण सोदओ वधो, एत्थतणम-मणुगट्ठाणेषु णियमेणुदयदसणादो । णिदा-पयला-
अमान्नेदणीय नारसकसाय-हस्स रदि-अरदि-सोग-भय दुगुअ-पुरिमोद-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-
उच्चागोदाण सोदय-परोदओ वधो । मणुमगइ-मणुमगइपाओग्गाणुपुव्वीण मिच्छाडि-
सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ वधो, उभयथा वि वधविरोहाभावादो । असजदसम्मादिट्ठीसु
परोदओ, मणुस्सअसजदसम्मादिट्ठीण मणुउदुगस्स वधविरोहादो । पचिंदिय-तम-नादर-पजत्ताण
मिच्छाडि-सोदय-परोदओ वधो, पडिवत्तुदयसभवादो । सासणसम्मादिट्ठी-असजद-
सम्मादिट्ठीसु सोदओ, विगलिंदिएसु एदेसिं दोण्ण गुणट्ठाणण अभावादो । ओरालियसरीर-
समचउरससट्ठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिमहमघडण-उत्ताद-परवाद-उत्सास-पसत्थ-
विहायगइ-पत्तियसरीर-सुस्तराण परोदओ वधो, विग्गहगदीए एदासिमुदयाभावादो ।

पचणाणारणीय-उदसणाणारणीय नारसकसाय भय-दुगुअ-ओरालिय-तेजा-कम्मइय-
सरीर-वण्ण गध रस-कास-अगुरुवलहुअ उत्ताद-णिमिण पचतराइयाण णिरतरो वधो, एत्थ

परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तनिहायोगति, प्रत्येकशरीर ओर सुस्तरका नियमसे उदयाभावा
है, तथा शेष प्रकृतियोंके उदयकी सम्भाविता है । पांच ज्ञानारणीय, चार दर्शनारणीय,
तैजस व कामेण शरीर, घर्णादिक चार, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण
और पांच अन्तरायका स्त्रोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहा सव गुणस्थानोंमें इनका
नियमसे उदय देखा जाता है । निद्रा, प्रचला, असातवेदनीय गारह कपाय, हास्य, रति,
अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुरुषोद, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्रका,
स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है । मनुष्यगति व मनुष्यगतिप्राप्त्यन्यानुपूर्यना मिथ्यादृष्टि
और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे
ही बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि,
मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके मनुष्यद्विके बन्धका विरोध है । पचेन्द्रियजाति, व्रस,
वादर और पयाप्तका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि,
यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय सम्भव है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें
स्त्रोदय बन्ध होता है, क्योंकि, त्रिकल्लेष्टियोंमें इन दोनों गुणस्थानोंका अभाव है ।
औदारिकशरीर, समचतुर्गुणसंस्थान, औदारिकशरीरामोपाग, वज्रपंमसहनन, उपघात,
परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तनिहायोगति, प्रत्येकशरीर ओर सुस्तरका परोदय बन्ध होता
है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है ।

पाच ज्ञानारणीय, छह दर्शनारणीय, चारह कपाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक,
तैजस व कामेण शरीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच

धुनवधित्तदो । असादवेदणीय हस्समदि-अग्दि-सोग विराथिर-सुहामुह जमकिति अजमकित्तीण
सातरो वधो, एगमपण ननुमरमदसणादो । पुरिमपेद ममचउरससठाण-अज्जरिसहमपण-
पसथविहायगद मुम्मर सुभगादेअ उच्चमोदाण मिच्छाद्वि-मामणेषु सातरो वधो । असपद-
सम्मादिट्ठीमु णित्तरो, पडिअसपयडोण नयामाणा । [मणुसगड-] मणुसगडपाओग्गाणु
पुणीण मिच्छाद्वि यासणेषु नवो मानर णित्तरो । कय णित्तरो ? ण, आणदादिदेवेहिंते
निग्गहगदीए मणुमेसुप्पण्णाण' मणुसगदुग्गमम णिग्गनवधुवलमादो । असजदमम्मादिट्ठीमु
णित्तरो वधो, निग्गहगदीए मणुपदुग्गनपाओग्गमम्मादिट्ठीणमणुसगडुग्गम वधामाणादो ।
पचिदिय-ओरात्थियमरिअणोपग-तम नादर पणत्त परघादुस्मास पत्तेअमरीण वधो मिच्छाद्वि
सातर णित्तरो । कय णित्तरो ? ण, मणस्कुमागदिदेअ णेरइण्हितो तिरिस्स मणुस्मेसुप्पण्णाण

इतराय, इनका निरन्तर वध होता है, क्योंकि, यहाँ ये मनुष्य भी प्रकृतियाँ हैं। असाता
वेदनीय, दास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर शुभ, अशुभ, यशस्कृति और अयशस्कृति का
सात्तर वध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका व्यवस्थित धाम देखा जाता है। पुरपेद,
समचतुरस्रसम्मान, धम्मममहनम, प्रशस्तविहायोगति, सुस्स, सुभग, आदेय और
उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सात्तर वध होता है। असयतसम्यग्दृष्टि
योंमें निरन्तर वध होता है, क्योंकि, यहाँ उनका प्रतिपन्न प्रकृतियाँके वधका अभाव है।
[मनुष्यगति] और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वाका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि
गुणस्थायोंमें सात्तर निरन्तर वध होता है।

शुक्रा—निरन्तर वध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, आनतादिक दणमने मनुष्यामें उत्पन्न हुए
जीवोंके निग्रहगतिमें मनुष्यगतिद्विष्का निरन्तर वध पाया जाता है।

असयतसम्यग्दृष्टियाम निरन्तर वध होता है, क्योंकि निग्रहगतिम मनुष्यद्विष्के
वधके योग्य सम्यग्दृष्टियों व य दो सतिथोंके वधका अभाव है। पचेट्ठियज्जानि
आराखिशररीरागोणम, पस, नादर, पणत्त, परघात, उच्छृङ्खल और प्रत्येकशरारका
वध मिथ्यादृष्टियोंमें सात्तर निरन्तर होता है।

शुक्रा—निरन्तर वध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सनकुमागदि वध व नारत्थियोंमेंसे त्रियेचों व

गिरतरवधुनलमादो । सामणसम्मादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीमु गिरतरो, तत्थ पडिवस्सपयडीणं वधामानादो ।

मिच्छाइट्टीसु तेदालीसुत्तरपच्चया, ओवपच्चयमु कम्मडयत्तायजोग मोत्तूण सेस-
धारमजोगपच्चयानममानादो । तत्थ पचमिच्छतेसु अण्णिदेसु अट्ठत्तीम सासणसम्मादिट्ठि-
पच्चया । तत्थ अणताणुअधिचउत्तिकत्थिअदेसु अण्णिदेसु तेत्तीम असजदसम्मादिट्ठिपच्चया
हैंति । सेम सुगम ।

पचणाणारणीय-छदसणाउरणीय-अमादोउदणीय-नारसकमाय-पुरिसयेड-हम्मस रदि-
अरादि-सोग-भय दुगुछा-पचिंदियजादि तेजा कम्मडयसरर-समचउरसमठाण-वण्ण-गअ-रस-फास
अगुसुलहुअ-उवघाद-परघाद-उत्तमास-यमत्थनिहायगउ-त्तस-तादर-पज्जत्त-पत्तेयसरर थिरायिर-
सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण पचतराडयाण मिच्छाइट्टी सामणो
च तिरिस्स-मणुमगडमजुत्त, एदेसिमपज्जत्तकाले गिरय देवगईण वधामानादो । असजद-
सम्मादिट्ठिणो देव मणुमगडमजुत्त वधति, तेमिं गिरय-तिरिस्सगईण वधामानादो । मणुसगड-

मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके निरंतर बन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरंतर बन्ध होता है,
क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके उत्पन्न अभाव है ।

मिव्याहाट्टियांमें तेतालीस उत्तर प्रत्यय होते हैं क्योंकि, ओवप्रत्ययोंमें कामण
काययोगको छोड़कर शेष नारह योगप्रत्ययोंका अभाव है । उनमेंसे पांच मिथ्यात्वोंको
क्रम करनेपर अट्ठत्तीस सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रत्यय होते हैं । उनमेंसे अनन्तानुबन्धि
चतुष्प और स्त्रीत्रिको क्रम करनेपर तेतीस असयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रत्यय होते हैं ।
शेष प्ररूपण सुगम है ।

पाच क्षानाउरणीय, छह दर्शनाउरणीय, असातावेदनीय, नारह कपाय, पुरपवेद,
हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रियजाति, तेजस व कामण शरीर,
समचतुरस्रस्थान, वण, गअ, रस, फास, अगुसुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास,
प्रशस्तनिहायोगति, तम, तादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,
सुभग, सुस्सर, आदेय, यजक्रीति, नयशक्रीति, निर्माण और पाच अन्तराययो मिथ्याहाट्टि
व सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एउ मनुष्यगतिसे मयुक्त ग्राधते हैं, क्योंकि, इनके
अप्याप्तकालमें नरक व देव गतियोंके बन्धका अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टि देवगति
व मनुष्यगतिस मयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उनके नरकगति और तिर्यग्गतिके उत्पन्न अभाव

मणुसगइपाओगाणुपुच्चीओ सपे मणुसगइसजुत्त बधति, सामानियादो । ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोयग उज्जरिसहमउडणाणि मिन्डादिट्ठि-सामणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख मणुस गइमजुत्त, अमजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसजुत्त बधति, एदामिमण्णमईहि मह विरोहादो । उच्चगोदो मिच्छादिट्ठि मासणसम्मादिट्ठिणो मणुसगइमजुत्तमेदेसिमपज्जत्तकाले उच्चगोदा विणामानिदेमईए वधामाभादो । असजदसम्मादिट्ठिणो देव मणुसगइसजुत्त बधति, तम्मु भयन्थ बधमभउदसणानो ।

मणुसगइ मणुसगइपाओगाणुपुच्ची ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोयग-उज्जरिसह-सघडणाण चउगइमिच्छादिट्ठि निगइसासणसम्मादिट्ठि-देवणेरइयअमजदसम्मादिट्ठिणो सामी । अवसेसाण पयडीण चउगइमिच्छादिट्ठि-अमजदसम्मादिट्ठिणा तिगइसामणसम्मादिट्ठिणो च सामी । पचद्दाण सुगम । एदेमिमेथ बधविणामो णट्ठिय । पचणाणानरणीय-छदसणानरणीय बारम-कमाय-भय दुगुछा-तेजा-कम्मइयसरीर उण्णचउत्तक-अगुरुअलहुअ-उवघाद णिमिण-पंचतराइ-याण मिच्छादिट्ठिहि चउज्जिहो बधो । अण्णत्थ तिनिहो, धुवउपाभादो । अवसेसाण पयडीण बधो सउरत्थ सादि-अद्धो, अद्धववधितादो ।

हे । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सउ मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वाभाविक है । आहारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और यज्जरमसहननको मिथ्यादष्टि और सासादनसम्यग्दष्टि नियमगति व मनुष्यगतिसे सयुक्त तथा असयत सम्यग्दष्टि मनुष्यगतिते सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, इनका अथ गतियोंका साथ विरोध है । उच्चगोत्रको मिथ्यादष्टि और सासादनसम्यग्दष्टि मनुष्यगतिते सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, इनका अपवात्तकालमें उच्चगोत्रकी अविनाभाविकी देवगतिके बन्धका अभाव है । असयतसम्यग्दष्टि देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उच्चगोत्रके बन्धकी सम्भावना उक्त दोनों गतियोंके साथ देखी जाती है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आहारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और यज्जरमसहननके चारों गतियोंके मिथ्यादष्टि, तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दष्टि, तथा देव व नारकी असयतसम्यग्दष्टि स्वामी हैं । दोष प्रवृत्तियोंके चारों गतियोंके मिथ्यादष्टि व असयतसम्यग्दष्टि, तथा तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दष्टि स्वामी हैं । वचाज्जन सुगम है । इनका यहा उधविनाश नहीं है ।

पाच भानानरणीय, छह दशानानरणीय, गारह कपाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व कामल शरीर, यणादिष चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तरायका मिथ्यादष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बध होता है । अथवा तीन प्रकारका व ध होता है, क्योंकि, यहा धुरयधका अभाव है । दोष प्रवृत्तियोंका वध सर्वत्र आदि व अधुव होता है, क्योंकि, व अधुववची है ।

णिद्वाणिद्वा पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-
माया लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ चउसंठाण चउसंघडणं-तिरिक्खगइ-
पाओग्गाणुपुब्बि-उज्जोव अप्पसत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-
णीचागोदाणं को बंधो को अवधो ? ॥ १६१ ॥

सुगमं ।

भिच्छाइट्ठो सासणसम्माइट्ठो बंधा । एदे बंधा, अवसेसा
अबंधा ॥ १६२ ॥

एदस्सथो वुच्चदे—अणताणुअधिउत्तिकत्थिवेदाण बंधोदया सम वोच्छिण्णा,
सासणसम्मादिट्ठिम्हि तदुमयामाउदसणादो । एवमणपयडीण जाणिय वत्तव्व ।

थीणगिद्धितिय-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराण परोदओ
बंधो, विग्गहगदीए एदासिमदयाभावादो । अणताणुअधिउत्तिकत्थिवेद-तिरिक्खगइ-
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि-दुमग-अणादेज्ज-णीचागोदाण सोदय-परोदओ बंधो, एदासिमेत्थ

निद्रानिद्रा, प्रचलप्रचल, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,
रोगवेद, तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत,
अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका कौन बन्धक और कौन
अबन्धक है ? ॥ १६१ ॥

यह सुख सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक
हैं ॥ १६२ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अनन्तानुबन्धितुष्क और रोगवेदका बन्ध व उदय
दोनों मध्यमं न्युत्तिष्ठ होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि शुणस्थानमे उन दोनोंका
अभाव देखा जाता है । इसी प्रकार अन्य प्रकृतियोंका पूर्ण या पश्चात् होनेवाला बन्ध व
उदयका व्युच्छेद जानकर कहना चाहिये ।

स्त्यानगृद्धिप्रय, चार सस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति और
दुस्वरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है ।
अनन्तानुबन्धितुष्क, रोगवेद, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय
और नीचगोत्र, इनका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनके उदयके

उदयणियमाभापादो । धीणगिद्धितिय अणताणुवधिचउक्काण गिरतरो वधो, धुववधित्तो ।
तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी जीचागोदाण मिच्छाइद्धिंढि सातर गिरतरो वधो । कध
गिरतरो ? सत्तमपुट्टणिग्गइएहिंतो तेउ गउक्काइएहिंतो च कयणिग्गहाण गिरतरवदसणादो ।
सासणमम्माइद्धिंढि सातरो, तत्तो त्रिणिग्गयसामणसम्माइद्धीण सभराभापादो । अउसेसाण
पयडीण सन्वत्थ सातरो वधो, अणियमेण उधुवरमदसणादो । पन्चया सुगमा । तिरिक्खगइ-
निरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोनाणि निरिक्खगइमजुत्तमउसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-
मणुसगइमजुत्त उधति । चउगइमिच्छाइद्धी तिगइसामणसम्मादिद्धिणो च सामी । वधद्वान
वधत्रिणद्वद्वान च सुगम । धीणगिद्धितिय अणताणुवधिचउक्काण मिच्छाइद्धिंढि चउव्विहो
वधो । सासणे दुविहो, अणाइ धुवाभापादो । अउसेसाण पयडीण सन्वत्थ वधो सादि-
अद्धवो ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १६३ ॥

सुगम ।

नियमना अभाज ह । स्थापनगृद्धित्रय ओर अत तानुवन्धिचतुप्पना निर तर व ध होता
है, क्योंकि, ये सुघ्न वी हैं । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रना
मिध्यादष्टि गुणस्थानमें सातर निरतर र्ग्य होता है ।

शका—निरतर र्ग्य कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नागनियों ओर तेजकायिक व वायुनायिकों
मेंसे विप्रहरा करनवाले जीवोंके निरतर र्ग्य देखा जाता है

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें इनका सातर वध होता है, क्योंकि, वहासे
निष्कटे रूप सामादनसम्यग्दष्टियोंकी सम्भावना नहीं है । शेष प्रवृत्तियोंका सत्र मान्तर
वन्ध होता है, क्योंकि, अनियमसे उनका वन्धनिष्ठाम दूखा जाता है । प्रत्यय सुगम है ।

तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतरो तिर्यग्गतिसे मयुक्त, तथा
शेष प्रवृत्तियोंको तिर्यग्गति उ मनुष्यगतिसे मयुक्त बाधते ह । चारों गतियोंके मिध्यादष्टि
और तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दष्टि स्वामी ह । वन्धाधान और वन्धजिनप्रस्थान
सुगम हैं । स्थापनगृद्धित्रय ओर अत तानुवन्धिचतुप्पका मिध्यादष्टि गुणस्थानमें चारों
प्रकारका र्ग्य होता है । सासादन गुणस्थानम दो प्रकारका वध होता है क्योंकि, वहा
अनादि व धुव वधका अभाज है । शेष प्रवृत्तियोंका मवय सादि व अधुव वध
होता है ।

सातावेदनीयका कोन वन्धक और कोन अवधक है ? ॥ १६३ ॥

यद सत्र सुगम है ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी सजोगिकेवली
बंधा । एदे बंधा, अवंधा णत्थि ॥ १६४ ॥

सादापेदणीयस्म नमो उदयो वा पुन्य मोच्छिणो किं पन्था वोच्छिणो त्ति एत्थ
परिस्ता णत्थि, तदुभयमोच्छेदाभावादो । मोदय-परोदयो धनो, अद्भवोदयत्तादो । सजोगि
केरलिम्हि णितरो धनो, पडिपुत्तपयडीए चराभावादो । अणत्थ सातरो । पच्चया सुगमा ।
णपरि सजोगिकेरलिम्हि रुम्मइयत्तायजोगपच्चजो एकको चेव । मिच्छाइट्टि सासणसम्मा-
इट्टिणो तिरिस्स मणुसगइमजुत्त अमजदसम्मादिट्टिणो देव मणुसगइसजुत्त वर्धति । सजोगि
केरली अगइसजुत्त । चउगइमिच्छाइट्टि अमजदसम्मादिट्टिणो तिगइमासणमम्मादिट्टिणो
मणुसगइमजोगिकेरलिणो च सामी । चवद्धाण सुगम । एत्थ वधमोच्छेदो णत्थि । सादि-
अद्भवो धनो, पण्यत्तमाणनपादो ।

मिच्छत णवुंसयवेद-चउजादि हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-
आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को
अबंधो ? ॥ १६५ ॥

मिथ्यादृष्टि, मामादनमम्यगृष्टि, अमयतमम्यगृष्टि और सयोगकेवली बन्धक हैं । ये
बन्धक ह, अनन्धक नहीं है ॥ १६४ ॥

नातात्रेदनीयका ग्रन्थ अवगा उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या क्या पश्चात्
व्युच्छिन्न होता है, इसकी यहा परीक्षा नहीं है, क्योंकि, उस दोनोंके व्युच्छेदका यहा
अभाव है । मोदय परोदय वध होता है, क्योंकि, वह अद्भवोदयी प्रवृत्ति है । सयोग
केरली गुणस्थानमें निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, उहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके अन्धका अभाव
है । ग्रन्थ सातर ग्रन्थ होता है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि सयोगकेवली
गुणस्थानमें एक ही कामनकाययाग प्रत्यय है । मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यगृष्टि
तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसं सयुक्त, तथा असयतमसम्यगृष्टि देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त
ग्राधते हैं । सयोगकेरली गतिसयोगसे रहित ग्राधते हैं । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि व
असयतमसम्यगृष्टि, तीन गतियोंके सासादनसम्यगृष्टि, तथा मनुष्यगतिके सयोगकेरली
सामी हैं । उन्धाध्यान सुगम है । यहा बन्ध-मुच्छेद नहीं है । सादि २ अद्भव बन्ध होता
है, क्योंकि, उसका बन्ध परिवर्तनशील है ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, चार जातिया, हुण्डमस्थान, अमप्राप्तमृपाटिकासहनन,
जाताप, स्थानर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन बन्धक व कौन
अबन्धक है ? ॥ १६५ ॥

सुगम ।

मिच्छादृष्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १६६ ॥

एतत् पुन्य पच्छा वा नवो वोच्छिण्णो' ति विचारो जल्यि, एत्कगुणद्राणमि तद-
समराणे । मिच्छतस्म सोदओ वधो, अण्णहा वधाणुत्तमादो । ननुमयोदे-चउज्जादि-थार-
सुत्तुम अपज्जत्तणामाण वधो सोदय परोदओ, विग्गहगदीए उदयणियमामाणादो । हुडसठाण-
अमपत्तमेवइसघडण आदाय-साहारणमरीणामाण परोदओ नवो, विग्गहगदीए विग्गमेणेदामि
उदयाभावादो । मिच्छतस्म वधो गिरत्तो । अउसेसाण पयडीण सात्तो, अणियमेण एगसमय-
वधदमणादो । पच्चया सुगमा । मिच्छत-ननुमयोदे-हुडसठाण असंपत्तसेत्तुमयडण-अपज्जत्ताय
तिरिख मणुमगइमजुत्तो, चदुजादि-आदाय-थावर-सुत्तुम-साहारणाण तिरिखगइसजुत्तो वधो,
अण्णगइहि सह एदासि वधविरोहादो । मिच्छत-ननुमयोदे-हुडसठाण अमपत्तयेवइमघडणाण
चउगइमिच्छादृष्टी सामी, चउगइउदएण सह एदासि वधस्म विरोहाभावादो । एइदिय-

पह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, ओप अवन्धक हैं ॥ १६६ ॥

यहा उदयस पूर्वमें अथवा पीछे वध व्युत्पन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि,
एक गुणज्ञानमें यह सम्भव ही नहीं है । मिथ्यात्वका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि,
अपने उदयके बिना उसका वध पाया नहीं जाता । नपुंसकवेद, चार जातियां, स्वात्प,
सूक्ष्म और अपर्याप्त नामकर्मका वध स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें
इनके उदयका निग्रह नहीं है । हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसुपाटिकासहनन, आत्पा और
साधारणशरीर नामकर्मका परोदय वध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें नियमने इनके
उदयका अभाव है ।

मिथ्यात्वका वध निरन्तर होता है । गय प्रकृतियोंका सात्तर बन्ध होता है,
क्योंकि, उनका अनियमसे एक समय बन्ध देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है । मिथ्यात्व,
नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसुपाटिकासहनन और अपर्याप्तका तिर्यग्गति व
भनुष्यगतिसे संयुक्त तथा चार जातियां आत्पा, स्वात्प, सूक्ष्म और साधारणका
तिर्यग्गतिसे संयुक्त वध होता है, क्योंकि, अय गतियोंके साथ इनके वधका विरोध
है । मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसुपाटिकासहननके चारों
गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, चारों गतियोंके उदयके साथ इनके वधका

आदान-वापराण तिगइमिच्छाइटी सामी, गिरयगइमिच्छाइटिन्हि तासिं वधाभावादे । धीइदिय-
तीइदिय-चउरिंदिय-सुहम अपज्जत्त-साहारणाण तिरिण्ण मणुसगइमिच्छाइटी सामी, देव-गेरइ-
एसु एदासिं वधाभावादे । नधद्वाण धधणिण्डडाण च सुगम । मिच्छत्तस्स नधो चउविहो ।
सेसाण सादि अद्दुवो ।

देवगइ वेउवियसरीर-वेउवियसरीरंगोवंग-देवगइपाओग्गाणु-
पुवि-तित्थयरणामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १६७ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिटी वंधा । एदे वधा, अवेससा अवंधा ॥ १६८ ॥

किं नधो पुव्व पन्था वा जेच्छिण्णो सि एत्थ त्रिचारे णत्थि, एक्कमिह तदसमवादे ।
एदासिं पचण्ह पि परोदओ वधो, सोदएण सह मगनधस्स पिरोहादे । गिरतरो वधो,
णियमेणाणेगममयनधदसणादे । त्रिगहगदीए दोण्ह समयाण कधमणेगववएमो ? ण, एग
मोत्तुणुरिमसन्धमराए अणेगसइपवुत्तीदे । पन्चया सुगमा । णवरि णवुमयवेदपच्चओ

विरोध नहीं है । ऐकेन्द्रिय, आताप और स्वाधर प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि
स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें उनके बन्धका अभाव है । द्वीन्द्रिय,
तीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, सुहम, अपर्याप्त और साधारण प्रकृतियोंके त्रिरंगगति व मनुष्य
गतिके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, देव व नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है ।
व्यापार्यन और बन्धयिनप्रस्थान सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है ।
शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है ।

देवगति, वैकियिकशरीर, वैकियिकशरीरागोपाग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और तीर्थकर
नागरुर्मेका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १६७ ॥

यह खूब सुगम है ।

असयतमम्यदृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १६८ ॥

क्या बन्ध उदयसे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह त्रिचार यहा नहीं है,
क्योंकि, एक गुणस्थानमें उक्त त्रिचार सम्भव नहीं है । इन पाँचों प्रकृतियोंका परोक्ष बन्ध
होना है, क्योंकि, इनके अपने उदयके साथ बन्ध होनेका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है,
क्योंकि, नियमसे इनका अनेक समय तब बन्ध देखा जाता है ।

शुक्रा—विप्रदगतिमें दो समयोंका नाम अनेक समय कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पन्थो छोड़कर ऊपरकी सब सत्त्वामें 'अनेक'
शब्दकी प्रवृत्ति है ।

प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि यहा नपुसकबेद प्रत्यय नहीं है, क्योंकि,

णत्थि, निग्गह्मदीए वट्टमाणेण्डयअसज्जदम्ममादिद्वीसु वेउन्नियचउत्तस्स पधामाणाओ ।
 तित्थयरस्स पुण ते चेव तेत्तीम पचया, तत्थ णवुमयवेदपच्चयदमणाओ । वेउन्नियचउत्तस्स
 देवगइसज्जुतो, तित्थयरस्स देव मणुमगइसज्जुतो पयो । वेउन्नियचउत्तस्स तिरिक्ख
 मणुसअमज्जदम्ममादिद्वी सामी । तित्थयरस्स तिगइअसज्जदम्ममादिद्वी सामी, तिरिक्खगइअस
 ज्जदम्ममादिद्वीसु तित्थयरवणाभाणाओ । बरद्धान पधयेच्छेदद्धान च सुगम । । एदासि पधो
 सादि-अद्धवो, धुनअभित्ताभाणाओ ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेद-णवुसयवेदएसु पचणाणावरणीय
 चउदंसणावरणीय सादायेदणीय चटुसजलण पुरिमवेद-जसकित्ति उच्चा-
 गोद पचतराहयाणं को बधो को अवंधो ? ॥ १६९ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठिउवसमा खवा बधा । एदे
 बधा, अवंधा णत्थि ॥ १७० ॥

विग्रहगतीमें वर्तमान नारकी असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें त्रैत्रियिकचतुष्कके बन्धका अभाव है ।
 किंतु तीर्थंकर प्रवृत्तिके ये ही तेत्तीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेद प्रत्यय देखा जाता
 है । त्रैत्रियिकचतुष्कका देवगतिसे सयुक्त और तीर्थंकर प्रवृत्तिकर देव यद्यप्य गतिसे
 सयुक्त बंध होता है । त्रैत्रियिकचतुष्कके बंधके तिर्यंच न मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि
 स्वामी है । तीर्थंकर प्रवृत्तिके तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि,
 तिर्यंगतिके असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें तीर्थंकरके बंधका अभाव है । बन्धाग्रान और बंध
 स्पृच्छित्तिस्थान सुगम है । इनका बंध सादि और अभुव होता है, क्योंकि, ये भुवबन्धी
 नहीं हैं ।

वेदमार्गणानुसार स्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार
 दर्शनावरणीय, सातायेदनीय, चार सज्जलन, पुरुषवेद, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच
 अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १६९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमें लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं । ये बंधक
 ७, अबन्धक नहीं हैं ॥ १७० ॥

इत्थिवेदस्स ताव वुच्चदे— एत्थ उदयादो बधो पुव्व पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, पुरिसवेदस्स एयतेणुदयाभावादो सेसाण च पयडीण बधोदयवोच्छेदाभावादो ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराइयाण च सोदओ बधो, धुवोदयत्तादो । पुरिसवेदस्स परोदओ बधो, इत्थिवेदे उदिण्णे पुरिसवेदस्सुदयाभावादो । सादावेदणीय-चदुसजलणाण सोदय-परोदओ बधो, उदएण परावत्तणपयडित्तादो । जसकितीए मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव असजदसम्मादिट्ठि त्ति सोदय परोदओ, एदेसु पडिवक्खुदयसमवादो । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खपयडीए उदयाभावादो । उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा त्ति बधो सोदय-परोदओ, एदेसु णीचागोदुदयसमवादो । उवरि सोदओ चेव, णीचागोदस्सुदयाभावादो ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-चउसजलण-पचतराइयाण गिरतरो बधो, धुवबधि-त्तादो । सादावेदणीय-जसकितीण मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसजदो त्ति सातरो बधो, पडिवक्खपयडीए बधुवलभादो । उवरि गिरतरो, णिप्पडिवक्खत्तादो । पुरिसवेदुच्चागोदाण

पहले खीवेदके विषयमें कहते हैं— यहा उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, नियमसे यहा पुरुषवेदके उदयका अभाव है, तथा शेष प्रकृतियोंके बन्ध ओर उदयके व्युच्छेदका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । पुरुषवेदका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, खीवेदका उदय होनेपर पुरुषवेदके उदयका अभाव है । सातावेदनीय और चार सज्जलनका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उदयकी अपेक्षा ये प्रकृतिया परिवर्तनशील हैं । यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है । उपरिम गुणस्थानोंमें उसका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयतासयत गुणस्थान तक स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें नीचगोत्रका उदय सम्भव है । सयतासयतसे ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा नीचगोत्रके उदयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार सज्जलन और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । सातावेदनीय और यशकीर्तिका मिथ्या दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सातार बन्ध होता है, क्योंकि, यहा उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनका बन्ध प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है । पुरुषवेद और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि पश्

मिच्छादिङ्गि सासणसम्मादिङ्गीसु सांतर-णितरो उचो । कय णितरो ? ण, पम्म-सुक्कलेस्सिएसु तिरिक्ख मणुस्सेसु पुरिमोउच्चागोदाण णितरउधुलमादो । उअरि णितरो, पडिअय पयडीण वचामानादो ।

सन्वगुणद्वानाणमेवपच्चएसु पुरिम णतुमयेदेसु अवाणिदेसु अउसेसा एत्थ एदाप्ति पच्चया होति । णअरि पमत्तसण्णेषु आहार आहारमिस्मकायजोगपच्चया अउणेदव्वा, इत्थिवेदोदइल्लण तदमभमादो । असजदसम्मादिङ्गीसु ओरालिय-त्रेउवियमिम्स-कम्मइयकाय-जोगपच्चया अवणेदव्वा, तत्थ असजदसम्मादिङ्गीणमपज्जत्तकालामानादो । सेस सुगम ।

पचणाणारणीय चउदसणावरणीय-चटुमज्जलण पचतराइयाण मिच्छादिङ्गी चउगइ-सजुत्त । सासणसम्मादिङ्गी तिगइसजुत्त, णितरगइए अमानादो । सम्मामिच्छादिङ्गि-असजदसम्मा दिङ्गिणो देव मणुमगइसजुत्त । उअरिमा देवगइमजुत्त अगइसजुत्त च वधति । सादावेदणीय पुरिसवेद-असकित्तीओ मिच्छादिङ्गि सासणसम्मादिङ्गिणो तिगइसजुत्त, सम्मामिच्छादिङ्गि-असजद

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें सांतर निरन्तर उन्म होता है ।

शुक्रा—निरन्तर वध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि पद्म और शुक्र लक्ष्म्यावाले नियंत्रण यन्त्रोंमें पुरुषवेद और उच्चगोत्रका निरन्तर वध पाया जाता है ।

ऊपर उनका निरन्तर उन्म होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके वधका अभाव है ।

सब गुणस्थानोंके ओषधप्रत्ययोंमें पुरुषवेद और नपुंसकरुदको कम करवेनेपर शेष यहा इन प्रवृत्तियोंके प्रत्यय होते हैं । विशेषना इतनी है कि प्रमत्तलयतांमें आहारक और आहाररुमि २ काययोगप्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि, त्रिवेदके उद्भूत जीवोंके ये दोनों प्रत्यय सम्भव नहीं हैं । अमयनसम्यग्दष्टियोंमें आंतरिकमित्र, घेनिघिनामित्र और कामेण काययोग प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, त्रिवेदियोंमें असयत सम्यग्दष्टियोंके अपयाप्तकालका अभाव है । शेष प्ररूपणा सुगम है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दशनावरणीय, चार सज्जलन और पाच अंतरायकों मिथ्यादष्टि चारों गतियोंसे समुक्त, तथा सासादनसम्यग्दष्टि तीन गतियोंसे समुक्त बाधते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दष्टियोंमें नररुगतिने बन्धका अभाव है । सम्यग्मिथ्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टि देवगति व मनुष्यगतिसे समुक्त बाधते हैं । उपरिम त्रिवेदी जीव देवगतिसे समुक्त और गतिसंयोगसे रहित बाधने हैं । सातावेदनीय, पुरुषवेद और यशस्वीतिथि मिथ्यादष्टि व सामादनसम्यग्दष्टि तीन गतियोंसे समुक्त, सम्यग्मिथ्यादष्टि

सम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगडसजुत्त, उवग्गिमा देवगडमजुत्तमगडसजुत्त च ववति । उच्चागोद सधे देव मणुसगडसजुत्तमगडसजुत्त च नथति ।

तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणमम्मादिट्ठि-सम्माभिच्छादिट्ठि असजदसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगदीए इत्थिपेदस्सुदयाभावादे । दुगडसजदासजदा सामी, देव णेरइएसु अणुज्जईण-मभावादे । उपरि मणुस्सा चेव, अण्णत्थुरिमगुणाभावादे । वधद्वाण सुगम । वधोच्चेदो णारि । पचणाणा रणीय चउदमणा रणीय-चउमजलण-पचतराडयाण मिच्छाईट्ठीसु चउन्विहो ववो । अण्णत्थ तिनिहो, गुताभावादे । सेमपयडीण सादि-अद्दुओ, अद्दुववधित्तादे ।

वेद्वणी ओघ ॥ १७१ ॥

‘वेद्वणी’ मिच्छादिट्ठि-मामणसम्माईट्ठीसु उवपाओगभावेण अवट्टिदाणि ति वुत्त होदि । तेमि परूवणा ओघ होदि ओघतुल्लेति ज वुत्त होदि । एदमण्णामुत्त देसामासिय, ओघादे एदमिद्दि घोवभेदुलभादे । त मण्णमाणसुत्तरेण सह मिस्साणुगहट्ठ परूवेमो—धीणगिद्धितिय-

और अनयतसम्यग्दृष्टि देवगति व मनुष्यगतिये संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिये संयुक्त और गतिसयोगसे रहित पावते हैं । उच्चगोत्रको मनुष्यगति जीव देव व मनुष्य गतिये संयुक्त तथा गतिसयोगसे रहित पावते हैं ।

तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासात्तनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और अत्यंत सम्यग्दृष्टि स्वरूपी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें स्त्रीवेदके उदयका अभाव है । दो गतियोंके सत्यतासयत स्वरूपी हैं, क्योंकि, देव नागत्रियोंमें अणुनतियोंका अभाव है । उपरिम गुणस्थानत्रयी मनुष्य ही स्वरूपी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उपरिम गुणस्थानोंका अभाव है । उन्धाध्यान सुगम है । उन्ध चुकड़े हैं नहीं । पांच ज्ञानावरणीय, चार वर्णावरणीय, चार सज्जन और पांच अन्तर्गर्भोंका मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका उन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका उन्ध होता है, क्योंकि, उहा धुन उन्धका अभाव है । शेष प्रवृत्तियोंका सादि व अधुन उन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुनरन्धी हैं ।

‘द्विस्थानिक प्रवृत्तियोंकी प्ररूपणा जोधके समान है ॥ १७१ ॥

द्विस्थानिका अर्थ मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उन्धकी योग्यतासे अवस्थित प्रवृत्तिया हैं । उनकी प्ररूपणा ओघ है अर्थात् ओघके समान है, यह अभिप्राय है । यह वर्णणासूत्र देशादर्शक है, क्योंकि, ओघमें इतने जोड़ा भेद पाया जाता है । प्रस्तुत सूत्रके अर्थके साथ शिष्योंके अनुग्रहार्थ उक्त भेदकी प्ररूपणा करते हैं—

अणताणुअधिचउत्तिकरिखेवेद तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउसठाण चउसघडण तिरिक्खगइपाओ-
ग्गाणुपुत्ति-उज्जेव-अप्पमत्थविहायगइ-दुमग दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि वेद्धानियाणि ।
एदेसु अणताणुअधिचउत्तिकस्स वधोदया सम वेच्छिण्णा । अण्णपयडीण^१ सच्चासिं पि पुव्व
वधो पच्चा उदओ वेच्छेदुमुग्गओ । कुदो ? तथोवलभादो ।

धीणगिद्धित्तिअ अणताणुअधिचउत्तिक-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ चउसठाण-चउसघडण-
तिरिक्खाणुपुत्ति उज्जेव अप्पमत्थविहायगइ दुमग-दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण वधो सोदय
परोदओ, उभयया वि वधानिरोहादो । इत्थिवेदस्स सोदएणेव वधो, तदुदयमहिक्किच्च^२
परूणापारभादो । ओघादो एत्थ विसेसो एसो, तन्थ सोदय परोदएहि वधोवेदसादो ।

धीणगिद्धित्तिअ-अणताणुअधिचउत्तिक तिरिक्खाउआण वधो णिरतरो । तिरिक्खगइ
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुत्ति णीचागोदाण मिग्गइडिग्गि सातर-णिरतरो, सत्तमपुढवीणेरइएहितो
तेउ-वाउकाइएहितो च णिप्फिडिदूणिस्थिवेदेसुप्पण्णाण मुहुत्तस्सतो णिरतरवधुवलभादो ।

स्थानगृद्धिअय, अनन्तानुअधिचतुप्फ, ख्विद, निर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार
सहनन, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और
नीचगोत्र, ये द्विस्थानिक प्रकृतिया हैं । इनमें अनन्तानुअधिचतुप्फका बन्ध
और उदय दोनों साथ द्युच्छिन्न होने ह । अन्य सब ही प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध और
पश्चात् उदय द्युच्छेदको प्राप्त होता है, क्योंकि, वेसा पाया जाता है ।

स्थानगृद्धिअय, अनन्तानुअधिचतुप्फ, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार
सहनन, तियगानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और
नीचगोत्रका बन्ध स्रोदय परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे ही उनके बंधके
विरोधका अभाव है । ख्विदका स्रोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, उसके उदयका
अधिकार करके इस प्रकृयणात्मा प्रारम्भ हुआ है । ओघसे यहा यह विशेष है, क्योंकि, यहा
स्रोदय परोदयमें बन्धका उपदेश है ।

स्थानगृद्धिअय, अनन्तानुअधिचतुप्फ और तिर्यगायुका बन्ध निरन्तर होता है ।
तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सातर
निरन्तर होता है, क्योंकि, सत्तम पृथिवीके नाटकियोंमेंसे तथा तेजकायिक व धायुकायिक
जीवोंमेंसे निकलकर ख्विदियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तमुहूर्त काल तक निरन्तर बन्ध

१ प्रतिश्रु 'अण्णपयडीण' इति पाठ ।

२ प्रतिश्रु 'तदुदयमहिक्किच्च' इति पाठ ।

सासणम्मि सातरो, ततो तेसिमुववादाभावादो । अउसेसाण पयडीण चधो सांतरो, अणियमेणेग-
समयनधुवलभादो । एमा परुवणा ओघादो थोवेण मि ण विरुज्झदि, समाणत्तुवलभादो ।

पच्चया ओघपच्चयतुल्ला । णरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीण जहाकमेण
तेजणट्ठेत्तालीसुत्तरपच्चया, पुरिस णवुसयनेदपच्चयाणमभावादो । तिरिक्खाउअस्स मिच्छादिट्ठि-
सामणसम्मादिट्ठीसु कमेण पचास पचेतालीस पच्चया, ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकाय-
जेग-पुरिम-णवुसयनेदपच्चयाणमभावादो । तदभावो वि इत्थिवेदोदइल्लणमपज्जत्तकाले
आउअकम्मस्स चधाभावादो ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्माणुपुव्वि उज्जेवाणि मिच्छादिट्ठि सासण-
सम्मादिट्ठिणो तिरिक्खगइसजुत्त बधति । अपसत्त्यविहायगदि-दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचा-
गोदाणि मिच्छादिट्ठिणो तिगइमजुत्त बधति, देवगईए बधाभावादो । सासणसम्माइट्ठिणो तिरिक्ख-
मणुसगइसजुत्त बधति, देव णिरयगईए सह बधाभावादो । चउसअण-चउसचण्णाणि तिरिक्ख-
मणुसगइसजुत्त बधति, एदासि णिरय-देवगईहि सह बधाभावादो । थीणगिद्वित्थिय-अणताणु-

...

पाया जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उस
गुणस्थानसे उक्त जीवोंके उत्पादका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है,
क्योंकि, बिना नियमके उनका एक समय बन्ध पाया जाता है । यह प्ररूपणा ओघसे थोड़ी
भी विरुद्ध नहीं है, क्योंकि, समानता पायी जाती है ।

प्रत्यय ओघप्रत्ययोंके समान हैं । विशेषता इतनी है कि मिथ्यादृष्टि और
सासादनसम्यग्दृष्टियोंके यथानुक्रमसे तिरिपन और अस्तालीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि,
उनके पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । तिर्यगायुके मिथ्यादृष्टि और
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे पचास और पैंतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके
औदारिकमिथ्र, वैक्रियिकमिथ्र, कार्मणकाययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव
है । उनका अभाव भी त्रिविदेादय युक्त जीवोंके अपर्याप्तकालमें आयु कर्मोंके बन्धका
अभाव होनेसे है ।

निर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको मिथ्यादृष्टि य
सासादनसम्यग्दृष्टि जीव तिर्यग्गतितसे संयुक्त बाधते हैं । अप्रशस्तविहायोगति, दुर्मग,
दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि जीव तीन गतियोंसे संयुक्त बाधते हैं,
क्योंकि, उनके देवगतिके बन्धका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति य मनुष्य
गतितसे संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उनके देव २ नरक गतिके साथ उनका बन्ध नहीं होता ।
चार सस्थान और चार सहननको तिर्यग्गति य मनुष्यगतितसे संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि,
इनका नरकगति य देवगतिके साथ बन्ध नहीं होता । स्थानगृद्धिप्रय और अनन्तानु

यधिचउत्काणि मिन्ठाडिठिणो चउगडमजुत्त, सामणमम्मादिठिणा तिगइसजुत्त यधति,
गिरयगईए जमायादो ।

मन्त्रासि पयडीण तिगइमिन्ठादिठि सामणमम्मादिठिणो मामी, गिरयगईए इत्थियेदु
दयाभायादो । यउदाण उउणिणइड्डाण च सुगम, सुत्तुडिड्डादो । सत्तए धुउपयडीण मिन्ठा
इत्थिइ चउत्तिहो यधो । सामणे तुविहो यधो, जणाइ-धुजाभायादो । अउसेसाण सुवत्थ
सादि अद्धो, अद्धवर्षवत्तादो ।

णिहा पयला य ओघ ॥ १७२ ॥

एदामि दोण्ह पयडीण जहा ओघम्मि परूणणा कदा तहा कायन्ना । जवरी पच्चएसु
पुरिस जनुमयवेदपन्नाया अणेदन्ना । जवरी अमज्जसम्मानिठिइह ओरात्थिय-उउनिमिस्स
कम्मइयत्तायजोणा च, इत्थियेदोदहियारादो । पमत्तमज्जदग्गे पुरिस जनुमयवेदेहि सह जाहारदुग
च अणेदन्ना, अप्पमत्तवेदोदइल्लाणमाहारमरीस्सुदयाभायादो । तिगइमिच्छादिठि-सामणमम्मा
दिठि सम्मामिच्छादिठि अमज्जसम्मानिठिणो सामी, गिरयगईए इत्थियेदोदइल्लाणममावातो ।

यन्धिचतुप्पको मिध्याइए चार गतियोंसे संयुक्त पाद्यते हैं । सात्तादनसम्यग्दृष्टि तान
गतियोंसे संयुक्त पाद्यते हैं, क्योंकि, उनके नरकगतिका उन्ध नहीं होता ।

सन प्रकृतियोंके तीन गतियोंसे मिथ्याइए और सात्तादनसम्यग्दृष्टि स्वामी है,
क्योंकि नरकगतिके स्त्रीवेदके उद्भवका अभाव है । उन्ध-पन्ना और धन्विनप्रस्थान
सुगम हैं, क्योंकि, वे स्वयं ही निर्दिष्ट हैं । सान प्रकृतियोंका मिथ्याइए गुणस्थानमें चारों
प्रकारका य ध होता है । सात्तादन गुणस्थानमें व प्रकारका य ध होता, क्योंकि, यहा
अनादि य धन य धका अभाव है । दोष प्रकृतियोंका सवन सादि य अधुव य ध होता है,
क्योंकि, वे अधुव य धी हैं ।

निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७२ ॥

इत दो प्रकृतियोंकी जेमे ओघमें प्ररूपणा की गई है उसे करना चाहिये । विशेष
यह है कि प्रत्ययोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका क्रम करना चाहिये । इतनी और
भी विशेषता है कि असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिथ्य, वैश्रियिकमिथ्य और कर्मण
काययोग प्रत्ययोंकी भी क्रम करना चाहिये, क्योंकि स्त्रीवेदका अधिकार है । प्रमत्तसयत
गुणस्थानमें पुरुष और नपुंसक वेदोंके साथ आहारकशरीरके भी क्रम करना चाहिये,
क्योंकि, अप्रदाम्न वेदोदय युक्त जीवोंके आहारकशरीरके उद्भवका अभाव है । तीन
गतियोंके मिथ्याइए सात्तादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्याइए और असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी
हैं, क्योंकि, नरकगतिके स्त्रीवेदोन्ध युक्त जीवोंका अभाव है । केवल इतनी ही ओघसे

१ प्रत्ति ' कथजाना इति पाठ ।

२ पाठगी सात्तादनसम्यग्दृष्टिअसयतसम्यग्दृष्टि इति पाठ ।

एतिओ चेन त्रिसेमो, णत्थि अण्णत्थ कन्थ नि । तेण दव्वट्टियणय पहुच्च ओवमिदि वुत्त ।

असादावेदणीयमोघं ॥ १७३ ॥

असादेवेदणीयमिन्चेदेण पयडिणिहेमो ण कदो, किंतु असादेवेदणीय-अरदि-सोग-अयिर असुह-अजमकिति' त्ति उप्पयट्ठिडिओ जमाददडो असादेवेदणीयमिदि णिदिट्ठो । जहा सच्चहामा भामा, भीममेणो मेणो, बलदेवो देवो त्ति । एदामिं छण्ण परूणणा ओघ-तुल्ला । णत्थि एत्थ नि पच्चयनिमेषो मामित्तनिमेषो च णायवो ।

एकद्वणी ओघ ॥ १७४ ॥

एक्कमि मिच्छाद्विगुणद्वणे जाओ पयडीओ ववपाओग्गा हेदूण चिट्ठति तासिमेगद्वणि त्ति सण्णा । तिस्से एकद्वणीए परूणणा ओघतुल्ला । त जहा — मिच्छत्तम्म वधोदया सम वोच्छिण्णा । णवुमयदेद-णिरयाउ णिरयगट-णिरयगइपाओग्गाणुपुत्थी एइदिय चीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि-आदान धावर सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाण वधोदयोच्छेदविचारो णत्थि,

विशेषता है, अन्यत्र ओर कहीं भी विशेषता नहीं है । इसीलिये द्रव्याधिक नयकी अपेक्षा कर 'आयुके समान है,' ऐसा कहा गया है ।

असादावेदनीयकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७३ ॥

असादावेदनीय इस पदसे प्रश्रुतिका निर्देश नहीं किया है, किन्तु असादावेदनीय, अरानि, शोक, अन्विष्ट, अशुभ और अयशस्वीर्ति, इन छह प्रश्रुतियोंसे सम्बद्ध असादावेदकी 'असादावेदनीय' पदसे निर्दिष्ट किया गया है । जैसे सत्यभामाको 'भामा', भीमसेनको 'सेन' और उल्लसको 'देव' पदसे निर्दिष्ट किया जाता है । इन छह प्रश्रुतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि यहा भी प्रत्ययभेद और स्वामित्यभेद जानना चाहिये ।

एकस्थानिक प्रश्रुतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७४ ॥

एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थानम जो प्रश्रुतिया वन्धयोग्य होकर स्थित ह उनकी 'एकस्थानिक' कहा है । उन एकस्थानिकोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । वह इस प्रकार है— मिथ्यात्वका वन्ध जोर उदय दोनों साथ व्युत्पन्न होते ह । नपुंसकवेद, नारकायु, नरनगति, नरकगतिप्रायो-यानुपूर्वा, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आनाप, न्यानर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनके उन्ध और उदयके युच्छेदका विचार

एदासिमेत्थ नियमेण उदयाभावादो । अउसेसाण पुत्र उओ पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, वधे फिट्ठे वि उअरिमगुणहाणेषु एदासिमुत्थन्मणादो ।

मिच्छत्तम्म सोदओ वओ । णउमयवेद निरयाउ निरयगड एइदिय तीइदिय तीइदिय-चउरिंदियनादि निरयाणुपुत्ति-आत्ता-यात्ता-सुद्धम अपज्जत्त साहारणमरीरिणामाण परोदओ धवो, इत्थिउदोदण मह एदामिमुदयविरोहाओ । ओमो एत्थ ओघादो विसेमो, तत्थ सोदय परोदणेदामि धओवदेमाओ । हुडमठाण अमपत्तमेउद्धमघडणाण सोदय परोदओ धवो, इत्थिउदोदण मह एदामिमुत्थम्म विण्णडिमेहाभावादो । मिच्छन् निग्घाउआण निरत्तरो उओ । अउसेमाण सानरो, अणियदेगममयउदसणादो ।

मिच्छत्त-णउमयवेद हुडमठाण-अमपत्तमेउद्धमघडण एइदिय आदाउ धाउराण तेउण पचया, पुरिस णउमयवेदाणमभावादो । निरयाउ निरयगड निग्घमइपाओग्गाणुपुत्तिणमेगूण वचाम पचया, ओघपचणमु ओराळिगामिम्म उम्मइय वेउत्तिउदुग पुरिम-णउसयवेदाण मभावादो । तीइदिय तीइदिय-उत्तिरिंदियनादि सुद्धम अपज्जत्त साहारणाण एक्कवचाम पचया, ओपपचएसु वेउत्तिउदुग पुरिस णउमयवेदपचयाणमभावादो । मेस सुगम ।

नहोँ है, क्योंकि यहा नियमसे इनके उद्भवका अभाव है । शेष प्रवृत्तियोंका पूर्वमें व अ और पश्चात् उद्भव वृत्तिउत्त होता है, क्योंकि, इनके नष्ट होनेपर भी उपरिम गुणरत्नोंमें इनका उद्भव देखा जाता है ।

मिथ्या उका अत्रोद्भव उच होता है । नपुंसकवेद, नारकायु नररगति, एनेन्द्रिय, ईन्द्रिय, तीन्द्रिय, चतुर्दिन्द्रिय जाति नारकाणुपूरा, राताप स्थावर, सुद्धम, अपयाप्त और साधारणशरीर नामकम इनका परोदय वच होता है क्योंकि, अत्रोद्भूते उद्भवके माध इनके उद्भवका विरोध है । यह यहा अत्रोद्भूते विशेषता है, क्योंकि, यहा अत्रोद्भव परोदयसे इनके व उका उपपन्न है । हुड्डसस्थान और अमपत्तसृपाटिकासहननका अत्रोद्भव परोदय वच होता है क्योंकि, अत्रोद्भूते उद्भवका सा उ इनका विरोध नहीं है । मिथ्यात्थ और नारकायुका निरतर व अ होता है । शेष प्रवृत्तियोंका अन्तर वच होता है, क्योंकि, उनका नियम रहित एक समय वच देखा जाता है ।

मिथ्यात्थ, नपुंसकवेद, कण्टकस्थान, असंप्रप्तसृपाटिकासहनन, एकन्द्रिय, आत्ताप और स्थावर प्रवृत्तियोंके निष्पन्न प्रत्यय है, क्योंकि, यहा पुनपवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । नारकायु नररगति आर नररगतिप्रत्ययग्याणुपूराके उनचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओपप्रत्ययोंमें ओदारिउत्ति, कामण वैत्तिविउत्ति, पुत्तावेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । ईन्द्रिय, तीन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय जाति, सुद्धम, अपयाप्त और साधारण नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययरूपणा सुगम है ।

मिच्छत चउगइमञ्जुत वउड । णउमयवेद-हुडसठाणाणि तिगइसञ्जुत, देवगईए सह
 वधाभावादे । णिरयाउ [णिरयगइ-] णिरयगइपाओग्गाणुपुञ्जीओ णिरयगइसञ्जुत वधइ । कुदे ?
 सामाणियादे । अपज्जत्तामपत्तमेउट्टसघडणाणि तिरिन्स मणुसगइसञ्जुत, णिरय देवगईहि सह
 वधाभावादे । अउममाओ पयडीओ तिरिक्खगइसञ्जुत, तत्थ ताण णियमदसणादे । मिच्छत्त-
 णवुमयवेद एइदियादाउ-वाउर-हुडसठाण-अमपत्तमेउट्टमघडणाण तिगइमिच्छाइटी सामी,
 णिरयगईए इत्थिउदुदयाभावादे । णिरयाउ-णिरयगइ त्रीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि-
 णिरयाणुपुच्चि-सुहुम-अपज्जत्त साहाराणा तिरिन्स-मणुस्सा सामी । वधद्वाण वधविणइड्डाण
 च सुगम । मिच्छत्तस्स चउत्थिहो वधो । सेसाण सादि अद्दुओ ।

अपच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १७५ ॥

एत्थ णि पुत्थ व परूवेदव्व । अहउ अपच्चक्खाणावरणीयपहाणो दडओ अपच्चक्खाणा-
 वरणीयमिदि भण्णइ । जहा णिउउ-कयउ-उउ जवीरवणमिदि । अपच्चक्खाणचउक्क मणुसगइ-
 ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअगोउग-वज्जरिसहेउडरणासयणसरीरसघडण-मणुसगइपाओग्गाणु-

मिथ्यात्वको चारों गतियोंमें संयुक्त राधता है । नपुंसकप्रेद और हुण्टसस्थानको
 तीन गतियोंसे संयुक्त राधता है, क्योंकि, नरकगतिके साथ उनके बन्धका अभाव है । नारकायु,
 [नरकगति] और नरकगतिप्रायेणयानुपूर्वीको नरकगतिसंयुक्त राधता है, क्योंकि, ऐसा
 स्वभाव है । अपर्याप्त और असंप्राप्तसृष्टिपाटिकासहननको तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसं
 संयुक्त राधता है, क्योंकि, नरकगति और देवगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है । शेष
 प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिसंयुक्त राधता है, क्योंकि, तिर्यग्गतिके साथ उनके बन्धका
 नियम देखा जाता है । मिथ्यात्व, नपुंसकप्रेद, एनेन्द्रिय, जाताप स्वावर, हुण्टसस्थान
 और असंप्राप्तसृष्टिपाटिकासहननके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी है, क्योंकि, नरकगतिम
 र्खप्रेदके उदयका अभाव है । नारकायु, नरकगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति,
 नारकानुपूर्वी, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन प्रकृतियोंके बन्धके तिर्यग् व मनुष्य
 स्वामी हैं । मिथ्यात्व और बन्धविनष्टस्थान सुगम है । मिथ्यात्वका चारों प्रकारका बन्ध
 होता है । शेष प्रकृतियाका सादि उ अथव बन्ध होता है ।

अप्रत्याख्यानारणीयकी प्ररूपणा ओघक समान है ॥ १७५ ॥

यहां भी पूर्णक समान प्ररूपणा करना चाहिये । अथवा अप्रत्याख्यानारणीय
 प्रधान दण्डको अप्रत्याख्यानारणीय शब्दसे कहा जाता है । जैसे कि नीम, आम, बदम,
 जामुन और जर्मीर, इन वृक्षाकी प्रधानतासे इतर वृक्षोंसे भी युक्त घनोंको नीमघन,
 आमघन, बदमघन, जामुनघन और जर्मीरघन शब्दोंसे कहा जाता है । अप्रत्याख्यान
 चतुष्क, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग, वज्रर्भभज्जनाराचशरीर-
 सहनन और मनुष्यगतिप्रायेणयानुपूर्वी, इन अप्रत्याख्यानारणीयसहित प्रकृतियोंकी

एदासिमेत्थ नियमेण उदयाभावादो । अउसेसाण पुन वओ पच्छा उदओ ओच्छिणो, वधे
फिट्ठे वि उअरिमगुणद्वाणेसु एदासिमुदयदसणादो ।

मिच्छत्तम्म सोदवो वओ । णउमयनेद निरयाउ-निरयगट एइदिय बीइदिय तीडदिय-
चउरिंदियजादि निरयाणुपुनि-आदान-आर-सुहुम अपज्जत्त साहारणमरीरणामाण परोदओ
वधो, इत्थिवेदोदएण सह एदासिमुदयनिरोहाणे । एमो एत्थ जोधादो निसेसो, तत्थ
सोदय परोदएणेदासिं वधोअदेमाओ । हुडमठाण असपत्तमेउट्टमवडणाण सोदय परोदओ वओ,
इत्थिवेदोदएण सह एदासिमुदयम्म निणडिमेहामाआदो । मिच्छत्त निरयाउआण निरतगे
वओ । अउसेसाण सातरो, अणियदेगसमयअदमणादो ।

मिच्छत्त णउमयनेद-हुट्टमठाण असपत्तमेउट्टमवडण एइदिय आदान आरणा तेअ
पच्छया, पुरिस णउमयनेदाणमभाआदो । निरयाउ निरयगइ निरयगडपाओरगाणुपुनीणमगा
वचास पच्छया, ओघपच्छणसु ओरात्थियमिम्म रुमडय पेउअियदुग पुरिम-णउमयवेद
मभाआदो । बीइदिय तीडदिय चउरिंदियजादि सुहुम अपज्जत्त साहारणाण एककवचाम प
ओघपच्छणसु वेउअियदुग पुरिम णउमयनेदपच्छयाणमभाआदो । सेम सुगम ।

नहाँ हे, कयोंकि, यहा नियमले हाके उदयका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका पूर्वमें
और पश्चात् उदय वपुत्तिउत होता है, कयोंकि, उन्धने मग होनेपर भी उपरिम गुणस
इनका उदय देखा जाता है ।

मिथ्यात्वका उदय अ व होता है । नपुमस्वेद, नारकायु नरकगति, जे
हीतिट्ठय, बीतिट्ठय, चतुरिं द्रय जाति, नारकायुपूर्वा, आताप स्वावर, सूहम, अ
और साधारणशरीर नामकम, इनका परादय उध होता है कयोंकि, आनेके उदय
इनके उदयका विरोध है । यह यहा जायते विशेषता है, कयोंकि, यहा उदय
इनका अ वक उपदेश है । हुड्डलस्थान और असपत्तमेउट्टमवडणासहजनक
परोदय उध होता है, कयोंकि, आनेके उदयका साथ इनका विरोध नहीं है ।
और नारकायुका निरंतर अ व होता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है
उनका नियम गहित एक समय उध देखा जाता है ।

मिथ्यात्व नपुमस्वेद हुड्डलस्थान असपत्तमेउट्टमवडणासहजनक
आताप और स्वावर प्रकृतियोंके निम्नतम प्रत्यय है, कयोंकि, यहा पुन्यवेद और
प्रत्ययोंका अभाव है । नारकायु नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वोंके उन
प्रत्ययोंका अभाव है । हीतिट्ठय, बीतिट्ठय, चतुरिंदियजाति, सुहम, अपयात
प्रकृतियोंके इक्यावन प्रत्यय हैं, कयोंकि ओघप्रत्ययोंमें वेनियिअडिअ, पु
नपुमस्वेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययरूपणा सुगम है ।

दोषह' बोच्छेदुत्तलभादो । सन्गुणद्वारेषु नवो सोदय परोदयो, परोदय वि सते वधनिरोहो-
भाभादो । भय-दुगुजण मन्गुणद्वारेषु गिरतरो नवो, धुनवितादो । हस्म-रदीण मिच्छाद्वि-
पद्भि जाय पमत्तमजदो ति नधा सातरो, एत्थ पडिउत्तमयडिउत्तलभादो । उपरि गिरतरो,
पडिउत्तमयडिउत्तलभाभादो । पच्चया सुगमा, नहुमो पल्लुपिदादो । मिच्छाद्वि चउगइसजुत्त
धरति । नपरि हस्म-रदीओ तिगइमजुत्त, गिरयगईए सह वधनिरोहादो । सच्चपयडीओ
सासणो तिगइमजुत्त नधइ, तत्थ गिरयगईए वधामाभादो । सम्मामिच्छाद्वि-अमजदसम्मा-
दिद्विणो दुगइसजुत्त, तत्थ गिरय-तिगिउत्तगईए वधामाभादो । उपरिमा देवगइसजुत्त, तत्थ
सेसगईए वधामाभादो । नपरि अपुनरुत्तणे चरिमसत्तमभागे अगइसजुत्त वधति । तिगइ-
मिच्छाद्वि-मामणमम्मादिद्वि सम्मामिच्छाद्वि अमजदसम्मादिद्विणो सामी, गिरयगईए
गिरद्विद्विणेदाभाभादो । दुगइसजदामजदा सामी, देवगईए देवगईए वधामाभादो । उवरिमा
मणुस्मा चैव, अणत्थ महव्वणमभाभादो । नवद्वारेण नपरिउत्तलभा च सुगम । भय-दुगुजण

समयमें उनके उन्ध न उदय दोनोका व्युत्पत्ति पाया जाता है । सन् गुणस्थानोंमें उनका
उन्ध सोदय परोदय होता है क्योंकि, उन्ध प्रकृतियोंमें उदयके भी होनेपर इनके बन्धका
कोई निरोध नहीं है । भय और दुगुजणका सन् गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है,
क्योंकि, ये धुवन्धी हैं । हास्य और रतिको मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक
मान्तर उन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उन्ध पाया जाता
है । ऊपर निरन्तर सन् होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव
है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, उनका बहुत बार प्ररूपण किया जा चुका है ।
मिथ्यादृष्टि जीव उन्ध चार गतियोंसे संयुक्त राधते हैं । विशेष इतना है कि
हास्य और रतिको तीन गतियोंसे संयुक्त राधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ
उनके उन्धका निरोध है । सन् प्रकृतियोंको सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त
राधता है, क्योंकि, इस गुणस्थानमें नरकगतिका उन्ध नहीं होता । सम्मगिमिथ्यादृष्टि
और असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त राधते हैं, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें नरकगति
और तिर्यग्गतिके उन्धका अभाव है । उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त राधते हैं, क्योंकि,
उपरिम गुणस्थानोंमें दोष गतियोंके उन्धका अभाव है । विशेषतया यह है कि अपुनरुत्तणके
अतिम सप्तम भागमें गतिमयोगसे रहित राधते हैं । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादन
सम्यग्दृष्टि, सम्मगिमिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि नरकगतिमें
रतिद्वेके उदय सहित जीवोंका अभाव है । दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं, क्योंकि,
देवगतिमें देवप्रतियोंका अभाव है । उपरिम गुणस्थानमें मनुष्य ही स्वामी है, क्योंकि,
अन्य गतियोंमें महाप्रतियोंका अभाव है । बन्धाध्यान और वधनिरोधस्थान सुगम है ।

१ प्रतिपु 'चदुषह' इति पाठ ।

२ अथतो 'गिरयगईए' इति पाठ ।

३ प्रतिपु 'देसवगईए' इति पाठ ।

असेसतिणिपयडीओ मिच्छादिद्वि सामणसम्मादिद्विणो निरिक्ख मणुमगइसजुत्त, सम्मामिच्छा-
दिद्वि-असज्जदसम्मादिद्विणो मणुमगइसजुत्त वधति ।

अपचस्साणावरणचउत्क्रमस्स तिगइचदुगुणद्वाणिणो सामी । असेसाण पयडीण
तिगइमिच्छादिद्वि सासणसम्मादिद्विणो देवगइसम्मामिच्छादिद्वि अमज्जदसम्मादिद्विणो च सामी ।
वधडाण वधणिणइद्वाण च सुगम । अपचस्साणचउत्क्रमस्स मिच्छाद्विद्वि चउच्चिहो उओ ।
अण्णत्थ तिनिहो । असेसाण पयडीण मादि-अद्दुओ ।

पचवस्साणावरणीयमोघ ॥ १७६ ॥

एत्थ ओघरूपण किंचित्तिसमाणुविद्ध समगिय वत्तञ्च ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरेत्ति ओघ ॥ १७७ ॥

ओघादो एदेसु सुत्तेसु अज्जिदयोअमेयमत्तरिसणइ मज्जुद्धिसिस्माणुगइद्व च
पुणत्थि परूवेमो — हस्स रड-भय दुगुछाण वधोदया मम रोच्छिज्जति, अपुत्थकरणचरिममप

पाधेते ह । दोर तीन प्रतियोने मिथ्यादृष्टि २ सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एव
मनुष्यगतिते सयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यानादृष्टि च असयत्तसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिते
सयुक्त पाधेते ह ।

अप्रत्याप्यानावरणचतुष्करे तीन गतियोने चार गुणस्थानधर्मा त्रीयेदी जाव
स्वामी है । दोष प्रतियोने तीन गतियोने मिथ्यादृष्टि च सासादनसम्यग्दृष्टि तथा द्रव्य
गतिते सम्यग्मिथ्यानादृष्टि च अमयत्तसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । २ धात्रान और २ धर्षिणपृ
स्थान सुगम है । अप्रत्याप्यानावरणचतुष्कर मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका और
अन्य गुणस्थानमें तीन प्रकारका वध होता है । दोष प्रतियोने सादि च अष्टव ग्रन्थ
होता है ।

प्रत्यारूप्यानावरणायकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७६ ॥

यद्वा डुछ विशेषतासे सम्यग् ओघप्ररूपणासे स्मरणकर कहना चाहिये ।

हास्य व रतिमें लेकर तीर्थकर प्रकृति तत्र ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १७७ ॥

ओघकी अपेक्षा इन सूत्रोंमें अवस्थित कुछ प्रेदीसी विशेषताको दिखलाने तथा
मन्दबुद्धि शिष्यके अनुग्रहके लिये फिर भा प्ररूपणा करते हैं— हास्य, रति मय और
शुश्रूष्माका वध व उदय दोनों साधर्म्य द्युच्छिज्ज हाते ह, क्योंकि, अपुत्थकरणके अन्तिम

दोणहं वेच्छेदुवलमादो । मज्जगुणङ्गाणेषु उवो सोदय परोदओ, परोदए वि सते वधविरोहा-
 भावादो । भय-दुगुलण मज्जगुणङ्गाणेषु णित्तरो उवो, धुवनपित्तादो । हस्म-रदीण मिच्छाडडि-
 प्पट्टि जाव पमत्तमउओ त्ति उवो मानंओ, एत्थ पडियम्भस्सयडिउवलमादो । उवरी णित्तरो,
 पडिवक्खलपयडिउवामावादो । पच्चया सुगमा, वहुओ परूयिदत्तादो । मिच्छाडडि चउगइसजुत्त
 वरति । णरमि हम्म-रदीओ तिगडमजुत्त, णित्तयगईए मह उवविरोहादो । मज्जपयटीओ
 सामणो तिगडमजुत्त उवड, तत्थ णित्तयगईए वरामावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-अमज्जमम्मा-
 दिट्ठिणो दुगडसजुत्त, तत्थ णित्तय तिग्गिउगडंण वधामावादो । उवरिमा देवगइमजुत्त, तत्थ
 सेमगट्ठण उवामावादो । णरि अपुवकण्णे चरिममत्तमभागे उगडमजुत्त उधति । तिगइ-
 मिच्छादिट्ठि-सामणमम्मान्निट्ठि मम्मामिच्छादिट्ठि अमज्जमम्मादिट्ठिणो सामी, णित्तयगईए
 णिरुद्धित्थेदाभावादो । दुगडमज्जदामज्जदा सामी, देउगईए देसउरुणममावादो । उवरिमा
 मणुस्सा चेउ, अण्णत्थ महउरुणममावादो । वधद्धाण उधविणट्ठिण च सुगम । भय-दुगुलण

समयमें उनके उन्ध उ उदय वेनोंका उच्छेद पाया जाता है । सर गुणस्थानोंमें उनका
 उन्ध उदय परोदय होता है क्योंकि, अन्य प्रकृतियोंके उदयके भी होनेपर इनके वन्धका
 कोई विरोध नहीं है । भय और जुगुप्साका सर गुणस्थानोंमें निरन्तर वन्ध होता है,
 क्योंकि, वे धुनवन्धी ह । हान्य और रतिना मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत्त तक
 सान्तर उन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता
 है । ऊपर निरन्तर उन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका अभाव
 है । प्रत्यय सुगम ह, क्योंकि, उनका उत्तम उर प्ररूपण किया जा चुका है ।
 मिथ्यादृष्टि जीव उन्हें चार गतियोंसे संयुक्त राखते हैं । विशेष इतना है कि
 हान्य और रतियों तीन गतियोंसे संयुक्त राखते ह, क्योंकि, नरकगतिके साथ
 उनके वन्धना विरोध ह । सर प्रकृतियोंको सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त
 राखता है क्योंकि, इस गुणस्थानमें नरकगतिका वन्ध नहीं होता । सम्यग्मिथ्यादृष्टि
 और असयत्तसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त राखते ह, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें नरकगति
 और तियगगतिके वन्धका अभाव है । उपरिम जीव देवगतिके संयुक्त राखते हैं, क्योंकि,
 उपरिम गुणस्थानोंमें दोष गतियोंके वन्धका अभाव है । विशेषता यह है कि अपूर्वकरणके
 अन्तिम सप्तम भागमें गतिसंयोगसे रहित राखतेह । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादन
 सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत्तसम्यग्दृष्टि स्थायी ह, क्योंकि नरकगतिमें
 उदयके उदय सहित जीवोंका अभाव है । दो गतियोंके सयत्तासयत्त स्थायी ह, क्योंकि,
 देवगतिमें देवप्रतियोंका अभाव है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्थायी है, क्योंकि,
 अन्य गतियोंमें महाप्रतियोंका अभाव है । उन्धाध्यान और उवविनष्टस्थान सुगम हैं ।

१ प्रतियु ' वडण्ड ' इति पाठ ।

२ अत्रतो ' णित्तयगईए ' इति पाठ ।

३ प्रतियु ' देसउरुण ' इति पाठ ।

मिच्छादिद्विष्टि वधो चउत्तिष्ठे । उपरि तिष्ठे, धुनयभावादा । हम्मन्दीण मन्वत्थ मादि-
अद्धवो, अद्धवधितादो ।

मणुस्माउअस्स पुन वधो पन्डा उदओ वेच्छिण्णो, अमत्तदसम्मादिद्वि अणियद्दीमु
जहाकमेण वधोत्तयोच्चेददसणादो । मिच्छादिद्वि-सामणसम्मादिद्विमु सोदय पगेदण वधो ।
असजदसम्मादिद्विमु परोदण्णेन । कुदो ? साभानियाणे । सन्त्थ वधो गिरतरो, जहण्णव
कालस्स नि अतोमुहत्तपमाणुपलभादो । मिच्छानिद्विम्म पचाम, मायणस्म पचेतालीम पचया,
ओरालिय वेउत्तियमिम्म रुम्मयकायनोम पुरिम णुमयपच्चवाणमभावादो । अमत्तदसम्मा-
दिद्विमु चालीस पचया, ओपानच्चएमु ओरालिय ओगलियमिम्म वेउत्तियमिस्स रुम्मय-
कायनोम पुरिम णुमयपेदाणमभावादो । सेम सुगम । मत्ते नि मणुसगडमज्जुत्त चेव वधति,
अण्णगहि मह विरोहादो । निगमिच्छादिद्वि मासणसम्मादिद्विणो सामी । असत्तसम्मा
दिद्विणो देवा चेव सामी, अण्णत्थिविधेनेदेइल्लण मम्मादिद्विण मणुस्माउअस्स वधभावादा ।
वधद्वान वधनिण्डद्वान च सुगम । सन्त्थ मादि अद्धवो वधो ।

भय और जुगुप्साका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानम चारों प्रकारका बन्ध होता है । उपरिम
गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बंध होता है, क्योंकि, उहा धुन बन्धका अभाव है । हास्य
और रक्तिका सत्र सादि व अधुन बन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुन बन्धी ह ।

मनुष्यायुका पूरमें वध और पश्चान् उदय पुच्छिन्न होता है, क्योंकि, असयत
सम्यग्दृष्टि और धनितृप्तिरक्षण गुणस्थानोंमें नमसे उमने बंध व उदयका व्युत्क्रोद देखा
जाता है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सोदय परोदयसे बन्ध होता है ।
असयतसम्यग्दृष्टियोंमें परोदयसे ही बंध होता है, क्योंकि, देखा अभाव ही है । सत्र
निरन्तर बंध होता है, क्योंकि, उसका जत्र व बन्धन भी अतर्मुक्त प्रमाण पाया
जाता है । मिथ्यादृष्टिसे पचाल और सासादनसम्यग्दृष्टिसे पचालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि,
वहा औदारिकमित्र, वैत्रिकमित्र, कामण काययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद, प्रत्ययोंका
अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि ओघप्रत्ययोंमेंसे औदारिक,
औत्रिकमित्र, वैत्रिकमित्र, कामण काययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका
अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । सत्र ही मनुष्यगतिसे सजुक्त ही राधते हैं,
क्योंकि, अय गतिपात्रे साथ उमने पचका निरोध है । तीन गतिपात्रे मिथ्यादृष्टि और
सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । असयतसम्यग्दृष्टि ही स्वामी है, क्योंकि, अय
गतिशेमें परोदय युक्त सम्यग्दृष्टियोंसे मनुष्यायुके बन्धन अभाव है । वधभावादा
और वधनिण्डस्थान सुगम है । सत्र सादि व अधुन बंध होता है ।

देवाउवस्स पुव्वमुदओ पच्छ वधो वोच्छिज्जदि, जप्पमत्तासजदसम्मादिट्ठीसु कमेण वधेदयवोच्छेददसणादो । सच्चगुणङ्गाणेषु परोदण्णेण वधो, सोदयमिह वधस्स अचताभावस्स अवद्वाणादो । गिरतरो वधो, अतोमुहुत्तेण विणा वधुवरमाभावादो । मिच्छाइडिस्स एगूणवचास, सासणस्स चउवेतालीस, असजदसम्मादिट्ठिस्स चालीसुत्तरपच्चया, वेअनिय-वेउव्वियमिस्स-ओरा-लियमिस्स कम्मइय-कायजोग-पुरिस्स णवुसयवेदाणमभावादो । उवरि पुरिस्स णवुसयवेदाहारद्वेहि विणा ओधपच्चया चेण उतच्चा । सेस सुभम । सच्चरय देवगइमजुतो वधो, अण्णगईहि सह वध-विरोहादो । तिरिक्ख-मणुस-मिच्छाइडि सामणसम्माइडि-असजदसम्माइडि-सजदासजदा सामी, अण्णत्थ द्वियाण तन्नधरिरोहादो । उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्थ महव्वईणमभावादो । वधद्वाण सुगम । अप्पमत्तद्वाए सखेज्जदिभाग गतूण वधो वोच्छिज्जदि । कुदो ? सुत्ताणुसारि-गुरुवेदसादो । सादि-अद्दुवो वधो ।

देवगइ पचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वेउव्वियसरीर-अगोत्रंग-वण्ण वध-रस-फास-देवगइपाओम्माणुपुव्वि-अगुरुवल्लुव उववाद्-परघादुस्सास-पसत्थ-विहायगइ-तस-नादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिर-सुह सुभग-सुस्सर आदेज्ज-णिमिणेषु देवगइ-देव-

देवायुका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युत्तिष्ठ होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । सय गुणस्थानोंमें परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, अपने उदयके होतेपर उसके बन्धका अत्यन्ताभाव है । उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहर्तके बिना उसके बन्धविश्रामका अभाव है । मिथ्यादृष्टिके उनचास, सासादनसम्यग्दृष्टिके चवालीस और असयतसम्यग्दृष्टिके चालीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहा धैकियिक, वैकियिकमिथ, औदा रिक्कमिथ, कर्मण काययोग, पुरुषवेद और नपुसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके ऊपर पुरुषवेद, नपुसकवेद और आहारकद्विके बिना ओघप्रत्यय ही कहना चाहिये । शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है । सर्वत्र देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्धका विरोध है । तिर्येच और मनुष्य मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असयतसम्यग्दृष्टि एवं सयतासयत स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यत्र स्थित जीवोंके उसके बन्धका विरोध है । उपरिम गुणस्थान-वर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें महाव्रतियोंका अभाव है । बन्धाग्यान सुगम है । अप्रमत्तकालके सख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युत्तिष्ठ होता है, क्योंकि, ऐसा सूत्रानुसारी गुरुका उपदेश है । सादि व अद्ध्य बन्ध होता है ।

देवगति, पचेन्द्रियजाति, धैकियिक, तैजस व कर्मण शरीर, समचतुरस्रस्थान, वैकियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, व्रस, नादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय व निर्माण, इनमेंसे देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैकियिकशरीर

गङ्गाओग्गाणुपुन्नीवेउत्तियसरीरवेउत्तियसरीरअगोवगाण पुव्वमुदओ पन्था वधो वोच्छि-
ज्जदि, अपुत्तासन्नदम्ममाइहीसु देवगङ्गाओग्गाणुपुन्नीए अपुत्तासासणेसु कमेण-वधो
दयवोच्छेदुवलमादो । तेजा कम्मइयसरीर गमचउत्तममठाण उण्ण गध रस फाम-अगुरुलहुअ-
उपघाद परघाद-उत्तास पत्तयनिहायगड पत्तेयसरीर-थिर सुह सुस्मर निमिणाण पुव्व वधो पन्था
उदओ वोच्छिज्जदि, अपुत्ता अणियहीसु कमेण वधोदयवोच्छेदुवलमादो । पच्चिदियजादि-त्तम
बादर-पज्जत्त-सुमगादेज्जाण पि एउ चेउ उत्तव्व ।

देवगङ्गा देवगङ्गाओग्गाणुपुन्नीवेउत्तियसरीर वेउत्तियसरीरअगोवगाण परोदएणेव
सव्वत्थ वधो, सोदएणेदासिं वधोविरोहादो । पच्चिदियजादि-त्तेना-कम्मइयसरीर वण्ण गध-रस-फाम
अगुरुलहुअ तस बादर-पज्जत्त थिर सुभ निमिणाण सोदओ सव्वगुणहाणेसु वधो, एत्थेदासिं
धुवोदयत्तदसणादो । समचउत्तससठाण पत्तयनिहायगड सुस्मराण सव्वत्थ सोदय-परोदओ
वधो, उभयहा वि वधोविरोहादो । उपघाद-परघाद उत्तास-पत्तेयसरीराण मिच्छादिदि
सासणसम्मादिहीसु वधो सोदय परोदओ, निग्गहमदीए केसिंचि अपज्जत्तकाले च उदएण

और वैयधिकशरीरागोपांगका पूरमें उदय और पश्चात् वध व्युत्तिष्ठ होता है, क्योंकि,
अपूर्वकरण और अन्त्यतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तथा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके अपूर्वकरण
और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें प्रमत्ते वध व उदयका व्युत्थेद पाया जाता है । तैजस
व कामण शरीर, समचतुरन्मसस्थान, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलहु, उपघात, परघात,
उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, सुभ, सुस्मर और निमाण, इनका
पूरमें वध और पश्चात् उदय व्युत्तिष्ठ होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और अनिर्गुत्तिकरण
गुणस्थानोंमें प्रमत्ते इनके वध व उदयका व्युत्थेद पाया जाता है । पचेन्द्रियजाति,
वस, बादर, पर्याप्त, सुभग और आदयके भी इसी प्रकार कहना चाहिये ।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, चक्रियशरीर और वैयधिकशरीरागोपांगका
परोदयसे ही सत्रय वध होता है, क्योंकि स्वोदयमे इनके वधका विरोध है । पचेन्द्रियजाति,
तैजस व कामण शरीर वण, गन्ध रस, स्पर्श, अगुरुलहु वस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, सुभ
और निर्माणका सव गुणस्थानोंमें स्वोदय वन्ध होता है, क्योंकि, यहा ये प्रकृतिधा धुवोदयी
देवी जाती हैं । समचतुरन्मसस्थान प्रशस्तविहायोगति और सुस्मरका सर्वत्र स्वोदय
परोदय वध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके वधका विरोध नहीं है । उपघात,
परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका उन्ध मिच्छादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि
गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, निग्गहमदीमें और सिन्हींके अपर्याप्तका उन्ध

त्रिणा वधुत्रलभादो । उवरिमेसु गुणद्वारेणसु सोदण्णेव, अपज्जत्तद्वाए तेसिं गुणाणमभावादो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्माभिच्छाड्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु सुभगादेज्जाण सोदय-परोदओ वधो । उवरि सोदओ चैव, सामावियादो ।

तेजा-कम्मूयसरीर-वण्ण मधरस-फाम-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिणां वधो णिरं-तरो, धुवअधित्तादो । पचिंदियजादि-परघादुस्सास पमत्थयिहायगइ-तस-वादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग सुस्सर आदेज्ज-देउगइ-देउगइपाओग्गाणुपुव्वी वेउव्वियसरीर अगोवगाण मिच्छाड्ठिप्पहुडि सातर-णिरतरो वधो । कथ णिरतरो ? ण, अमखेज्जवाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरतरं वधु-वलमादो । एउ सामणस्स वि वत्तव्व । णरि पचिंदियजादि-परघादुस्सास-तस वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण वधो णिरतरो चैव । सम्माभिच्छाड्ठिप्पहुडि उवरिमाण सासणमगो । णवरि देवगइ-वेउव्वियसरीर-समचउरससठाण-वेउव्वियसरीरअगोउग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी सुभग-सुस्सरदेज्जाण णिरतरो वधो, पडिउक्खपयडिउधाभावादो । थिर-सुभाण मिच्छाड्ठिप्पहुडि जात्र पमत्तमजदो त्ति सातरो वधो, पडिउक्खपयडिउधुत्रलभादो । उवरि णिरतरो, पडिउक्ख-

भी इनका उदयके त्रिणा गन्ध पाया जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें स्वोदयसे ही गन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उन गुणस्थानोंका अभाव है । मिथ्यादृष्टि, साक्षादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सुभग व आदेयका स्वादय परोदय गन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें स्वोदय ही गन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

तैजस व कर्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श अगुरुलघु, उपघात और निर्माणका गन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, ये ध्रुवगन्धी हैं । पचेन्द्रियजाति, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तत्रिहायगति, व्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरानोपागका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर गन्ध होता है ।

शका— निरन्तर गन्ध कैसे होता है ?

समाधान— नही, क्योंकि, असत्यातवर्णायुष्क तिर्यंच और मनुष्योंमें निरन्तर गन्ध पाया जाता है ।

इसी प्रकार साक्षादन गुणस्थानके भी कहना चाहिये । विशेषता केवल यह है कि पचेन्द्रियजाति, परघात, उच्छ्वास, व्रस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येक शरीरका गन्ध निरन्तर ही होता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टिसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंकी प्ररूपणा साक्षादनसम्यग्दृष्टिके समान है । विशेष यह है कि देवगति, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रमस्थान, वैक्रियिकशरीरानोपाग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, सुभग, सुस्वर और आदेयका निरन्तर गन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके गन्धका अभाव है । स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सान्तर गन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका गन्ध पाया जाता है । ऊपर इनका निरन्तर गन्ध होता है, क्योंकि,

गेरइएसु आउअवधयसौण सम्मादिद्वीणमुप्यत्तिदमणादो। गिरयाउं गिरयदुग इत्थिवेदाण सत्तं
पुरिसवेदस्सेव परोदणं वधो। णुमयवेदम्म सोदणं। एडदिय श्रीदिय-तीडदिय चउगिदिय
जादि-आदाव-थार-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाण सोदय परोदओ वधो, एदेसु वुत्तडाणेसु एदेसि
पडिवक्खद्वाणेसु च णवुसयवेदुदयदसणादो।

तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चि णीचागेदाण सातर गिरतरो वधो। कुओ।
तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुव्वणिरेअएसु च दोसु वि गुणङ्काणेसु गिरतरयधुवलमादो। मणुसगइ
मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चिण सातर-गिरतरो मिच्छादिद्वि-मासणसम्मादिद्वीसु वधो। कुओ।
आणदादिदेवेहिंते णवुसयवेदोदइल्लमणुस्सेसुप्पणाण तित्थयरमत्तम्मणं गेरइएमुप्पणमिच्छ
इद्वीण च गिरतरयधुवलमादो। ओरालियमरीर-ओरालियमरीरगोवगाण मिच्छादिद्वि-सामण
सम्मादिद्वीसु सणरकुमारदिदेव गेरइए अस्सिदण गिरतरो वधो। अण्णन्थ सातरो वत्तजो,
अंसखेज्जवासाउएसु णुमयवेदुदयमावादो। तेउ-पम्म-सुम्फलेस्सियणुसयवेदोदइल्लतिरिक्ख
मणुस्समिच्छादिद्वि-सासणे अस्सिदण देवगइ-वेउजियसरीरदुगाण गिरतरो वधो वत्तजो।

आहिये, क्योंकि, आयुष-घके वडासे सम्यग्दृष्टियोंकी नारकियोंमें उत्पत्ति देखी जाती है।
मारकायु, नरकगतिद्विक् और रतिदेवका सवत्र पुरुषवेदके समान परोदयसे वध होता
है। नपुमकवेदका स्वोदयसे वध होता है। एरेन्द्रिय, हीन्द्रिय, ग्रीन्द्रिय, चतुर्न्द्रिय
आति, आताप, स्थायर, सूक्ष्म, अपरांत और साधारणका स्वोदय परोदय वध होता है,
क्योंकि, इन उक्त स्थानोंमें तथा इनके प्रतिपक्ष स्थानोंमें नपुमकवेदका उदय देखा जाता है।

तियग्गाति, तियग्गातिप्रायेग्यानुपूर्वों और नीचगोत्रका सातर निरन्तर वध होता
है, क्योंकि, तेज व चायु कायिक तथा सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि व सासादन
सम्यग्दृष्टि इन दोनों ही गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। मनुष्यगति और
मनुष्यगतिप्रायेग्यानुपूर्वोंका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सातर
निरन्तर वध होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमेंसे नपुमकवेदोदय युक्त मनुष्योंमें उत्पन्न
हुए तथा तीर्थंकर प्रहनिवी सत्ताके साथ नारकियोंमें उत्पन्न हुए मिथ्यादृष्टियोंके निरन्तर
वध पाया जाता है। औदारिकशरीर और औदारिकशरीरानुपागका मिथ्यादृष्टि और
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मनरुमारादि देव व नारकियोंका आधयकर निरन्तर
वध होता है। अन्यत्र सातर बन्ध कहना चाहिये, क्योंकि, अमप्यातधर्पायुक्तोंमें
नपुमकवेदके उदयका अभाव है। तेज, पद्म और शुक्ल लेख्यावाले नपुमकवेदोदय युक्त
त्रिपञ्च व मनुष्य मिथ्यादृष्टि पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका आधयकर देवगतिद्विक् और
त्रिपञ्चिकशरीरद्विक्का निरन्तर वध कहना चाहिये।

उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराण असजदसम्मादिङ्गीसु सोदय परोदओ वधो, गिरयगईए अपज्जत्तासजदसम्मादिङ्गीसु वि एदामिं वधुवलभादो । तम वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-परिचियजादीण मिच्छाइडिग्गिह वधो सोदय परोदओ, थावर सुहुमापज्जत्त-साहाण-विगलिदिएसु एदामिं वधुवलभादो । सत्त्वपयडीण वधस्स णत्थि देवाण सामित्त तत्थ णवुसयवेदुदयाभावादो । एइदिय आदान थावरण तिरिक्खगड मणुसगइ-मिच्छाइङ्गी चेव सामी, देवा ण होंति, तेसु णवुसयवेदुदयाभावादो । अण्णो^१ वि जदि भेदो अत्थि सो सभालिय^२ वत्तव्वो ।

जधा इत्थियेदस्स परूवणा कदा तथा पुरिसयेदस्स वि कायव्वा । णवरि ओघपच्चएसु इत्थि णवुसयवेदपच्चया चेव सच्चगुणट्ठाणेषु अवणेदव्वा, सेसासेसपच्चयाण तरथ सभनादो । इत्थि-णवुसयवेदाण वधो परोदओ, पुरिसयेदस्स सोदओ । उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेय-सरीराणमसजदसम्मादिङ्गिह सोदय परोदओ वधो । तित्थयरस्स परूवणा ओघतुल्ला । एव-मण्णो वि जदि भेदो अत्थि सो सभालिय वत्तव्वो ।

उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, नरकगतियमें अपर्याप्त असयतसम्यग्दृष्टियोंमें भी इनका बन्ध पाया जाता है । अस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और पचेन्द्रियजातिका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण और धिक्छेन्द्रियोंमें इनका बन्ध पाया जाता है । सब प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी देव नहीं हैं, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है । एकेन्द्रिय, आत्माप और स्थावरके तिर्यग्गति य मनुष्यगतिके मिथ्यादृष्टि ही स्वामी हैं, देव नहीं हैं, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है । अन्य भी यदि भेद है तो उसको स्मरणकर कहना चाहिये ।

जिस प्रकार स्त्रीवेदकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार पुरुषवेदकी भी करना चाहिये । विशेष इतना है कि ओघप्रत्ययोंमेंसे स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको ही सब गुणस्थानोंमें कम करना चाहिये, क्योंकि, शेष सब प्रत्ययोंकी वहा सम्भावना है । स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका बन्ध परोदय होता है । पुरुषवेदका स्वोदय बन्ध होता है । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । तीर्थेतर प्रकृतिकी प्ररूपणा ओघके समान है । इसी प्रकार अन्य भी यदि भेद है तो उसको स्मरण कर कहना चाहिये ।

१ अत्रतो ' एइदिय अण्णो ' इति पाठ ।

२ प्रतिष्ठ ' सा सभालिय ', सप्रतो ' सा सभालिय ' इति पाठ ।

अवगदवेदएसु पंचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-जसकिति
उच्चागोद पचतराइयाणं को वधो को अवंधो ? ॥ १७८ ॥

सुगम ।

अणियट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा वधा ।
सुहुमसांपराइयसुद्धिसजदद्धाए चरिमसमय गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवेससा अवंधा ॥ १७९ ॥

देसामामियसुत्तमेद, वरद्धाण ववविणद्वड्डाण दोण्ण चेव परूवणादो । तेणेदेण
सुद्धतरपरूवणा कीरदे । त जग— एदासिं सौलमण्ह पयडीण पुत्र वधो पच्छ उदओ
मेच्छिज्जदि, तहोनलभादो । एत्थुवउज्जती गाहा—

आगमचम्पू साहू इन्द्रियचम्पू असेसजीग जे ।

दगा य ओहिचक्कू केरलचक्कू निगा सरे ॥ २४ ॥

पचणाणारणीय चउदसणारणीय पचतराइय-जसकिति-उच्चागोदाण सादओ चेव

अपगतवेदियोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और
पाच अन्नरायका कौन बधक और कौन अवधक है ? ॥ १७८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरणसे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रदायिक उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । सूक्ष्म
साम्प्रदायिकशुद्धिसयतकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युत्पन्न होता है । ये बन्धक हैं,
शेष अवधक हैं ॥ १७९ ॥

यह सूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, वह बंधाध्वान और ग्रन्थविनष्टस्थान इन दोनोंका
ही प्ररूपण करता है । इसीलिए इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार
है— इन भोलह प्रवृत्तियोंका पूर्वमें बध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है, क्योंकि,
वैसा पाया जाता है । यहा उपयुक्त गायन—

साधु आगम रूप चतुसे सयुक्त, तथा जितने सय जीग हं ये इन्द्रियचम्पुके
धारक होते ह । अवधिधान रूप चतुसे सदित देन, तथा केरलज्ञानरूप चम्पुसे युक्त सय
होते हैं ॥ २५ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पाच अन्नराय, यशकीर्ति और उच्च

बधो, एत्थ एदासिं ध्रुवोदयत्तदसणादो । निरतरो बधो, एत्थ बधुवरमाभावादो । पन्चया सुगमा, ओघम्मि परूनिदत्तादो । अगडसज्जुत्तो बधो, अवगदवेदेसु चटुण्णं गईण बधामावादो । मणुसा चेव सामी, अण्णत्थ सत्तमुवसामगाणमभावादो । बधद्दाण बधविणट्टडाण च सुगम । पचणाणावरणीय च उदसणावरणीय पचतराइयाण तिनिहो बधो, धुत्ताभावादो । जसकित्ति-उच्चागोदाण सादि-अद्धुनो, अद्धुनंभित्तादो ।

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ १८० ॥

सुगम ।

अणियट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली वंधा । सजोगिकेवलि-अद्धाए चरिमसमयं गंतूण वंधो वोळ्ठिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १८१ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । त जहा— पुब्ब बधो पच्छा उदओ वोळ्ठिज्जदि, सजोगि-

गोनका स्वेदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इन प्रकृतियोंके ध्रुवोदयित्य देखा जाता है । बन्ध इनका निरन्तर होता है, क्योंकि, यहा अन्यविधामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघमें उनकी प्ररूपणा की जा चुकी है । अगतिसयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अपगतप्रेदियोंमें चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें क्षपक और उपगामकोंका अभाव है । उन्वाधान और बन्धयितप्रस्थान सुगम है । पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है । यशक्रीर्ति और उच्चगोत्रका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवबन्धी हैं ।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १८० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरणसे लेकर सयोगकेतली तक बन्धक हैं । सयोगकेतलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युत्तिष्ठ होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ १८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— पूर्वमें उन्ध और पश्चात् उदय व्युत्तिष्ठ होता है, क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेतलीके अन्तिम समयमें क्रमसे

अनौगिचरिमसमयमि वधोदययोऽडेदमणादो । मोदय-परोदओ वधो, परावत्तणुदयत्तागे ।
 गिरत्तो रयो, पडिउम्बपयडीण न्धाभाभादो । प-चया सुगम, ओधमि परुविदत्तादो ।
 अगइसजुतो वयो, अगदयेदेसु गइचउम्बकस्म न्धाभाभादो । मणुमा मामी, अणत्थ
 अगययेदाणमभाभादो । व-द्धाण न्धमिण्ठट्टाण च सुगम । सादि अद्धो वधो, अद्धु
 धधितादो ।

कोधसजलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ १८२ ॥

सुगम ।

अणियट्ठी उवममा सवा वधा । अणियट्ठिवादरट्टाए सखेज्जे
 भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ १८३ ॥

एदस्मत्थो वुच्चदे— वधोदया सम वोच्छिज्जति, वधे वोच्छिज्जणे सते उदया-
 णुवलादो । सोदय परोदओ वधो, उमयहा नि न-रिरोहाभाभादो । गिरत्तो, धुननधितादो ।

उसके वध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि,
 परिवर्तित होकर उसने प्रतिपक्षभूत जसाता येनीयका उदय पाया जाता है ।
 निरन्तर वध होता है क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रतिके वधका जमाय है । प्रत्यय
 सुगम है, क्योंकि, अन्धमें उनकी प्रकृष्टता की जासुकी है । अगतिसयुक्त वध
 होता है, क्योंकि अपगतवदियोंमें चारों गतियोंका वन्ध जमाय है । अनुप्य स्वामी है,
 क्योंकि, अन्य गतियोंमें अपगतवदियोंका जमाय है । व वाच्यता ओर वन्धमिण्ठट्टाण
 सुगम है । सादि व अद्धु न-ध होता है, क्योंकि वह अद्धवन्धी प्रकृति है ।

स-जलनकोधका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १८२ ॥

यह स- सुगम है ।

अनिवृत्तिकरणगुणस्थानगती उपगमक व क्षपक वन्धक है । चादर अनिवृत्तिकरण
 कालके सख्यात बहु भाग जाकर वन्ध व्युच्छिज्ज होता है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक
 है ॥ १८३ ॥

इस सूत्रका अर्थ रहने है— स-जलनवाधका वध ओर उदय दोनों एक सा
 व्युच्छिज्ज होने हैं, क्योंकि, व ओर व्युच्छिज्ज होनेपर फिर उन्ध पाया नहीं जाता ।
 सोदय परोदय वध होना है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी वन्ध होनेका विरोध नहीं है ।
 निरन्तर वध होता है, क्योंकि, वह धुननन्धी है । अगतिसयुक्त वन्ध होता है, क्योंकि,

अगडसजुतो, एत्थ चउगइनधामावादो । पच्चया सुगमा, ओवपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । मणुसा चेव मामी, अण्णत्थेदेमिमभावादो । उपद्धान णत्थि, एकस्मि अद्धानपिरोहादो । अधरा अत्थि, पज्जवट्ठियणए अलविज्जमाणे अगदवेदानमणियट्ठीण ससेज्जानमुलभादो अणियट्ठिकाल ससेज्जानि खडाणि^१ करिय तत्थ बहुपडेसु अइक्कनेसु एगखडानसेसे कोवमज्जणम्म उधो वोच्छिण्णो । तिरिहो उधो, धुनधित्तादो ।

माण-मायांसंजलणाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १८४ ॥

सुगम ।

अणियट्ठी उवसमा खवा वंधा । अणियट्ठिवादरद्दाए सेसे सेसे सखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ १८५ ॥

एदासिं धधेदया सम वोच्छिज्जति, विणट्ठनमाणमुदयाणुवलमादो । सोदय-परोदओ, उमयहा वि वुवलमादो । निरत्तरो, धुनधित्तादो । अगयपच्चओ, ओवपच्चएहिंतो अनिसिद्ध-

यहां चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहां फोड़ भेद नहा है । मनुष्य ही स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें अपगतप्रेतियोंका अभाव है । उपाध्यान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है । अथवा बन्धाध्यान है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयन अवलम्बन करनेपर अपगतवेदी अनिवृत्तिकरणोंके सख्यात पापे जानेसे अनिवृत्तिकरणरालके सख्यात खण्ड करके उनमें बहुत खण्डोंके धीत जाने और एक खण्डके शेष रहनेपर सत्तलनबन्धका बन्ध व्युच्छिन्न होता है । तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह धुनबन्धी है ।

सज्जलनमान और मायाका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १८४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरणवादरकालके शेष शेष कालमें सख्यात बहुमाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ १८५ ॥

इन दोनों प्रवृत्तियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, बन्धके नष्ट हो जानेपर इनका उदय नहीं पाया जाता । प्रोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उन्ध पाया जाता है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे

पचयत्तादो । अगइसजुत्तो, एत्थ चउगइन्धामात्तादो । मणुमसामिओ^१, अण्णत्थवग्गदवेदामात्तादो ।
 वधद्धानमिओ, दव्वद्वियणयत्तिसयम्मि मच्चमग्गे अद्धानाणुत्तवत्तीदो^२ । अथना अद्धानम
 णिओ, अवलत्तियपज्जवद्वियणयत्तादो । ओधवधोचिच्छिण्णद्धानादो उवरिममद्धान सत्तेज्जसडाणि
 काऊण बहुखडेसु अइक्कत्तेसु एयसडात्तसेसे माणनधो योच्छिज्जदि । पुणो मेममेय खड
 सत्तेज्जाणि खडाणि करिय तत्थ बहुखडेसु अइक्कत्तेसु एयसडात्तसेसे मायनधो योच्छिन्दि ।
 एद कुट्ठो वग्गम्मे ? सेमे सेमे सत्तेज्जाभाग गन्तूणे नि जिणयणादो वग्गम्मे । निविट्ठो,
 धुवत्ताभावादो ।

लोभसजलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ १८६ ॥

सुगम ।

धुवधो प्रवृत्तिया है । प्रत्यय अवगत है, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहा कोई विशेषता नहीं
 है । अगतिसयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य
 स्वामी है, क्योंकि, अथ गतियोंमें अपगतयेदियोंका अभाव है । बन्धाभ्यास नहीं है,
 क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयके नियमभूत सय समग्रके होनेपर अज्ञान बनता नहीं है । अथवा
 पर्यायार्थिक नयका अज्ञान करनेसे अध्यानसे सहित बन्ध होता है । ओघक
 बन्धव्युत्पत्तिस्थानमें ऊपरके कालके सरथात खण्ड करके बहुत खण्डोंको बिताकर एक
 खण्डके शेष रहनेपर मानका बन्ध युत्तिष्ठत होता है । तत्पश्चात् शेष एक खण्डके
 सत्प्रात खण्ड करके उनमें बहुत खण्डोंको बिताकर एक खण्डके शेष रहनेपर मायाका
 बन्ध व्युत्तिष्ठत होता है ।

शुक्र—यह कहासे जाना जाता है ?

समाधान—‘शेष शेषमें सरथात बहुभाग जाकर’ इस जिनवचनसे उक्त
 बन्ध व्युत्तिष्ठितकर्म जाना जाता है ।

तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, धुव बन्धका अभाव है ।

मन्वन्तलोभका कौन वचक और कौन अवचक है ? ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

^१ प्रवृत्ति 'मणुमासामिओ' इति पाठ ।

^२ प्रवृत्ति 'अप्याणवत्तीदा' इति पाठ ।

अणियट्टी उवसमा खवा वंधा । अणियट्टिवादरद्धाए चरिमसमयं
गंतुण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ १८७ ॥

एदस्स अत्थो वुन्चदे— उधो पुव्वमुदओ पच्छा वोच्छिज्जदि, अणियट्टि-सुहुम-
सापराइयचरिमसमयम्मि चवोदयगोच्छेदुवलभादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि ववुवलभादो ।
णिरतरो वधो, वुववधित्तादो । अणयपन्चओ, ओषपन्चएहिंतो अनिसिद्धपच्चयत्तादो । अगइ-
सजुत्तो, चउगइउधाभाभादो । मणुससामिओ, अणत्थ सणुवसामगणमभावादो । वधद्धान
णदिय, सुत्ते अणुवदिट्ठत्तादो । किमइमणुवदिट्ठ ? दव्वड्डियानलण्णादो । तिनिहो वधो, धुव-
वधित्तादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाईसु पंचणाणावरणीय [चउदंसणा-
वरणीय सादावेदणीय-] चटुसजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं
को वंधो को अवंधो ? ॥ १८८ ॥

अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । अनिवृत्तिरूपनादरकालके अन्तिम
समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ १८७ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय
व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम
समयमें भ्रमसे बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । सोदय परोदय बन्ध
होता है, क्योंकि, दोनों ही प्रकारसे बन्ध पाया जाता है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
उक्त प्रवृत्ति ध्रुवबन्धी है । ओघप्रत्ययान्ते यहा कोई विशेषता न होनेसे उक्त प्रवृत्तिके बन्धके
प्रत्यय अचगत हैं । अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा चारों गतियोंके बन्धका अभिप्राय
है । मनुष्य स्वामी है क्योंकि, अन्य नितियोंमें क्षपक व उपशमकाका अभिप्राय है । व धाध्यान
है नहीं, क्योंकि, सूत्रमें उसका उपदेश नहीं है ।

शंका—सूत्रमें बन्धाध्यानका उपदेश क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान—द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेसे सूत्रमें उक्तका उपदेश नहीं
किया गया है ।

तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी प्रवृत्ति है ।

कपायमार्गणानुसार कोधरूपायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, [चार दर्शनावरणीय,
सातावेदनीय], चार सज्वलन, यशस्वीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन
बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १८८ ॥

गाद मिअइट्टि सामणमम्माइट्टि-सम्मामिच्छाइट्टि-असन्दसम्मादिट्ठिणो देव मणुमगडमजुत्त
वधति, अण्णमइहि वधणिगेहादो । उतरिमा देवगडसजुत्तमणियट्ठिणो अगइसजुत्त वधति ।

चउगडमिअइट्टि सासणमम्मादिट्टि सम्मामिच्छादिट्टि-अमन्दसम्मादिट्टिणो सामी ।
दुगइसजदासजदा । जउसेमा मणुमा, अण्णत्थ तेमिमणुमलादो । वधद्वान सुगम । वधणिणासा
णत्थि, वधुमलादो । धुवउणीण मिअइट्टिमिह चउणिहो वधो । उतरिमणुणेषु तिविहो,
धुवत्ताभायादो । अउसेसाण पयडीण सादि अदुओ, अदुववधितादो ।

वेद्वणी ओधं ॥ १९० ॥

भीणगिद्धितिय अणताणुवविचउक्क इत्थिनेद-तिरिक्काउ-तिरिक्कागइ-चउसठाण-
चउसयडण-तिरिक्कागइआग्माणुपुत्ति-उज्जेण अण्णमत्थिहायगड दुमग दुस्सर-अणादेज्ज-
णीचागोदाण वेद्वणिगसण्णा, दोसु गुणद्वानेषु चिट्ठति ति उप्पत्तीदो । एदासिं परूवणा

उच्चगोत्रो मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि
देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, जय गतियोंके साथ उसके बाधका
विरोध है । उपरिम जीव देवगतिसं संयुक्त, तथा अनिरुत्तिकरणगुणस्थानधर्मी अगति
संयुक्त बाधते हैं ।

चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत
सम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । दो गतियोंके संघतासयत स्वामी हैं । शेष गुणस्थानधर्मा मनुष्य ही
स्वामी हैं, क्योंकि, जय गतियोंमें वे गुणस्थान पाये नहीं जाते । रंधाधान सुगम है ।
रंधाधना है नहीं, क्योंकि, उनका बाध पाया जाता है । धुवउणी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि
गुणस्थानमें चारों प्रकारका रंध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका रंध होता
है, क्योंकि, वहा धुव वररर अभा है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव रंध होता है,
क्योंकि, वे अधुवउणी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ १९० ॥

स्थानशुद्धितय, अनतानुवाचिचतुप्प, खावेद, तियगायु, तियग्गति, चार सस्थान,
चार महान, तियग्गतिप्रयोगानुपूर्वा, उद्योत अग्रशस्त्रिहायोगति, दुमग, दुस्सर,
अनादेय और नीचगात्र, इन प्रकृतियोंकी द्विस्थानिक मभा है, क्योंकि, 'जो दो गुणस्थानोंमें
रहें वे द्विस्थानिक हैं' ऐसी व्युत्पत्ति है । इनकी प्ररूपणा ओषके समान है, क्योंकि,

ओषधितुल्य, निसेसाभावादो । त जहा — अणताणुनधिचउक्कस्स वधोदया सम वोच्छिण्णा, सासणम्मि तदुभयाभावदसणादो । धीणगिद्धितियस्स पुच्च वधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणम्ममाडडि पमत्तमज्जेसु कमेण वधोदययोच्चेदुवल्लभादो । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-उज्जेण पीचागोदानमेन चेव । णवरि सज्जासज्जाम्मि उदययोच्चेदो । एवमित्थिवेदस्म वि । णवरि अणियडिम्मि तदुच्चेदो । चउसठाण अप्पसत्थविहायगइ दुस्सरणमेव चेव । णवरि एत्थ उदयवोच्चेदो णत्थि । चउसषडणाणमेव चेव । णवरि अप्पमत्तसज्जेसु निदिय-तदिय-सवडणाणमुदयवोच्चेदो । चउत्थ-पचमाण णत्थि उदयवोच्चेदो, उवसतकसाएसु तदुच्चेद-दसणादो । तिरिक्खगइपाओगाणुपुव्वी दुमग-अणादेज्जाण पुच्च वधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सासणम्ममादिडि-असज्जदसम्मदिडोसु कमेण वधोदयवोच्चेददसणादो ।

अणताणुनधिकोधस्स सोदओ नधो । तिण्ह कमायाण परोदओ, तेसिमेत्थुदयाभावादो । अजसेसपयडीण सोदय-परोदओ, उभयहा वि वधनिरोहाभावादो । इत्थिवेद-चउसठाण-चउ-

ओषधसे इनमें कोई भेद नहीं है । वह इस प्रकार है — अनन्तानुयन्धिचतुष्कला ग्रन्थ और उदय दोनों साधनमें व्युत्पिठ्य होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्थानगृह्णयका पूरमें वध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्पत्ति और प्रमत्तसयत गुणस्थानोंमें क्रमसे वध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, उद्योत और नीचगोनकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार ही है । विशेषता केवल इतनी है कि सयतासयत गुणस्थानमें उनका उदयव्युच्छेद होता है । इसी प्रकार खीवेदकी भी प्ररूपणा है । विशेष इतना है कि अनिवृत्तिकरण गुण स्थानमें उसके उदयका व्युच्छेद होता है । चार सस्थान, अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरकी प्ररूपणा भी इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि यहा उनका उदय व्युच्छेद नहीं है । चार सहननोंकी प्ररूपणा भी इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि अप्रमत्तसयतोंमें द्वितीय और तृतीय सहननका उदयव्युच्छेद होता है । चतुर्थ और पचम सहननका उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, उपशान्तस्वायामें उनसे उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वी, दुर्मग और अनदयका पूरमें वध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्पत्ति और असयतसम्पत्ति गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके वध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

अनन्तानुयन्धिकोषका खोदय वन्ध होता है । तीन कथायेंका परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, यहा उनके उदयका अभाव है । शेष प्रवृत्तियोंका खोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उनके वन्धका कोई निरोध नहीं है ।

खीवेद, चार सस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्मग, दुस्वर,

मघटण उज्जोण अप्पमत्थविहायगइ दुभग दुस्सर अणादेज्जाण ववो सातरो, एगसमएण वि
 वधुवरमदमणादो । तिरिस्सगड तिरिस्सगडपाओम्माणुपुत्ति जीचागोदाण दोसु वि गुणद्वारेण
 सातर गिरतरा ववो, तेउ वाउरुकाइएसु सत्तमपुढविणेगइएसु च गिरतरावधुवरलभादो । अरमेमाण
 पयटीण ववो गिरतरो, एगसमएण वधुवरमाभाणादो । पच्चया सुगमा ।

तिरिस्साउ तिरिस्सगडपाओम्माणुपुत्ति-उज्जोणाणि तिरिस्सगडसजुत्त वधति । इति-
 वेद तिगडमजुत्त, निग्गमए नवाभाणादो । चउसठाण चउयधडणाणि तिरिस्स मणुसगइसजुत्त
 वधति, अणागईहि ववाभाणादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुभग दुस्सर अणादेज्ज-जीचागोदाणि
 तिगइसजुत्त वधति, देवगए ववाभाणादो । सामणो तिरिस्स मणुसगइसजुत्त वधइ, तस्सण्ण-
 गईहि विरोहादो । चउगमिच्छादिट्ठि-मासणमम्मादिट्ठिणो सामी । उवरि सुगम, वधुमो
 परुविदत्तादो ।

जाव पच्चकखाणावरणीयमोघ ॥ १९१ ॥

वेडाणदडय परुविय पच्छा जणेइ सुत्त परुविद तेण विहादडयमादिं कादूणे ति
 अत्थानत्तीरे अरगम्मंद । विदा असादेगड्ढाण अपच्चस्साण पच्चस्साणदडयाण परुवणाए

और अनदेयना धन्य स्नातर होता है क्योंकि एक समयमें भी उनका उन्धविधाम वेला
 जाता है । नियमगति, तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वाचार नीचतोऽकादोर्गा ही गुणस्थानोंमें सातर
 निरंतर वच होता है, क्योंकि, नेजनाधिक व वायुनापि तदा सप्तम पृथिवीके नारिकेलोंमें
 निरंतर वच पाया जाता है । इन प्रकृतियोंके उच निरंतर होता है क्योंकि, एक
 समयसे इनके अप्रविधामका जमाव है । प्रत्यय सुगम है ।

नियमायु, नियमगति प्रायोग्यानुपूर्वाचार उद्योतको तिर्यग्गतिके सयुक्त बाधते हैं ।
 रत्नोदरे तीन गतियांसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, नरगतिरु साथ उसके वचका
 अभाव है । चार स्थानों पर चार सहनार्कों तिर्यग्गति और मनुष्यगतिके सयुक्त बाधते
 हैं, क्योंकि, अथ गतियोंके साथ उनके उन्धका अभाव है । अप्रशस्तविहायगति, दुर्भग,
 दुस्सर, जनादिष और जीवगात्रके तीन गतियोंमें सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि देवगतिके साथ
 इनके वचका अभाव है । सामानसम्पदादि हैं नियमगति व मनुष्यगतिके सयुक्त बाधता
 है, क्योंकि उसके अथ गतियोंके साथ इनके वच निरोध है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि
 और सामानसम्पदादि स्वामी हैं । उपरि प्ररूपणा सुगम है, क्योंकि, वह वदुत्त वार
 की जा चुका है ।

प्रत्याख्यानारणीय तरु मन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओवके समान है ॥ १९१ ॥

छिन्नात्तच्छब्दोंकी प्ररूपणा उनके पीछे चूकि इस सूत्रकी प्ररूपणा की गई है अतः
 'निद्राच्छब्दोंकी आदि करके', यह प्ररूपण जाना जाता है । निद्रा, असातायेदनीय,
 प्रस्थानिक, अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान दण्डकोंकी प्ररूपणा ओवके समान है । उसको

ओघमगो । सो वि चितिय एत्थ वत्तओ ।

पुरिसवेदे ओघ ॥ १९२ ॥

एमो पुरिमवेदणिदेमो जेण देसामासियो तेम पुरिमवेददडय माणदडय-लोहदडयाण गहण । जहा एदेमि दडयाणमोघमि परूण्णा रुदा तहा एत्थ वि कायव्वा । णरि पच्चयविसेमो जाणिय वत्तओ ।

हस्स रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ १९३ ॥

हस्स रदिसुत्तमादिं कादूण जाव तित्थयरसुत्त ति ताव एदेसिं सुत्ताणमोघपरूण्ण-मनहारिय परूवेदव्व ।

माणकसाईसु पंचणागावरणीय चउदंसणावरणीय-सादावेदनीय-तिणिगसंजलण-जसकित्ति-उच्चगोद-पंचंतराइयाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १९४ ॥

सुगम ।

भी विचार कर रहा कहना चाहिये ।

पुरुषवेदकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९२ ॥

यह पुरुषवेद पदका निदश चूकि देशामर्गक हे, जत इसमे पुरुषवेददण्डक, मानदण्डक और लोभदण्डकका ग्रहण करना चाहिये । जिन प्रकार इन दण्डकोंकी ओपमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहा भी करना चाहिये । विशेष इतना हे कि प्रत्ययभेद जानकर कहना चाहिये ।

हास्य व रतिमे लेकर तीर्थकर प्रकृति तर ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १९३ ॥

हास्य रति सूत्रको आदि करके तीर्थकर सूत्र तक इन सूत्रोंकी ओपप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

माणकपायी जीर्णोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सादावेदनीय, तीन सज्जलन, यशस्तीति, उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका कौन वन्नक और कोन अन्नधक है ? ॥ १९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छादृष्टिपहुडि जाव अणियट्टि उवसमा खवा बंधा । एदे
बंधा, अवधा णत्थि ॥ १९५ ॥

कोषसजलगमेत्थ एदाहि सह किण्ण परूविद ? ण, तस्स माणसजलगबंधादो
पुण्वमेव वोच्छिण्णवधस्स माणादीहि उवद्धाण पडि पच्चासच्चैए अमावादी । एदस्स सुत्तस्स
परूवणाण कोषमगो । णवरि माणस्स सोदओ, अण्णेसि कमायाण परोदओ वधो । पच्चएसु
माणकमाय मोत्तूण सेमकमाया अवणेदवा । सेम जाणिय उत्तव्व ।

वेद्वाणि जाव पुरिसवेद-कोषसजलगाणमोघ ॥ १९६ ॥

वेद्वाणि ति उते वेद्वाणिय निदा असादे मि उत अण्वक्खाण-पच्चक्खाणइडया
धेतव्वा, देसामासियतादो । पुरिसवेद-कोषसजलगे ति उते तस्स एकम्मैय सुत्तस्स गहण
कायव्व । एदेसि सुत्ताणमोघपरूवणमवहारिय उत्तव्व ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकारणगुणस्थानमूर्ती उपशमरु व क्षपक तरु बन्धक हैं ।
ये बन्धक हैं, अबन्धक कोई नहीं हैं ॥ १९५ ॥

शका—यहा इन प्रकृतियोंके साथ सज्जलन क्रोधकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि सज्जलनमानके बन्धसे उसका बन्ध पूर्वमें ही छुटिउण
हो जाता है, अत एव मानादिकोंके साथ उपाध्यायनके प्रति उसकी प्रत्यासत्तिका अभाव
है । इसी कारण उसकी प्ररूपणा यहा नहीं की गई है ।

इस सूत्रकी प्ररूपणा प्रोचक समान है । विशेष इतना है कि मानका स्वोदय और
अपय कपायोंका परोदय वध होता है । प्रत्यर्थमें मानकरायका छोटकर शेष कपायोंको
कम करना चाहिये । दोष प्ररूपणा जानकर कहना चाहिये ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंको लेकर पुरुषवेद और सज्जलनक्रोध तक ओषके समान प्ररूपणा
है ॥ १९६ ॥

‘द्विस्थानिक’ ऐसा कहनेपर द्विस्थानिक, निद्रा, असत्तावेदनीय, मिथ्यात्व,
अप्रत्याक्षयानावरण और प्रत्याक्षयानावरण दण्डनोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, यह
वेदामशक पद है । पुरुषवेद य सज्जलनक्रोध, ऐसा कहनेपर उस एक ही मूलका ग्रहण
करना चाहिये । इन मूलोंकी ओषप्ररूपणाका निश्चय कर व्याख्यान करना चाहिये ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ १९७ ॥

सुगममेद, बहुसो परूविदत्तत्तादो ।

मायकसाईसु पंचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-सादावेदणीय-
दोणिणसंजलण जसकित्ति उच्चागोद-पचंतराइयाणं को वंधो को
अवंधो ? ॥ १९८ ॥

सुगममेद ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा खवा वंधा । एदे
वंधा, अवंधा णत्थि ॥ १९९ ॥

एद पि सुत्त सुगम ।

वेट्ठाणि जाव माणसंजलणे त्ति ओघ ॥ २०० ॥

वेट्ठाणि-णिदासादेगेट्ठाण-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-पुरिस-क्रोध-माणसुत्ताणमोघपरू-
वणमनहारिय परूवेदच्च ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १९७ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, इसके अर्ककी बहुत बार प्ररूपणा की जा चुकी है ।

मायारुपायी जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, दो
सज्वलन, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक
है ? ॥ १९८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक वन्धक हैं । ये बन्धक
हैं, अवन्धक कोई नहीं हैं ॥ १९९ ॥

यह भी सूत्र सुगम है ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंको लेकर सज्वलनमान तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ २०० ॥

द्विस्थानिक, निद्रा, असातावेदनीय, एकस्थानिक, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान,
पुरुरवेद, क्रोध और मान मृत्रोंकी ओघप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

हस्त रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ २०१ ॥

सुगममेद ।

लोभकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय
जसकित्ति उच्चागोद-पचतराइयाणं को वधो को अवधो ? ॥२०२॥

सुगम ।

मिच्छाडट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा ।
एदे बंधा, अवधा णत्थि ॥ २०३ ॥

एद सुगम ।

सेस जाव तित्थयरे त्ति ओघ ॥ २०४ ॥

सुगम ।

अकसाईसु सादावेदणीयस्स को वधो को अवंधो ? ॥२०५॥

सुगम ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर प्रकृति तरु ओषके समान प्ररूपणा है ॥ २०१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

लोभकपायी जीयोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, यशकीर्ति,
उच्चागोत और पाच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २०२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्पराधिक उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक
हैं, अनधक कोई नहीं हैं ॥ २०३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

तीर्थकर प्रकृति तरु शेष प्रकृतियाकी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ २०४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अकपायी जीयोंमें सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥२०५॥

यह सूत्र सुगम है ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था खीणकसायवीदरागछदुमत्था
सजोगिकेवली वंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण वंधो
वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २०६ ॥

एदस्स अत्थो । त जहा — सादावेदणीयस्स' पुच्च वधो पच्छा उदओ वेच्छिण्णो,
सजोगि-अजोगिकेवलीसु कमेण उधोदयतोच्छेददसणादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि वधा-
विरोहादो' । गिरतरो, पडिवस्सपयडीए वधामानादो । उवसत-खीणकसाएसु णम जोगपवया ।
सजोगीसु मत्त । अगइसजुत्तो नयो । मणुसा सामी । सादि-अद्धवो, वधो, अद्धवनवितादो ।

जाणानुवादेण मदिअण्णाणि सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु पंच-
णाणावरणीय णवदसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय अट्ठणोकसाय-
तिरिक्खाउ मणुसाउ-देवाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदिय-
जादि-ओरालिय-वेउव्विय तेजा कम्मइयसरिर-पंचसंठाण-ओरालिय-

उपशान्तकपाय वीतरागछदुमस्थ, क्षीणकपाय वीतरागछदुमस्थ और सयोगकेवली
बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये
बन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ २०६ ॥

इमं सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है — सातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध
और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें
क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । उसका स्वोदय परोदय बन्ध होता
है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उसने बन्धका विरोध नहीं है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
उसकी प्रतियक्ष प्रवृत्तिका यहा अभाव है । उपशान्तकपाय और क्षीणकपाय जीवोंमें नौ
योग प्रत्यय तथा सयोगी जिनोंमें सात हैं । अगतिसंयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी है ।
सादि व अधुन बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवनन्धी है ।

ज्ञानमार्गणके अनुमाग भत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभगज्ञानी जीवोंमें पाच
ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व अमाता वेदनीय, सोलह कपाय, आठ नोकपाय,
तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रियजाति, औदारिक,
वैक्रियिक, तेजम व कार्मण शरीर, पाच सस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरागोपाग, पाच

१ अग्रतो सादासादवेदणायस्स', अग्रतो ' सादामादयस्स' इति पाठ ।

२ प्रतिपु ' वधविरोहादो ' इति पाठ ।

वेउव्वियसरीरअंगोवग पचसधडण वण्ण गंध रस-फास-तिरिक्खगइ-
मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-
उत्सास-उज्जाव दोविहायगइ तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर विराथिर-
सुहासुह-सुभग दुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-
अजसकित्ति णिमिण णीचुच्चागोद पचत्तराइयाण को वधो को अवधो ?
॥ २०७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवधा णत्थि

॥ २०८ ॥

एत्थ उदयादो वधो पुन पच्छा ना वोच्छिज्जदि त्ति विचारो णत्थि, एवासि पयडीण
वधोदयवोच्छेदाभावादो । पचणाणांरणीय चउदसणावरणीय तेजा कम्मइयसरीर वण्ण-गंध-रस
फास अगुरुअलहुअ विराथिर सुहासुह णिमिण पचत्तराइयाण सोदओ वधो, धुवोदयत्तादो ।
देसाउ देसगइ वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवग देवगइपाओग्गाणुपुव्वीण परोदओ वधो,

महनन, रण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गति, मनुयगति न देवगतिप्रायोगयानुपूर्वी, अगुरुलहु,
उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, दो विहायोगतिया, त्रय, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर,
स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति,
अयशकीर्ति, निर्माण, नीच न उच्च गोन और पांच अन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन
अवन्धक है ? ॥ २०७ ॥

यह स्रष्टा सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, अवन्धक कोई नहीं
है ॥ २०८ ॥

यहां उदयसे वध पूरमें या पश्चात् व्युत्पिठ्य होता है, यह विचार नहीं है,
क्योंकि, इन प्रवृत्तियोंके वध न उदयके व्युत्पिठ्य यहां अभाव है ।

पांच भानावरणीय चार दानावरणीय, वैजस व कालण शरीर, वण, गन्ध,
रस, स्पर्श, अगुरुलहु स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका
वध वध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रवृत्तियां हैं । देवायु देवगति, ऐन्द्रियिकशरीर,
प्रकशरीरागोशम और देवगतिप्रायोगयानुपूर्वीका परोदय वध होता है, क्योंकि, इन

एदासिं बधोदयाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-
अट्ठणोकसाय-तिरिक्ख मणुसाउ तिरिक्ख मणुमगइ-ओरालिषसरीर-पचसठाण-ओरालिषसरीर-
अगोत्र-पचसघडण-तिरिक्ख-मणुसगडपाओग्गणुपुवी-उवघाद-परघाद-उत्सास-उज्जोत्र-
देविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-अदेज्ज अणदेज्ज जसकिति अजसकिति-
णीचायोदाण सोदय-परोदओ बधो, दोहिं पि पयोरेहि बधविरोहाभावादो । पचिंदिय-तस-
घादर-पज्जत्ताण मदि-सुदअण्णाणिमिन्हाड्डीसु सोदय परोदओ बधो । सासणसम्माइड्डीसु सोदओ
चेन, एदासिं पडिरुत्तपयडीण तत्थुदयाभावादो ।

पचणाणारणीय-णउदसणावरणीय सोलमकमाय-भय-दुगुछा-तिरिक्ख मणुस-देवाउ-
तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गघ-रस-फाम-अगुरुलहुअ-उउघाद णिमिण-पंचतराइयाण गिरतरो
बधो, एगसमइयउपाणुउलभादो । मादामाद पचणोकसाय पचसठाण पचसघडण-उज्जोत्र-
अप्पमत्थविहायगइ यिराधिर-सुभासुभ-दुभग दुस्सर-अणदेज्ज-अजसकित्तीण सातरो बधो, एग-

प्रकृतियोंके बन्ध व उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । पाच दर्शनावरणीय, साता व
असाता वेदनीय, सोलह कपाय, आठ नोकपाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति,
औदारिकशरीर, पाच सस्थान, आहारिकशरीरागोपाण, पाच सहनन, तिर्यग्गति व
मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वा, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, द्वो विहायोगतिया,
प्रत्येकशरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्सर, दुस्सर, जादेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और
नीचगोत्रका स्त्रोदय परोदय बन्ध हाता है, क्योंकि, दोनों ही प्रकारसे उनके बन्ध होनेमें
कोई विरोध नहीं है । पचेन्नियजालि, व्रस, घादर और पर्याप्तका मति व भुत अन्नानी
मिथ्याहृष्टियोंमें स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें स्त्रोदय ही बन्ध
होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बधा उदयाभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, ना दर्शनावरणीय, सोलह कपाय, भय, जुगुप्ता, तिर्यगायु,
मनुष्यायु, देवायु, तेजस व कर्मण शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात,
निर्माण और पाच अतरायका निरंतर बन्ध होता है, क्योंकि, इनका एक समयिक बन्ध
नहीं पाया जाता । साता व असाता वेदनीय, पाच नोकपाय, पाच सस्थान, पाच सहनन,
उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और
यशकीर्तिका साततर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविध्राम देखा

समएण नि एदासिं वपुरमदसणादो । पुग्गिमेदस्म मातर गिरतरो । कुदो गिरतरो ? पम्म-सुक्ख
 लेस्सियतिरिक्ख मणुममिन्डाइडि-सामणसम्मादिट्ठीसु पुरिसमेदस्म गिरतरवधुवलमादो । मणुम
 गइ मणुमगइपाओग्गाणुपुत्रीण सानर गिरतरो उवो । होदु सातरो, कुणे गिरतरो ? ण,
 सुक्खलेस्सियमिन्डाइडि सामणसम्मादिट्ठिदेवाण गिरतरवधुवलमादो । ओरालियसगीरअगो
 वणाण सानर गिरतरो । कय गिरतरो ? ण, णेइएमु सणक्खुमारदिदेवेषु च गिरतर-
 वधुवलमादो । देवगइ पच्चिदियत्तादि वेउत्तियमरीर-वेउत्तियमरीरअगोउग देवगइपाओग्गाणु
 पुत्ति पत्तत्थविहायगइ सुमग सुस्मर आदेज्ज उच्चागोदाण मातर गिरतरो उवो । कथ गिरतरो ?
 ण, असत्तेज्जवासाउअतिरिक्ख मणुममिन्डाइडि-मासगमम्मादिट्ठीसु तेउ-पम्म सुक्खलेस्सिय
 सत्तेज्जवामाउअतिरिक्ख मणुममिन्डाइडि सामणसम्मादिट्ठीसु च गिरतरवधुवलमादो । परया

जाता है । पुरुषवेदका सा-तर निर-तर बन्ध होता है ।

शका—निर-तर बन्ध कैसे सम्भव है ?

समाधान—क्योंकि, पद्म और शुक्ल देव्यावाले नियंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं
 सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें पुरुषवेदका निर-तर बन्ध पाया जाता है ।

मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका सा-तर निर-तर बन्ध होता है ।

शका—इनका सा-तर बन्ध भन्ने ही हो, पर निर-तर बन्ध कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, शुक्लदेव्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि
 दोनोंके निर-तर बन्ध पाया जाता है ।

शोदारिकशरीर और औदारिकशरीरागोपागका सा-तर निर-तर बन्ध होता है ।

शका—निर-तर व बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, नारकियों तथा सनत्कुमारादि देवोंमें निर-तर बन्ध
 पाया जाता है ।

देवगति, पक्षी द्रव्यजाति, वैक्त्रियिन्शरीर, वैक्त्रियिन्शरीरागोपाग, देवगतिप्रायो
 ग्यानुपूर्विका, प्रशस्तविहायोग्यानि, सुमग सुस्मर, आदेय और उच्चगोत्रका सा-तर निर-तर
 बन्ध होता है । निर-तर बन्ध कैसे होता है ? नहीं, क्योंकि, असत्तात वपायुष्क तिर्यंच
 व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियों तथा तेज, पद्म व शुक्ल देव्यावाले
 सत्तातवपायुष्क तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निर-तर बन्ध

दुस्सास-तस वादर-पञ्जत्त पत्तेयसरीराण मिच्छाडडिहि वधो सातर-गिरतरो । कथ गिरतरो ? देव-गेरडएमु अमखेज्जवामाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु च गिरतर-पुव्वलभादो । सासणसम्मादिट्ठीसु गिरतरो, तत्थ पडिक्ख-पयडिक्ख-भाभादो परघादुस्सास-पध-विरोहिअपञ्जत्तस्स वधाभावादो च । तिरिक्ख-गइ तिरिक्ख-गइ-पाओग्गाणुपुत्ति णीचागोदाण पि वधो सातर-गिरतरो । कथ गिरतरो ? ण, तेउ वाउकाट्ठमिच्छाडडिहि सत्तमपुट्ठमिच्छाडडिहि सामणसम्मादिट्ठीसु च गिरतर-पुव्वलभादो ।

पञ्चया सुगमा, ओषपञ्चएहिंते भेदाभाभादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्ख-गइ-तिरिक्ख-गइ-पाओग्गाणुपुत्ति उज्जेवाण तिरिक्ख-गइ-सज्जतो वधो । मणुमाउ मणुसगइ मणुसगइ-पाओग्गाणुपुत्ति मणुगइ-सज्जतो वधो । देवाउ- [देवगइ] देवगइ-पाओग्गाणुपुत्ति देवगइ-सज्जतो । ओरालियसरीर ओरालियसरीर-अगो-ग-पचसठाण-पचमपडणाण तिरिक्ख-मणुसगइ-सज्जतो, अण्णगइ-हि वध-विरोहादो । ण-परि समचउर-ससठाण-सस तिगइ-सज्जतो, गिरयगइ-ए अभाभादो । वेउ-पियसरीर-पेउ-विज्जयमरीर-अगो-वगाण मिच्छाडडिहि देव-गइ गिरयगइ-सज्जतो । मासणे देवगइ-सज्जतो । सादापेदणीय-इत्थि-पुरिस हस्स रदि-पमत्थ-निहाय-

.. ..

पाया जाता है । परघात, उच्छ्वास, प्रस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? क्योंकि, देव नारकियों और अमरगानधर्यायुक्त तिर्यच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है, तथा परघात और उच्छ्वासके बन्धके विरोधी अपर्याप्तके भी बन्धका अभाव है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका भी बन्ध सान्तर निरन्तर होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? नहीं, क्योंकि, तेज व वायु कायिक मिथ्यादृष्टियों तथा सप्तम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओषप्रत्ययोंसे यहाँ कोई भेद नहीं है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसं सयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसं सयुक्त बन्ध होता है । देवायु, [देवगति] और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका देवगतिमें सयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग, पाच सस्थान और पाच सहननका तिर्यच व मनुष्यगतिसं सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध है । विशेष इतना है कि समचतुरस्रस्थानका तीन गतियोंमें सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, नरगतिके साथ उसके बन्धका अभाव है । ऐकियिकशरीर और ऐकियिक-शरीरागोपागका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें देवगति व नरकगतिसं सयुक्त, तथा सासादन गुणस्थानमें देवगतिसं सयुक्त बन्ध होता है । सादापेदनीय, स्त्रीपेद, पुरुषपेद, हास्य,

तिथो चैव विमयो, नत्थि अण्णत्थ कत्थ वि ।

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ २१३ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिद्विप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था
बंधा । एदे बधा, अवंधा नत्थि ॥ २१४ ॥

सादावेदणीयस्स बरो उदयादो पुत्र पन्था वा बोन्धिणो ति निचारो नत्थि, एत्थ
बधोदयाण पेच्छेदाभायादो । सोदय परोदयो उधो, अद्धुवादयत्तादो, असंजदसम्मादिद्वि
प्पहुडि चार पमत्तमपदो ति उधो सातरो । उरि पिउत्तो, पडिउत्तपयडीण बधाभायादो ।
पच्चया सुगमा । अमज्जसम्मादिद्वी देव-मणुसगइसजुत्त, उरिमा देवगइसजुत्तमगइसजुत्त
च बधति, साहाभियादो । चउगइअसंजदसम्मादिद्विणो, दुगइमज्जासज्जा सामी । उरि मणुमा
धेय । बधद्वाण सुगम । बधरोत्तेदो नत्थि, 'अवंधा नत्थि' ति सुतुदिइत्तादो । सादि-
अद्धुवो बधो, अद्धुवबधितादो ।

निशेष है, अथय वहाँ भी और कुछ विशेषता नहा है ।

सादावेदनीयका कौन बधक और कौन अवन्धक है ? ॥ २१३ ॥

यह सज सुगम है ।

असंयतसम्यग्दष्टिमे लेकर क्षीणकृपायरीतगगठदुमन्थ तर बन्धक है । ये बन्धक
हैं, अवन्धक नहीं हैं ॥ २१४ ॥

सादावेदनीयका बध उदयमे पुत्रमे या पन्थात् 'बुद्धिउत्त होता है, यह निवार
नहीं है, क्योंकि, यहां उसके बन्ध और उदयके व्युत्पत्ति का अभाव है । सोदय परोदय उच
होता है, क्योंकि, यह अमुधोदयी है । असंयतसम्यग्दष्टिमे लेकर प्रमत्तसंयत तर उमका
बध सात्तर होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष
प्रतिक बधका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । असंयतसम्यग्दष्टि जीव देव व मनुष्य
गतिसे संयुक्त पाधते हैं; उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त और अगति संयुक्त
पाधते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दष्टि और दो
गतियोंके संयतसंयत स्वाधी है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी है ।
असंयतसम्यग्दष्टि सुगम है । बध-मुच्छिन्न नहीं है, क्योंकि, वह 'अवन्धक नहीं है' इस प्रकार
ही निर्दिष्ट है । सादि य अग्रय बध होता है, क्योंकि, यह अध्वयवन्धी है ।

सेसमोघ जाव तित्थयरे त्ति । णवरि असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि
त्ति भाणिदब्बं ॥ २१५ ॥

एदस्स अत्थो जदि नि सुगमो तो नि सण्णाणपम्बवाएणाप्पिचचित्तो दुम्मेहजणाणु-
ग्गहद्ध च पुणरपि परूहेमि — अमादावेदणीयस्स पुत्र वधो वोच्छिण्णो । उदययोच्छेदो णत्थि,
केवलजानीसु नि तदुदयदमणादो । एमयिरामुहाण पि वत्तञ्च । अरदि-सोमाण पुत्र वधो
पच्छा उदयो वोच्छिण्णो, पमत्तापुत्तेसु वधोदययोच्छेदुत्तलभादो । अजसकित्तीए पुत्त्वमुदओ
पच्छा वधो योच्छिण्णो, पमत्तामजदसम्मादिट्ठीसु चोदययोच्छेदुत्तलभादो । अमादावेदणीय-
अरदि सोमाण वधो सोदय परोदओ, अद्धोदयत्तादो । अयिरामुहाण सोदओ, धुओदयत्तादो ।
अजसकित्तीए असजदसम्मादिट्ठिम्हि पओ सोदय परोदओ । उरि परोदओ चव । एदासिं
पयडीण सत्वासिं पि वधो सात्तो, एगममएण वि वउत्तमदमणादो । पच्चया सुगमा ।
असजदसम्मादिट्ठिम्हि सत्त्वपयडीण दुगइमजुत्तो, उरिमाण देग्गइसजुत्तो वओ । चउगइ-
असजदसम्मादिट्ठी दुगइसजदामजउ मणुमगइसजदा च मामी । अमजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि

शेष प्ररूपणा तीर्थकर प्रकृति तक ओषके समान है । विशेषता फेरल इतनी है कि
'असयतसम्यग्दष्टिमे लेकर' ऐसा कहना चाहिये ॥ २१५ ॥

इस सूत्र का अर्थ यद्यपि सुगम है तो भी सम्यग्ज्ञानसे पक्षपातसे आश्रितचित्त
अर्थात् आरुप होकर जोर दुर्बुद्धि जनने अनुग्रहार्थ फिरसे भी प्ररूपणा करते हैं—
असातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । उदयव्युच्छेद उसका नहीं है, क्योंकि,
केवलज्ञानियोंमें भी उसका उदय देखा जाता है । इसी प्रकार अस्थिर और अशुभके भी
कहना चाहिये । अरति उ शोकका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है,
क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया
जाता है । अयशकीर्तिका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त
और असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता
है । असातावेदनीय, अरति और शोकका बन्ध स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, वे
अधुनोदयी हैं । अस्थिर और अशुभका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं ।
अयशकीर्तिका बन्ध असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय होता है । ऊपर उसका
परोदय ही बन्ध होता है । इन सब ही प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक
समयसे भी उनका बन्धविधाम देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है । असयतसम्यग्दष्टि
गुणस्थानमें सब प्रकृतियोंका दो गतियोंसे समुक्त तथा उपरिम जीवोंके देवगतित्ते समुक्त
बध होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दष्टि, दो गतियोंके मयतासयत, और
मनुष्यगतित्ते सयत स्वामी हैं । असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक बन्धाधान

जाव पमत्तसजदो ति वधद्वान् । पमत्तसजदमि वधोच्छेदो । एदासिं यधो सादि-अद्भुतो ।

अपञ्चनखाणावरणचउत्तक मणुसगइ-ओरालियसरीर अगोवग-वज्जरिसहवइरणारायण सरीरसघडण मणुसगइपाओगाणुपुत्रीओ एत्तकमिह अमजदसम्मादिट्ठिगुणद्वाने वज्जति ति एदासिमेत्थ एगद्वानमण्णा । ए व अपञ्चनखाणचउत्तक-मणुसगइपाओगाणुपुत्रीण वधोदया सम वोच्छिण्णा, अमजदसम्मादिट्ठिं मोत्तणुपरि वधुदयाणुपलमादो । अवसेसाण पयडीण मेत्थ नओनसमियणाणमग्गणाए वधोरोच्छेदो चेत्त, उदयवोच्छेदो णत्थि, केत्तलणाणीसु वि उदयदसणादो । अपञ्चनखाणावरणचउत्तकस्म वधो सोदय-परोदओ, अद्भुवोदयत्तादो । मणुसगइदुगोरालियदुग वज्जरिसहसघडणाण वधो परोदओ, सम्मादिट्ठीसु एदामिं मोदएण वधस्स विरोहादो । गिरतरो वधो, असजदसम्मादिट्ठिमिह एगममएण उधुवरमाभावादो । पच्चया सुग्गमा । णवरि मणुसगइदुगोरालियदुग वज्जरिमत्तइरणारायणसरीरसघडणाणमसजदसम्मादिट्ठिमिह ओत्ता लियकायवोग-ओरालियमिस्मकायजोगपच्चया णत्थि, तिक्खिस्व मणुमअमजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं वधाभावादो । अपञ्चनखाणचउत्तकस्स देव मणुमगइसजुत्तो नधो । अण्णासिं पयडीण मणुम

है । प्रमत्तसपत गुणस्थानमें बन्ध युच्छेद होता है । इन प्रकृतियोंका बन्ध सावि और अधुष होता है ।

अप्रत्याख्यानवरणचतुष्क, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपान, वज्जरिमत्तइरणारायणसरीरसहजन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, ये प्रकृतिया एक असपत सम्पददृष्टि गुणस्थानमें बधतीं हैं, अत एव इनकी यहा एकस्थान स्था है । यहा अप्रत्याख्यान चतुष्क और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बध आर उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असपतसम्पददृष्टि गुणस्थानको छोडकर उपरिम गुणस्थानोंमें इनका बन्ध और उदय नहीं पाया जाता । दोष प्रकृतियोंका यहा क्षयोपशमिक ज्ञानमार्गणमें बन्ध-युच्छेद ही है, उदयव्युच्छेद नहीं है क्योंकि, केत्तलज्ञानियोंमें भी उनका उदय देखा जाता है । अप्रत्याख्यानवरणचतुष्कका बध सोदय परोक्ष होता है, क्योंकि, यह अधुषादयी है । मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्जरिमत्तइरणारायणसरीरसहजनका परादय बध होता है, क्योंकि, सम्पददृष्टियोंमें इनके स्वेदयसे बन्धका विरोध है । निरन्तर रन्ध होता है, क्योंकि, असपतसम्पददृष्टि गुणस्थानमें एक समयसे बन्धविध्वामका अभाव है । प्रत्यय सुग्गम है । विशेषता इतनी है कि मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्जरिमत्तइरणारायणसरीरसहजनके असपतसम्पददृष्टि गुणस्थानमें औदारिक और औदारिकमिथ कायवोग प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, तिर्यच और मनुष्य अमयतसम्पददृष्टियोंमें इनके बधका अभाव है । अप्रत्याख्यान चतुष्कका देय व मनुष्य गतिसं सजुत्त, तथा अन्य प्रकृतियोंका मनुष्यगतिसं समुक्त बध

गइसंजुतो, अण्णगईहि सह विरोहादो । अपन्चक्खाणचउक्कस्स चउगइअसजदसम्माइट्ठी
सामी । अवसेसाण पयडीण देव-णेइया सामी । बधद्धान्ण णत्थि, एक्कमिह गुणट्ठाणे भूओगुण-
ट्ठाणजणियद्धान्णविरोहादो । असजदसम्मादिट्ठिमिह वधो वोच्छिज्जदि । अपन्चक्खाणचउक्कस्स
तिविहो वधो, धुआभावादो । अवसेसाण सादि-अद्धोवो ।

पञ्चक्खाणावरणचउक्कमेत्थ वेट्ठाणियमसजदसम्मादिट्ठि-सजदासजददोगुणट्ठाणेषु
सम चेव नुवुलभादो । वधोदया सम वोच्छिण्णा, मजदासजदमि तदुभयाभावदसणादो ।
सोदय-परोदओ वधो, धुआदयत्तादो । गिरत्तो नधो, धुवनवित्तादो । पञ्चया सुगमा ।
असजदसम्मादिट्ठीसु देव मणुमगइसजुतो । सजदासजदेसु देवगइसजुतो । चउगइअसजद-
सम्मादिट्ठी दुगइमजदासजदा सामी । अमजदसम्मादिट्ठिण्णहुडि जाव सजदासजदो ति
वधद्धान् । सजदासजदमि नधो वोच्छिज्जदि । दोसु नि गुणट्ठाणेषु तिविहो वधो,
धुआभावादो ।

पुरिसयेद-चउसजलण हस्म-रदि-भय दुगुळाण सोदय परोदओ वधो । सातर-गिरतर-

“ “ “ “ “

होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विरोध है । अप्रत्याख्यानचतुष्कके
चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव व नारकी स्वामी हैं ।
बन्धाध्यान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें बहुत गुणस्थान जनित अध्यानका विरोध
है । असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन्ध व्युच्छिन्न होता है । अप्रत्याख्यानचतुष्कका तीन
प्रकारका उन्ध होता है, क्योंकि, उसके धुन उन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व
अधुष बन्ध होता है ।

प्रत्याख्यानवरणचतुष्क यहा द्विस्थानिक है, क्योंकि, असयतसम्यग्दृष्टि और
सयतासयत इन दो गुणस्थानोंमें समान ही बन्ध पाया जाता है । उन्ध और उदय दोनों
साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सयतासयत गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा
जाता है । सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वह धुवोदयी है । निरन्तर बन्ध होता
है, क्योंकि, वह धुनउन्धी है । प्रत्यय सुगम हैं । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें देव व मनुष्य गतिसे
सयुक्त तथा सयतासयतोंमें देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असयत-
सम्यग्दृष्टि और दो गतियोंके सयतासयत स्वामी हैं । असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर सयता-
सयत तक बन्धाध्यान है । सयतासयत गुणस्थानमें उन्ध व्युच्छिन्न होता है । दोनों ही
गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, धुन वधका अभाव है ।

पुरुषयेद, चार सज्वलन, हास्य, रति, भय और जुगुप्साका सोदय परोदय बन्ध

पञ्चय गइसनेग सामित्तद्वाण नधनियणा जाणिय उत्तन्ना' ।

मणुसाउअस्म पुत्रावरफात्सवधिनधोदयपरिक्खा सुगमा । परोदओ चओ, मणुम्माउ चधोदयाणमसजदसम्मादिट्ठिम्हि अक्खमेण उतिप्पिरोहादो । निरतरो, एगसमण्ण नधुवरगामात्रादो । वाएत्तान्नीस पञ्चया, ओरालिय ओरालियमिस्स पेउधियमिस्स-ऊम्मडयपञ्चयाणममात्रादो । मणुसगइसजुत्तो चधो । देव नेरइया मामी । नवद्वाणणत्थि, एक्कम्हि गुणद्वाणे अद्वाणविरोहादो । असजदसम्मादिट्ठिम्हि चधो गोच्छिज्जदि । सादि-अद्दुओ, अद्दुनयप्पित्तादो ।

देवाउअस्म पुत्रमुदओ पञ्चा नओ गोच्छिज्जदि, अप्पमत्तामजदसम्मादिट्ठिम्हि चधोदयवोच्छेदुलभादो । परोदओ, सोदएण य-प्पिरोहादो । निरतरो, अतोमुहुत्तेण विणा चधुवरगामात्रादो । पञ्चया ओघतुल्ल । देवगउसजुत्तो चधो । तिरिक्ख मणुमअसजदसम्मा दिट्ठि सजदासजदा मणुमसजदा च मामी, अण्णत्थ चधाणुवलभादो । अमजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाय अप्पमत्तसजदा ति चधद्वाण । अप्पमत्तसजदद्वाए सरोज्जदिम भाग गतूण चधो

होता है । सा तर निर-तरता, प्रत्यय, गतिमयोग, स्यामित्य, अध्यान और अध्यात्मिकत्व, इनको जानकर कहना चाहिये ।

मनुष्यायुके पूषापर काल सम्यग्धी ३०२ और उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा सुगम है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, मनुष्यायुके ३०२ और उदयके असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें एक साव अस्तित्वका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें उसके व अधिधामका अभाव है । ज्वालीन प्रत्यय है, क्योंकि, औदारिक, औदारिकमिध, धेन्निपिकमिध और कामेण प्रत्ययोंका अभाव है । मनुष्यगतिसे मनुक्त बन्ध होता है । देव व नारकी स्वामी है । धन्याध्यान नहीं है क्योंकि, एक गुणस्थानमें तत्त्वानका विरोध है । असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें नव-गुच्छिज होता है । सादि २ शब्दों बन्ध होता है, क्योंकि, वह अशुद्ध धी है ।

देवायुका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध-गुच्छिज होता है, क्योंकि, अममत्त और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसने बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्रोदयसे उसने बन्धका विरोध है । निर-तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसका अधिधामका अभाव है । प्रत्यय ओघके समान है । देव गतिसे सयुक्त बन्ध होता है । तियच व मनुष्य अमयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत तथा मनुष्य सयत स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उसका नव पाया नहीं जाता । असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अममत्तसयत तक बन्धाध्यान है । अममत्तसयतकालके सरयात्तर्ज भाग जाकर बन्ध

बोच्छिञ्जति । सादि अद्भुतो, अद्भुतचित्तादो ।

देवगड-पंचिन्द्रियजादि-त्रेउत्रियतेजा-कम्मइयमरीर-ममचउरमसठाण-वेउत्रियसरीर-अगोउग वण्ण गव-रस फाम देउगइपाओग्गाणुपुत्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्मास-पसत्थनिहायगइ तस नादर-पज्जत्त पत्तेयमरीर थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाण उच्चदे- देवगइपाओग्गाणुपुत्वी त्रेउत्रियमरीर-त्रेउत्रियमरीरगोवगाण पुत्रमुदओ पच्छा वधो बोच्छिञ्जति, अपुत्र्यामजदसम्मादिट्ठीसु उधोदयोच्छेदुलभादो । अत्रमेतेतीमपयडीण एत्थु-दयवोच्छेदो णत्थि, वधोच्छेदो चेत्त, केवलणाणीसु उदयवोच्छेदुलभादो ।

देवगड-त्रेउत्रियदुगाण सत्रगुणद्वारेणु परोदओ नवो, एदामिमुदयवनाणमनरुमेण वुत्तिविरोहादो । पंचिन्द्रियजादि तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गव-रस फाम-अगुरुअलहुअ तम-नादर-पज्जत्त थिर-सुभ णिमिणण मोदओ नवो । समचउरमसठाण-उवघाद-परघाद उस्मास-पत्तेय-मरीराणमसजदसम्मादिट्ठीमिह सोदय-परोदओ वधो । उपरिमेसु गुणद्वारेणुसु सोदओ चेत्त, तेसिमपज्जत्तद्वाए अभावादो । अत्रि समचउरमसठाणस्स सत्रगुणद्वारेणुसु सोदय-परोदओ नवो । पसत्थनिहायगइ-सुस्सराण सत्रगुणद्वारेणुसु मोदय परोदओ नवो । सुभग-आदेज्जाणं

व्युच्छिन्न होता है । सादि अद्भुत बन्ध होता है, क्योंकि, वह अद्भुतबन्धी है ।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रैत्रियिक, तैजस व कामेण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैत्रियिकशरीरगोपाग, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, त्रेत्रगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अगुरुलघु उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, अस, नादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय नार निर्माण नामकर्मोनी प्ररूपणा करते हैं—देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैत्रियिकशरीर और वैत्रियिकशरीरगोपागना पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वरूप और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः उनके बन्ध अ उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष तैजस प्रकृतियोंका यहा उदय व्युच्छेद नहा है, केवल बन्ध व्युच्छेद ही है, क्योंकि, केवलस्थानियोंमें उनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है ।

देवगतिद्विक और वैत्रियिकद्विकका सत्रगुणस्थानोंमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके उदय और बन्धके एक साथ रहनेका विरोध है । पंचेन्द्रियजाति, तैजस अ कामेण शरीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, अस, नादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ और निर्माणका स्रोदय बन्ध होता है । समचतुरस्रसंस्थान, उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्रोदय परोदय बन्ध होता है । उपरि गुणस्थानोंमें उनका स्रोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव है । विशेष इतना है कि समचतुरस्रसंस्थानका सत्र गुणस्थानोंमें स्रोदय परोदय बन्ध होता है । प्रशस्तविहायोगति और सुस्सरका सत्र गुणस्थानोंमें स्रोदय परोदय बन्ध होता है । सुभग और आदेयका

असजदसम्मादिद्विम्भि मोदय-परोदयो । उर्वरि मोदयो चेव, पडिक्खुदयाभावादो ।

थिर सुभाणमसजदसम्मादिद्विप्पहुडि जान पमत्तसजदा त्ति सातरो बधो । उर्वरि निस्तरो ।
अवसेमाण पयडीण सव्वगुणद्वान्नेसु बधो निस्तरो, पडिक्खसपयडीण वधाभावादो ।

देवगइ वेउच्चियदुगाण वेउच्चिय-वेउच्चियमिस्मपच्चया असजदसम्मादिद्विम्भि अवणे
दच्चा । सेसपयडीण पचया ओघतुल्ला । देवगइ-वेउच्चियदुगाण बधो सव्वगुणद्वान्नेसु देवगइ-
सजुतो । अवसेमाण पयडीण' बधो असजदसम्मादिद्विम्भि देव मणुसगइसजुतो । उर्वरिमेसु गुण-
द्वान्नेसु देवगइमजुतो । देवगइ-वेउच्चियदुगाण दुगइअमजदसम्मादिद्वि-मजदामजदा मणुसगइ-
सजदा सामी । मेसाण पयडीण चउगइअसजदसम्मादिद्विणो दुगइसजदासजदा मणुसगइसजदा
च सामी । असजदसम्मादिद्विप्पहुडि जान अपुच्चकरणे त्ति बधद्वान् । अपुच्चकरणद्वान् सखेज्जे
मागे गतूण बधो वोच्छिज्जदि । निमिणस्म तिण्हो बधो', धुवाभावादो । अवसेमाण बधो
सादि-अदुवो ।

आहारदुग तिथ्यगणमोघपरूषणमवहारिय माणिदच्च ।

असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वेदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वेदय ही बन्ध
होता है, क्योंकि, वहा उनकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके उदयका अभाव है ।

स्थिर और शुभका असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सातर बन्ध
होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध हाता है । शेष प्रवृत्तियोंका सत्र गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध
होता है, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है ।

देवगति और वैत्रियिन्द्रिकके वैक्रियिक और वैक्रियिकमिध काययोगप्रत्ययोंके
असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें कम करना चाहिये । शेष प्रवृत्तियोंके प्रत्यय ओघके समान है ।
देवगतिद्विक और वैत्रियिन्द्रिकका बन्ध सत्र गुणस्थानोंमें देवगतिसे समुक्त होता है । शेष
प्रवृत्तियोंका बन्ध असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें देव व मनुष्य गतिसे समुक्त होता
है । उपरि गुणस्थानोंमें देवगतिसे समुक्त बन्ध होता है । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके
दो गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि व सयतासयत, तथा मनुष्यगतिके सयत स्वामी है ।
शेष प्रवृत्तियोंके चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, तथा
मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण तक बन्धाधान है ।
अपूर्वकरणकालके सत्यात बहुभाग जानर कच्च व्युच्छिन्न होता है । निमाण नामकमका
तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उसका ध्रुव बन्ध नहीं होता । शेष प्रवृत्तियोंका बन्ध
सादि व अधुय होता है ।

आहारकट्टिक और तीर्थकर प्रवृत्तिकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाका निर्णय करके
करना चाहिये ।

मणपज्जवणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-
उच्चागोद पंचंतराहयाण को बंधो को अवंधो ? ॥ २१६ ॥

सुगम ।

पमत्तसंजदण्हुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बधा ।
सुहुमसांपराइयसजदद्वाए चरिमसममं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि ।
एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २१७ ॥

एत्थ एदासिं पयडीण मदिणाभमग्गणाए पमत्तसजदण्हुडिगुणङ्गाणेषु जघा परूवणा
कदा तथा परूवेदव्वा । णरि एत्थ स उत्थित्थि णउसयवेदपच्चया अनणेदव्वा, अप्सत्थ-
वेदोदइल्लाण मणपज्जवणाणाणुप्पत्तीदो । पमत्तपच्चएसु आहारदुग्गमणवेद्व, मणपज्जवणाणस्स
आहारसरीरदुग्गोदएण सह विरोहादो । पुरिसवेदस्स सोदओ बंधो । एवमण्णो वि विसेसो
जदि अत्थि सो समरिय वत्तवो ।

णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २१८ ॥

मन पर्ययज्ञानी जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोन
और पाच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २१६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतसे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रायिक उपशमक व क्षपक तरु बन्धक हैं । सूक्ष्म-
साम्प्रायिकशुद्धिसयतकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं,
शेष अबन्धक हैं ॥ २१७ ॥

यहा इन प्रकृतियोंकी मतिमानमार्गणमें प्रमत्तसयतादिक गुणस्थानोंमें जैसे
प्ररूपणा की गई है वैसे प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि यहा सर्वत्र खविद
और नपुसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, अप्रशस्त वेदोदय युक्त जीवोंके
मन पर्ययज्ञानकी उत्पत्ति नहीं होती । प्रमत्तसयत गुणस्थान सम्प्रन्धी प्रत्ययोंमें आहारक
द्विकको कम करना चाहिये, क्योंकि, मन पर्ययज्ञानका आहारशरीरद्विकके उदयके साथ
निरोध है । पुरुषवेदका स्वोदय बन्ध होता है । इसी प्रकार अन्य भी यदि भेद है तो उसको
स्मरण कर कहना चाहिये ।

निद्रा और प्रचलाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २१८ ॥

सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपहट्टउवसमा खवा वधा ।
अपुव्वकरणद्वाए सस्येज्जदिम भाग गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे
वधा, अवमेमा अवधा ॥ २१९ ॥

एद पि सुगम, ओपग्मि वुत्तत्थत्तादे ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ २२० ॥

सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जान खीणकसायवीयरायछट्टुमत्था वंधा ।
एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ २२१ ॥

सुगममेद ।

सेसमोघ जाव तित्थयेरं ति । णवरि पमत्तसंजदप्पहुडि ति
भाणिदव्व ॥ २२२ ॥

एद पि सुगम ।

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतसे लेकर अपूर्वकरणप्रतिष्ठ उपशमक व क्षपक तरु बन्धक हैं । अपूर्वकरण-
कालके सन्ध्यातरे भाग जाकर वान व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ २१९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, ओघमें इसका अर्थ कहा जा चुका है ।

सादावेदनीयका कौन वानक और कौन अवन्धक है ? ॥ २२० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तमयतमे लेकर क्षीणकपायवीतराग छट्मस्य तरु बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,
अनन्धक नहीं हैं ॥ २२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शेष प्ररूपणा तीर्थरर प्रकृति तरु ओघके समान है । विशेष इतना है कि 'प्रमत्त
सयतसे लेकर' ऐसा कहना चाहिये ॥ २२२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

केवलणाणीसु सादवेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥२२३॥

सुगम ।

सजोगिकेवली वंधा । सजोगिकेवल्लिअद्वाए चरिमसमयं गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥२२४॥

एदस्स वधो पुत्र वोच्छिज्जदि, उदओ पच्छा वोच्छिज्जदि, सजोगि-अजोगिचरिम-समएसु वधोदयवोच्छेदुवलमादो । वधो सोदय परोदओ, अद्दुवोदयत्तादो । शिरतेरो, पडि-वक्खपयडीए, पधामायादो । सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सच्चवचिजोगो असच्च-मोसज्जचिजोगो ओरालियकायजोगो ओरालियमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो चि सत्त-एदस्स वधपच्चया । वधो अगइसजुत्तो, एत्थ गइयधेण विरुद्धवधादो । मणुसा सामी, अण्णत्थ केवलीणमभावादो । वधद्वाण णत्थि, एत्थमिह गुणद्वाणे अद्वाणविरोहादो । अजोगिचरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्दुवो वधो, अद्दुववधित्तादो ।

केवलज्ञानियोंमें सातवेदनीयका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २२३॥

यह सूत्र सुगम है ।

सयोगकेवली बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २२४ ॥

इसका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, उदय पश्चात् व्युच्छिन्न होता है; क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंके अन्तिम समयोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । बन्ध उसका स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वह अधुवो दयी प्रकृति है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । सत्यमनोयोग, असत्य मृषामनोयोग, सत्यवचनयोग, असत्य मृषावचनयोग, औदारिक-काययोग, औदारिकमित्रकाययोग और कर्मणकाययोग, ये सात इसके बन्धप्रत्यय हैं । बन्ध गतिबन्ध रहित होता है, क्योंकि, यहा गतिबन्धसे विरुद्ध बन्ध है । मनुष्य स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें केवलियोंका अभाव है । बन्धाध्यान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है । अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि य अधुन बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुनबन्धी है ।

संजर्माणुवादेण संजदेसु मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २२५ ॥

जधा मणपज्जवणाणमग्गणाए परूवणा कदा तथा एत्थ कायन्वा । णवरि पन्चयादि
विसेसो जाणिय वत्तओ । एत्थ विसेसपदुप्पायणइमुत्तरसुत्त मणादि—

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स को बंधो को अवंधो ?

॥ २२६ ॥

सुगम ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बधा । सजोगिकेवलि-
अद्धाए चरिमसमय गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेमा
अवंधा ॥ २२७ ॥

सुगमेद ।

सामाइयन्हेदोवट्ठावणसुद्धिसजदेसु पंचणाणावरणीय-सादावेद-
णीय लोभसंजलण जसकित्ति उच्चागोद पंचतराइयाण को बंधो को
अवंधो ? ॥ २२८ ॥

सयममागणानुसार सयत जीवोंमें मन पर्ययज्ञानियोंके समान प्ररूपणा है ॥ २२५॥

मिस प्रकार मन-पर्ययज्ञानमागणामें प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार यहा करना
चाहिये । विशेष इतना है कि प्रत्ययादिके भेदको जानकर कहना चाहिये । यहा विशेषता
बतलानेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २२६॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतसे लेकर सयोगकेतली तक बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम
समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २२७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सामायिक-छेपेपस्थापनशुद्धिसयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय, सातावेदनीय, सज्वलनलोभ,
मशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अतराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ?
॥ २२८ ॥

सुगम ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्ठिउवसमा खवा बंधा । एदे
बंधा, अवंधा णत्थि ॥ २२९ ॥

एदासिं पयडीणमेत्थ वधोदयवोच्छेदाभावादो ' उदयादो किं पुव्व पच्छा वा वधो
वोच्छिण्णो ' ति विचारो णत्थि । पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-जसक्ति-उच्चागोद-
पचतराइयाण सोदओ वधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । सादावेदणीय-लोभसजलणाणं सोदय परोदओ,
अधुवोदयत्तादो । सादावेदणीय जसक्तिीण पमत्तमजदम्मि सातरो वधो, पडिवक्खपयडि-
वधुवलमादो । उवरि गिरतरो, तदभावादो । सेसाण पयडीण वधो सव्वत्थ गिरतरो, अप्पिद-
सजदेसु वधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओधपच्चएहिंतो विसेसामावादो । एदासिं सव्व-
पयडीण पमत्तमजदप्पहुडि जाव अपुव्वरुणद्धाए छमत्तभागो ति वधो देवगइसजुत्तो । उवरि
अगइसजुत्तो, तत्थ गईण वधाभावादो । मणुसां सामी, अण्णत्थ सजदामावादो । वधद्धाण

यह स्रग् सुगम है ।

प्रमत्तसयतसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमन व क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,
अपन्धक नहीं हैं ॥ २२९ ॥

यहा इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयका ध्युच्छेद न होनेसे ' उदयसे क्या पूर्वमें
या पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है ' यह विचार नहीं है । पाच ज्ञानावरणीय, चार
दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका स्योदय बन्ध होता है,
क्योंकि, यहा इनका ध्रुव उदय है । सातावेदनीय और सज्जलनलोभका स्योदय परोदय
बन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुवोदयी प्रकृतिया हैं । सातावेदनीय और यशकीर्तिका
प्रमत्तसयत गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका
बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका
अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र निरन्तर है, क्योंकि, विवक्षित सयतोंमें इनके
बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओधप्रत्ययोंसे यहा कोई भेद नहीं
है । इन सय प्रकृतियोंका बन्ध प्रमत्तसयतसे लेकर अपूर्वकरणकालके छह सन्तम भाग
तक देवगतिसे सयुक्त होता है । ऊपर अगतिसयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ
गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें सयतोंका अभाव है ।

‘ति बंधद्वान्’ । ‘अपुव्वकरणद्वाए’ सत्तमभागचरिमसमए’ बंधो ‘वोच्छिज्जदि । कथमेदं णव्वदे ? सुत्ताविरुद्धाहरियवयणादो । तिविहो’ बंधो, धुवाभावादो ।

‘एव चेव पुरिसवेदस्स वत्तव्व’ । ‘णवरि अद्धानमणियट्ठिअद्वाए सखेज्जा भागा ति वत्तव्व’ । देवगइ-अंगइसज्जुतो । दुविहो बंधो, अद्दुव्वबधित्तादो ।

क्रोधसंजलणस्स लोभसजलणमगो । णवरि अद्धानमणियट्ठिअद्वाए सखेज्जा भागा ति । एव माण-मार्यासजलणाण पि वत्तव्व । णवरि क्रोधबन्धवोच्छिण्णवरिमद्वाए सखेज्जाभागे गतूण माणमधद्वाण समप्पदि’ । सेसद्वाए सखेज्जे भागे गतूण मायवधद्वाण समप्पदि’ ति वत्तव्व ।

‘हस्स रदि-भय दुग्गुछाण-बधोदया सम वोच्छिण्णा, अपुव्वकरणद्वाए चरिमसमए तदभावदसणादो । बंधो सोदय परोदयो, अद्दुव्वोदयत्तादो । हस्स रदीण बंधो पमत्तम्भि सातरो ।

करणकालके सत्तम भागके अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है ।

शुका— यह कैसे जाना जाता है ?

‘समाधान—सूत्रसे अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे यह जाना-जाता है ।

‘उनका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है ।

‘इसी प्रकार ही पुण्यवेदके भी कहना चाहिये । विशेषता यह है कि बन्धाध्यान अनिवृत्तिकरणकालका सख्यात बहुभाग है, ऐसा कहना चाहिये । देवगतिसयुक्त और अंगतिसयुक्त बन्ध होता है । दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवबन्धी है ।

‘सज्जलनक्रोधकी प्ररूपणा सज्जलनलोभके समान है । विशेष इतना है कि बन्धाध्यान अनिवृत्तिकरणकालका सख्यात बहुभाग है । इसी प्रकार सज्जलन मान और मायके भी कहना चाहिये । विशेषता यह है कि सज्जलनक्रोधके बन्धके व्युच्छिन्न होनेके उपरिम कालका सख्यात बहुभाग धिताकर मानबन्धाध्यान समाप्त होता है । शेष कालके सख्यात बहुभाग जाकर मायाबन्धाध्यान समाप्त होता है, ऐसा कहना चाहिये ।

‘हास्य, रति, भय और दुग्गुत्साका बन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके अन्तिम समयमें उनका अभाव देखा जाता है । बन्ध उनका स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, वे अधुवोदयी प्रकृतिया हैं । हास्य और रतिका बन्ध प्रमत्त

उवरि गिरतरो, पडिवक्खपयडिउपायादो । मय-दुगुळाण सव्वत्थ गिरंतरो, धुववधित्तदो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो निसैसामायादो । देवगइसजुत्तो अमइसजुत्तो पि, अपुञ्ज-करणद्वाए चरिमसत्तमभागे गईए वगामायादो । मणुमा मामी । पमतसजदप्पहुडि जाव अपुञ्ज-करणो ति वधद्वाण । अपुञ्जकरणचरिमसमए वधो गोच्छिज्जदि । मय-दुगुळाण तिविहो वधो, धुववधित्तदो । सैसाण सादि अद्धो, तं नरीयनघादो ।

देवाउअस्स पुग्गावरकालेसु वधोदयगोच्छेदपरिकरता णत्थि, उदयामायादो । परोदओ वधो, सामावियादो । गिरतरो, अनेमुहुत्तेण विणा धधुरमायादो । पच्चया सुगमा । देवगइसजुत्तो । मणुसा चेव सामी । पमत अपमत्तमज्जा वधद्वाण । अपमत्तद्वाए सत्तेज्जदिम भाग गतूण वधो वाटिज्जदि । सादि अद्धो वधो, अद्धवगधित्तदो ।

सपहि देवगइसहगयण सत्तागोमपयडीण भण्णमाणे पुग्गावरकालेसु वधोअवोच्छेद-परिखा जाणिय कायना । देवगइ वेउवियदुगाण वधो परोदएण, सामावियादो । समचउ-रममडाण-पसयविहायगइ-सुम्मराण मोदय परोदओ, मज्जेसु पडिवक्खपयडीण पि उदय-

सयत गुणस्थानमें स्नान होना है । ऊपर निरन्तर बंध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बाधका अभाव है । मय और जुगुप्साका सर्वत्र निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे धुववधी हैं । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघमन्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । देवगतिमयुक्त और अगतिमयुक्त भी बन्ध होता है, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके अन्तिम क्षणमें गतिके बाधका अभाव हो जाता है । मनुष्य स्वामी है । प्रमत्तसयतसे लेकर अपूर्वकरण तक व धाध्यान है । अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें बाध व्युच्छिन्न होता है । मय और जुगुप्साका तीन प्रकारका बाध होता है, क्योंकि, वे धुवव धा ह । शेष प्रकृतियोंका सावि व अधुव बन्ध होता है क्योंकि, वे उनसे विपरीत (अधुव) बाधवाली हैं ।

देवायुके पूर्वापर कालमाधी बाध उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहा उसका उदयमात्र है । परादय बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, अतमुद्गर्भके विना उसके बाधविधायका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । देवगतिसयुक्त बाध होता है । मनुष्य ही स्वामी हैं । प्रमत्त और अप्रमत्त सयत बाधाध्यान हैं । अप्रमत्तकालके सयतातवे भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अधुव बाध होता है, क्योंकि, यह अधुववधी है ।

यह देवगतिके साथ रहनेवाली [परभाविक नामकर्मकी] सत्ताईस प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते समय पूर्वापर कालोंमें बाध व उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा जानकर करना चाहिये । देवगतिद्विक और वैकृतिकद्विकका बाध परोदयसे भाति और सुसरका स्वोदयपरोदय बन्ध होता है, क्योंकि, सयतोंमें इनकी

सुगम ।

पमत्तसंजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ २३४ ॥

असादोदनीय अरदि-मोगाणमेत्थ वधोच्छेदो चेत्त, उदयोच्छेदो णत्थि, उवरो
तदुदयवोच्छेदुत्तमादो । अथि अमुमाण पि एत्त चेत्त उत्तत्त, पमत्त सजोगीसु योदय
योच्छेददसणादो । अत्तसक्तीए पुत्तमुदओ पत्त वधो वोच्छिज्जदि, पमत्तासजदसम्मादिडीसु
वधोदयोच्छेददसणादो । अथि अमुहाण सोदओ, अजमक्तीए परोदओ, सेसाण नधो
सोदय-परोदओ । सात्तं वधो, एदामिमेगसमण वि उत्तुत्तमदसणादो । इत्थि-णत्तुसमोदाहार
दुगदिरहिदोषपत्तया एत्थ वत्तत्ता । देवगड [-सजुत्तो] नधो । मणुसा सामी । वधद्धान णत्थि,
एगगुणद्धानिहि' तदसम्भावो । पमत्तमत्तदचरिमसमए यो वोच्छिज्जति । सादि-अद्दुत्तो वधो,
अद्दुत्तवधित्तादो ।

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ २३५ ॥

यह सज सुगम है ।

प्रमत्तसयत्त वधक है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २३४ ॥

असादोदनीय, अरति और शोकका यहा वन्धव्युच्छेद ही है उदय-व्युच्छेद नहीं
है, क्योंकि ऊपर उनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है । अस्तिर और अशुभके भी इसी प्रकार
कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त वा स्वयोगके जलो गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके वन्ध और
उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । अपशानीतिरका पूर्वमें उदय और पश्चात् वन्ध व्युच्छिन्न
होता है क्योंकि, प्रमत्त और असयत्तसम्यग्दृष्टिगुणस्थानोंमें क्रमशः उसके वन्ध और उदयका
व्युच्छेद देखा जाता है । अस्तिर और अशुभका व्योदय, अपशानीतिरका परोदय, तथा शेष
प्रवृत्तियोंका उध स्वोदय परोदय होता है । सात्तर वन्ध होता है, क्योंकि, इन प्रवृत्तियोंका
एक समयसे भी उध-प्रश्राम देखा जाता है । स्त्रीरत्न, नपुमवन्दे और आहारकादिकसे
रहित यहा औघप्रत्यय कहना चाहिये । देवगडिसयुक्त वन्ध होता है । मुख्य स्थाना है ।
गुणस्थानके अन्तिम समयमें वन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि उ आधुय वन्ध होता है,
क्योंकि, ये आधुयवधी प्रवृत्तियां हैं ।

देवासुका कौन वचक और कौन अवन्धक है ? ॥ २३५ ॥

१ प्रवृत्ति 'गुणद्धानिहि' इति पाठ ।

सुगम ।

पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा वंधा । अप्पमत्तसजदद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥२३६॥

उदयादो बंधो पुत्र पच्छ वा वोच्छिण्णो त्ति त्रिचरो णत्थि, सजदेसु देवाउअस्स उदयाभावादो । परोदओ बंधो, बंधोदयाणमन्कमवुत्तिविरोहादो । णिरतरो, अतोमुहुत्तेण विणा पधुरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंते विसेसामानादो । णवरि आहारदुगित्थि-णवुसयदेदपच्चया णत्थि । देवगइसजुत्तो, मणुमा सामीओ, अजगयनधद्धाणो, अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण वोच्छिण्णबंधो । सादि अद्दुवो ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवगणामाणं को बंधो को अवंधो ?

॥ २३७ ॥

सुगम ।

अप्पमत्तसंजदा वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥२३८॥

यह स्रज सुगम है ।

अप्रमत्तसयत और अप्रमत्तमयत बन्धक हैं । अप्रमत्तसयतकालका सख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २३६ ॥

उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, मयत जीवोंमें देवायुके उदयका अभाव है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उसके पक्ष और उदयके पक्ष साथ रहनेका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, अतर्मुहूर्तके बिना उसके बन्धप्रश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । विशेष इतना है कि आहारफट्टिक, खंवेद और नपुंसकचेद प्रत्यय नहीं हैं । देवगति संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी हैं । बन्धाघ्यान सूत्रसे जाना जाता है । अप्रमत्तकालके सख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि घ अघुघ बन्ध होता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोपाग नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २३७ ॥

यह स्रज सुगम है ।

अप्रमत्तसयत बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २३८ ॥

एदासिं देवाउभयो । नपरि ववद्वाण नन्धि, एकमहि गुणद्वारे अद्वाणासमरादो ।
यधोच्छेदो नन्धि, उवर्णि पि उधुवल्मादो ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसज्जदेसु पंचणाणावरणीय च उदंसणावरणीय
सादावेदणीय-जसकिति उच्चागोद पंचतराइयाण को वधो को अवधो ?
॥ २३९ ॥

सुगम ।

सुहुमसांपराइयउवसमा खवा वधा । एदे वधा, अवधा
नन्धि ॥ २४० ॥

एदासिं यधोदयवोच्छेदाभावादो उदयादो यधो पुनः पञ्च वा वौच्छिणो
ति न परिक्रमा कीर्त्तये । सात्तावेदणीयस्म यधो सोदय परोदयो अनुदए नि यधपरोदो
भावादो । निरतरा सचपयटीण यधो, एतत् गुणद्वारेसु यधुवल्माभावादो । न एगसमयमच्छिप
सुदसुहुमसांपराइहि विविदिचारो, सुहुमसांपराइयगुणद्वारेणमि ति त्रिसेमणादो । ओरालिय

इन दोनों प्रकृतियोंकी प्ररूपणा वचागुन समान है । विशेष इतना है कि यन्ध्याप्यान
नहीं है, क्योंकि, पञ्च गुणस्थानमें अज्ञानकी सम्भावना नहीं है । यन्ध-पुच्छेद नहीं है,
क्योंकि, ऊपर भी यन्ध पाया जाता है ।

सूक्ष्मसांपरायिकसुद्धिमयतैमि पाच जानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सात्तावेदनीय,
यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अंतराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ?
॥ २३९ ॥

यह मूल सुगम है ।

सूक्ष्मसांपरायिक उपशमक और क्षपक यन्धक है । ये यन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं
॥ २४० ॥

इन प्रकृतियोंके यन्ध व उदयके व्युत्पत्तिको जमान होनेसे उदयसे यन्ध पूर्वमें
व्युत्पत्ति होता है या पश्चात्, यह परीक्षा यहां नहीं की जाती है । सात्तावेदनीयका यन्ध
सोदय-परोदय होता है, क्योंकि, उदयसे न होनेपर भी उसके यन्धमें कोई विरोध नहीं
है । इन सब प्रकृतियोंका निरन्तर उदय होता है, क्योंकि, इस गुणस्थानमें यन्धविधामका
अभाव है । ऐसा माननेपर एक समय रहकर मृत्युको प्राप्त हुए सूक्ष्मसांपरायिक सयत्तोंसे
व्यभिचार होगा, यह भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, 'सूक्ष्मसांपरायिक गुणस्थानमें'
येसा निरोध दिया गया है । आदितिक फायमाण, लाम कपाय, चार मनोयोग और चार

कायजोग-लोभकसाय चदुमण-वचिजोगा त्ति दम पच्चया । अगइसलुत्तो बंधो, एत्थ चउगड-
व न्नाभायादो । मणुमा सामी, अण्णत्थ सुहुममापराडयाणमभावादो । वधद्वान्णत्थि, सुहुम-
मापरायण्णहुडि त्ति सुत्ते अणुपदिट्ठत्तादो । वधोयेच्छेदो णत्थि, 'अवंधा णत्थि' त्ति वयणादो ।
पचणाणावरणीय-चउदसणानरणीय-पचतराडयाण तिनिहो बधो, धुवाभावादो । सेसाण
सादि अद्दुवो ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु सादावेदणीयस्स को वंधो को
अवधो ? ॥ २४१ ॥

सुगम ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था स्त्रीणकसायवीयरायछदुमत्था
सजोगिकेवली वंधा । सजोगिकेवल्लिअद्वाए चरिमसममं गत्तूण
[वंधो] वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २४२ ॥

सुगममेद, केवलणाणमग्गणापरूजणाए समाणत्तादो ।

यच्चनयोग, ये दश प्रत्यय हैं । गतिसयोगसे रहित बन्ध होता है, क्योंकि, यहा चारों गतियोंके
बन्धका अभाव है । मनुष्य सामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें सुद्धमसांपरायिक स्वयत्तोंका
अभाव है । बन्धाधान नहीं है, क्योंकि, 'सुद्धमसांपरायिक आदि' ऐसा सूत्रमें निर्देश
नहीं किया गया है । बन्धयुच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अवधक नहीं है' ऐसा सूत्रका
वचन है । पांच ज्ञानावरणीय, चार दशनावरणीय और पांच अन्तराय, इनका
तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके धुन बन्धका अभाव है । शेष प्रवृत्तियोंका सादि
व अधुन बन्ध होता है ।

यथाख्यातविहारशुद्धिसयत्तेमें सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अवबन्धक है ?
॥ २४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपशान्तरूपाय वीतराग छद्मस्थ, क्षीणरूपाय वीतराग छद्मस्थ और सयोगकेवली
बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर [नन्] व्युच्छिन्न होता है । ये
बन्धक हैं, शेष अवबन्धक हैं ॥ २४२ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, केवलज्ञानमार्गणाकी प्ररूपणासे इसकी समानता है ।

संजदासजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-
अट्टकसाय पुरिसवेद-हस्स रदि सोग-भय द्रुगुछ-देवाउ देवगह-पंचिंदिय-
जादि-वेउविय तेजा कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वेउवियसरीर-
अगोवग वण्ण गध रस-फास देवगहपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उव-
घाद परघाद-उस्सास-पसत्थनिहायगइ-त्तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-
थिराथिर-सुहासुह सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-
णिमिण तित्थयरुच्चागोद पचंतराइयाण को वधो को अवधो ?
॥ २४३ ॥

सुगम ।

सजदासजदा वंधा । एदे वंधा, अवधा णत्थि ॥ २४४ ॥

उदयादो पुच्च पच्छा वा पओ वोच्छिण्णो ति णत्थि विचारो णत्थि, षडवोच्छेदा-
भारादो । पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय पंचिंदियत्ति तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क
अगुरुअलहुअचउक्क-थिराथिर सुहासुह सुभगादेज्ज जसकित्ति णिमिण-पचतराइयाण सोदओ

सयतासयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, आठ
कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, शोक, भय, जुगुप्सा, देवासु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति,
वैकियिक, तैजस व कामेण शरीर, समचतुरससस्थान, वैकियिकशरीरागोपाय, वर्ण, गन्ध,
रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति,
नस, घादर, पर्याप्त, प्रयेकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, अदिय,
यशक्रीति, अयशक्रीति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोन और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक
और कौन अवन्धक है ? ॥ २४३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सयतासयत षडधरु हैं । ये नन्धरु हैं, अवधक नहीं हैं ॥ २४४ ॥

इन षट्पत्तियों का वच उदयमे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होना है, यह विचार यहां
नहीं है, क्योंकि, उनके वच व्युच्छेदका अभाव है । पाच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण,
चिन्द्रिय जाति, तैजस व कामेण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु आदिक चार, स्थिर,
स्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आत्मेय, यशार्कति, निर्माण और पाच अन्तरायका स्वोदय

वधो, एत्थ धुवोदयचुवलमादो । देवाउ देवगइ-वेउच्चियसरीर-अगोवग देवगइपाओग्माणुपुत्री-
अजसकित्ति-तित्थयराण परोदओ चओ, वधोदयाणमण्णोण्णिरोहादो । णिदा-पयला-सादासाद-
अट्ठकसाय-पुरिसवेद हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुआ-समचउरससठाण-पसत्थविहायगइ-
सुस्सरुच्चागोदाण वधा सोदय परोदओ, उहयहा नि ववविरोहामानादो ।

पचणाणारणीय छदमणारणीय-अट्ठकमाय पुरिसवेद भय दुगुआ-देवाउ-देवगइ-पच्चि-
दियजादि-वेउच्चिय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण वेउच्चियसरीर-अगोवग वण्णवउम्क-
देवगइपाओग्माणुपुत्री-अगुरुलहुवचउम्क-पसत्थविहायगइ-तमचउक्क सुभग-सुस्सरादेज्ज-
णिमिण तित्थयसुच्चागोद-पचतरायाण नओ णिरतरो, एगममएण वधुरमाभावादो । सादासाद-
हस्स रदि-अरदि सोग थिरायिर-सुहासुह असकित्ति-अजसकित्तीण वधो सातरो, एगसमएण वधु-
वरमदमणादो । पच्चया सुगमा, ओवाणुव्वइप्पच्चएहिंतो भेदामावादो । सन्नासि पयडीण देवगइ-
सल्लसो वधो, अण्णगईण वनाभावादो । दुगइदेसव्वडणो सामी, अण्णत्थ तेमिमभावादो ।
वधडाण णत्थि, एक्कगुणट्ठाणे तदसभणादो । अधवा अत्थि, पज्जवट्ठियणयावलण्णादो ।

वन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनका स्रज उदय पाया जाता है । देवायु, देवगति, वैकल्पिक
शरीर व वैकल्पिकशरीरानुपाग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अयशकीर्ति और तीर्थकरका
परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, इनके वन्ध और उदयका परस्परमें विरोध है । निद्रा, प्रचला,
साता न असाता धेदनीय आठ कपाय, पुरपवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा,
समचतुरस्रस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुस्सर और उच्चगोत्रका वन्ध स्रोदय परोदय
होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके वन्धका विरोध नहीं है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कपाय, पुरपवेद, भय, जुगुप्सा,
देवायु, देवगति पचेन्द्रिय जाति, वैकल्पिक, तज्जस व कामेण शरीर, समचतुरस्रस्थान,
वैकल्पिकशरीरानुपाग, वर्णादिक चार, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु आविक चार,
प्रशस्तविहायोगति, प्रसादिक चार सुभग, सुस्सर, आदेय, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र
और पाच अन्तराय, इनका वन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके
वधविश्रामका अभाव है । साता व असाता जेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर,
अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति आर अयशकीर्तिका वन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक
समयसे उनका वन्धविश्राम देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, सामान्य अनुव्रतीके
प्रत्ययोंसे कोइ भेद नहीं है । सत्र प्रवृत्तियाना देवगतिसयुक्त वन्ध होता है, क्योंकि, अन्य
गतियोंके वन्धका चहा अभाव है । दो गतियोंके देशव्रती स्वामी ह, क्योंकि, अन्य
गतियोंमें उनका अभाव है । वन्धाध्यान नहीं ह, क्योंकि, एक गुणस्थानमें उसकी
सम्भावना नहीं है । अथवा पर्यायादिक नयका अलम्बन करके वन्धाध्यान है ।

धधयोच्छेने णत्थि, 'अयथा णत्थि' ति वयणादो । धुनन्धीण ति विहो धधो, धुवाभावाद्गो ।
मेसाण सादि अद्दुवो, अद्दुवन्धीत्तादो ।

अमजदेसु पचणाणावरणीय छदंसणावरणीय सादासादन्वारस
कसाय पुग्मिपेद-हस्स रदि-अरदि सोग भय दुगुंछा मणुसगइ-देवगइ-
पचिदियजादि ओरालिय-वेउब्बिय-तेजा कम्मइयमरीर-समचउरस-
सठाण ओरालिय वेउब्बियअगोवग-वज्जरिसहसघडण वण्ण-गंध रस-
फास मणुसगइ देवगइपाओग्गाणुपुब्बी अगुरुअलहुअ-उपघाद परघाद-
उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहा-
सुह-सुभग सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-
पचतराइयाण को वधो को अवधो ? ॥ २४५ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठिप्पहुडि जाय असजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,
अवधा णत्थि ॥ २४६ ॥

यन्ध पुच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अन्धक नहीं है' एसा सूत्रमें कहा गया है । धुवन्धी
मरुतिपाका सौम प्रहारका ध ध होता है, क्योंकि, उनके धुव धन्धका अभाव है । शेष
महत्त्वोत्तरा सादि व अमज यन्ध होता है, क्योंकि, वे अमज यन्धी हैं ।

असमतोम पाच ज्ञानावरणीय, उह दर्शनावरणीय, साता व असाता चेदनीय, धारह
कपाय, पुरुषपेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय
जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैत्तस व कामण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, औदारिक व
वैक्रियिक अगोपाग, उज्जपेममहनन, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी,
अगुरुलु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, उस, वादर, पर्याप्त, पत्येकशरि
स्त्रिर, अस्त्रिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगो-
और पाच अतराय, इनका सौम वधक और कौन अन्धक है ? ॥ २४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्याद्यष्टिरे लेकर अमयतसम्यग्दृष्टि तक अन्धक हैं । ये धन्धक हैं, अन्धन्धक न
हैं ॥ २४६ ॥

एत्योदइल्लाण वधोदययोच्छेदामात्रादो उदयादो वधो किं पुन्र पच्छा वा वोच्छिण्णो
ति विचारो णत्थि । पचणाणारणीय चउदसणाणरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउत्त-
अगुरुअलहुअ-धिरायिर-सुहासुह-णिमिण पचतराडयाण सोदओ उधो, उयोदयत्तादो । देवगइ-
वेउच्चियसरीर-वेउच्चियसरीरअगोवग-देवगइपाओग्माणुपुच्चीण पगेदओ वधो, वधोदयाण परो-
प्परविरोहादो । णिहा-पयला-सादामाद-चारसरुमाय पुरिसवेद-हस्म रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुछा-
समचउरससठाण पसरथनिहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाण
वधो सोदय-परोदओ उहयहा नि उधुवलमादो । मणुसगइ-मणुमगइपाओग्माणुपुच्ची-ओरालिय-
सरीर-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसघडणाण मिच्छादिट्ठि मामणमम्मादिट्ठीसु सोदय-परो-
दओ, उहयहा वि धुवलमादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, सोदएण सग-
घसस तत्थ निरोहदमणादो । पचिंदियजादि-तस-यादर पज्जत्ताण मिच्छादिट्ठीसु सोदय-परोदओ ।
उपरि सोदओ चेव, विगलिंदिय-थार-सुहुमापज्जत्तएसु सासणादीणमभानादो । उवघाद-
परघाद उस्सुस-पत्तेयसरीराण मिच्छादिट्ठि-सामणसम्मादिट्ठि असजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-

यहा उदय युक्त प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव होनेसे उदयकी
अपेक्षा बन्ध क्या पूर्वमें और या पश्चात् शुचिष्ठ होता है, यह विचार नहीं है । पाच
ज्ञानारणीय, चार दर्शनारणीय, तैजस घ फर्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु,
स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है,
क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतिया हैं । देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरागोपाग और
देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके रन्ध और उदयके परस्पर
विरोध है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, वारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति,
अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रज्ञास्त्रनिहायोगति, सुभग, सुस्वर,
आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका बन्ध न्योदय परोदय होता है, क्योंकि,
दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी,
औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और उज्जर्मसहसनका मिथ्याहाष्टि और
सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उहा दोनों प्रकारसे
भी इनका बन्ध पाया जाता है । सम्यग्मिथ्याहाष्टि और असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें
परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपने उदयके साथ अपने बन्धका वहा विरोध देखा जाता है ।
पचेन्द्रिय जाति, व्रस, नादर और पर्याप्तका बन्ध मिथ्याहाष्टियोंमें स्वोदय परोदय होता है ।
ऊपर इनका स्वोदय ही रन्ध होता है, क्योंकि, विकलेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तका
सासादनादिक गुणस्थानोंका अभाव है । उपघात, परघात, उच्छ्वाम और प्रत्येकशरीरका
मिथ्याहाष्टि, सासादनसम्यग्दष्टि और असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय

देव-गेरइएसु गिरतरबधुनलमादो । उरि गिरतरो, गिण्डिवस्त्रनधादो ।

पञ्चया सुगमा, ओषधपञ्चर्हितो निसेसामानादो । पञ्चणानानरणीय छदमणानरणीय-
असादावेरणीय-वारमरुसाय अरदि सोग-भय दुगुछ-परिचिदियजादि-तेजा कम्मइयसीर-वण्ण-
गध-रस-काम-अगुरुल्लुअ-उपधाद परधाद-उस्सास-तस नादर पञ्चत पत्तेयसीर-अथिर-असुइ-
अजसकित्ति गिमिण-पचतरइयाण मिच्छादिट्ठिहि चउगइमजुत्तो । सामणे गिरयगईए विणा
निगइसजुत्तो । सम्मामिच्छादिट्ठि असनदसम्मादिट्ठीसु देव मणुमगइसजुत्तो । सादावेदणीय
पुरिसेइ-हस्म-रदि-समचउरससडाण पमत्थविद्यायगइ थिर सुम-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जस-
कित्तीण मिच्छादिट्ठि सामणसम्मादिट्ठीसु वधो तिगइसजुत्तो, गिरयगईए अभावादो । सम्मा
मिच्छादिट्ठि-असजदमम्मादिट्ठीसु दुगइसजुत्तो, गिरय गिरिस्वर्गइणममानादो । ओरालियसीर-
ओरालियसीरगोण वज्जरिमहमघडाण मिच्छादिट्ठि सामणसम्मादिट्ठीसु वधो गिरिस्व
मणुसगइमजुत्तो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असनदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसजुत्तो । मणुसगइ मणुस
गइपाओग्गाणुपुन्नीण मणुसगइमजुत्तो । देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुन्नीण देवगइमजुत्तो ।

निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ बंध प्रतिपक्ष महतिर्योक्त बन्धसे रहित है ।

प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओषधप्रत्ययोंसे यहाँ कोई विशेषता नहीं है । पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असादा वेदनीय, बारह कषाय, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय ज्ञानि, तेजस व कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्लु, उपधात, परधात, उच्छ्वास, व्रम, धादर, पर्याप्त, प्रयेस्शरीर, अस्थिर, अशुभ, अयशाकीर्ति, निम्माण और पाच अतस्समना बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानोंमें चारों गनियोंसे संयुक्त, सासादन गुणस्थानोंमें नरकगतिसे त्रिना तीन गनियोंसे संयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है । सादावेदनीय, पुद्गलवेद, हास्य, रति, समचतुरस्रसस्थान प्रशान्तिहायोपगति, स्थिर, शुभे, सुभग, सुस्सर, आदेय और यशार्तिरक्षा बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गनियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनसे साथ नरकगतिसे बन्धना अभाव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गनियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ नरकगति और नियमगति अभाव है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और यज्ञप्रभसहननका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । मनुष्यगति संयुक्त बन्ध क्षान्त है । देवगति और

वेउव्वियसरीर वेउव्वियसरीरअगोवगाण मिच्छाद्विहीसु दुग्गइसजुत्तो, तिरिक्ख मणुसगईण-
मभावादो । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठिसु देग्गइसजुत्तो । उच्चा-
गोदस्स देव-मणुसगइसजुत्तो, अण्णत्थ तस्सुदयामाणादो ।

चउगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि असजदसम्मादिट्ठि सामी ।
बधद्धान सुगम । बधवोच्छेदो णत्थि, 'अबधा णत्थि' ति वयणादो । धुवन्नधीण मिच्छा-
द्विहीसु चउव्विहो बधो । सासणादीसु तिविहो, धुवन्नधाभावादो । असेसाण सादि-अद्धवो,
अद्धन्नधित्तादो ।

वेट्ठाणी ओघं ॥ २४७ ॥

वेट्ठाणपयडीण जघा मूलोघम्मि परूवणा कदा तथा कायव्वा, विसेसामापादो ।

एक्कट्ठाणी ओघं ॥ २४८ ॥

सुगममेद ।

मणुस्साउ-देवाउआणं को वंधो को अंधो ? ॥ २४९ ॥

देवगतिले सयुक्त होता है । वैकल्पिकशरीर और वैकल्पिकशरीरागोपागका बन्ध मिथ्या-
दृष्टियोंमें दो गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, उनके साथ तिर्यग्गति और मनुष्यगतिके
बन्धका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुण-
स्थानोंमें देवगतिले सयुक्त उनका बन्ध होता है । उच्छ्वगोनका बन्ध देवगति और मनुष्य
गतिले सयुक्त होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उसके उदयका अभाव है ।

चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत-
सम्यग्दृष्टि स्वामी है । उन्धाध्यान सुगम है । बन्धमुच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं
है' ऐसा सूत्रमें कहा गया है । धुवन्नधी प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका
होता है । सासादनद्विकोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उहा धुवन्नधका अभाव
है । दोष प्रकृतियोंका बन्ध सादि घ अघ्रव होता है, क्योंकि, वे अघ्रवन्नधी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २४७ ॥

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा जैसे मूलोघमें की गई है उसी प्रकार करना
चाहिये, क्योंकि, मूलोघसे यहा कोई विशेषता नहीं है ।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २४८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्यायु और देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २४९ ॥

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय णीललेस्सिय काउलेस्सियाण-
ममजदभंगो ॥ २५८ ॥

किण्हलेस्साए ताव उच्चदे — पचणाणावरणीय छदमणावरणीय-मादासाद-चारस
कमाय पुरिसवेद-हस्स रदि-अरदि-सोग भय दुगुळा मणुसगइ देवगइ-पचिंदियजादि-ओरालिय-
वेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण ओरालिय-वेउव्वियसरीरगोवग-वज्जरिसहमघडण-
घण्णचउक्क मणुसगइ देवगइपाओग्माणुपुव्वी अगुरुअहुअचउक्क पसत्थविहायगइ तमचउक्क-
थिराथिग-सुहासुह सुभग सुस्सर आदेज्ज जसकिति-अजसकिति-णिमिणुच्चागोद-पचतराइयाणि
किण्हलेस्सियचउगुणह्वाणजीवेहि उच्चमाणाणि । तत्थुदयादो बघो पुत्र पच्छा वा वोच्छिण्णो
ति परिस्साए असजदभंगो ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर वणचउक्क-अगुरुअहुअ थिरा-
थिर-सुहासुह णिमिण पचतराइयाण बघो सोदओ, धुरोदयत्तादो । देवगइदुग-वेउव्वियदुगाण
परोदओ, बघोदयाण समाणकालउत्तिविरोहादो । णिहा पयला साशसाद चारसकमाय-पुरिसवेद-

लेइयामार्गणानुसार कृष्णलेइयागले, नीललेइयावाले और कापोतलेइयावाले जीवोंकी
प्ररूपणा अस्यतोके समान है ॥ २५८ ॥

पहले कृष्णलेइयाके आश्रित प्ररूपणा करते हैं— पाच ज्ञानावरणीय, छह
दर्शनावरणीय, सात्ता व असात्ता वेदनीय, बारह कयाय, पुरयवेद, हास्य, रति,
अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय जाति, ओदारिक,
वैक्रियिक, तेजस व कामण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, औदारिक और वैक्रियिक
शरीरागोषाण, वज्रपर्मसहनन, वर्णादिक चार, मनुष्यगति और देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी,
अगुरुअहु आदि चार, प्रशस्तविहायोगति, प्रसादिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,
सुभग, सुरगर, आदेय, यशकीति, अयशकीति, निर्माण, उच्चमोघ और पाच अतराय, ये
प्रवृत्तिया कृष्णलेइयावाले चार गुणस्थानवर्ती जीवों द्वारा ग्रह्यमान हैं । उनमें 'उदयसे ग्रन्थ
पूर्वमें व्युत्पिन्न होता है या पश्चात्' इत्य प्रकारकी परीक्षा यहां अस्यत जीवोंके समान है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तेजस व कामण शरीर, वर्णादिक चार,
अगुरुअहु स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अतरायका ग्रन्थ स्वेदय
होता है, क्योंकि, वे धुरोदयी हैं । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकता परोक्ष ग्रन्थ होता
है, क्योंकि, इनके ग्रन्थ और उदयके समान कालमें रहनेका विरोध है । निद्रा, प्रचला,
सात्ता व असात्ता वेदनीय, बारह कयाय, पुरयवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय,

हृत्स्-रदि-अरदि-सोग भय-दुगुछा-समचउरससठाण-पसत्यविहायगइ-सुभग-सुस्तर-आदेज-जस-
किति-अजसकिति-उच्चागोदाण सोदय-परोदओ, उभयहा वि बधुवलभादो । मणुसगइदुगोरा-
लियदुग वज्जरिसहसंघडणाण मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय परोदओ, उभयहा वि
बधुवलभादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, सोदयबधाणमेदसु गुणङ्गणेसु
अक्कमउत्तित्रोहादो । पचिंदियजादि तस-वादर-पज्जत्ताण मिच्छाइट्ठीसु सोदय-परोदओ,
एत्थ पडिबक्खपयडीण पि उदयसमवादो । उवरि सोदओ चेव, विगर्लंदिय-थावर-सुहुम-
अपज्जत्तएसु सासणादीणमभावादो । उवघाद-परघादुत्सास-पत्तेयसरीराण मिच्छादिट्ठि-सासण-
सम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ । असजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ, छट्ठपुढवीपच्छायदाण-
मपज्जत्तकाले असजदसम्मादिट्ठीण परोदएण वधसमवादो । सम्मामिच्छाइट्ठीसु सोदओ,
एदेसिमपज्जत्तदाभावादो ।

पचणाणारणीय-छदंसणावरणीय-वारसकसाय भय-दुगुछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-
चउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पचतराइयाण वधो णिरतरो, धुववधित्तादो । सादासाद-

जुगुप्सा, समचतुरस्रस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति,
अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी
इनका बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रपभसहननका
मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि,
यहां दोनों प्रकारसे भी बन्ध पाया जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि
गुणस्थानोंमें उनका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उन प्रकृतियोंके अपने
बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । पचेन्द्रिय जाति, जस, वादर और पर्याप्तका
मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका भी
उदय सम्भव है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, विकलेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म
और अपर्याप्तकोंमें सासादनादिक गुणस्थानोंका अभाव है । उपघात, परघात, उच्छ्वासा
और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय
बन्ध होता है । असत्यतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, छठी पृथिवीसे
पीछे आये हुए असत्यतसम्यग्दृष्टियोंके परोदयसे बन्ध सम्भव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें
स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्तताका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चारह कपाय, भय, जुगुप्सा, सैजस व
कर्मण शरीर, घर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तरायका बन्ध
निरन्तर होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति,

हस्त रदि अरदि सौग यिराविर-मुहासुह जसंकिचि-अजसंकिचीण सांतरो, अद्भुतवधित्तोदो ।
 पुरिमवेद देवगइदुग-वेउविचयमरीर तेउविचयसरीरअगोनग समचउरमसठाण वज्जरिमहसघण-
 पसत्त्वनिहायगइ सुमग सुम्सग अदेज्जुच्चागोदाण मिच्छाडडि सामणसम्मादिट्ठीसु सातो ।
 उवरि गिरतरो, निष्पडिक्कमवादा । मणुमगइ-मणुमगइपाओग्गाणुपुत्रीण मिच्छाडडि-सासेण-
 सम्मादिट्ठीसु गिरतरो । कउ गिरतगे ? ण, आरणच्चुददेनाण मणुस्मेसुउपण्णाण सुक्कलेस्सा-
 निणासेण णिणहलेमाण परिणदाणमतोमुहुत्तकाल' गिरतरउपुत्तमादो । सुक्कलेस्माए' हिदा पम्म-
 तेउ-काउ गील्लेस्साओ योलिउ कधमापेण णिणहलेमापरिणदो होच ? ण, सुक्कलेस्मानो' कमेण
 काउ गील्लेस्मासु परिणमिय पच्चा णिणलेस्मापजाएण परिणमण' सुवगमादो । ण च मणुमगइ-
 वधगइ काउ गील्लेस्मासात्तादो बोरा, तत्तो तम्स बहुत्तुत्तमादो । अथवा' मज्झिमसुक्कलसिओ
 देवो जहा छिण्णाउओ होदण जहणसुक्कइणा अपारिणमिय असुहलिलेस्माए' गिरदि

शोक, स्थिर, अस्थिर शुभ, अशुभ यशसीति और अयशकीर्तिका सात्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे अष्टपञ्चमी हैं । पुरुषवेद, देवगतिद्विक, वैत्रियिकशरीर, वैत्रियिकशरीरानुपाग, समचतुरस्रस्थान यज्ञपत्रमहनन, प्रशस्तविद्यायोगति, सुभग, सुम्सर, आदेय और उन्चागनग मिथ्यादृष्टि और सासावनसम्यग्दृष्टियोंमें सात्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, जहां वह प्रातःपक्ष प्रतिघोरे बन्धसे रहित है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रत्येत्यानुपूर्वा मिथ्यादृष्टि और सासावनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है ।

शुक्रा—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि मनुष्योंमें उत्पन्न हुए आरण जन्तुसंघोंके शुक्ललेदयाके विनाशसे दृणलेदयामें परिणत होनेपर अतमुहूर्त काल तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

शुक्रा—शुक्ललेदयामें स्थित जीव पद्म, तेज कापोत और नील लेदयाओंको लापकर कैसे एक साथ दृणलेदयामें परिणत हो सक्ता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि शुक्ललेदयासे प्रमद कापोत और नील लेदयाओंमें परिणमन करके पीछे दृणलेदया पर्यायसे परिणमन स्वीकार किया गया है । और मनुष्यगतिउच्चकाल कापोत और नील लेदयाके फालसे थोड़ा नहीं है, क्योंकि, यह उममें घटून पाया जाता है । अथवा, मध्यम शुक्ललेदयावागी देव जिस प्रकार आयुके क्षीण होनेपर चथय शुक्ललेदयादिकसे परिणमन न करके अशुभ तीन लेदयाओंमें गिरता

* अथवा ' मने मुहुत्त काल ' इति पाठ । २ अथवा ' शुक्ललेदयाण ' इति पाठ ।

३ अथवा ' अनात्मावद् अद्भुतवधित्तमात्र ' इति पाठ ।

तदा सन्वे देवा मुदयन्त्यणेन^१ चेव अनियमेण असुहृतिलेस्मासु णिरदति ति गहिदे जुज्जेदे ।
अणे पुण आइरिया किण्णलेस्माए मज्जुमगइदुगस्स णिरतर वध णेच्छति, मणुसगदि-
वधगद्धाए काउलेस्मानधगद्धाउत्तन्धुगमादो । त पि कुदो ? मुददेणण सत्तेमि पि काउ-
लेस्माए चेव परिणामन्धुगमादो । उवरि णिरतरो । ओरालियमरीर-अगोणण मिच्छाडडि-
मासणसम्मादिट्ठीसु सातर णिरतरो । कुदो ? णेरइएसु णिरतरन्धुवलभाशे । उवरि णिरतरो,
पडिवन्त्यपयडिणभाभादो । पच्चिदियजादि परघादुस्मास तम-वादर पज्जत्त-पत्तेयसरीराण
मिच्छाडट्ठीसु सातर-णिरतरो, णेरइएसु णिरतरन्धुवलभादो । उवरि णिरतरो, पडिन्त्यपयडिण
वधामावादो ।

पच्चयाणमोधमगो । णरि असत्तदसम्माइडिपच्चएसु पेउव्वियमिस्सपच्चओ अवणेदच्चो ।
ओरालियदुग-मणुसगइ-मणुमगइपाओग्गणुपुव्वीण सम्मामिअडडिम्हि^२ ओरालियकायजोगित्थि-

है, उसी प्रकार सत्यदेव मरणक्षणमें ही नियम रहित अशुभ तीन लेख्याओंमें गिरते हैं,
ऐसा ग्रहण करनेपर उपर्युक्त कथन सगत होता है ।

अन्य जाचार्य कृष्णलेख्यामें मनुष्यगतिद्विकका निरन्तर ग्रन्थ नहीं मानते हैं,
क्योंकि, मनुष्यगति ग्रन्थकालसे कापेतलेख्याका ग्रन्थकाल बहुत स्वीकार किया
गया है ।

शका—वह भी कैसे ?

समाधान—क्योंकि, सब ही मृत देवोंका कापेतलेख्यामें ही परिणमन स्वीकार
किया गया है ।

ऊपर इनका निरन्तर ग्रन्थ होता है । ओदारिकशरीर और ओदारिकशरीरगोपागका
मिध्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि,
नारिक्योंमें उनका निरन्तर ग्रन्थ पाया जाता है । ऊपर निरन्तर न ब होता है क्योंकि, उहा
प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंसे ग्रन्थका अभाव है । पचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, व्रस, वादर,
पेयाप्त और प्रत्येकशरीरका मिध्यादृष्टियोंमें सान्तर निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि,
नारिक्योंमें उनका निरन्तर ग्रन्थ पाया जाता है । ऊपर निरन्तर न ब होता है, क्योंकि,
वहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके ग्रन्थका अभाव है ।

प्रत्ययोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि असत्य-
सम्यग्दृष्टिके प्रत्ययोंमें धर्मधिकमिश्न प्रत्ययको कम करना चाहिये । ओदारिकद्विक,
मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विके सम्यग्मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें ओदारिक-

^१ अत्र 'देवा मुदयन्त्यणेन', आ नाम यो 'देवाणमुदयन्त्यणेन' इति पाठ ।

^२ अत्र 'सम्मामिअडडिम्हि' इति पाठ ।

पुरिसवेदपञ्चएहि विणा चालीसपञ्चया । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुञ्जी-वेउवियसरीर-वेउ-
वियसरीरगोत्रगाण वेउविय वेउवियमिस्सपञ्चया सच्चगुणद्वाणपचएसु सच्चत्थ अवेदव्वा ।
ओरालियदुग-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुञ्जीण अमजदसम्मादिट्ठिम्हि चालीम पञ्चया,
वेउवियमिस्स-ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय इत्थि-पुरिसवेदपञ्चयाणममाणादो । वज्जरि
सहसपडणस्स सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि चालीस पञ्चया, ओरालियकायजोगिन्धि-पुरिसवेदपञ्चयाण-
ममाणादो । असजदसम्माइट्ठिम्हि चालीस पञ्चया, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउवियमिस्स-
कम्मइयकायजोगिन्धि-पुरिसवेदपञ्चयाणममाणादो ।

पचणाणावरणीय छदसणारणीय-असादावेदणीय धारसकसाय-अरदि सोग भय दुगुछा-
परिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-गध-रम-फास-अगुरुत्तहुम-उवपाद-परपाद-उस्मास-
तस पादर-पञ्चत पत्तेयसरीर-अधिर-असुह अजसकिति णिमिण-पचतराइयाण मिच्छाइट्ठिम्हि चउ
गइसजुत्तो पधो । सासणे तिगइसजुत्तो, णिरयगईए अमाणादो । अमजदसम्माइट्ठि-सम्मा-
मिच्छाइट्ठीसु दुगइसजुत्तो, णिरय तिरिक्खगईणममाणादो । सादावेदणीय-पुरिसवेद-हस्म-रदि-
समचउरससठाण-पसत्थविहायगइ धिर-मुम-सुभग-सुस्मर-आदेव-जसकित्तीण मिच्छाइट्ठि-सासण

काययोग, रत्तिवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंके बिना चालीस प्रत्यय हैं । देवगति,
देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरागोपागके वैक्रियिक और
वैक्रियिकमिथ प्रत्ययोंके सब गुणस्थानोंके प्रत्ययोंमें सर्वत्र कम करना चाहिये ।
औदारिकमिथ, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें
चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वहा वैक्रियिकमिथ, औदारिक, औदारिकमिथ, कामेज काययोग,
रत्तिवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका वहा अभाव है । वज्रपभसहननके सम्यग्मिथ्यादृष्टि
गुणस्थानमें चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिककाययोग, रत्तिवेद और पुरुषवेद
प्रत्ययोंका वहा अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उसके चाहीम प्रत्यय हैं, क्योंकि,
औदारिक, औदारिकमिथ, वैक्रियिकमिथ, कामेज काययोग, रत्तिवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका
वहा अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दशनावरणीय, आसाता वेदनीय, धारह कपाय, भरति,
शोक, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय जाति, तेजस व कामेज शरीर, यर्ज, गन्ध, रस, स्पर्श,
अगुरुत्तहु, उपधात, परधात, उच्छ्वास ब्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ,
अयशकीर्ति, निर्माण और पाच अन्तराधका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों गतियोंसे समुक्त
बन्ध होता है । आसादन गुणस्थानमें तीन गतियोंसे समुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहा
नरकगतिका अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे
समुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहा नरकगति और तिर्यग्गतिका अभाव है । साता वेदनीय,
हास्य, रति, समचतुरस्त्रस्थान, प्रशस्तविहायोगानि, स्थिर, शुभ, सुभग,

सम्मादिट्ठीसु तिगइसजुत्तो, गिरयगईए अमावादो । सम्मामिच्छाडिह्मि-असजदसम्मादिट्ठीसु दुगइ-सजुत्तो, गिरय तिरिक्खगईणमभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओगणपुञ्जीण सच्चगुणट्ठाणेषु षघो मणुसगइसजुत्तो । ओरालियसरीर-ओरालियमरीगोवणे-वज्जरिसहसघडणाण मिच्छाडिह्मि-सत्सण-सम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्तो । सम्मामिच्छादिह्मि-असजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसजुत्तो, अण्णगइबधाभावादो । देवगइदुगस्स देवगइसजुत्तो । वेउव्वियदुगस्स मिच्छाडिह्मि-दुगइ-सजुत्तो, तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्तो । सासणसम्मादिह्मि-सम्मामिच्छादिह्मि-असजदसम्मा-दिट्ठीसु देवगइसजुत्तो, अण्णगइबधेण सजोगविरोहादो । उच्चागोदस्स सच्चगुणट्ठाणेषु देवगइ-मणुसगइसजुत्तो षघो ।

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-सादासाद-चारसकमाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय दुगुछा-पच्चिदियजादि तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वण्ण-गध-रस-फास-अगुक्खलहुवचउत्त-पसत्थविहायगइ-त्तस चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदिज्ज-जसकित्ति-अजमकित्ति-णिमिण-पचतराडय-उच्चागोदाण चउगइमिच्छाडिह्मि-सासण-

— — — — —

सुस्वर, आदेय और यशस्वीर्तिका मिथ्याहृष्टि और सासादनसम्यग्हृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा नरकगतिका अभाव है । सम्यग्मिथ्याहृष्टि और असयत्तसम्यग्हृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा नरकगति और तिर्यग्गति अभाव है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मय गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और यज्जर्पमसहननका मिथ्याहृष्टि और सासादनसम्यग्हृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । सम्यग्मिथ्याहृष्टि और असयत्तसम्यग्हृष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । देवगतिद्विकका देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । वैकियिकद्विकका मिथ्याहृष्टियोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यग्गति और मनुष्यगतिके बन्धका अभाव है । सासादनसम्यग्हृष्टि, सम्यग्मिथ्याहृष्टि और असयत्तसम्यग्हृष्टि गुणस्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके बन्धके साथ उसके संयोगका त्रिरोच है । उच्चगोत्रका सत्र गुणस्थानोंमें देवगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता च असाता धेदनीय, चारह कपाय, पुरणवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय जाति, तैजस उकार्मण शरीर, समचतुरस्रमस्थान, घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुहल्लु आदिक चार, प्रशस्ताविहायोगति, प्रस, वादर, पर्पत्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्वीर्ति, अयशस्वीर्ति, निर्माण, पाच अन्तराय और उच्चगोत्रके चारों गतियोंके

अभावादो । सासणे दुगइसजुतो, गिरय-देवगईणमभावादो । तिगिक्खाउ तिगिक्खगइ तिगिक्ख-
गइपाओगाणुपुव्वी-उज्जेसाण तिगिक्खगइसजुतो, सामानियादो । थीणगिद्धितियादीण पयडीण
बधस्स चउग्गइमिच्छइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी, अविरोहदो । बधद्धाण बधविणद्धाण
च सुगम । धुववर्षाण मिच्छइट्ठिम्हि चउज्जिहो बधो । मामणे दुविहो, अणाइ-धुववर्षाभावादो ।
अवसेसाण बधो सादि-अद्भवो, अद्भववधित्तादो ।

एगद्धानपयडीण परूणा कीरदे— मिच्छत्तेइदिय वीइदिय तीइदिय-चउरिंदियजादि-
गिरयाणुपुव्वी-आदार थावर सुहुम अपज्जन साहारणमरीरण बधोदया मम वोच्छिज्जति,
मिच्छइट्ठिम्हि चेव तदुभयवोच्छेदुवलभादो । अवसेसाण पयडीण उदयवोच्छेदो णत्थि,
बधवोच्छेदो चेव । मिच्छत्तस्स बधो सोदओ । गिरयाउ गिरयगइ-गिरयगइपाओगाणुपुव्वीण
परोदओ, सोदएण बधविरोहदो । अवसेसाण पयडीण बधो सोदय परोदओ, उभयहा वि
अविरुद्धबधदो । मिच्छत्त गिरयाउआण बधो गित्तो । अवसेसाण सात्तो, एगससएण वि
उधुवरमदसणादो । पच्चया सुगमा । णवरि गिरयाउ-गिरयगइ-गिरयाणुपुव्वीण वेउव्विय-

सासादनमें दो गतियोंसे संयुक्त बध होता है, क्योंकि, वहा नरकगति और देवगतिका
अभाव है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिके
संयुक्त बध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । स्त्यानयुद्धिप्रय आदि प्रकृतियोंके बन्धके
द्वारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनमन्त्र्यगृह्ण स्त्री हैं, क्योंकि, इसमें कोई विरोध
नहीं है । बधध्यान और बधधिनप्रस्थान सुगम है । धुरबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि
गुणस्थानमें द्वारों प्रकारका बध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता
है, क्योंकि, वहा अनादि और अद्य बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बध सादि और
अद्य होता है, क्योंकि, ये अधुरबन्धी हैं ।

एकस्थान प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करने हैं— मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय,
त्रयीन्द्रिय, चतुर्दिन्द्रिय जाति, नारकानुपूर्वी आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपयाप्त और
साधारणशरीरका बन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होने हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि
गुणस्थानमें ही उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद
नहीं है, केवल बधव्युच्छेद ही है । मिथ्यात्वका बन्ध स्वेदय होता है । नारकायु
नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बध होता है, क्योंकि, अपने उदयके
साथ इनके बधका विरोध है । शेष प्रकृतियोंका बध स्वेदय परोदय होता है, क्योंकि,
दोनों प्रकारसे भी उनके बन्धमें कोई विरोध नहीं है । मिथ्यात्व और नारकायुका बन्ध
निरन्तर होता है । शेष प्रकृतियोंका बध सात्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी
अधिव्यामका देखा जाता है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि नारकायु,

वेउव्वियमिस्स ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया णत्थि, अपज्जत्तकाले एदासिं वधाभावादो । एइदिय आदाप थावराण वेउव्वियकायजोगपच्चओ अवणेयन्तो । वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-सुहुम-अपज्जत्त साहारणाण वेउव्विय वेउव्वियमिस्सपच्चया अवणेदन्ना, देव णेरइएसु एदासिं वधाभावादो । मिच्छत्तस्स चउगइसजुत्तो । णवुमयवेद-हुइसठाणाण तिगइसजुत्तो, देवगदीए अभावादो । असपत्तमेवइमघडण-अपज्जत्ताण दुगइसजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो । णिरयाउ-णित्यदुगाण णिरयगइसजुत्तो । अनसेसाण पयड्डीण तिरिक्खगइसजुत्तो वधो । णिरयाउ-णिरयदुग-वीइदिय तीइदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम अपज्जत्त साहारणाण तिरिक्ख मणुसा सामी । मिच्छत्त-णउसयवेद-हुइसठाण-असपत्तसेउइमघडणाण चउगइमिच्छाइडी सामी । एइदिय-आदाव-थावराण तिगइमिच्छाइडी सामी । वधद्धाण णत्थि, एककम्हि अद्धाणविरोहादो । वधवोच्छेदो सुगमो । मिच्छत्तस्स वधो चउव्विहो । अनसेसाण साट्ठि-अहुवो, अहुववधित्तादो ।

मणुसाउअस्स मिच्छादट्ठि सासणसम्मादिडीसु वधो सोदय-परोदओ । असजदसम्मा-दिडीसु परोदओ । सव्वत्थ णिरतरो, एगसमण्ण ववुनरमाभावादो । पच्चया ओघसिद्धा ।

नरकगति और नारकानुपूर्वोंके वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कर्मण प्रत्यय नहीं हैं, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके बन्धका अभाव है । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके वैक्रियिककाययोग प्रत्यय कम करना चाहिये । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण शरीरके वैक्रियिक और वैक्रियिकमिश्र प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, देव और नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है ।

मिथ्यात्वका बन्ध चारों गतियोंमें संयुक्त होता है । नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है । असंप्राप्तसुपाटिकासहनन और अपर्याप्तका बन्ध दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ नरक और देव गतिके बन्धका अभाव है । नारकायु और नरकद्विकका बन्ध नरकगतिसे संयुक्त होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध तिर्यग्गतिसे संयुक्त होता है । नारकायु, नरकद्विक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण प्रकृतियोंके तिर्यच और मनुष्य स्वामी हैं । मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसुपाटिकासहननके स्वामी चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि जीव हैं । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्यान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है । बन्ध-युच्छेद सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवबन्धी हैं ।

मनुष्यायुका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय होता है । असत्यतसम्यग्दृष्टियोंमें उसका परोदय बन्ध होता है । सर्वत्र निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय ओघसे सिद्ध हैं ।

तेउ-वाउकादएसु णील्लेस्सिएसु तिरिक्खगइदुग णीचागोदाण णिरत्तरवधुवलमादो । तदियपुदवीए णील्लेस्साए वि सभमादो तित्थयरवधस्स मणुस्सा इव णेरइया वि सामिणो होंति ति किण्ण पक्क-विज्जदे ? तत्थ हेडिमइवए णील्लेस्सासहिण^१ तित्थयरसत्तकम्मियमिच्छाइड्डीणमुववादाभावाणे । कुदो ? तत्थ तिस्रे पुदवीण उक्कम्माउदमणादो । ण च उक्कस्माउणसु तित्थयरसत्तकम्मियमिच्छाइड्डीणमुववादो अत्थि, तद्दोवण्णसाभावादो । तित्थयरसत्तकम्मियमिच्छाइड्डीण णेरइएसुववज्ज माणाण सम्माइड्डीण व काउलेस्स मोत्तुण अण्णलेस्साभावादो वा ण णील-किण्णहेस्साए तित्थयरसत्तकम्मिया अत्थि ।

एव काउलेस्साए वि वत्तन्व । णरि तित्थयरस्स मणुसा इव णेरइया वि सामिणो । मणुस-वेवगइसजुतो धयो । ओधपच्चएसु एक्को वि पच्चओ णावणयच्चो, वेउअियदुगोरात्थि-मिम्म-कम्मदयपच्चयाण भावादो । ओरात्थियदुग मणुसगइदुग-वज्जरिसइसघडणाण असनद सम्मादिड्ढिमिह वेउअियमिस्स-कम्मदयपच्चया णाणयच्चा । तिरिक्खगइपाओग्गानुपुव्वीए

समाधान—नहीं, क्योंकि तेज व वायु कायिक नीललेह्यागले जीवोंमें तिर्यग्गति द्विक और नीचगोत्रका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

शुक्रा—तृतीय पृथिवीमें नीललेह्यानी भी सम्भावना होनेसे तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धके मनुष्योंके समान नारकी भी स्वामी होते हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, वहा नीललेह्या युक्त अवस्तन इन्द्रकमें तीर्थंकर प्रकृतिके सत्त्वगले मिथ्यादृष्टियोंकी उपस्थिति अभाव है । इसका कारण यह है कि वहा उस पृथिवीकी उत्पत्ति आयु देखी जाती है । और उत्पत्ति आयुवाले जीवोंमें तीर्थंकरसत्त्वकमिक मिथ्यादृष्टियोंका उत्पत्ति है नहीं, क्योंकि, ऐसा उपदेश नहीं है । अथवा नारकीयोंमें उत्पत्ति होनेवाले तीर्थंकरसत्त्वकमिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सत्त्वगदृष्टियोंके समान कापोत लेह्याको छोड़कर अन्य जेह्याओंका अभाव होनेसे नील और कृष्ण लेह्यामें तीर्थंकरकी सत्तागले जीव नहीं होते ।

इसी प्रकार कापोतलेह्यामें भी कहना चाहिये । विशेषता इतनी है कि तीर्थंकर प्रकृतिके मनुष्योंके समान नारकी भी स्वामी हैं । मनुष्य और द्रव गतिसे सयुक्त वच औदारिकमिथ और कामण प्रत्ययोंका यहा सद्भाव है । औदारिकद्विक, मनुष्यगतिद्विक और यज्ञयममहननके असत्यसत्त्वगदृष्टि गुणध्यानमें वैविधिकमिथ और कामण प्रत्ययोंको कम नहीं करना चाहिये । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपुत्राका प्रथम बन्ध और पश्चात् उदय

वधो पुत्रमुदओ पच्छा गोच्छिज्जदि, सामणसम्मादिद्धि-असजदमम्मादिद्धीसु वधोदयवोच्छेदुव-
लमादो । अण्णो पि जइ भेदो अत्थि सो पि चित्थिय वत्तवो ।

तेजलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु पंचणाणावरणीय-छटंसणावरणीय-
सादावेदणीय-चउसजलण पुरिसवेद-हस्स रदि-भय दुगुंछा-देवगइ-पंचिं-
दियजादि-वेउन्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउन्विय-
सरीरअगोवंग-चण्ण-गंध रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुव-
लहुव उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस वादर-पज्जत्त-पत्तेय-
सरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति णिमिणुच्चागोद-पचं-
तराडयाणं को वधो को अवधो ? ॥ २५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा वंधा । एदे वंधा,
अवंधा णत्थि ॥ २६० ॥

देवगइ-वेउन्वियदुगाण पुत्रमुदओ पच्छा नधो वोच्छिज्जदि । अवसेसाण पयडीण-

शुन्तिउत होता है, क्योंकि, नासावनमम्यगदष्टि जोर अमयतसम्यगदष्टि गुणस्थानोंमें कमसे
उमके नन्ध और उदयका व्युत्पेद पाया जाता है । अन्य भी यदि भेद है तो उसे भी
विचारकर नहना चाहिये ।

तेज और पद्म लेख्यामले जीर्णों पाच ज्ञानावरणीय, उह दर्शनारणीय, साता-
वेदनीय, चार सज्जलन, पुरुषेद, हाम्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, पचेन्द्रियजाति,
भैक्तियिक, तेजम व कर्मण शरीर, समचतुरस्यसम्यान, वैक्तियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध,
रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुधु, उपचात, परघात, उच्छ्राम, प्रगस्तविहायोगति,
श्रम, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण,
उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २५९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमे लेकर जप्रमत्तमयत तरु नन्धक ह । ये नन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं ।

॥ २६० ॥

सुत्यादो वधो पुष्य पञ्चा वा चोच्छिष्णो त्ति परिक्खा णत्थि, एत्थ वधोदयवोच्छेदाभावादो ।
 पचणाणावरणीय-चउत्सणावरणीय-पचिंदियजादि-तेजा-कम्मदयसरीर-वण्ण-गध-रस फास-
 अगुरुअलहुअ तस-वावर पज्जत्त थिर सुह णिमिण पचतरादयाण सोदओ वधो, धुवोदयतादो ।
 णिहा पयसा सादावेदणीय चटुसत्तण पुरिसरेद हम्म-रदि भय दुगुछा समचउरमसठाण-पसत्थ-
 विहायगट-सुत्तराण सत्तगुणद्वारेणु सोदय परोदओ वधो, अदुनोदयतादो । देवगड-देवगड
 पाओग्गाणुपुव्वी रेउअियसरीर रेउअियमगीरअगोउगाण वधो परोदओ, सोदण्ण वधविरोहादो ।
 उपपाद परघाट-उम्मास पत्तेयमगीराण मि-छाद्वि सामणसम्माद्वि-अमजदमम्मादिद्वीण सोदय
 परोदओ, अपज्जत्तकाले उदयाभावादो । मेसेसु वयो सोदओ, तेसिमपज्जत्तद्वाप अभावादो ।
 सुभग-आदेज्ज-जसकित्तीण मिच्छाद्विप्पहुडि जाण अमजदमम्माद्विद्वि त्ति वधो सोदय-परोदओ ।
 उपरि सोदओ चेत्त, पडिउत्तुदयाभावादो । उच्चागोदस्स मिच्छाद्विप्पहुडि जाण सज्जदामपदा
 त्ति नधो सोदय-परोदओ । उपरि सोदओ, पडिउत्तुदयाभावादो ।

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-चटुसजलण भय-दुगुछ देवगड रेउअियदुग-तेजा-

है । शेष प्रवृत्तियोंके उदयसे उध पूर्वमे या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहा उनने वध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है ।

पाच क्षानावरणीय, चार दशनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैजस उ कर्मण शरीर, वण, गध, रस, स्पृश, अगुरुलघु, अस, वावर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ, निर्माण और पाच अतंगयका स्त्रोदय य व होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, साता वेदनीय, चार सज्जलन, पुदयवेद, हास्य, रति, भय जुगुप्सा, समचतुरस्रस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुत्तरका सत्त गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी हैं । देवगति देवगतिप्राप्त्योग्यानुपूर्वी वैनियिकशरीर और वैनियिक शरीरागोपागका यय परोदय हाता है, क्योंकि, अपने उदयके साथ इनके बन्धना निरोध है । उपधान, परघात, उच्छवास और प्रत्येकशरीरका बन्ध मिध्याद्वि, सासावनसम्पदादि और असयतसम्पदद्विष्योंने स्त्रोदय परोदय होता है, क्योंकि, अपघातकालमें इनके उदयका अभाव है । शेष गुणस्थानोंमें स्त्रोदय वध होता है, क्योंकि, उनके अपघात कालका अभाव है । सुभग, आदेय और वधशरीरोंमें मिध्याद्विसे लेकर असयत सम्पदद्वि गुणस्थान तक स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्त्रोदय ही उन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके उदयका अभाव है । उच्चगोत्रका मिध्याद्विसे लेकर असयतासयत तक स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्त्रोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके उदयका अभाव है ।

पाच क्षानावरणीय, छद दशनावरणीय, चार सज्जलन, भय, जुगुप्सा, देवगति

कम्मइयसरीर उण्ण गध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उत्ताद-परघादुस्सास-वादर-पञ्चत्त-पत्तियसरीर-
णिमिण-पचतराटयाण उभो णिरतरो, एत्थ उउत्तादो । मादवेदणीय-हस्म-रदि धिर-मुह-
जसकित्तीण मिच्छाद्विट्ठिप्पहुटि जाव पमत्तमजदा त्ति वभो सातरो । उवरि णिरतरो, पडिवस्स-
पयडीण उभामानादो । पचिंदियजादि तमणामाण मिच्छाद्विट्ठि उभो सात णिरतरो, तिरिस्सुवेसु
सणस्कुमारादिदेवेसु च णिरतरउधुलमादो । उवरि णिरतरो, पडिवस्सपयडीण उभामानादो ।
पुरिमवेदस्म मिच्छाद्विट्ठि सासणसम्मादिद्वीसु सातरो, एगसमण णि उधुवरमुवलमादो । उवरि
णिरतरो, पडिवस्सपयडिउभामानादो ।

पचचया सुगमा, ओषपचचण्हितो विमेमामानादो । णवरि देवगइ-वेउच्चियदुगाण
मिच्छाद्विट्ठि-सामणसम्मादिद्वीसु ओरालियमिस्म-वेउच्चियदुग-कम्मइयकायजोगपचचया अव-
णेष ना, देव-गेरइएसु अपज्जत्तत्तिरिप्पि मणुमेसु च एदामि उभामानादो । सम्मामिच्छाद्विट्ठि
वेउच्चियकायजोगपचचओ, असजदसम्मादिद्विस्मि वेउच्चियदुगपचचओ अणणेदवो । मिच्छा-
द्विट्ठि-सामणसम्माद्वीसु सजपयडीण पि ओरालियमिस्मपचचओ अणणेवओ, तिरिक्ख मणुम-

वैक्रियिकट्टिक, तैजस उ कामेण शरीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात,
परघात, उच्छ्वास, वादन, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण ओर पाच अन्तरायका बन्ध
निरन्तर होता है, क्योंकि, यहा ये धुनगन्धी ह । सातयेन्नीय, हास्य, रति, हियर, शुभ
ओर यशस्वीर्तिका मिथ्यादृष्टिमे लेनर प्रमत्तसयतों तक सान्तर उ व होता है । ऊपर
निरन्तर गन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके गन्धका अभाव है । पचेन्द्रिय-
जाति ओर व्रत नामकर्मका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर गन्ध होता है, क्योंकि,
तिर्यचों ओर सनत्कुमारादि देवोंमें उनका निरन्तर गन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर गन्ध
होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके गन्धका अभाव है । पुष्पपत्रेदका मिथ्यादृष्टि
ओर सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर गन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी
उसका गन्धनिश्राम पाया जाता है । ऊपर निरन्तर गन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष
प्रकृतियोंके गन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओषप्रत्ययोंस कोई विशेषता नहीं है । भेद इतना है कि
देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके मिथ्यादृष्टि ओर सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें ओदा
रिक्मिथ, वैक्रियिकद्विक ओर कामेण काययोग प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि,
देव नारकियों तथा अपर्याप्त तिर्यच उ मनुष्योंमें भी इनके गन्धका अभाव है । सम्य
गमिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें वैक्रियिक काययोग प्रत्यय तथा असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें
वैक्रियिक और वैक्रियिकमिथ प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मिथ्यादृष्टि ओर सासादन
सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सभी प्रकृतियोंके ओदारिकमिथ प्रत्यय कम करना चाहिये,

मिच्छाद्वि-सामणसम्मादिद्वीणमपञ्चत्तकाले सुहलेस्माणमभावादो ।

पचणाणारणीय उदमणारणीय सादनेदणीय-चउमनलण पुरिमवेद हस्स-रदि भय-
दुगुल्ल पचिदिय तेना कम्मदय ममचउरमयत्तण-उण्णचउक्क-अगुरुलहुअचउक्क-पसत्थ-
विहायगदि-यिर सुभग-सुस्स-आदेव्व जसकित्ति णिमिण-पचतराहयाण मिच्छाद्वि-सामणसम्मा
दिद्वीसु वधो तिगदमजुतो, णिरयगई अभावादो । सम्मामिच्छाद्वि-असजदसम्मादिद्वीसु
दुगदमजुतो, णिरय तिरिरुगईणमभावादो । उउरिमसु देवगइमजुतो, तदथण्णगईण वधा
भावादो । देवगइनेउअियदुगाण देवगदमजुतो, अण्णगईहि वधविरोहादो । उच्चगोदस्स
मिच्छाद्वि मासणसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छाद्वि-असजदसम्मादिद्वीसु देव-मणुसगइसजुतो ।
उवरि देवगइसजुतो वधो ।

मध्यामि पयडीण तिग-मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छादिद्वि-असजद-
सम्मादिद्विणो सामी, णिरएसु तेउलेस्मादिसुहलेस्सामावादो । दुगदमजदासजदा, मणुसगइमजदा

क्योंकि, नियन्त्रण मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें शुभ
प्रेरणाओंका अभाव है ।

पाच गलामरणीय, छह दानापरणीय, सातावेदनाय, चार सज्जलन, पुरुषवेद,
हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय जाति, तैजस य कामण शरीर, समचतुरस्रस्थान,
घणादि चार, अगुरुल्लु आदि चार, प्रशस्तविहायोगति, स्थिर, सुभग, सुस्वर, आदेय,
यशस्वीति, निर्माण और पाच अंतरायना मिथ्यादृष्टि य सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें
तान गतियोंसे संयुक्त पञ्च होता है, क्योंकि, यहाँ नरकगतिना अभाव है । सम्यग्मिथ्या
दृष्टि और असत्यतमस्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त पञ्च होता है, क्योंकि, यहाँ
नरकगति और तिर्यग्गतिना अभाव है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगति संयुक्त पञ्च होता
है, क्योंकि, यहाँ अन्य गतियोंके पञ्चका अभाव है । देवगतिद्विक और त्रिभुविकद्विक
देवगतिसंयुक्त पञ्च होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ इनके पञ्च विरोध है ।
उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतमस्यग्दृष्टि
गुणस्थानोंमें देव पञ्च मनुष्य गतिसे संयुक्त पञ्च होता है । ऊपर देवगतिसे संयुक्त पञ्च
होता है ।

सब प्रक्रियाओंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या
दृष्टि और असत्यतमस्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नाराकियोंमें तेजो-रूपादि शुभ
अभाव है । दो गतियोंके सत्यतासत्य और मनुष्यगतिसे सत्य स्वामी हैं ।

सामी । पत्रि वेउन्वियचउक्कस्स तिरिक्ख मणुसगइमिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-सम्मा-
मिच्छाइडि-असजदमम्माइडि-सजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । वधद्वाण सुगम ।
वधोच्छेदो णत्थि, 'अनवा णत्थि' ति वयणादो । धुवन्धीण मिच्छाइडिमिह वधो
चउन्विहो । अणत्थ तिविहो, धुवाभावादो । अउसेमाण पयडीण सन्वत्थ सादि-अद्धवो,
अद्धववधित्तादो ।

वेद्वाणी ओघं ॥ २६१ ॥

त जहा—अणत्ताणुनविचउक्कस्स वधोदया सम वोच्छिण्णा^१, सासणसम्मा-
दिडिमिह दोण वोच्छेदुवलभादो । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए पुणो उदओ चेव णत्थि,
तेउलेस्साहियारादो । सेसाण पयडीण वधोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाभावादो । थीणगिद्वित्थि-
अणत्ताणुनविचउक्कित्थिवेदाण सोदय परोदओ । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुग-चउसठाणं चउस-
घडण-उज्जोए अप्पसत्थविहायगइ-दूमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण दोसु वि गुणद्वाणेषु वधो

निशेपता इतनी है कि वैत्रियिकचतुष्कके तिर्येव ओर मनुष्य गतिके मिथ्यादृष्टि, सासादन
सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असयतमस्यग्दृष्टि और सयतासयत, तथा मनुष्यगतिके सयत
स्वामी है । गन्धापान सुगम है । बन्धन्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धन नहीं है'
ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । उचयन्धी प्रवृत्तियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका
पच होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, यहा धुव
बन्धन अभाव है । दोष प्रवृत्तियोंका सर्वत्र सादि व अधुन बन्ध होता है, क्योंकि, ये
मधुनयन्धी है ।

द्विस्थानिक प्रवृत्तियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६१ ॥

यह इस प्रकार है—अनन्तानुबन्धचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें
स्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका स्युच्छेद पाया
जाता है । परन्तु तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका यहा उदय ही नहीं है, क्योंकि, तेजोलेख्याका
अधिकार है । दोष प्रवृत्तियोंका केवल बन्ध-स्युच्छेद ही है, क्योंकि, उनके उदय-स्युच्छेदका
अभाव है । स्थानशुद्धिप्रय, अनन्तानुबन्धचतुष्क और स्वीयेदका स्वोदय परोदय बन्ध होता
है । तिर्येगायु, तिर्यग्गतिद्विक, चार सस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रशस्तप्रियायोगति,
दुर्भग, दुस्सर, धनदेय और नीचगोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय

१ प्रविष्ट 'वोच्छिण्णो' इति पाठ ।

२ अ आपन्नो 'गहदुगमठाण चउसघडण', धारता 'गहदुगमठाणचउसठाण-चउसघडण' इति पाठ ।

सेदय परोदओ । धीगिद्वितिय-अणताणुवधिचउक्क तिरिक्खाउआण वधो गिरतरो । सेसाण सातरो, एगसमएण वि बधुअमुवलभादो । सअपयडीण मिच्छाडट्टि सासणमम्मादिडीसु चउवण्णेगूणवचास पच्चया, ओरालियमिस्सपच्चयाभावादो । णवरि तिरिक्खाउअस्म ओरालिय दुग-वेउध्वियमिस्म कम्मइय णुसयवेदपच्चया अवणेदन्ना, पज्जत्तदवे मोत्तूण अणत्थ वधामाभादो । तिरिक्खगडदुगुज्जेव चउमठाण चउमघडण अप्पसत्थविहायगइ-दुभग दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण ओरालियदुग णुमयवेदपच्चया अवणेयन्ना, तिरिक्ख मणुस्से मोत्तूण देवाणमेदामि पज्जत्तापज्जत्ताअन्थासु नुवलभादो ।

तिरिक्खाउ तिरिक्खगइदुगुज्जेवाण वधो तिरिक्खगइसज्जुत्तो । चउमठाण चउमघडण अप्पसत्थविहायगइ दुभग दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण दुगडमज्जुत्तो, गिरय-देगडिणमभावादो । धीगिद्वितिय-अणताणुवधिचउक्कित्थिवेदाण वधो तिगइमज्जुत्तो, गिरयगडिअ अभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जेव-चउमठाण-चउमघडण अप्पसत्थविहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाण वधस्स देवा चेन सामी, सुहत्तिलेस्सियतिरिक्ख मणुस्सेसु एदामि

बन्ध होता है । स्थानगृद्धिग्रय, अन-तानुगधिचतु क और तियगायुका वध निरंतर होता है । शेष प्रतियोंका सा तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविधाम पाया जाता है । एत प्रतियोंका मिथ्यादृष्टि ओर सामादनमन्वगदृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे गायन और गनघात प्रत्यय ह, क्योंकि, ओदारिकमिथ्र प्रत्ययका यहा भाष है । विशेष इतना है कि तियगायुन ओदारिकद्विक, धैत्रियिकमिथ्र व कामेण काययोग और नपुसकवेद प्रत्ययोंसे कम करना चाहिय क्योंकि, पर्याप्त देवोंको छोड़कर अप्रप्त उसके बन्धना भाष है । तियगतिद्विक, उद्योत, चार सन्धान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रके ओदारिकद्विक एव नपुसकवेद प्रत्ययोंसे कम करना चाहिये, क्योंकि, तियेच आर अनुप्योंको छोड़कर देवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें इतका बन्ध पाया जाता है ।

तियगायु, तियगतिद्विक और उद्योतका वध तियगानिसे संयुक्त होता है । चार सन्धान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रका वध दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, नरक और देव गतिने साथ इनके वधका भाष है । स्थानगृद्धिग्रय, अन-तानुगधिचतुष्क और रविवेदका वध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, यहा नरकगतिने उ-वरा भाष है । तियगायु, तियगतिद्विक, उद्योत, चार सन्धान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीच गोत्रके वधके देव ही स्वामी ह, क्योंकि, नुम तीन ऐदयायाले तियेच न अनुप्योंमें इनके

वधाभावादो । धीणगिद्धितिय अणताणुअधिचउत्थिनेदाण तिगइमिच्छाडडि मामणमम्मादिट्ठिणो
सामी, णिरयगईए सुहत्तिलेम्माभावादो । वधद्वाण वधवोच्छिण्णद्वाण च सुगम । धुवनधीण
मिच्छाडडिहि चउत्थिहो वधो । सासणे' दुविहो, अणाइ वुत्तामावादो । सेसाण पयडीण वधो
सञ्जत्थ मादि-अट्ठो ।

असादावेदणीयमोधं ॥ २६२ ॥

देसामासियसुत्तेणदेण सुइदत्थपरुवणा कीरदे । त जहा—अजसकितीए पुन्वमुदओ
पच्छा वधो गोच्छिञ्चदि, पमत्तामजदसम्मादिट्ठीसु उधोदयवोच्छेदुवलमादो । असादोवेदणीय-
अरदि-सोग-अधिरासुद्वाण पुन वधो पच्छा उदओ वोच्छिञ्चदि, तहोवलमादो । अधिर-
असुद्वाण वधो सोदओ, उधोदयत्तादो । अजसकितीए मिच्छाडडिप्पहुडि जान अमजदसम्माडडि
ति मोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव । अमादावेदणीय-अरदि-सोगाण सोदय-परोदओ,
सञ्जत्थ अट्ठोदयत्तादो । सानेगे उधो, सञ्जासिमिदायिमिगसमण नि सञ्जगुणट्ठणेषु
धधुरमुवलमादो । पच्चया सुगमा, ओषपच्चपरिहोति निम्मेसामावादो । पवरि मिच्छाडडि-

वन्धना अभाव है । स्थानगृद्धित्रय, अनन्तानुरन्ध्रवचनुराक ओर रत्नविनके नीर गतियोंके
मिथ्यादृष्टि और सात्तादनमम्यदृष्टि रत्नांगी है, क्योंकि, नरकगतिसमें शुभ तीन लक्ष्याओंका
अभाव है । उन्धाध्वार और उन्धन्युच्छिन्नस्थान सुगम है । धुवनधी प्ररतियोंका
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चार प्रकारका उन्ध होता है । आसादन गुणस्थानमें दो प्रकारका
वन्ध होता है, क्योंकि, वधा अनादि और पुन उन्धका अभाव है । दोष प्ररतियोंका वन्ध
मरण सादि व अधुन होता है ।

अमातावेदनीयकी प्ररुणणा ओषके समान है ॥ २६२ ॥

इस देशागदीन सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—
अपशर्गीतिका पूर्वमें उदय और पश्चात् पश्चिम युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त और
असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें प्रमत्ते उसके वध व उदयका व्युत्प्रेत पाया जाता है ।
अमातावेदनीय, अरति, शोक, अन्धिर और अशुभका पूर्वमें वध व पश्चात् उदय
व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, ऐसा पाया जाना है । अस्थिर और अशुभका उन्ध स्वोदय
होता है, क्योंकि, ये धुवादी हैं । अपशर्गीतिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि
तक स्वोदय परोदय उन्ध होता है । ऊपर स्त्रोत्रय ही वन्ध होता है । अमातावेदनीय,
अरति और शोकका स्वोदय परोदय उन्ध होता है, क्योंकि, ये सर्वत्र अट्ठोदयी हैं ।
सान्तर उन्ध होता है, क्योंकि, इन सबका एक समयमें भी सब गुणस्थानोंमें वन्धविधाम
पाया जाता है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओषप्रत्ययोंसे यहा कोई भेद नहीं है । विशेषता

सोदय परोदओ । धीणगिद्धिनिय अणताणुअधिचउक्क तिरिक्खाउआण वधो गिरतरो । सेमाण सातरो, एगसमएण नि वचुवग्मुवलभादो । मव्वपयडीण मिन्डाइडि सासणमग्गादिडीयु चउअण्णेगृण्णचस पच्चया, ओरात्थियमिस्सपच्चयाभावादो । णरि तिरिक्खाउअस्स ओरात्थिय-दुगवेउअवियमिस्स कम्मइय णउसयवेदपच्चया अण्णेदत्ता, पच्चत्तदेवे मोत्तूण अण्णत्थ वधाभावादो । निरिक्खगइदुग्गुज्जोव चउमठाण चउमघडण अप्पसत्थनिहायगइ-दुभग-दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण ओगलियदुग णउसयवेदपच्चया अण्णेयत्ता, तिरिक्ख मणुस्से मोत्तूण देवाणमेदासि पज्जनापज्जत्तात्तायु नउउलभादो ।

तिरिक्खाउ तिरिक्खगइदुग्गुज्जोवाण वधो तिरिक्खगइसजुतो । चउमठाण चउमघडण अप्पसत्थनिहायगइ दुभग दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण दुगइमजुतो, गिरय-देवगईणमभावादो । धीणगिद्धिनिय-अणताणुअधिचउक्कित्थिउदाण उवो तिगइसजुतो, गिरयगईए अभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुग्गुज्जोव-चउमठाण-चउमघडण-अप्पसत्थनिहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाण वधस्स देवा चेव सामी, सुहत्तिलेस्सयतिरिक्ख मणुस्सेसु एदासि

वध होता है । स्थापनशुद्धिनय, अणताणुअधिचउक्क ओर तिर्यगायुका वध निरंतर होता है । शेष प्रवृत्तियों का सा तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका वधप्रियाम पाया जाता है । तत्र प्रवृत्तियाँ मिथ्यादृष्टि और सामानादन्तसम्बन्धित गुणरधानोंमें क्रमसे घातन और उद्धारण प्रत्यक्ष हैं, क्योंकि, औदारिकमिथ प्रत्यक्षका यहा भाव है । विशेष इतना है कि तिर्यगायुने औदारिकद्विक, धैर्यमिथ व कामण काययोग और नपुंसकवेद प्रत्ययोंमें क्रम करना चाहिये क्योंकि, पर्याप्त देवोंको छोड़कर अन्यत्र उनके वधका अभाव है । तिर्यगातिद्विक, उद्योत, चार सस्थान, चार सहनन, अग्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रके औदारिकद्विक एव नपुंसकवेद प्रत्ययोंमें क्रम करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यच और मनुष्योंमें छोड़कर देवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें इका वध पाया जाता है ।

तिर्यगायु, तिर्यगातिद्विक और उद्योतका वध तिर्यगानिसे संयुक्त होता है । चार सस्थान, चार सहनन, अग्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका वध दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि नरक और देव गतिके साथ इनके वधका अभाव है । स्थापनशुद्धिनय, अणताणुअधिचउक्क ओर स्त्रीवेदका वध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, यहा नरकगतिके वधका अभाव है । तिर्यगायु, तिर्यगातिद्विक, उद्योत, चार सस्थान, चार सहनन, अग्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्वर, अनादेय और नीच गोत्रके वधके देव ही स्वामी हैं, क्योंकि, शुभ तीन लक्षणावाले तिर्यच व मनुष्योंमें इनके

यधो परोदओ, एदासिं देवेसु उदयाभावादो । मिच्छत्तयधो गिरतरो, धुववधित्तादो ।
अण्णपयडीण सातरो, एगसमएण नि वधुअरसुवलमादो । पच्चया सुगमा, ओधपच्चण्हितो
विसेसामानादो । णअरि ओरालियमिम्मपच्चओ अण्णेयव्वो, तत्थ सुहलेस्माण अमानादो ।
णउसयवेद-हुडसठाण-असपत्तमेअट्टसघडण एइदिय आदाव-थावराण ओरालियदुग कम्मइय-
णउसयवेदपच्चया अण्णेयव्व्या । मिच्छत्तयधो तिगइसजुत्तो । णउसयवेद-हुडसठाण अमपत्तमेवट्ट-
सघडणाण दुगइसजुत्तो, देअगईए अमानादो । एइदिय आदाव थावराण तिरिक्खगइसजुत्तो ।
मिच्छत्तयव्वस्य तिगइमिच्छाइड्डिणो सामी । अवमेसाण पयडीण देअ चैव सामी । यधद्वान्
यधवोच्छिण्णद्वान् च सुगम । मिच्छत्तस्स यधो चउत्तिहो, धुअवधित्तादो । सेसाण सादि-अहुवो
अहुववधित्तादो ।

अपच्चक्खाणावरणीयमोधं ॥ २६५ ॥

एद देसामासियसुत्त । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे — अपच्चक्खाणावरणीयस्स
यधोदया सम वोच्छिज्जति, असज्जदमम्मादिदिग्धि तदुभययोच्छेदुवलमादो । अवसेसाण
यधोच्छेदो चैव । अपच्चक्खाणचउत्तस्स यधो सोदय-परोदओ । मणुसगइदुगोरालियदुग-

होता है, क्योंकि, इनका देवोंके उदयाभाव है । मिथ्यात्वका ग्रन्थ निरन्तर होता है,
क्योंकि, वह ध्रुवग्रन्धी है । अन्य प्रकृतियोंका सान्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, एक समयसे
भी उनका ग्रन्थनिश्चय पाया जाता है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, जो प्रत्ययोंसे कोई भेद
नहीं है । विशेष इनका है कि यहां आदार्मिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि उसमें
शुभ लक्ष्यका अभाव है । नपुंसकवेद, हुण्डसठाण, असप्राप्तस्वपाटिकासहनन, एकेन्द्रिय,
आताप और स्वावरके आदार्मिककृष्टिक, कर्मण और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये ।
मिथ्यात्वका ग्रन्थ तीन गतियोंमें संयुक्त होता है । नपुंसकवेद, हुण्डसठाण और असप्राप्त-
स्वपाटिकासहननका दो गतियोंसे संयुक्त ग्रन्थ होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिसे
यधका अभाव है । एकेन्द्रिय, आताप और स्वावरका तिर्यग्गतिसे संयुक्त ग्रन्थ होता है ।
मिथ्यात्वके ग्रन्थके तीन गतियोंके मिथ्यावृष्टि स्वामी हैं । दोष प्रकृतियोंके देव ही स्वामी
हैं । ग्रन्थाध्यान आर यधवुच्छिन्नस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका ग्रन्थ चारों प्रकारका
होता है, क्योंकि, वह ध्रुवग्रन्धी है । दोष प्रकृतियोंका सादि व अधुव ग्रन्थ होता है,
क्योंकि, ये अधुवग्रन्धी हैं ।

अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा ओधके समान है ॥ २६५ ॥

यह देशामशोक सूत्र है, इसीलिये इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं—
अप्रत्याख्यानावरणीयका ग्रन्थ और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि,
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । दोष प्रकृतियोंका
ग्रन्थव्युच्छेद ही है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका ग्रन्थ स्वोदय परोदय होता है ।

सामणसम्मादिद्वीसु ओरातियमिस्सपच्चओ अवणेष्वो । तिगइसजुतो वधो मिच्छाइदि-
सासणमम्मादिद्वीसु । सम्मामिच्छाइदि-असज्जसम्मादिद्वीसु दुगइसजुतो । उवणि देवगइसजुतो ।
तिगइमिच्छाइदि सासणमम्मादिदि सम्मामिच्छाइदि अमज्जसम्मादिद्वीसो, दुगइसज्जदामज्जद,
मणुमगइसज्जद च सार्मा । मिच्छाइदिप्पहुदि जान पमतसज्जदो ति अट्ठाण । वधवोच्छेदट्ठाण
सुगम । सादि-अट्ठवो वधो, अट्ठपनधित्तादो ।

मिच्छत्त णवुसयवेद एइदियजादि-हुंडसंठाण असंपत्तसेवट्ठसंध
डण आदाव-थावरणामाण को वधो को अवंधो ? ॥ २६३ ॥

सुगम ।

मिच्छाइद्वी वधा । एदे वंधा, अवसेमा अवंधा ॥ २६४ ॥

मिच्छत्तस्म वधोदया सम वोच्छिण्णा । णवुसयवेद-हुंडसंठाण असंपत्तसेवट्ठसंधण
एइदिय आदाव थावरणामाण वधवोच्छेदो वेव, उदयाभागदो । मिच्छत्तस्म सोदयण वधो,
उदयाभावे वधानुपलभादो । णवुसयवेद हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्ठसंधण एइदिय-आदान थावरण

इतनी हे नि मिथ्याएणि और सासादनसम्पद्दणि गुणस्थानोंमें आदितिकमिध प्रत्यय कम
करना चाहिये । मिथ्याएणि और सासादनसम्पद्दणि गुणस्थानोंमें उनका बन्ध तीन गतियोंसे
सयुक्त होता है । सम्पत्तिमिथ्याएणि और असंपत्तिसम्पद्दणि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे सयुक्त
बन्ध होता है । ऊपर उनका देवगणिसयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके मिथ्याएणि, सासा
दनसम्पद्दणि, सम्पत्तिमिथ्याएणि और असंपत्तिसम्पद्दणि दो गतियोंके सयत्तासंपत्त, तथा
मनुष्यगतिसं सयत्त स्वामी ह । मिथ्याएणिले लेकर प्रमत्तसयत्त तक बन्धाध्यात है ।
वन्धवुच्छेदस्थान सुगम है । सादि य अभुय बन्ध होता है, क्योंकि, वे अभुयवन्धी ह ।

मिथ्यात्व, नपुसकप्रेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृष्टादिकामहनन,
आताप और म्थार नामकर्मका कौन बंधक और कौन अनन्धक है ? ॥ २६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्याएणि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, वेप अनन्धक हैं ॥ २६४ ॥

मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युत्पिच्छ होते हैं । नपुसकप्रेद, हुण्ड
संस्थान, असंप्राप्तसृष्टादिकासहनन, एकेन्द्रिय, आताप और म्थावर नामकर्मका केवल
बन्ध-वुच्छेद ही है, क्योंकि, यहा इनके उदयका अभाव है । मिथ्यात्वका स्वोदयसे बन्ध
होता है, क्योंकि, उदयके अभावमें उसका बन्ध पाया नहीं जाता । नपुसकप्रेद, हुण्ड
संस्थान, असंप्राप्तसृष्टादिकासहनन, एकेन्द्रिय, आताप और म्थावरका बन्ध परोदय

सुगममेद । कुन्दे ? अपमत्तमजदा चेव बधआ, उवरि तेउलेस्साए अभावादो ।

तित्थयरणामाणं को वंधो को अवंधो ? असंजदसम्माइट्ठी जाव
अपमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २७० ॥

सुगम । णवरि देव मणुससामीओ बधो । एउ तेउलेस्साए एसा^१ परूवणा कदा ।
जहा तेउलेस्साए परूवणा कदा तहा पम्मलेस्साए वि कायन्वा । णवरि पुरिसवेदस्स अम्हि
सातरो बधो परूविदो तम्हि सातर णिरंतरो ति वत्तन्वो, पम्मलेस्सियतिरिक्ख भणुस्सेसु
पुरिसवेद मोत्तुण अण्णवेदस्स बधामावादो । जासि पयडीण बधस्स देवा चेव सामी
तासिमित्थिवेदपच्चओ अवणेयव्णो, देवेषु पम्मलेस्साए इत्थिवेदाणुवलमादो । पचिंदिय-
तमेपयडीण बधो णिरंतरो ति वत्तन्वो, तेउलेस्साए एदासि बधस्स सांतर-णिरंतरत्तुवलमादो ।
ओरालियसरीरअगोउगस्स बधो परोदओ । णिरंतरो, पम्मलेस्साए अगोवगेण विणा बधामावादो ।
पम्मलेस्साए पयडिवधगयभेदपरूवणइमाह—

यह सुन सुगम है । कारण कि अप्रमत्तसयत ही बन्धक हैं, क्योंकि, इससे
ऊपरके गुणस्थानोंमें तेजोलेइयाका अभाव है ।

नीयकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? असयतसम्यग्दृष्टियोंसे
लेकर अप्रमत्तसयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २७० ॥

यह सुन सुगम है । निशेष इतना है कि इसके बन्धके स्वामी देव व मनुष्य हैं ।
इस प्रकार तेजोलेइयाका आश्रयकर यह प्ररूपणा की गई है । जिस प्रकार तेजोलेइयामें
प्ररूपणा की है उसी प्रकार पद्मलेइयामें भी करना चाहिये । विशेषता यह है कि पुरुष
वेदका जहा सान्तर बन्ध कहा गया है वहा 'सान्तर निरन्तर' ऐसा कहना चाहिये,
क्योंकि, पद्मलेइया युक्त तिर्यच व मनुष्योंमें पुरुषवेदको छोड़कर अन्य वेदके बन्धका
अभाव है । जिन प्रकृतियोंके बन्धके देव ही स्वामी हैं उनके खीवेद प्रत्ययको कम करना
चाहिये, क्योंकि, देवोंमें पद्मलेइयामें खीवेद नहीं पाया जाता । पचेन्द्रिय जाति और व्रत
प्रकृतियोंको बन्ध निरन्तर होता है, ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, तेजोलेइयामें इनके
बन्धके सान्तर निरन्तरता पाई जाती है । औदारिकशरीरागोपागका बन्ध परोदयसे होता
है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, पद्मलेइयामें अगोपागके बिना बन्धका अभाव है ।
पद्मलेइयामें प्रकृतिबन्धगत भेदके प्ररूपणार्थ आगेका सूत्र कहते हैं—

त जहा— यत्रो परोद्वो, तेजलेम्साए सगुणद्वानेसु सोदण धधविरोहादो ।
 गिरतरो, अतोमुहत्तेण निणा वधुनरमाभावादो । पन्चया सुगमा, ओघानिसमादो । नरि
 तिसु वि गुणद्वानेसु ओरात्रियदुग पेअवियमिस्स-कम्मइय णउमयेदपन्चया अणयेयन्वा ।
 मणुसगइसजुत्तो । देवा चेव सामी । मिच्छादिदि सामणमम्मादिदि अमजदसम्मादिदि ति
 वपद्धान । वपवोच्छेदो सुगमो । यत्रो सादि अजुत्रो ।

देवाउअस्म ओघभगो ॥ २६८ ॥

एडेण सुइत्थपरूणा कीदे । त जहा— यत्रो परोद्वो, सोदण धधविरोहादो ।
 गिरतरो, अतोमुहत्तेण निणा वधुनरमाभावादो । पन्चया ओघतुल्ल । नरि ओघे वि
 वेअवियदुगोरात्रियमिस्स कम्मइयपन्चया अणयेयन्वा । उघो देवगइसजुत्तो । निरिक्ख
 मणुसमीओ । वपद्धान सुगम । अपमत्तद्वाए सरेज्जे भागे गतूण धधवोच्छेदो ।
 सादि अजुत्रो यत्रो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवगणामाणं को वधो को अवधो ?
 अपमत्तसज्जा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २६९ ॥

यह हम प्रकार है— वन्ध उसका परोक्ष होता है, क्योंकि तेजोलेख्यामें सगुणस्थानोंमें सोदयने उसमें वधका विरोध है । निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, अन्तमुहर्तके निना उसमें वधविधामात्रा अभ्यास है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, उनमें ओघने कोई भेद नहीं है । विशेष इतना है कि तैनों ही गुणस्थानोंमें औदारिकृदिक, वैश्वियरमिध, कामण और मनुष्यजैव प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिसयुक्त वन्ध होता है । देव ही स्वामी हैं । मिथ्यादाष्टि, साक्षादनसम्यग्दष्टि और असत्यसम्यग्दष्टि, यह वधाभ्यास है । वधयुक्ते सुगम है । सादि व अधुव वध होता है ।

देवायुकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६८ ॥

इस मंत्रमें सूचित अश्वी प्ररूपणा करते हैं । यह हम प्रकार है— वन्ध उसका परोक्ष होता है क्योंकि स्वोदयसे इसके वधका विरोध है । निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, अन्तमुहर्तके निना उसके वधविधामात्रा अभ्यास है । प्रत्यय ओघके समान है । विशेष इतना है कि ओघमें भी वैश्वियरमिध, औदारिकृदिक और कामण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । देवगतिसयुक्त वध होता है । तिर्यक और मनुष्य स्वामी हैं । वधाभ्यास सुगम है । अपमत्तकालके सत्यात बहुभाग जाकर वधयुक्ते होता है । सादि व अधुव वध होता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवधक है ? अपमत्तसत्य वधक है । ये वन्धक है, शेष अवधक हैं ॥ २६९ ॥

जाव पमत्तसज्जो ति वधो सातरो, एगसमएण नि धधुवरमदसणादो । उरि गिरतरो, पडिवन्त्तपयडिवधाभावादो । मिच्छाइडि-सासणसम्मादिट्ठीसु उच्चागोदस्म वधो सातर-गिरतरो, सुक्कलेस्मियतिरिन्त्त-मणुस्सेसु गिरतरवधुवलमादो । उरि गिरतरो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छाइडि-सासणसम्मादिट्ठिपच्चएसु^१ ओरालियमिस्मपच्चओ अनण्येय्वो, तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइडि सामणसम्मादिट्ठीणमपज्जत्तकाले सुहतिलेस्साणममावादो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मादिट्ठि-असज्जदसम्मादिट्ठीसु वधो देव मणुसगइसज्जुतो । उवरि देवगइसज्जुतो चेव, अण्णगइवधाभावादो । तिगइमिच्छादिट्ठि-मासणसम्मादिट्ठि-सम्मादिट्ठि-असज्जदसम्मादिट्ठिणो दुगइसज्जदासज्जदा मणुसगइमज्जदा च सामी । वधद्धाण वधवोच्छिण्णद्धाण च सुगम । धुवनधीण मिच्छाइडिम्हि वधो चउव्विहो । सासणादीसु तिविहो, धुवनधाभावादो । सेसाण सादि अहुवो, अहुवनत्तादो ।

एगट्ठाण-नेट्ठाणपयडीओ ठनिय उवरिमाओ तान पल्लवमो— णिदा-पयलाण पुध्व वधो

सातर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी बड़ा उसका बन्धविश्राम देखा जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उच्चगोत्रका बन्ध सान्तर निरन्तर होता है, क्योंकि, शुक्ललेदयानाले तिर्यच और मनुष्योंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके प्रत्ययोंमेंसे औदारिकमिथ प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यच और मनुष्य मिथ्यादृष्टि एव सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें शुभ तीन लेदयामोंका अभाव है ।

मिथ्यादृष्टि सामादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त बन्ध होता है । ऊपर देवगति सयुक्त ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहाँ अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, तथा मनुष्यगतिके सयत स्नामी है । बन्धाघ्यान और बन्धन्युच्छिन्नस्थान सुगम है । ध्रुवयन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चार प्रकारका बन्ध होता है । सासादनादिक गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहाँ उनके ध्रुव बन्धका अभाव है । दोष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवयन्धी हैं ।

परस्थानिक और द्विस्थानिक प्रकृतियोंको छोड़कर उपरिम प्रकृतियोंकी प्ररूपणा

पम्मलेस्सिएसु मिच्छत्तदंडओ णेरइयमंगो ॥ २७१ ॥

एइय-आदान-यासण वसामासओ । एत्तिओ चैव भेदो, अण्णो णत्तिव । जदि अत्ति सो चित्तिव वत्तव्वे ।

सुक्कलेस्सिएसु जाव तित्थयरे त्ति ओधमंगो ॥ २७२ ॥

एदेण मूहदयपरुत्तणा कीरदे— पचणाणावरणीय चउदमणावरणीय-पचतरादयाण पुत्त वधो पच्छा उवओ वोच्छि-चदि, सुहमयापगइय-खीणरूपाएसु वधोदयवोच्छेदुवलभाओ । समस्सित्ति उच्चगोदाण पि एव चैव वत्तव्व । णवरि उदयवोच्छेदो एत्थ णत्तिव, अजोगिम्हि उदयवोच्छेदउत्तणाओ । पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-पचतरादयाण सोदओ वधो, धुवोदयताओ । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असजदसम्मादिहि त्ति जसक्कित्तीए सोदय परोदओ । ठरि सोदओ चैव वधो, पडिक्कसुत्तयामाओ । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजओ त्ति उच्चगोदवधो सोदय परोदओ । ठरि सोदओ चैव, णीचागोदुदयामाओ । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय पचतरादयाण वधो णित्तो, धुववत्तिताओ । जसक्कित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि

पद्मलेश्यामले जीवोंमें मिथ्यात्वदण्डककी प्ररूपणा नारकियोंके समान है ॥ २७१ ॥

क्योंकि, उनके एकेन्द्रिय, आत्मप और स्थावरके बन्धका अभाव है । केवल इतना ही भेद है, और कुछ भेद नहीं है । यदि कुछ भेद है तो उसे विचारकर कहना चाहिये ।

शुनल्लेश्यामले जीवोंमें तीर्थकर प्रकृति तक ओधके समान प्ररूपणा है ॥ २७२ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करत हैं— पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक और क्षीणकषाय गुणस्थानोंमें नमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । यशकीर्ति और उच्चगोत्रके भी इसी प्रकार कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उनका उदय व्युच्छेद यहा नहा है, क्योंकि, अयोगकेरली गुणस्थानमें उनका उदय व्युच्छेद देखा जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं । मिथ्यादृष्टिसे लेकर असत्यतसम्बन्धित तक यशकीर्तिका स्वोदय-परोक्ष बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर समयतसयत तक उच्चगोत्रका बन्ध स्वोदय परोक्ष होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा नीचगोत्रके उदयका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रसक्तसयत तक

परोदओ । उवरि परोदओ चेव, जसकितीए णियमेणुदयदसणादो । छण्ण पि पयडीण वधो सातरो, एगसमएण वि वधुवरमदसणादो । पच्चया ओघतुल्ला । णवरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो । मिच्छादिट्ठि सासणसम्मादिट्ठि-सम्मादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु ठण्ण पयडीण वधो देव मणुसगइसजुतो । उवरि देवगइसजुतो । तिगइअसजदा दुगइसजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । वधद्धाण वपवोच्छिठ्ठणद्वाण च सुगम । यओ छण्ण पि सादि अट्ठो, जडुववधितादो ।

अपच्चक्खाणावरणीयस्स वधोदया सम वोच्छिठ्ठणा, असजदसम्मादिट्ठिहि दोण्ण वोच्छेदुवलमादो । सेसाण वधोवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाणुवलमादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स सोदय-परोदएण वि वधो, अट्ठोवोदयत्तादो । अवसेसाण वधो परोदओ, सुक्कलेस्साए सव्वगुणद्वाणेषु सोदएणेदासिं वधविरोहादो । अपच्चक्खाणचउक्क मणुसगइदुगोराणियदुगाण यओ णिरतरो, एगसमएण वधुवरमाभावादो । वज्जरिसहसघडणस्स मिच्छादिट्ठि सासण सम्मादिट्ठीसु वधो सातरो । उवरि णिरतरो, पडिवक्खपयडिअभावादो । पच्चया सुगमा ।

हे । ऊपर परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा नियमसे यशकतिरिक्ता उदय देखा जाता है । छहों प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है । प्रत्यय ओपके समान ह । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि ओर सासादन-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये । मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें छहों प्रकृतियोंका बन्ध देव और मनुष्य गतिसे सयुक्त होता है । ऊपर देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके असयत, दो गतियोंके सयतासयत, और मनुष्यगतिके सयत स्वामी ह । बन्धाध्यान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम ह । छहों प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अधुव होता है, क्योंकि, ये अधुवबन्धी ह ।

अप्रत्याप्यानावरणीयका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते ह, क्योंकि, असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध व्युच्छेद ही है, क्योंकि, उनका उदयव्युच्छेद नहीं पाया जाता । अप्रत्याप्यानचतुष्कका स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवोदयी है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध परोदय होता है, क्योंकि, शुक्ललेख्यामें सब गुणस्थानोंमें स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । अप्रत्याप्यानपरणचतुष्क, मनुष्यगतिके ओर औदारिकदृष्टिकका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है । वज्रपर्मसहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सांतर बन्ध होता है । ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम ह ।

पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, अपुन-सीणरुमाएसु वधोदयवोच्छेदुवलमादो । सोदय-परोदओ वधो, अहुवोदयत्तादो । णित्तरो वधो, धुवधवित्तादो । पच्चया सुगमा । णवरी मिच्छाद्वि सासणसम्मादिद्वीसु ओरालियमित्सपच्चओ अणयेव्वो । मिच्छाद्वि सासणसम्मादिद्वि सम्मामिच्छादिद्वि-असजदसम्मादिद्वीसु देव-मणुसगइसजुत्तो । उअरि देवगइमजुत्तो । निगइ-मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छादिद्वि-अमजदसम्मादिद्विणो दुगइमजदसजद मणुसगइसजदा च सामी । पवद्धाण सुगम । अपुनरुणद्धाए सरोज्जदिभाग गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।

असादावेदणीयस्स पुन वधो वोच्छिण्णो । उदयरोच्छेदो णत्थि । अरदि-सोगाण पुव्वं वधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, पमत्तापुव्वेसु वधोदयरोच्छेदुवलमादो । अधिर-असुमाण वधवोच्छेदो चेन, सुनकलंस्मिएसु सव्वत्युदयदसणादो । अनसकितीए पुव्वमुदयस्स पच्छा वधस्स वोच्छेदो, पमत्तासजदसम्मादिद्वीसु वधोदयवोच्छेदुवलमादो । असादावेदणीय-अरदि-सोगाण वधो सोदय परोदओ, अहुवोदयत्तादो । अधिर-असुहाण सोदओ चेव, धुवोदयत्तादो । अजमकितीए मिच्छाद्विप्पहुडि जान जमजदसम्मादिद्वि ति सोदय-

करते ह— निद्रा और प्रचलाना पूर्वमें वध व्युत्तिष्ठ होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और क्षीणन्याय गुणस्थानोंमें प्रमत्तसे उनके वध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। स्रोदय-परोदय वध होता है, क्योंकि, ये अधुवोदयी हैं। निरन्तर वध होता है, क्योंकि, वे मृगशी हैं। प्रत्यय सुगम है। विशेष इतना है कि मिथ्याद्वि और सासादन सम्मगद्वि गुणस्थानोंमें आदादिरमिध प्रत्ययको वम करना चाहिये। मिथ्याद्वि, सासादन सम्मगद्वि, सम्मगिमिथ्याद्वि और असयतसम्मगद्वि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त वध होता है। ऊपर देवगतितसे संयुक्त वध होता है। तीन गतियोंके मिथ्याद्वि, सासादनसम्मगद्वि, सम्मगिमिथ्याद्वि और असयतसम्मगद्वि, दो गतियोंके सयतामयत, तथा मनुष्यगतिके सयन स्वामी हैं। वधाध्वान सुगम है। अपूर्वकरणकालके सख्यातवै भाग जाकर वध व्युत्तिष्ठ होता है।

असादावेदनीयका पूर्वमें वध व्युत्तिष्ठ होता है। उदयव्युच्छेद नहीं है। अरति और शोकका पूर्वमें वध और पश्चात् उदय व्युत्तिष्ठ होता है, क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्व करण गुणस्थानोंमें प्रमत्तसे उनके वध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। अस्थिर और अनुमका वध व्युच्छेद ही है, क्योंकि, शुक्लहेत्यावाले जीवोंमें सयन उनका उदय देखा जाता है। अयशशीतिके पूर्वमें उदयका और पश्चात् वधका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, प्रमत्त और असयतसम्मगद्वि गुणस्थानोंमें उसने वध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है।

असादावेदनीय, अरति और शोकका वध स्रोदय परोदय होता है, क्योंकि, ये अधुवोदयी हैं। अस्थिर और अनुमका स्रोदय ही वध होता है, क्योंकि, वे धुवोदयी प्राणीतिका मिथ्याद्विसे लेकर असयतसम्मगद्वि तक स्रोदय परोदय वध होता

वेउवियमिस्स कम्मइय-इत्थि णउसयवेदपच्चया अण्णेदच्चा । मणुमगइसजुत्तो । देवा सामी । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असजदसम्मादिट्ठिणो त्ति बधद्धान । बधवोच्छिण्णद्धान सुगम । सादि-अद्भुवो बधो, अद्भुववित्तादो ।

देवाउअस्स पुव्वमुदयस्स पच्छा बधस्स वोच्छेदो, अप्पमत्तासजदसम्मादिट्ठीसु बधोदयवोच्छेदुवलभादो । परोदओ बधो, सोदएण बंधविरोहादो । णिरतरो, अतोमुहुत्तेण विणा बधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । णरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असजदसम्मा-दिट्ठीसु वेउवियदुगोरात्थिमिस्स-कम्मइयपच्चया अण्णेयच्चा । देवगइसजुत्तो बधो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाय सजदासजदा त्ति तिक्खि मणुसा सामी । उवरि मणुसा चैव । बधद्धान सुगम । अप्पमत्तद्धान सखेज्जे भागे गतूण बधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्भुवो, अद्भुववित्तादो ।

देवगइ-वेउवियदुगाण पुव्वमुदयस्स पच्छा बधस्स वोच्छेदो, अपुव्वासजदसम्मादिट्ठीसु बधोदयवोच्छेदुवलभादो । अवसेसाण पयडीण बधवोच्छेदो चैव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्छेदाणुव-लभादो । देवगइ-वेउवियदुगाण परोदओ बधो, सोदएण बंधविरोहादो । पच्चिदियजादि तेजा-

और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकद्विफ, वैक्रियिकमिथ्र, कार्मण काययोग, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिसयुक्त बन्ध होता है । देव स्वामी हैं । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान बन्धाघ्नान हैं । बन्ध युच्छेदस्थान सुगम है । सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवगन्धी है ।

देवायुके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, खोदयसे उसके बन्धका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें वैक्रियिकद्विफ, औदारिकमिथ्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । देवगतिसयुक्त बन्ध होता है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयतासयत तक तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं । ऊपर मनुष्य ही स्वामी हैं । बन्धाघ्नान सुगम है । अप्रमत्तकालके सख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवगन्धी है ।

देवगतित्थि और वैक्रियिकद्विफके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण व असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः उनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, शुक्कलेस्यामें उनका उदयव्युच्छेद नहीं पाया जाता । देवगतित्थि और वैक्रियिकद्विफका परोदय बन्ध

हस्म-रदि भय-दुगुञ्जण वधोदया सम वोच्छिच्छणा, अपुञ्जकरणचरिसमए तदुदय-
वोच्छेददसणादो । वधो मोदय परोदयो, अदुयोदयत्तादो । मिच्छाद्विष्टिपुहुडि जान पमतसजदो
ति हस्म रदीण वधो सातरो । उर्वरि निरतरो, पडिवक्कपयडिन्धाभातदो । भय दुगुञ्जण
णिगते, धुवधित्तादो । पचया सुगमा । णवरि मिच्छाद्विष्टि सासणसम्मादिद्वीसु ओरालियमिस्स
पचओ अणयव्वो । मिच्छादिष्टि सासणसम्मादिष्टि सम्मामिच्छादिष्टि-अमजदसम्मादिष्टीसु
मणुम देवगइसजुत्तो । उर्वरि देवगइसजुत्तो अगइसजुत्तो च । निगइमिच्छादिष्टि-सामणसम्मादिष्टि
सम्मामिच्छादिष्टि असज्जसम्मादिष्टिणो दुगइसजदामजदा मणुसगइसजदा च मामी । वधद्वान
वधवोच्छिच्छणादो च सुगम । भय दुगुञ्जण मिच्छाद्विष्टि चउत्तिहो वधो, धुवधित्तादो ।
उर्वरि तिपिहो, अभाभातदो । हस्म रदीण सव्वत्थ सादि अदुयो, अदुवधित्तादो ।

मणुमाउअस्म वधोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदययोच्छेदाणुवलभादो । परोदओ नवो,
सुक्कलेस्साए सव्वत्थ सोदएण वधविरोहादो । निरतरो, अतोमुहुत्तेण विणा वधुवरमाभावादो ।
पचया सुगमा । णवरि मिच्छादिष्टि-सामणसम्मादिष्टि असजदसम्मादिष्टीसु ओरालियदुग

हास्य, रति, भय और जगुप्ताका वध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते
हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है । वध
उनका स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, वे अधुवोदयी हैं । मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत
तक हास्य व रतिका सातर वध होता है । ऊपर निरन्तर वध होता है, क्योंकि, वहा
प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके वधका अभाव है । भय और जगुप्ताका निरन्तर वध होता है,
क्योंकि, वे धुवधधी हैं । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सामान्य
सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये । मिथ्यादृष्टि,
सामान्यसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्य और
देव गतिसे सयुक्त वध होता है । ऊपर देवगतिसयुक्त और अगनिसयुक्त वध होता है ।
तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सामान्यसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्
दृष्टि, दो गतियोंके सयतामयत, तथा मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । वन्धाध्वान और
वन्धायुच्छिन्नस्वान सुगम हैं । भय और जगुप्ताका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें आरों
प्रकारका वध होता है, क्योंकि, वे धुवधधी हैं । ऊपर तान प्रकारका वध होता है,
क्योंकि, वहा धुवधन्धना अभाव है । हास्य और रतिका सत्र सादि व अधुव वन्ध होता
है, क्योंकि, वे अधुवध धी हैं ।

मनुष्यायुका केवल वध युच्छेद ही होता है, क्योंकि, शुक्ललेष्ट्यामें उसका उदय
युच्छेद नहीं पाया जाता । परोदय वध होता है, क्योंकि, शुक्ललेष्ट्यामें सर्वत्र स्वोदयसे
उसके वन्धका विरोध है । निरन्तर वध होता है, क्योंकि, अतर्मुह्यते विना उसके वध
विधामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि, सामान्यसम्यग्दृष्टि

सातरनधुवल्मादे । उतरि गिरितरो, पडिअस्तपयडिअवाभावादे । थिर-सुमाण मिच्छाइडिण्डिहुडि जाव पमत्तमजदे ति सातरो । उतरि गिरितरो, पडिअस्तपयडिअवाभावादे ।

पच्चया सुगमा । देवगडवेउअियदुगाण वधो देवगइमजुतो । सेसाण पयडीण मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि असजदसम्मादिट्ठिमु देअ-मणुसगइसजुतो । उतरि देवगइसजुतो । देवगइवेउअियदुगाण दुगइमिच्छादिट्ठि-सामणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि असजदसम्मादिट्ठि-सजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । अससेसाण पयडीण ववस्स तिगइमिच्छादिट्ठि-सामणसम्मादिट्ठि सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठिणो दुगइमजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । यधद्धान सुगम । अपुव्वअरणद्धाए सखेजे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुलहुअ-उवघाद-णिमिणाण' मिच्छाइडिण्डि पवो चउअिहो । उतरि तिविहो, अुवघिच्चादे । सेसाण पयडीण सादि-अहुवो वधो ।

आहारदुगस्स ओअभगो । तिथयरस्स नि ओअभगो । दुगइ असजदसम्मादिट्ठिणो मणुस-

पाया जाता है ।

ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, जहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसत्यत तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, जहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है । देवगति और अक्रियरुद्धिकका बन्ध देवगतिसंयुक्त होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि, आसादनसम्यग्दृष्टि और असत्यसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिमें संयुक्त होता है । ऊपर देवगतिसे संयुक्त होता है ।

देवगति और अक्रियरुद्धिकके दो गतियोंके मिथ्यादृष्टि, आसादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि असत्यसम्यग्दृष्टि व सत्यतासत्यत, तथा मनुष्यगतिके सत्यत स्वामी है । शेष प्रकृतियोंके बन्धके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, आसादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सत्यतासत्यत, तथा मनुष्यगतिके सत्यत स्वामी है । यथाधान सुगम है । अपूर्वकरणकालके मर्यादा बहुभाग जाकर बन्ध व्युत्पन्न होता है ।

तैजस व फर्माण शरीर, चर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपजात और निर्माणका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवग्रन्थी हैं । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुन बन्ध होता है ।

आहाररुद्धिककी प्ररूपणा ओषके समान है । तीर्थंकर प्रकृतिनी भी प्ररूपणा ओषके समान है । विशेषता इतनी है कि उसके दो गतियोंके असत्यसम्यग्दृष्टि और

कम्मइयसरीर-वण्ण-गध रम फास अगुस्सल्लहुअ-तम-नादर पज्जत्त-धिर सुह निमिणाण सोदओ
 यथो, एत्थ धुरोदयत्तादो । समचउरममठाण पमत्तविहायगइ-सुस्सराण सोदय-परोदओ,
 उभयहा पि व गतिरोहादो । उपघाद-परघादुस्साम-पत्तेयमरीराण-मिच्छादिट्ठि-भासणमम्मादिट्ठि
 असनदमम्मादिट्ठिसु यथो मोदय परोदओ । अण्णत्थ सोदओ चेत्त, अपज्जत्तद्धामायादो ।
 णवरि पमत्तमज्जेदु परघादुस्सासाण सोदय परोदओ । सुभगादेज्जाण मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव
 जसपदसम्मानिट्ठि ति यथो सोदय परोदओ । ऊपरि सोदओ चेत्त, पडिअकुदयाभायादो ।
 देवगइ परिदियजादि वेअणिय-तेजा नम्मइयसरीर-वेअणियसरीरअधोवग-वण्ण रम-गध-फास-
 देवग-पाओगाणपु गी-अगुस्सल्लहुअ उवघाद-परघाद उस्साम-तम नादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-
 निमिणाणामाण निरत्तो यथो, एत्थ धुअपित्तुलभादो । समचउरमसठाण पसत्तविहायगइ-
 सुभग सुस्सर-आदेज्जाण मिच्छादिट्ठि सासणमम्मादिट्ठिसु मात्त निरत्तो । होदु णाम सुक्खेस्सिय-
 तिरिक्ख-भणुस्सेसु देवगइसज्जुत्त यधमाणेसु निरत्तो यथो, ण सान्तो ? ण, देवेसु सुक्खेस्सिणसु

होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बाधना निरोध है । पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कामज शरीर,
 घण, गध रस, स्पर्श, अगुस्सल्लहुअ प्रस, घादर पर्याप्त, स्विदर, शुभ और निर्माणका
 स्वोदय पञ्च होता है, क्योंकि, यहा ये धुरोदयी हैं । समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्तविहायो
 गति और सुस्वरका स्वोदय परोदय पञ्च होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे ही इनके
 बाधमें कोई निरोध नही है । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येक शरीरका मिथ्यादृष्टि,
 सासादनसम्यग्दृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बाध होता है ।
 अन्य गुणस्थानोंमें स्वोदय ही पञ्च होता है, क्योंकि, यहा अपर्याप्तकालका अभाव है ।
 विशेषता इतनी है कि प्रसक्तमयतोंमें परघात और उच्छ्वासका स्वोदय परोदय बाध
 होता है । सुभग और आदयका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असत्यतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय परोदय
 बाध होता है । ऊपर स्वोदय ही बाध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके
 उदयका अभाव है ।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, येनिविक्ख, तैजस व कामज शरीर, चक्रियिकुदरीरामोपाग
 घण, रस, गध, स्पर्श, देवगतिप्रायाग्यानुपूर्वो, अगुस्सल्लहुअ उपघात, परघात, उच्छ्वास
 प्रस, नादर, पर्याप्त प्रत्येक शरीर और निर्माण ज्ञानमर्मोंका निरन्तर बाध होता है
 क्योंकि, यहा इनमें धुरोदय गीपना पाया जाता है । समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्त
 विहायोगति, सुभग, सुस्सर और आदयका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें
 सात्तर निरन्तर बाध होता है ।

शुक्रा—इन प्रवृत्तियोंमें देवगतिसे मनुक बाधोवाले शुक्ललेइयावाले तिर्यक्
 मनुष्योंमें निरन्तर बाध मल ही हो, परन्तु सात्तर बाध होना सम्भव नहीं है ?

समाधान—येसा नही है, क्योंकि, शुक्ललेइयावाले देवोंमें उनका सात्तर बाध

अभवसिद्धिः पंचाणावरणीय णवदंसणावरणीय-सादासाद-
मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-चदुआउ-चदुगह-पंचजादि-ओरा-
लिय वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगो-
वंग छसंघडण वण्ण-गंध रस-फास-चत्तारिआणुपुव्वी अगुरुवलहुव-उव-
घाद परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगह-तस-चादर थावर-सुहुम-
पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग दुभग-
सुस्सर दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-
णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ २७६ ॥

सुगम ।

सन्वे एदे बंधा, अवंधा णत्थि ॥ २७७ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थपरूवणा कीरदे— एदासु पयडीसु एत्थ ण कासिं पि
षधोदयवोच्छेदो अत्थि, उवलममाणाण वोच्छेदविरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-

अमव्यसिद्धिक जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता
वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, नौ नोक्रपाय, चार आयु, चार गतिया, पाच जातियां,
औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह सस्यान, औदारिक व वैक्रियिक अगोपाग,
छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, चार आनुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास,
आताप, उद्योत, दो विद्यायोगतिया, तम, दाढर, स्थावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक,
साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय
यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊच गोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक
और कौन अनन्धक है ? ॥ २७६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ये सभी बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २७७ ॥

इस देशामर्शक सूत्रके-अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— इन प्रकृतियामें यहा किन्हीं
के भी षष्ठ और उदयका व्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, विद्यमान होनेसे उन दोनोंके व्युच्छेदका
विरोध है । पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, तैजस व कार्मण शरीर,

सादि अद्भुतो, अद्भुतवर्णितो ।

मिच्छत णवुसयवेद-हुडसठाण-असपत्तसेरुसपठणाणि पगट्ठाणपयडीओ । एत्थ मिच्छतस्स णधोदया सम चोच्छिण्णा, मिच्छाद्विद्धि चेत्त तदुद्दयदसणादो । णउमयवेद-असपत्तमेरुमघडणाण पुत्त ववो पच्छा उदओ वेच्छिज्जदि, तहोत्तलभादो । हुडसठाणस्स वधवेच्छेदो चेव, सुत्तलेम्माए उदयवेच्छेदभागादो । मिच्छतस्स वधो सोदओ । सेसाण तिण्ण पि परोदओ । मिच्छतस्स पित्तरो । मेसाण मात्तरो । मिच्छतस्स दुग्गइसज्जतो । सेमाण मणुसगइसज्जतो । मिच्छतस्स तिग्गया मामी । मेमाण देवा । वधट्ठाण वधवेच्छिण्णट्ठाण च सुग्गम । मिच्छतस्स चउत्तिहो वधो । मेमाण सादि अद्भुतो ।

भविष्याणुवादेण भवसिद्धियाणमोघं ॥ २७५ ॥

णत्थि एत्थ ओषपरूवणादो को वि विसेसो, तेण ओषमिदि जुज्जदे ।

क्योंकि, ये अधुन बंधी हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसस्थान और असंप्राप्तस्वपाटिकासहनन, ये एकस्थान प्रकृतिया हैं । इनमें मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साधमें व्युत्पन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादष्टि गुणस्थानमें ही ये दोनों देखे जाते हैं । नपुंसकवेद और असंप्राप्त स्वपाटिकासहननका पूरमें बंध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है, क्योंकि, धैमा पाया जाता है । हुण्डसस्थानका बंध व्युच्छेद ही है, क्योंकि, शुक्लनेदयामें उसके उदयव्युच्छेदका अभाव है । मिथ्यात्वका बंध स्तोदय होता है । शेष तीनों प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है । मिथ्यात्वका निरंतर और शेष प्रकृतियोंका सांतर बन्ध होता है । मिथ्यात्वका दो गतियोंसे संयुक्त बंध होता है । शेष प्रकृतियोंका मनुष्यगतितसे संयुक्त बन्ध होता है । मिथ्यात्वके बंधके तीन गतियोंके जीव स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं । बंधाभ्यास और बंधव्युत्पन्नस्थान सुग्गम हैं । मिथ्यात्वका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुन बंध होता है ।

भविष्यमाणानुसार भवसिद्धिके जीवोंकी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ २७५ ॥

चूंकि यहां ओषप्ररूपणासे कोई भेद नहीं है अत एव 'ओषके समान है' ऐसा कहना योग्य है ।

पुरिसेवेदस्स षण्णो सातर-णिरतरो । कुदो ? पम्म-सुक्कलेस्सिएसु णितरबधुवलभादो । देवगइ-पचिंदियजादि-वेउव्वियसरीर-समचउरससठाण वेउव्वियसरीरअगोवग-देवगइपाओग्गाणु-पुव्वी-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाण सातर-णिरतरो बवो । कुदो ? असखेज्जवासाउअ-सुहत्तिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णितरनधुवलभादो । मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीण बवो सातर-णिरतरो । कुदो ? आणदादिदेनेसु णितरनधुवलभादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाण षण्णो सातर-णिरतरो । कुदो ? तेउ-वाउ-काइएसु सत्तमपुढवीणेरइएसु च णितरबधुवलभादो । ओरालियसरीर ओरालियसरीरगोवगाण सातर-णिरतरो, सणक्कुमारादि-देव-गेरइएसु णितरनधुवलभादो ।

सध्वकम्माण पचवचास पच्चया । णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआण तेवचास पच्चया, वेउव्वियमिस्स कम्मइयपच्चयाणमभावादो । देव-णिरयाउआण एकवचास पच्चया, वेउव्वियदुगोरालियमिस्स कम्मइयपच्चयाणमभावादो । देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरगोवगाणमेक्कनचास पच्चया, वेउव्विय-

जाता है । पुरुषवेदका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेइयायाले जीवोंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । वेगति, पचेन्द्रियजाति, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरागोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, ब्रह्म, यादर, पर्यान्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असंख्यातयर्षायुष्क और शुभ तीन लेइयायाले तिर्य्यच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । तिर्य्यगति, तिर्य्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेज व वायु कायिक जीवोंमें तथा सप्तम शृथिर्वाके नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । औदारिकशरीर और औदारिकशरीरागोपांगका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सनत्कुमारादि देव व नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सब कर्मोंके पचवन प्रत्यय हैं । विशेष इतना है कि तिर्य्यगायु और मनुष्यायुके तिरपन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र और कर्मण प्रत्ययोंका अभाव है । देवायु और नारकायुके इष्यावन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकद्विक, औदारिकमिश्र और कर्मण प्रत्ययोंका अभाव है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरागोपांगके इष्यावन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकद्विक,

मिच्छत-तेना कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-थिराधिर-सुहासुइ-णिमिण-पचतराइयाण
 सोदओ बधो । पचदसणाउरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-णवणेकसाय तिरिक्ख-मणुस्साउ-
 तिरिक्ख-मणुमगइ-पचिंदियजादे-ओरात्थियसरीर-ऊसठाण-ओरात्थियसरीरगोउग-छसघडण-
 तिरिक्ख मणुमगइपाओग्गाणुपुब्बी-उउवाइ-परघाद उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तम-
 भावर घादर-सुहुम-पज्जत अपज्जत पत्तेय साहारणसरीर-सुभग दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-
 अणादेज्ज-जमकित्ति-अजसकित्ति-णीबुच्चागोडाण सोदय परोदओ बधो । देवाउ-णिरपाठ-
 देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुब्बि णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुब्बी वेउत्थियसरीरगोवगाण परो
 दओ बधो, सोदएण बधविरोहादो ।

पचणाणाउरणीय णवदसणाउरणीय मिच्छत-सोलमकसाय-भय-दुगुछा-चत्तारिआउ-
 तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गध रम फाम-अगुरुअलहुअ उउवाइ णिमिण पचतराइयाण णिरतरा
 बधो, एगसमएण बधुवरमदमणादो । सादासाद इत्थि णठसयवेद-हस्स रदि अरदि-सोग-णिरयगइ-
 एइदिय-यीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि पचसठाण-छसघडण णिरयगइपाओग्गाणुपुब्बी-आदा-
 उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-भावर-सुहुम अपज्जत-साहारणसरीर थिराधिर सुहासुइ-दूभग दुस्सर-
 अणादेज्ज-जमकित्ति अजसकित्तीण सातरो बधो, एगसमएण बधुवरमदमणादो ।

यणांश्चि चार, अगुरुत्थु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तरायका
 स्तोदय बन्ध होता है । पाच दशनावरणीय, साता य असाता येदनीय, सोलह कपाय, नौ
 मोक्षपाय, तियगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर,
 छह सस्थान, औदारिकशरीरगोपान, छह सहनन, तिर्यग्गति य मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी,
 उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतिया, ब्रम, स्थायर, धावर,
 सूक्ष्म, पमाप्त, अपर्याप्त, मल्लेक य साधारण शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर,
 आदय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और नीच य ऊच्च गोत्रका स्तोदय परोदय बन्ध होता
 है । देवायु, नारकायु, देयगति, देयगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी
 और वैश्वियिक्काटीरगोपानका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्तोदयसे इनके बन्धका
 विराध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दशनावरणीय, मिथ्याय, मोलह कपाय, भय, जुगुप्सा,
 घाग आयु, तनस य कामण शरीर, धर्ण, गन्ध, रस, स्पश, अगुरुत्थु, उपघात, निर्माण
 और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविधामका
 अभाव है । साता य असाता येदनीय, स्वयिद, नपुमकवेद, हास्य रति, अरति, शोक,
 नरकगति, पचेन्द्रिय, दीन्द्रिय, यीन्द्रिय, चतुगिन्द्रिय जाति, पाच सस्थान, छह सहनन,
 नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अगस्त्यविहायोगति, स्थायर, सूक्ष्म, अपर्याप्त,
 साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, यशकीर्ति और
 अयशकीर्ति सातरो बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविधाम देखा

चेव । उदयबोच्छेदो णत्थि, खीणरूपायादिसु वि एदासिं पयडीण उदयदसणादो । तेण उदय-
बोच्छेदादो बधवोच्छेदो पुव्व पच्छा वा होदि ति विचारो णत्थि, सतासताण संणिगयास-
विरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराइयाण सोदओ बधो । जसकित्तीए
असजदसम्मादिट्ठीसु सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयामाणादो । उच्चा-
गोदस्म असजदसम्मादिट्ठी-मज्झिमासज्जेसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खु-
दयामावादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-उच्चागोद-पचतराइयाण बधो णिरतरो, धुव-
धत्तादो । जसकित्तीए अमज्झदसम्मादिट्ठीपहुडि जाव पमत्तसज्जेसु ति बधो सातरो । उवरि
णिरतरो, पडिवक्खुपयडिअभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि असजदसम्मादिट्ठीसु ओरा-
लियमिस्सपच्चओ, पमत्तसज्जेसु आहारदुगपच्चओ णत्थि । असजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं
पयडीण बधो देव मणुसगइमज्जुत्तो । उवरिमेसु गुणट्ठाणेषु देवगइसज्जुत्तो अगदसज्जुत्तो वा ।
चउगइअसजदसम्मादिट्ठी दुगइमज्झदासज्जा मणुमगइसज्जा सामीओ । बधट्ठाण बधवोच्छिण्ण-
ट्ठाण च सुगम । धुवधवीण तिनिहो बधो, धुनाभाणादो । अवसेसाण सादि-अहुवो, अहुव-
धत्तादो ।

रायका व-धन्युच्छेद ही है । उदय-युच्छेद नहीं है, क्योंकि, खीणरूपायादिक गुणस्थानोंमें
भी इन प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । इसी कारण उदय-युच्छेदसे उन्ध-युच्छेद पूर्वमें
या पश्चात् होता है, यह विचार नहीं है क्योंकि, सत् और असत्की तुलनाका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्योदय बन्ध
होता है । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्योदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्योदय
ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । उच्छगोत्रका
असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत गुणस्थानोंमें स्योदय परोदय उन्ध होता है । ऊपर
स्योदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदयामात्र है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, उच्छगोत्र और पांच अन्तरायका बन्ध
निरन्तर होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर
प्रमत्तसयत तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ऊपर
प्रतिपक्ष प्रकृतिके व-धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि असयतसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकमिथ प्रत्यय
और प्रमत्तसयतोंमें आहारकछिक प्रत्यय नहीं है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें इन प्रकृतियोंका
बन्ध देव व मनुष्य गतिमयुक्त होता है । उपरि गुणस्थानोंमें देवगतिसयुक्त या अगति
सयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, और
मनुष्यगतिके सयत स्त्रीमी है । बन्धाध्वान और उन्ध-युच्छिन्नस्थान सुगम है । ध्रुवबन्धी
प्रकृतियोंका तीन प्रकारका उन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष
प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुवबन्धी हैं ।

मिच्छतत्तेजा कम्मइयसरीर-वण्णचउत्तक-अगुरुअलहुअ थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पचतराइयाण सोदओ बधो । पचदमणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-णवणोकसाय तिरिक्ख-मणुस्साउ-तिरिक्ख-मणुसगइ-पंचिदियजादि-ओरालियसरीर-छसठाण-ओरालियसरीरगोवग-छसघडण-तिरिक्ख मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी-उवधाद-परधाद उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-धावर धादर सुहुम-अज्जत्त अपज्जत्त पत्तेय साहारणसरीर-सुभग-दूमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णीचुच्चगोदाण सोदय परोदओ बधो । देवाउ-णिरयाउ देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुब्बि-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुब्बी-वेउअवियसरीरगोवगाण परो दओ बधो, मोदएण बधविरोहादो ।

पचणाणारणीय णवदमणावरणीय मिच्छत-सोलसकसाय-भय-दुगुछा-चत्तारिआउ-तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण गध रस फास-अगुरुअलहुअ उवधाद णिमिण पचतराइयाण णिरतरो बधो, एगसमण्ण धधुवरमाभापादो । सादासाद इत्थि णउसयवेद-हस्स रदि अरदि-सोग-णिरयगइ-एइदिय-यीइदिय-तीइदिय चउरिदियजादि पचमठाण छसघडण णिरयगइपाओग्गाणुपुब्बी-आदा-उज्जोव-अप्पसत्थिगहायगइ-धावर-सुहुम अपज्जत्त साहारणसरीर थिराथिर सुहासुह-दूमग दुस्सर अणादेज्ज-जसकित्ति अजमकितीण सातरो बधो, एगसमण्ण धधुवरमदसणादो ।

पणाविक चार, मगुरुल्लु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अतरायका खोदय बंध होता है । पाच दर्शनावरणीय, साता य असाता येदनीय, सोलह कपाय, नौ नाकपाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्माति, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहनन, तिर्यग्गति य मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परधाद, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगनिया, ज्ञस, न्यावर, धादर, मूहम, पर्याप्त, अपयान्त, प्रत्येक य साधारण शरीर, सुभग, दुर्मग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और नीच य ऊंच गोत्रका खोदय परोदय बंध होता है । देवायु, नारकायु, देयगति, देयगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और वैश्वियिकशरीरागोपागका परोदय बंध होता है, क्योंकि, खोदयसे इनके बन्धका परोदय है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्त, सोलह कपाय, भय, लुगुप्सा, चार आयु तेजस य कामज शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्लु, उपघात, निर्माण और पाच अतरायका निरंतर बंध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविधामका अभाव है । साता य असाता येदनीय, खोदय, नपुंसकयेद, हास्य रति, अरति, शोक, नरकगति, पचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, पाच सस्थान, छह सहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अग्रशस्तविहायोगति, न्यावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्मग, दुस्वर, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सातर बंध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविधाम देखा ।

अनोवग-गिरयगइ-देवगइआग्माणुपुब्बी-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणमरीराण वधस्स तिरिक्ख-
मणुसा सामी । एइदियजादि-आदाव-थावराण तिगइभिच्छाड्डी सामी, णेरइयाणममावादो ।
अवसेसाण पयडीण चउगइभिच्छाड्डी सामी, तेसिं तन्नघनिरोहामावादो ।

वधद्वान् णत्थि, एक्कस्मिं गुणद्वान् अद्वान् विरोधादो । वधोच्छेदो वि णत्थि, एत्थ
उत्तमैसपयडीणं वधवल्लभादो । वज्रमाणपयडीसु धुवन्धीणमणादिओ धुवो वधो । अवसेसाणं
सादि-अहुवो ।

**सम्मतानुवादेण सम्माइट्टीसु खइयसम्माइट्टीसु आभिणिवोहिय-
णाणिभंगो ॥ २७८ ॥**

जहा आभिणिवोहियणाणपरूवणा कदा तथा गिरवसेसा कायव्वा, विससाभावादो ।
णवरि खइयसम्माइट्टिसजदामजदेसु उच्चगोइस्स सोदओ गिरतरो वधो, तिरिक्खेसु खइय-
सम्माइट्टीसु सजदासजदामणुवल्लभादो । मणुसाउअ वधमाणाणमित्थिवेदपच्चओ णत्थि, देव-
णेरइएसु इत्थिनेदखइयसम्माइट्टीणममावादो । एत्तिओ चैव विसेसो । अण्णो जदि अत्थि सो

बैकिकशरीर, धैकिकशरीरानोपाग, नरकगति व देवगति प्रायोपयानुपूर्वी, स्वप्न,
अपर्याप्त और साधारणशरीर, इनके बन्धके तिर्यच व मनुष्य स्त्री हैं । एकेत्रिय जाति,
आताप और स्थारके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी है, क्योंकि, नारकियोंके इनका बन्ध
नहीं होता । शेष प्रकृतियोंके बन्धके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्त्री हैं, क्योंकि, उनके
इन प्रकृतियोंके बन्धका कोई विरोध नहीं है ।

बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । बन्धव्युच्छेद
भी नहीं है, क्योंकि, यहा सूत्रोंके सब प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ध्व्यमान
प्रकृतियोंमें धुवन्धी प्रकृतियोंका अनादि व धुव बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि
व अध्वर बन्ध होता है ।

सम्यक्त्वमार्गानुमार सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें आभिनिरोधिक-
ज्ञानियोंके समान प्ररूपणा है ॥ २७८ ॥

जिस प्रकार आभिनिरोधिकज्ञानी जीवोंकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार
पूर्णरूपसे यहा भी करना चाहिये, क्योंकि, उनसे यहा कोई भेद नहीं
है । विशेष इतना है कि क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयतासयतोंमें उच्चगोत्रका स्वोदय एवं
निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यच क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें सयतासयत जीव पाये नहीं
जते । मनुष्यायुमें वा वनेवाले जीवोंके स्त्रीवेद प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, देव व नारकियोंमें
स्त्रीवेदी क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंका अभाव है । इतनी ही यहा विशेषता है । अन्य कोई यदि

दुगोरातियमिस्स रुम्मइयपच्चयाणमभावादो । वीटदिय-तीहदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम-अपन्नत-साहारणाण तेवचास पच्चया, वेउवियदुगाभावादो ।

सादवेदनीय इय पुरिसवेद हस्स रदि पमन्थविहायगइ-समचउरससठाण-थिर-सुम-सुमग-सुस्वर-ओदेज्ज-जसकित्तीण तिगइमजुत्तो वधो, गिरयगइए अभावादो । गिरमाउ गिरयगइ गिरयगइपाओग्गाणुपुच्चीण गिरयगइसजुत्तो । देनाउ देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुच्चीण देवगइसजुत्तो । मणुमाउ-मणुमगइ मणुमगइपाओग्गाणुपुच्चीण मणुसगइमजुत्तो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चीण चदुजादि आदावुज्जोव थानर सुहुम साहारणाण तिरिक्खगइसजुत्तो । वेउवियसरीर-वेउवियसरीरअगोउगाण देन गिरयगइमजुत्तो । ओरातिय-सरीर-ओरातियसरीरगोवग चउसठाण-छसघडण अपज्जत्तणामरुम्माण तिरिक्ख मणुसगइमजुत्तो वधो । हुण्डसठाण-अप्पम-यविहायगइ-अथिर-असुह-दुसग दुम्मर-अणादेज्ज-णीचागोदाण तिगइसजुत्तो, देवगइए अभावादो । उच्चागोदस्स दुगदसजुत्तो, गिरय तिरिक्खगइएमभावादो । अवसेसाण पयडीण वधो चउगइमजुत्तो ।

देवाउ गिरयाउ-देवगइ-गिरयगइ-भीइदिय तीहदिय चउरिंदियजादि-वेउवियसरीर-

औदारिकमिअ और कामेण प्रत्ययोंका अभाव है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणके निरूपण प्रत्यय ह, क्योंकि, उनके धैत्रियिकद्विकका अभाव है ।

सातवेदनीय, स्त्रीधइ, पुरुषवेद, हास्य, रति, प्रशस्तविहायोगति, समचतुरस्र सस्थान, स्थिर, शुभ, सुमग, सुस्वर, आदेय और यशस्कृतिका तीन गतियोंसे संयुक्त वध होता है, क्योंकि, इनके साथ नरकगतिके वधका अभाव है । नारकायु, नरकगति और नरकगति प्रायोग्यानुपूर्वका नरकगतिसंयुक्त वध होता है । देवायु, देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वका देवगतिसंयुक्त वध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वका मनुष्यगतिसंयुक्त वध होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति व तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वका चार जातिया, आताप, उग्रोत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका तिर्यग्गतिसंयुक्त वध होता है । धैत्रियिकशरीर और धैत्रियिकशरीरगोपागका देव एव नरक गतिसे संयुक्त वध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपाग, चार सस्थान, छह सहनन और अपर्याप्त नामकमौका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त वध होता है । हुण्डसस्थान, अप्रशस्तविहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्मग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका तीन गतियोंसे संयुक्त वध होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिके वधका अभाव है । उच्चगोत्रका दो गतियोंसे संयुक्त वध होता है, क्योंकि, उसके साथ नरकगति और योग्यगति वध नहीं होता । शेष प्रणितियोंका वध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है ।

देवायु, नारकायु, देवगति, नरकगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति,

सुस्तर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को
बंधो को अवंधो ? ॥ २८१ ॥

एत्थ अक्खसचार काऊण पण्णारस पण्णभंगा उप्पाएयव्वा । सेस सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमतसंजदा बंधा । एदे
बंधा, अवंधा णत्थि ॥ २८२ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स परूवणा कीरदे— देवगइ वेउच्चियदुगणमसजदसम्मा-
दिट्ठिम्हि उदओ वोच्छिणो पुव्वमेव । बघवोच्छेदो णत्थि, उवरिम्हि बधुवलभादो । तित्थ-
यरस्स णत्थि उदयवोच्छेदो, एदेसु उदयामावादो । बघवोच्छेदो वि णत्थि, उवलममाणत्तादो ।
अवसेसाण पयडीण बयोदयाण दोण्ण पि वोच्छेदामावादो उदयादो बंधो पुव्व पच्छा वा
वोच्छिणो ति ण परीत्थ्या कीरदे ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय पचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसीर-वण्ण गध रस-
फास-अगुरुवलहुव-तस-भादर-वज्जत थिर-सुह-णिमिण-पचतराइयाण सोदओ बंधो, एत्थ धुवो-

पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुमग, सुस्तर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र
और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २८१ ॥

यहा अक्षसचार करके चौदह गुणस्थान और सिद्धोंके आश्रयसे एक सयोंती
पन्द्रह प्रभुभगोंको उत्पन्न करना चाहिये । शेष स्वार्थ सुगम है ।

असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर अप्रमत्तसयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अवन्धक
नहीं हैं ॥ २८२ ॥

इस देशामर्शके सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं—देवगति और धैक्रियिकादिकका
उदय मसयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें पूर्वमें ही व्युत्पिद्य हो जाना है । बन्ध-व्युच्छेद नहीं
है, क्योंकि, ऊपर बन्ध पाया जाता है । तीर्थकर प्रवृत्तिका उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि,
सायोपशमिकसम्यग्दष्टियोंमें उसके उदयका अभाव है । उसके बन्धका व्युच्छेद भी नहीं है,
क्योंकि, वह पाया जाता है । शेष प्रवृत्तियोंके बन्ध और उदय दोनोंके भी व्युच्छेदका
अभाव होनेसे 'उदयकी अपेक्षा बन्ध पूर्वमें अथवा पश्चात् व्युत्पिद्य होता है' यह
परिक्षा नहीं की जाती है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तेजस व कामेज शरीर,
बर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, तस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ, निर्माण और बांध

चित्तिव वत्तन्वो । पयद्विषयभयभेदपरुषवण्डमुत्तरसुत्त मणदि—

णवरि सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ २७९ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । सजोगि-
केवलिअद्वाए चरिमसमयं गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ २८० ॥

एद पि सुगम, नहुयो उत्तत्यत्तादो ।

वेदयसम्मादिट्ठिसु पंचणाणावरणीय-छदसणावरणीय सादावेद-
णीय-चउसजलण पुरिसवेद हस्स रदि-भय दुगुछ देवगदि-पंचिंदियजादि-
वेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर समचउरससठाण वेउव्वियअगोवग-वण्ण-
गध रस-फास देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-
उस्सास-पसत्थविहायगइ-तम-वादर पज्जत्त पत्तेयसरीर-धिर-सुभ सुभग-

विशेषता है तो उस विचारकर कहना चाहिये । प्रकृतिबन्धगत भेदके प्ररूपणार्थ उत्तर
छत्र कहते हैं—

विशेष यह कि सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ २७९ ॥

यह छत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर मयोगकेतली तक बन्धक हैं । सयोगकेतलिकालके अन्तिम
समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २८० ॥

यह छत्र भी सुगम है, क्योंकि, इसका अर्थ बहुत चार कहा जा चुका है ।

वेदकमस्यग्दृष्टियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, चार
सज्जलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, दुगुप्ता, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तैजस
व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरागोपाय, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगति-
प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रस, घादर,

एगसमएण धेधुवरमाभावादो । सादावेदणीय हस्स-रदि-थिर-सुम-जसकित्तीण असंजदसम्मादिट्ठि-
प्पहुडि जाव पमत्तसज्जो ति पवो सांतो । उवरि णिरत्तो, पडिक्खपयडिक्खभावादो ।

पच्चया सुगमा, ओघपच्चण्हितो विसेसामावादो । देवगइ-वेउव्वियदुगाण, देवगइ-
संजुत्तो । सेसाण पयडीण असजदसम्मादिट्ठीसु धवो दुगइसजुत्तो । उवरिमेसु देवगइसजुत्तो ।
देवगइ-वेउव्वियदुगाण तिरिक्ख-मणुमअसजदसम्मादिट्ठि-सज्जदासज्जदा सामी । तित्थयरस्स
तिगइअमज्जदसम्मादिट्ठिणो सामी, तिरिक्खगईए अभावादो । उवरिमा मणुसा चैव,
तेसिमण्णत्थाभावादो । सेसाण पयडीण चउगइअसजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसज्जदासज्जदा मणुसगइ-
सज्जदा च सामी । वधच्चाण सुगम । वधवोच्छेदो णत्थि, 'अवधा णत्थि' ति वयणादो ।
धुवबंधीण तिग्गिहो धवो, धुवामावादो । सेसाण सादि-अहुवो, अहुववधित्तादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-जसकित्तिणामाणं
को बंधो को अवंधो ? ॥ २८३ ॥

एत्थ पण्णमगा जाणिय वत्तत्वा ।

एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है । सादावेदनीय, हास्य, रति, स्थिर, शुभ
और यशस्वीर्तिका असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सन्तर बन्ध होता है ।
ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । देवगतिद्विक और
वैकियिक्कद्विकका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें
दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है ।
देवगतिद्विक और वैकियिक्कद्विकके तिर्यच व मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि देव न्यतासंयत
स्वामी हैं । तीर्थंकरप्रकृतिके तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यगगतिमें
उसके बन्धका अभाव है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, उनका
अन्य गतियोंमें अभाव है । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके
संयतसंयत और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । बन्धच्छान सुगम है । बन्धच्छेद
नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं है' ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । धुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन
प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, धुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव
बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवबन्धी हैं ।

असादावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशस्किंति नामकर्मका कौन
बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २८३ ॥

यहा प्रश्नभर्गोको जानकर कहना चाहिये ।

दयत्तादो । णिहा पयल सादोपेदणीय-चउसजलण पुरिसवेद-हस्म-रदि-भय दुगुछ-समचउरस-
मठाण पम-यनिहायगइ मुम्मराण सोदय-परोदओ वधो, दोहि नि पमोहि यधुवलमादो ।
देवगइ-चेउच्चियदुग तिथयराण परोदओ वधो, सोदएण वधपरोहादो । उपघाद-परघाद-
उस्साम पत्तेयसरीराण अमजदमम्मादिहिंदि वधो सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, तत्थ
वपज्जत्तट्ठाए अभावादो । णवरि पमत्तसजदमि परघादुस्सासाण सोदय परोदओ । सुमगादेज-
जसकित्तीणममजदमम्मादिहिंदि वधो सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्कुदया-
भावादो । उच्चागोदस्स असजदसम्मादिट्ठीसु सजदासज्जेसु वधो सोदय-परोदओ । उवरि
सोदओ चेव, पडिवक्कुदयामावादो ।

पचणाणारणीय छन्दसणारणीय चदुसजलण पुरिसवेद-भय-दुगुछ-देवगइ-पचिदिय-
जादि-वउच्चिय तेजा कम्मइयसरीर समचउरससठाण-वेउच्चियसरीरअगोउग-वण-गध-रस-
फास-देवगइपाओगाणुपुत्ती अगुरुवल्लुअ-उपघाद-परघाद-उरसास-पसन्धविहायगइ तस थादर-
पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुमग सुस्सर-आदेज्ज णिमिण-तिथयस्सागोद पचतसइयाण न्धो गिरततो,

अन्तर्पयका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहा ये भुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला,
स्तातावेदनीय, चार सज्जजन, पुण्यवेद, हाम्य, रति, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसस्थान,
प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों भी
प्रकारोंसे उनका व अ पाया जाता है । देवगतिद्विक, ऐकियिकद्विक और तीर्थेकरका परोदय
बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । उपघात, परघात, उच्छ्वास और
प्रत्येकशरीरका अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर
स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा अपयाप्तकालका अभाव है । निद्रोपता इतनी है
कि प्रमत्तसयत गुणस्थानमें परघात और उच्छ्वासका स्वोदय परोदय बन्ध होता है ।
सुमग, आदेय और यशकतिरिका अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध
होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका
अभाव है । उच्चगोत्रका अमयतसम्यग्दृष्टि और सत्यतासयतोंमें स्वोदय परोदय बन्ध
होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका
अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चार सज्जजन, पुण्यवेद, भय, जुगुप्सा,
देवगति, पचेन्द्रिय जाति, ऐकियिक, तैजस व कर्मण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, ऐकियिक
शरीरान्नायग, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुवल्लु, उपघात,
उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, अस, थादर, पयाप्त, प्रत्येकशरीर, सुमग, सुस्वर,
निर्माण, तीर्थेकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तर्पयका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,

एगससएण वंधुवरमांभावादो । सादावेदणीय इत्स रदि-धिर-सुम-जसकितीण असंजदसम्मादिट्ठि-
णहुडि जाव पमत्तसज्जे ति वधो सांतरो । उवरि णिरतरो, पडिक्खपयडिक्खामावादो ।

पन्थया सुगमा, ओघपवण्हिने निससामावादो । देवगइ-वेउव्वियदुगाण देवगइ-
सज्जेतो । सेसाण पयडीण असज्जदसम्मादिट्ठीसु वधो दुगइसज्जेतो । उवरिमेसु देवगइसज्जेतो ।
देवगइ-वेउव्वियदुगाण तिरिक्ख मणुसअसज्जदसम्मादिट्ठि-सज्जदासज्जदा सामी । तिरियरस्स
तिगइअमज्जदसम्मादिट्ठिणे सामी, तिरिक्खगइए अमावादो । उवरिमा मणुसा चेव,
तेसिमणत्थामावादो । सेमाण पयडीण चउगइअसज्जदसम्मादिट्ठिणे दुगइसज्जदासज्जदा मणुसगइ-
सज्जदा च सामी । वधव्हाण सुगम । वधवोउडेदो णत्थि, 'अवघा णत्थि' ति वयणादो ।
धुवण्णीण तिग्गिहो वधो, धुयामावादो । सेसाण सादि-अहुवो, अहुवणधित्तादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-जसकित्तिणामाणं
को वंधो को अवंधो ? ॥ २८३ ॥

एत्थ पणमगा जाणिय वत्तन्वा ।

एक समयसे इनके बन्धनिश्रामका अभाव है । सातावेदनीय, हास्य, रति, स्थिर, शुभ
और अशक्तििका असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है ।
ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । देवगतिट्ठिक और
धैक्खिक्खट्ठिक देवगतिस्सुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें
दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिस्सुक्त बन्ध होता है ।
देवगतिट्ठिक और धैक्खिक्खट्ठिकके तिर्येच व मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि एव सयनासंयत
सामी हैं । तीर्थेकर प्रकृतिके तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि सामी ह, क्योंकि, तिर्यग्गतिमें
उसके बन्धका अभाव है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही सामी हैं, क्योंकि, उनका
अन्य गतियोंमें अभाव है । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके
संयतासंयत और मनुष्यगतिके संयत सामी हैं । बन्धाघान सुगम है । बन्धयुक्ते
नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं है' ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । धुवण्णी प्रकृतियोंका तीन
प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, धुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव
बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवण्णी हैं ।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अशक्तिि नामकर्मका कौन
बन्ध और कौन अबन्धक है ? ॥ २८३ ॥

यहा प्रश्नमार्गोंको जानकर कहना चाहिये ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को वंधो को अवंधो ?

॥ २९१ ॥

सुगम ।

अण्मत्तसजदा वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २९२ ॥

एदस्त अत्थो सुगमो ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु पचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जस-

कित्ति उच्चागोद पंचंतराइयाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ २९३ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा वंधा ।

सुहुमसांपराइयउवसमद्धाए चरिमसमय गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।

एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २९४ ॥

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय नसकित्ति उच्चागोद पचंतराइयाण षडवीन्हेदो

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोषाग नामकमौंसा कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २९१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अण्मत्तमयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

उपशमसम्यग्दष्टि जीममें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्च गोत्र और पाच अन्तःस्थका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २९३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतमस्यग्दष्टिमे लेकर सूक्ष्मसांस्पगयिक उपशमक तक बन्धक हैं । सूक्ष्मसांपरायिकउपशमककालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २९४ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और

चेत् । उदयबोच्छेदो णत्थि, खीणकसायादिसु वि एदासिं पयडीण उदयदसणादो । तेण उदय-
बोच्छेदादो वधवोच्छेदो पुव्व पच्छा वा होदि ति विचारो णत्थि, सतासताण सण्णियास-
विरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय पचतराइयाण सोदओ वधो । जसकितीए
असजदसम्मादिद्वीसु सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । उच्चा-
गोदस्स असजदसम्मादिद्वि-मज्झिमासज्जेसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खु-
दयाभावादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय उच्चागोद-पचतराइयाण वधो णिरतरो, धुव-
वधित्तादो । जसकितीए असजदसम्मादिद्विपहुडि जाव पमत्तसज्जो ति वधो सातरो । उवरि
णिरतरो, पडिवक्खुपयडिवधाम्भावादो । पच्चया सुगमा । णवरि असजदसम्मादिद्वीसु ओरा-
लियमिस्सपच्चओ, पमत्तसज्जेसु आहारदुगपच्चओ णत्थि । असजदसम्मादिद्वीसु एदासिं
पयडीण वधो देव-मणुसगइमज्जुत्तो । उवरिमेसु गुणङ्गणेसु देवगइसज्जुत्तो अगइसज्जुत्तो वा ।
चउगइअसजदसम्मादिद्वी दुगइसज्जदासज्जदा मणुसगइसज्जदा सामीओ । वधद्वाण वधवोच्छिण्ण-
द्वाण च सुगम । धुववधीण तिनिहो वओ, धुवामापादो । अवसेसाण सादि-अद्दुवो, अद्दुव-
वधित्तादो ।

रायका वन्धव्युच्छेद ही है । उदय-युच्छेद नहीं है, क्योंकि, क्षीणकसायादिक गुणस्थानोंमें
भी इन प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । इसी कारण उदय-युच्छेदसे वन्धव्युच्छेद पूर्वमें
या पश्चात् होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्की तुलनाका विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वोदय वन्ध
होता है । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय परोदय वन्ध होता है । ऊपर स्वोदय
ही वन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । उच्चगोत्रका
असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय वन्ध होता है । ऊपर
स्वोदय ही वन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदयभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका वन्ध
निरन्तर होता है, क्योंकि, वे ध्रुववन्धी हैं । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर
प्रमत्तसमय तक सान्तर वन्ध होता है । ऊपर निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, ऊपर
प्रतिपक्ष प्रकृतिके वधका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि असयतसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकमिश्र प्रत्यय
और प्रमत्तसमयोंमें आहारफट्टिक प्रत्यय नहीं हैं । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें इन प्रकृतियोंका
वध देव व मनुष्य गतिसंयुक्त होता है । उपरि गुणस्थानोंमें देवगतिसंयुक्त या अगति
संयुक्त वन्ध होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, और
मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । वन्धाध्वान और वन्धन्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । ध्रुववन्धी
प्रकृतियोंका तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव वन्धका अभाव है । शेष
प्रकृतियोंका यदि वध वन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुववन्धी हैं ।

असंजदसम्मादिद्विष्णुहि जाव पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ २८४ ॥

एदस्सन्धो बुधेदे—अरदि सोग-असादावेदणीय अगिर असुमाण बधवोच्छेदो चेव ।
उदयवोच्छेदो गन्धि, उवरिग्दि उदयस्सुवलमादो । अजसकित्तीप पुव्वमुदयस्स पच्छा बधस्स
वोच्छेदो, पमत्तासजदसम्मादिद्वीसु बधोदयवोच्छेदुवलमादो । असादावेदणीय-अरदि-सोगाण
बधो मोदय-परोदओ, दोहि वि पयोरोहि बधुवलमादो । अगिर-असुहाण मोदओ चेव,
धुवोदयत्तादो । अजमकित्तीप अमजदसम्मादिद्विग्दि सोदय-परोदओ । उवरि परोदओ चेव,
पडिबन्धुदयामावादो । एदामिं छण्ह पयद्दीण बंधो सातरो, एगममएण वि बधुवरमदसणादो ।
पन्चया सुगमा, बधुसो उत्तत्तादो^१ । देव-मनुमगइसजुत्तो चेव, अण्णगव्वधामावादो ।
चउमगइअसजदसम्मादिद्विणो दुगइसजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । बधद्धाण बध-
वोच्छिण्णहाण च सुगम । सव्वासिं बधो सादि अहुवो, अहुवबधित्तादो ।

असंजदसम्मादिद्विसे लेकर प्रमत्तसयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अपन्धक
हैं ॥ २८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अरति, शोक, असातावेदनीय, अस्थिर और अशुभका
परिधुच्छेद ही है । उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर उनका उदय पाया जाता है ।
अवशकीर्तिके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, प्रमत्तसयत
और असंजदसम्मादि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता
है । असातावेदनीय, अरति और शोकका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों
ही प्रकारोंसे बन्ध पाया जाता है । अस्थिर और अशुभका स्वोदय ही बन्ध होता है ।
क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । अवशकीर्तिका असंजदसम्मादि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय
बन्ध होता है । ऊपर परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका
अभाव है । इन छह प्रकृतियोंका बन्ध स्तानर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी
उनका बन्धविश्राम देखा जाता है ।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, बहुत बार कहे जा चुके हैं । देव और मनुष्य गतिसे
समुच्च ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । आर्य गतियोंके
असंजदसम्मादि, दो गतियोंके सयतासयत, और मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं ।
बन्धाग्रान और बन्धुच्छिन्नस्थान सुगम हैं । सब प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अधुव
होता है, क्योंकि, ये अधुवबन्धी हैं ।

अपञ्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोह-मणुस्ताउ-मणुसगइ-
ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंधण-मणुसाणु-
पुव्वीणामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ २८५ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा
॥ २८६ ॥

अपञ्चक्खाणावरणचतुष्क मणुसगइपाओगाणुपुव्वीण धरोदया सम वोच्छिण्णा,
असंजदसम्मादिट्ठिम्हि तदुदयवोच्छेदुवलभादो । मणुसगइ-मणुसाउ-ओरालियसरीरअगोवग-
वज्जरिसहसंधण धधरोच्छेदो चेव, उव्वरि पि उदयदसणादो । अपञ्चक्खाणचउक्कस्स
धधो सोदय-परोदओ । सेसाण परोदओ चेव, सोदणण नवविरोहादो । दमण्ण पयडीण धधो
गिरतरो, एगसमएण धधुनरमाभावादो । अपञ्चक्खाणचउक्कस्स चालीम पचया । मणुसाउअस्स
चादालीस, ओरालियडुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । सेसाण चोदालीस,

अप्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिक-
शरीर, औदारिकशरीरागोपाम, नृपरमसहनन और मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मका कौन बन्धक
और कौन अनन्धक है ? ॥ २८५ ॥

यह स्रज सुगम है ।

अमयतमम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ २८६ ॥

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध व उदय दोनों
साधर्म्य युक्तिउत हेते हैं क्योंकि, असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका द्युच्छेद
पाया जाता है । मनुष्यगति, मनुष्यायु, औदारिकशरीरागोपाम और वज्रपरमसहननका
केवल बन्ध युच्छेद ही है, क्योंकि, ऊपर भी उनका उदय देखा जाता है । अप्रत्याख्याना
वरणचतुष्कका उन्न स्त्रोदय परोदय होता है । शेष प्रकृतियोंका परोदय ही बन्ध होता है,
क्योंकि, स्त्रोदयसे उनके बन्धका निरोध है । दशों प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है,
क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके चालीस
प्रत्यय हैं । मनुष्यायुके चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकदृष्टि, चेक्रियक्रमिध और
कर्मण प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रकृतियोंके चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके औदा

१ मतिउ ' व ' इति पाठ ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को वंधो को अवंधो ?

॥ २९१ ॥

सुगम ।

अप्पमत्तसजदा वधा । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ २९२ ॥

णदस्त अथो सुगमो ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु पचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जस-

कित्ति उच्चागोद पचतराइयाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ २९३ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा वंधा ।

सुहुमसांपराइयउवसमद्धाए चरिमसमय गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।

एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २९४ ॥

पचणाणारणीय चउदसणावरणीय नमकित्ति उच्चागोद पचतराइयाण वधवोच्छेदो

आहारशरीर और आहारशरीरागोपाण नामकमेंका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २९१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तमयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, जेव अवन्धक हैं ॥ २९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

उपशममम्यग्दष्टि जीवोंमें पाच ज्ञानारणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, ऊंच-
गोत्र और पाच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २९३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अमयतसम्यग्दष्टिमे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक तक बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्परा-
यिकउपशमककालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युत्थिष्ठ होता है । ये बन्धक हैं, जेव
बन्धक हैं ॥ २९४ ॥

पाच ज्ञानारणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्त

चेव । उदयवोन्हेदो णत्थि, खीणकसायादिसु वि एदासिं पयडीण उदयदसणादो । तेण उदय-
वोन्हेदादो बधवोन्हेदो पुव्व पच्छा वा होदि ति विचारो णत्थि, सतासताण सण्णियास-
विरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराइयाण सोदओ बधो । जसकित्तीए
असजदसम्मादिट्ठीसु सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवम्बुदयामावादो । उच्चा-
गोदस्स अमजदसम्मादिट्ठि-मजदासज्जेसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवम्बु-
दयामावादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय उच्चागोद-पचतराइयाण बधो णितरो, धुव-
बधितादो । जसकित्तीए असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसजदो ति बधो सातरो । उवरि
णितरो, पडिवम्बुपयडिबधामावादो । पच्चया सुगमा । णवरि असजदसम्मादिट्ठीसु ओरा-
लियमिम्मपच्चओ, पमत्तसजदेसु आहारदुगपच्चओ णत्थि । असजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं
पयडीण बधो देव मणुसगइमजुत्तो । उवरिमेसु गुणङ्गणेसु देवगइसजुत्तो अगइसजुत्तो वा ।
चउगइअसजदसम्मादिट्ठी दुगइसजदासजदा मणुसगइसजदा सामीओ । बधद्वाण नधवोच्छिण्ण-
द्वाण च सुगम । धुवबधीण तिविहो बधो, धुवामावादो । अवसेसारं सादि-अहुवो, अहुव-
बधितादो ।

रायका बन्धन्युच्छेद ही है । उदयन्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, खीणकसायादिक गुणस्थानोंमें भी इन प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । इसी कारण उदयन्युच्छेदसे बन्धन्युच्छेद पूर्वमें या पश्चात् होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्की तुलनाका विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्त्रोदय बन्ध होता है । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्त्रोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । उच्चगोत्रका असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्त्रोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदयाभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, ये धुवबन्धी हैं । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ऊपर प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि असयतसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकमिश्र प्रत्यय और प्रमत्तसयतोंमें आहारफट्टिक प्रत्यय नहीं हैं । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें इन प्रकृतियोंका बन्ध देव व मनुष्य गतिसयुक्त होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिसयुक्त या अगति सयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, और मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धन्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । धुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके धुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, अधुवबन्धी हैं ।

णिदा पयलाण को वंधो को अवधो ? ॥ २९५ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा वंधा ।
अपुव्वकरणउवसमद्धाए सखेज्जदिम भागं गंतूण वधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २९६ ॥

एदासिं वधो पुंर वोच्छिज्जदि । उदयरोच्छेदो णत्थि, खीणकमाणसु नि उदय-
दसणादो । सोदय परोदओ वधो, अनुदोदयत्तादो । गिरतरो, धुव्वरथित्तादो । असजदसम्मा-
दिट्ठिसु पचेतालीस पच्चया, ओरानियमिस्सपच्चयामाणादो । पमत्तमन्नदग्धि बावीस^१ पच्चया,
आहारदुगाभाणादो । सेमगुणद्वारेणसु ओचपच्चओ, तिसिमाभावादो । असजदसम्मादिट्ठिदि
देव मगुसगइसजुत्तो, ठवरिमेसु देवगइसजुत्तो, अउगइअसजदसम्मादिट्ठिदुगइसजदासजद-

निद्रा और प्रचलाका कौन बन्धक और कौन अव वक है ? २९५ ॥

यह सुन सुगम है ।

असयतसम्यग्दष्टिमे लेखर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशम
कालका मर्यातरा माग नाकत चन्द्र व्युत्थित होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक
हैं ॥ २९६ ॥

इसका अर्थ पूर्वमें युक्तिग्र होता है । उदय-युच्छेद नहीं है, क्योंकि, क्षीणकपाय
जीवोंमें भी उनका उदय देखा जाता है । उदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये
अनुदोदयी हैं । गिरतर बन्ध होता है, क्योंकि, धुव्वरन्धी है । असयतसम्यग्दष्टियोंमें
पंचतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओदारिजमिथ्र प्रत्ययका वहा अभाव है । प्रमत्तसयत गुण
स्वानमें पारम प्रत्यय है, क्योंकि, वहा आहारकटिकका अभाव है । शेष गुणस्थानोंमें ओच
प्रत्ययोंमें समुक्त प्रत्य होता है, क्योंकि ओचसे वहा कोई विशेषता नहीं है । असयत
सम्यग्दष्टि गुणस्वानमें दय २ मनुष्य गतिसे समुक्त तथा उपरिम गुणस्थानोंमें देवगति
समुक्त होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दष्टि, देव गतियोंके सयतासयत, और मनुष्य

^१ अथवा 'पमत्तवज्जदा दि बावीस', अथवा 'पमत्तवज्जदा बावीस', अथवा 'पमत्तवज्जदा बावीस'
११४ ।

मणुसगइसजदमामीओ, अउगयउधद्धाणो, अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमे भोगे गयणिणासो,
धुवधित्तादो तिविहाणो जिह्वा पयलाण वधो ।

सादावेदणीयस्म को वंधो को अवंधो ॥ २९७ ॥

सुगम ।

**असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीयरगछुदुमत्था
बंधा । एदे बंधा, अवंधा णत्थि ॥ २९८ ॥**

उउओच्छेद मोत्तूण उउयवोच्छेदभावादो, सोउय-परोदयउवादो, असजदप्पहुडि जाव
पमतसज्जो ति सातर धधिदूणवीरे गिरतरवित्तादो, ओउपच्छण्हितो असजदसम्मादिट्ठि-
पमतसज्जो मोत्तूण अणत्थ समाणपच्छयत्तादो, असजदसम्मादिट्ठि-पमतसंजदेसु ओउलिप-
मिस्साहारदुगामावादो, असंजदसम्मादिट्ठिसु दुगइमज्जुत्तादो उउरि देवगदसज्जुत्तयवादो,
चउगइअसजदसम्मादिट्ठि दुगइसज्जदासज्जद-मणुसगइसजदसामिउवादो, नपेण सादि-अनुउ-
त्तादो सुगममेदं ।

गतिके सयत्त स्वामी है । वन्धवाग्यान प्राप्त ही है । अपूर्णकरणकालका सत्यतया भाग
यतिनेपर वन्ध व्युच्छिन्न होता है । धुउउग्धी होनेसे निम्न उ प्रचलाका तीन प्रकार वन्ध
होता है ।

सातावेदनीयका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २९७ ॥

यह सत्य सुगम है ।

असयत्तसम्यग्दष्टिसे लेकर उपशान्तकयाय वीतराग छद्मस्थ तरु वन्धक हैं । ये
वन्धक हैं, अवन्धक नहीं है ॥ २९८ ॥

सातावेदनीयके वन्ध युच्छेदको छोडकर उउय-युच्छेदका अभाव होनेसे, स्वोदय
परोदय वन्ध होनेसे, असयत्तसम्यग्दष्टिसे लेकर प्रमत्तमयत्त तव सान्तर धधकर ऊपर
गिरतरवन्धी होनेसे, असयत्तसम्यग्दष्टि और प्रमत्तसयत्तोंको छोडकर अन्यत्र ओघके समात
प्रत्यय युक्त होनेसे, असयत्तसम्यग्दष्टियोंमें औदारिकमिध और प्रमत्तसयत्तोंमें आहारद्विष्का
अभाव होनेसे, असयत्तसम्यग्दष्टियोंमें दो गतियोंसे सयुक्त तथा ऊपर देवगतिसयुक्त वन्ध
होनेसे; चारों गतियोंके असयत्तसम्यग्दष्टि, दो गतियोंके मयत्तसयत्त, और मनुष्यगतिके
सयत्त स्वामी होनेसे, तथा वन्धसे सादि व अधुन होनेसे यह सत्य सुगम है ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं
को वधो को अवंधो ? ॥ २९९ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा वधा । एदे वंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ ३०० ॥

सुगममेद, मदिणाणमग्गणाए परुविदत्थत्तादो ।

अपच्चक्खाणावरणीयमोहिणाणिभगो ॥ ३०१ ॥

अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओगालियमरीरभगोनग-वज्जरिहि-
सघहण मणुसगइपाओरगाणुपुच्चीण एत्थ गहण कायव्व, देमामासियत्तादो । सेस सुगम ।
णवरि ओरालियमिस्तपच्चओ अवणेयव्वो । कए वेउडियमिम्म कम्मह्याणमुवलमो ? उव-
सममम्मतेण उवममपेडि चडिय काल काऊग देवेसुप्पण्णाण तदुवलमादो ।

अमातापेइनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकमोंका कौन
बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २९९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक
हैं ॥ ३०० ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, भविष्यज्ञान मार्गणामें इसके धर्मकी प्ररूपणा की
जाचुकी है ।

अप्रत्यारयागारणीयकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोंके समान है ॥ ३०१ ॥

अप्रत्यारयागारणचतुक्क, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपण,
घञ्जमसहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका यहा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, यह
सूत्र देशामर्शक है । शेष प्ररूपणा सुगम है । विशेष इतना है कि औदारिकमिध प्रत्ययकी
कम करना चाहिये ।

शका—चेतिचिकमित्र और कामण काययोग यहा कैसे पाये जाते हैं ?

समाधान—उपशमसम्यक्त्वके साथ उमशमश्रेणि चटकर और मरकर देवोंमें
उत्पन्न हुए जीवोंके ये दोनों प्रत्यय पाये जाते हैं ।

णवरि आउवं णत्थि ॥ ३०२ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छाद्विसेव भव्वसमसम्माइटीणमाउवस्स वधाभावादो ।

पच्चक्खाणावरणचउक्कस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ३०३ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा [बंधा] । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३०४ ॥

एद पि सुगम, सुदणाणपरूवणापरूविदत्तये ।

पुरिसवेदकोधसंजलणाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ३०५ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वंधा । अणि-
यट्ठिउवसमाद्धाए सेसे संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोळ्ळिज्जदि । एदे
बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३०६ ॥

विशेष इतना है कि उनके आयु कर्मका बन्ध नहीं है ॥ ३०२ ॥

क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके समान ही सर्व उपशमसम्यग्दृष्टियोंके आयुके बन्धका
अभाव है ।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्का कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ३०३ ॥

यह स्रष्टा सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत [बन्धक] हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक
हैं ॥ ३०४ ॥

यह भी स्रष्टा सुगम है, क्योंकि, इसके अर्थकी प्ररूपेणा श्रुतज्ञानप्ररूपणामें की
जा चुकी है ।

पुसपेद और सज्जलन मोघका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ३०५ ॥

यह स्रष्टा सुगम है ।

अमयतसम्यग्दृष्टिमें लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण-
उपशमककालके शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युत्थित होता है । ये बन्धक हैं, शेष
अबन्धक हैं ॥ ३०६ ॥

सुगममेद ।

माण मायसंजलणाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ३०७ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वंधा । अणि
यट्ठिउवसमद्वाए सेसे सेसे सखेज्जे भागे गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३०८ ॥

एद पि सुगम, षडुसो पक्खिदितादो ।

लोभसंजलणस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ३०९ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वंधा ।
अणियट्ठिउवसमद्वाए चरिमसमय गंतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे
वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३१० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सज्जलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३०७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्गण्ठिसे लेकर अनिवृत्तिहरण उपशमक तरु बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण
उपशमकालके शेष शेषमे सरयात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं,
शेष अवन्धक हैं ॥ ३०८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, बहुत बार इसकी प्ररूपणा करी जा चुकी है ।

सज्जलन लोभका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३०९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्गण्ठिसे लेकर अनिवृत्तिहरण उपशमक तरु बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण
उपशमकालके अन्तिम समयको जाकर बंध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक
॥ ३१० ॥

एदं पि सुगम ।

हस्स रदि-भय-दुगुंछाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ३११ ॥

सुगम ।

असंजदसम्माइट्ठिण्हुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा ।
अपुव्वकरणउवसमद्धाए चरिमसमयं गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ ३१२ ॥

एदं पि सुगम ।

देवगइ-पांचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर समचउरस-
संठाण वेउव्वियअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-
उवघाद-परघाद उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस वादर पज्जत्त पत्तेयसरीर-
थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज णिमिण-तित्थयरणामाणं को वंधो को
अवंधो ? ॥ ३१३ ॥

सुगम ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

हास्य, रति, भय और लुगुप्ताका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्णकरण उपशमक तरु बन्धक हैं । अपूर्णकरण उपशम
कालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक
हैं ॥ ३१२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

देवगति, पचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण गरीर, समचतुरमसस्थान,
वैक्रियिकशरीरानोपाय, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपजात, परघात,
उच्छ्रमस, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर,
आदेय, निर्माण और तीर्थकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३१३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंजसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा ।
अपुव्वकरणवसमद्वाए संखेज्जे भागे गंतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे
बधा, अवसेसा अवधा ॥ ३१४ ॥

एद पि सुगमं, बहुसो कयपरुवणादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअगोवगाणं को बंधो को अवधो ?
॥ ३१५ ॥

सुगम ।

अप्पमत्तापुव्वकरणउवसमा वधा । अपुव्वकरणवसमद्वाए संखेज्जे
भागे गंतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे, बंधा, अवसेसा, अवंधा
॥ ३१६ ॥

एद पि सुगम ।

सासणसम्मादिट्ठी मदिणाणिभगो ॥ ३१७ ॥

असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशम-
कालके सख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवधक
॥ ३१४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है क्योंकि, बहुत बार इसकी प्ररूपणा की जा चुकी है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोपागका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ?
३१५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्त और अपूर्वकरण उपशमक, बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशमकालके, सख्यात
भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ ३१६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

सासादनसम्यग्दष्टियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानियोंके समान है ॥ ३१७ ॥

पंचाणावरणीय-णवदसणावरणीय सादामाद-सोलसकसाय-अद्विजोक्तसाय-तिरिक्ख-
मणुम-देवाउ तिरिक्ख मणुस-देवगइ पंचिदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-पच-
सठाण-ओरालिय वेउव्वियअणोवग-पंचसघडण वण्ण-गघ रस-फास-तिरिक्ख-मणुस-देवगइपाओ-
ग्गाणुपुन्नी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-दोविहायगड-तस नादर-पज्जत्त-पत्तेय-
सरीर धिराधिर-सुहासुह-सुमग-दूमग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज अणादेज्ज-जमकित्ति-अजसकित्ति-
णिमिण जीउच्चागोद-पचतराइयपयडीओ सासणसम्मादिईहि वञ्जमाणियाओ । एदासिमुदयादो
बघो पुच्च पच्छा [ना] वोच्छिण्णो ति विचारो णत्थि, एत्थ एदासि बघोदयवोच्छेदाभावादो ।

पंचाणावरणीय-चउदसणावरणीय पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गघ-रस-
पास अगुरु-जलहुअ-तस-नादर-पज्जत्त-धिराधिर-सुहासुह-णिमिण-पचतराइयाण सोदओ बघो,
धुवोदयत्ताओ । देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाण परोदओ बघो, सोदएण न-विरोहादो । अव-
सेसाण पयडीण बघो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बधुवलमादो ।

पंचाणावरणीय-णवदसणावरणीय-सोलसकसाय भय-दुगुळा-तिरिक्ख-मणुम-देवाउ-
पंचिदियजादि तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गघ-रस फास-अगुरुजलहुअ उवघाद परघाद-उस्सास-

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय,
गाढ लोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवाउ, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय
जाति, औदारिक, धैक्रियिक, तैजस व कामेण शरीर, पाच सस्यान, औदारिक व धैक्रियिक
अणोपाग, पाच सहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगति-
प्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, दो
विहायोगतिया, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग,
दुर्भग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनदेय, यशस्कीर्ति, जयशस्कीर्ति, निर्माण, नीच व ऊच गोत्र
और पाच अन्तराय, ये प्रकृतिया सासादनसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा बध्यमान हैं । इनका बन्ध
उदयसे पूर्वमें या पश्चात् व्युत्पिद्य होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, यहा इनके
बन्ध और उदयके व्युत्पिद्यका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैजस व कामेण शरीर,
वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,
निर्माण और पाच अन्तरायका म्योदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदधी हैं । देवायु,
देवगतिष्ठिक और धैक्रियिकक्षिकका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वेदयसे इनके बन्धका
धरोध है । त्रैय प्रकृतियोंका बन्ध स्वेदय परोदयसे होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी
उनका बन्ध पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, सोलह कषाय, भय, दुगुप्ता, तिर्यगायु,
मनुष्यायु, देवायु, पचेन्द्रिय जाति, तैजस व कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरु

असंज्ञसम्मादिद्विष्यहृदि जाव अपुञ्चकरणउवसमा बंधा ।
अपुञ्चकरणवसमद्वाए संस्वेजे भागे गतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ ३१४ ॥

एद पि सुगम, बहुसो कयपरूपादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअगोवंगाणं को बंधो को अवधो ?
॥ ३१५ ॥

सुगम ।

अप्रमत्तापुञ्चकरणउवसमा बंधा । अपुञ्चकरणवसमद्वाए संस्वेजे
भागे गतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवधा
॥ ३१६ ॥

एद पि सुगम ।

सासनसम्मादिद्वी मदिणाणिभगो ॥ ३१७ ॥

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक है । अपूर्वकरण उपशम-
कालके सरयात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक है, शेष अबन्धक
है ॥ ३१४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, बहुत बार इसकी प्ररूपणा की जा चुकी है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोपागना कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ?
॥ ३१५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्त और अपूर्वकरण उपशमक बन्धक है । अपूर्वकरण उपशमकालके सरयात
बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक है, शेष अबन्धक है ॥ ३१६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानियोंके समान है ॥ ३१७ ॥

देवाउ-देवगइ-वेउ-वियदुगाण वधो देवगइसंजुतो । मणुसाउ-मणुसगइदुगाण मणुस-
गइसंजुतो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोवाण तिरिक्खगइसंजुतो । ओरालियसरीर-
मज्झिमचउमठाण-ओरालियसरीरअगोत्रग पचसबडण अप्पसत्यविहायगइ दुभग-दुस्सर अणादेज्ज-
णीचागोदाण निरिक्ख मणुसगइसंजुतो वधो । उच्चागोदस्स देव मणुसगइसंजुतो वधो,
निरिक्खेसुच्चागोदाणादादो । अवसेसाण पयडीण वधो तिगइसंजुतो, णिरयगइवधाभावादो ।
देवाउ-देवगइ-वेउ-वियदुगाण तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाण पयडीण वधस्स सामी चउगइ-
सामणा । वपद्धान वधवोउदेवो च णत्थि । छद्दालीसधुवगधपयडीण तिविहे वधो, धुवा-
मावादो । अवसेसाण सादि-अद्दो, अद्दुववधित्तादो ।

सम्पामिच्छाइट्टी असंजदभंगो ॥ ३१८ ॥

पचनाणावरणीय-छदसणाउरणीय-सादामाद-चारसकसाय पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-
सोग भय-दुगुडा मणुसगइ देवगइ-पचिन्दियजादि-ओरालिय-वेउ-विय-तेजा-कम्मइयसरीर समचउ
रससठाण-ओरालिय-वेउ-वियअगोवग-वज्जरिसहमघडण-वण्ण गध रस फास-मणुसगइ-देवगइ-

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकट्टिका यन्त्र देवगति सयुक्त होता है । मनुष्यायु
और मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मनुष्यगति सयुक्त होता है । तिर्यगायु, तिर्यगतिद्विक और
उद्योतका बन्ध तिर्यगति सयुक्त होता है । भौदारिकशरीर मध्यम चार सस्थान,
भौदारिकशरीरागोपांग, पांच सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग दुस्सर, अनादेय और
नीचगोत्रका तिर्यगति और मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । उच्चगोत्रका देव व
मनुष्य गतिसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यचोम उच्चगोत्रका अभाव है । शेष
प्रतियोगका बन्ध तीन गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंके नरक
गतिके बन्धका अभाव है ।

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकट्टिके तिर्यच व मनुष्य स्त्रामो ह । शेष प्रतियोगोंके
बन्धके सामी चारों गतियोंके नामादनसम्यग्दृष्टि है । बन्धापज्ञान और बन्धयुच्छेद नहीं
है । छ्यानीस धुवगन्धो प्रतियोगका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके धुव
बन्धका अभाव है । शेष प्रतियोगोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुव
वधो हैं ।

सम्पामिच्छादृष्टि जीवोंकी प्रकृषणा अमयत जीवोंके समान है ॥ ३१८ ॥

पाच प्राणावरणीय, छद दर्शनावरणीय, साता व अमाता घेदनीय, चारह कपाय,
पुरावेद, दान्य, रति अरति, शोक, भय, सुगुप्ता, मनुष्याति, देवगति, पचिन्दिय जाति,
भौदारिक, वैक्रियिक, तेजस व कामेण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, भौदारिक व वैक्रियिक
अगोपांग, वज्जेनसहनन, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानु-

तस बादर पञ्जत पत्तियमरीर निमिष-पचतरादृयाण गिरतरो यघो, एगसमएण वधुवरमाणु-
लमादो । सादासाद-हस्स-रदि-अरदि सोगित्थिउद-मज्झिमचउसठाण-पचमघडण उज्जोव दो-
विहापगड भिराधिर-सुहासुह दुभम-दुस्सर अणादेज्ज जसक्कि-अजसक्कितीण सानगे यघो, एग
समएण वि नुवुरमदसणादो । पुरिसवेदस्स यमो सातर-गिरतरो, पम्म सुक्कलेस्सिण्णु
तिरिस्स मणुस्सेसु गिरतर-धुवलमादो । देवगइ-वेउअयिदुग समचउरमसठाण सुमग सुत्सर
ओद-ज्जुच्चागोदाण यमो सातर-गिरतरो, असखेज्ज-मासाउएसु सुहत्तिलेस्सिसयतिरिक्क मणुस्सेसु
च गिरतर-धुवलमादो । मणुसगइदुगस्स यमो सातर गिरतरो, आणदादिदेवेषु गिरतर-धुवल-
लमादो । तिरिस्सवगइदुग-आचागोदाण यमो सातर गिरतरो, सत्तमपुट्ठणीेरइएसु गिरतर
धुवलमादो । ओरालियसरीरदुगस्स वि सातर गिरतरो यघो, देव णेरइएसु गिरतर-धुवलमादो ।

देवाउ-देवगइ वेउअयिदुगाण छादालीस पच्चया, वेउअयिदुगोरालियमिस्स कम्म-
इयाणममावादो । मणुस निरिक्खाउआण सत्तेनालीस पच्चया, ओरालिय-वेउअयिमिस्स कम्म-
इयपच्चयाणममावादो । अजसेमाण पयडीण पचाम पच्चया, पचमिन्तत्तपच्चयाणममावादो ।

लघु, उपघात, परघात, उच्छ्रयान, व्रस, वाटर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच
अंतरायका निरंतर बंध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बंधविधायक नहीं पाया
जाता । साता व असाता घेनीय, हाम्य, रति, अरति, शोक, खेदेद, मध्यम चार सस्थान,
पाच सहनन उघात, दो विहायोगनिया, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर,
अनादिय, यशस्कीर्ति और अयशस्कीर्तिका सान्तर रन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी
इनका रंधविनाम देखा जाता है । पुण्यवेदका रन्ध सातर निरन्तर होता है, क्योंकि, पद्म
और शुक्ल लेइयासे तिर्यच न मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । देवगतिद्विक,
धैर्यिकद्विक, समचतुरस्रसस्थान, सुमग, सुत्सर, आदेय और उच्चगोत्रका सान्तर निर-
न्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असरयातवर्णायुक् और शुभ नील देइयावाल तिर्यच मनुष्योंमें
उनका निरन्तर रंध पाया जाता है । मनुष्यगतिद्विकका बंध सान्तर निरन्तर होता है क्योंकि,
आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बंध पाया जाता है । तिर्यगतिद्विक और नीचगोत्रका
बंध सातर निरन्तर होता है, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरन्तर बंध
पाया जाता है । जैदारिकशरीरद्विकका भी सान्तर निरन्तर बंध होता है, क्योंकि, देव व
नारकियोंमें उनका निरन्तर बंध पाया जाता है ।

दयायु द्यवगतिद्विक और वैश्वियकद्विकके छादालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, धैर्यिकद्विक,
जैदारिकमिथ और कामण काययोग प्रत्ययोंका अभाव है । मनुष्यायु और तियगायुके
संतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, जैदारिकमिथ, वैश्वियकमिथ और कामण प्रत्ययोंका अभाव
दोय प्रवृत्तियोंके पचाम प्रत्यय हैं, क्योंकि, सासावनसम्यग्दृष्टियोंके पाच मिथ्याव
अभाव है ।

देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाण बधो देवगइसजुतो । मणुसाउ मणुसगइदुगाण मणुस-
गइसजुतो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोणार्ण तिरिक्खगइसजुतो । ओरालियसरीर-
मज्झिमचउसठाण-ओरालियसरीरअगोवग पचसघडण अप्पसत्थविहायगइ दुमग-दुस्सर अणादेज-
णीचागोदाण तिरिक्ख-मणुसगइसजुतो बधो । उच्चागोदस्स देव मणुसगइसजुतो बधो,
तिरिक्खेसुच्चागोदाभावादो । अवसेसाण पयडीण बधो तिगइसजुतो, णिरयगइवधाभावादो ।
देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाण तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाण पयडीण बधस्स सामी चउगइ-
सासणा । बधद्धान बधवोच्चेदो च णत्थि । छादलीसधुवनधपयडीण तिविहे बधो, धुवा-
भावादो । अवसेसाण सादि-अड्डो, अड्डवधधितादो ।

सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदभंगो ॥ ३१८ ॥

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय सादासाद-गारसकसाय पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-
सोग-भय-दुगु ३१-मणुसगइ देवगइ-पचिन्दियजादि-ओरालिय-वेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर समचउ
रससठाण-ओरालिय-वेउव्वियअगोवग-वज्जरिसहसघडण-वण्ण गध रम फास मणुसगइ-देवगइ-

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकरूपा य देवगति सयुक्त होता है । मनुष्यायु
और मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मनुष्यगति सयुक्त होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गतिद्विक और
वद्योतका बन्ध तिर्यग्गति सयुक्त होता है । औदारिकशरीर मध्यम चार सस्थान,
औदारिकशरीरागोपाग, पाच सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्मग दुस्सर, अनादेय और
नीचगोत्रका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । उच्चगोत्रका देव य
मनुष्य गतिसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यचोम उच्चगोत्रका अभाव है । शेष
प्रकृतियोंका बन्ध तीन गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंके नरक
गतिके बन्धका अभाव है ।

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्यच मनुष्य स्त्रामो ह । शेष प्रकृतियोंके
बन्धके स्वामी चारों गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि हैं । बन्धाध्यान और बन्धव्युत्प्रेद नहीं
है । छादलीस धुवनन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव
बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुन बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुव
बन्धी हैं ।

सम्यग्मिध्यादृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा असयत जीवोंके समान है ॥ ३१८ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सात्ता व असात्ता चेदनीय, बारह कषाय,
पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय जाति,
औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कामण शरीर औदारिक व
अगोपाग, वज्रर्मसहनन, वण्ण, गन्ध, मनुष्यगति व देवगति

प्राग्भागाणुपुष्पी-अगुरुलहुअ-उपघाद परघाद-उत्साम-पसत्यविहायगह-तस-वादर-पञ्चत-पत्तेय-
सरीर-थिराथिर सुहामुह सुमग सुस्मर-आदेज जसकित्ति अजमकित्ति निमिणुवागोद-पञ्चतराह्य-
पयडीओ सम्मामिच्छादद्विहि वज्जमाणियाओ । उदयादो वघो पुञ्च पञ्च [वा] वोच्छिण्णो
त्ति एमो विचारो पत्ति, पयडीणमेत्थ वघोदयनेच्छेदाणुत्तमादो ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पर्विदियजादि-तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-
फाम अगुरुलहुअ-उपघाद-परघाद-उत्साम-तस-वादर-पञ्चत पत्तेयमरीर-थिराथिर-सुहामुह-
निमिण पचतरादयाण मोदओ वघो, एत्थ धुवोदयत्ताओ । निद्रा-पयला-सादामाद-नारसकमाय-
पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय दुगुळा-समचउरससठाण-पसत्यविहायगह-सुमग-सुस्सर-
आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाण वघो सोदय-परोदओ, उहयहा वि वधुत्तलमादो ।
मणुसगह-देवगह-वेउब्बियसरीर-ओगालिय वेउब्बियसरीरओगवग-वज्जरिसहसघडण-मणुसगह-
देवगइप्राग्भागाणुपुष्पीण परोदओ वघो, सोदण वधविरोहादो ।

पचणाणारणीय छदसणावरणीय नारसकमाय पुरिसवेद-भय दुगुळा मणुसगह-देवगह-
पर्विदियजानि-ओरालिय-वेउब्बिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण ओरालिय वेउब्बियओ

पूर्वी, अगुरुलहु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, ज्ञेय, वादर, पयोन्त,
प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्वर, सोदय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति,
निर्माण, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय प्रकृतिपा मन्थगिमध्यादृष्टि जीवों द्वारा बध्यमान हैं ।
उदयसे पन्ध्र पूर्वमे या पश्चात् व्युत्थित होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि,
यहां उक्त प्रकृतियोंके वध और उदयका व्युत्थेद नहीं पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैजस ॥ कार्मण शरीर,
घर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलहु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, ज्ञेय, वादर, पयोन्त,
प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तरायका सोदय वध
होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, साता व जमाना वेदनीय, बारह
कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति शोक, भय, जुगुप्सा समचतुरस्रस्थान, प्रशस्त
विहायोगति, सुमग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका वध
सोदय परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी इनका वध पाया जाता है । मनुष्य
गति, देवगति, वैभियिकशरीर, आदारिक व वैभियिक शरीरागोपाग, वज्रपभसहनन,
मनुष्यगतिप्रायग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायग्यानुपूर्वीका परोदय वध होता है, क्योंकि,
सोदयसे इनके वधका विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कपाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा,
सोदय, देवगति, पचेन्द्रिय जाति, आदारिक, वैभियिक, तैजस व कार्मण शरीर,

वग-वज्जरिसहस्रघडण वण्ण गध रस फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उच-
पाद-परपाद-उस्सास पसत्थविहायगइ तस-चादर-पज्जस-पत्तेयसरीर-सुभग-सुत्सर-आदेवज्ज-
णिमिणुच्चागोद पचतराइयाण णिरतरो बधो, एत्थ धुववधदसणादो । सादासाद-हस्स-रदि-
अदि-सोग-धिराथिर सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीण सातरो, एगसमएण वि अणुव्वरम-
दसणादो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरगोवग-वज्जरिसह-
सघडणाण बादालीस पचया, ओरालियकायजोगाभावादो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-
वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअगोवगाण पि बादालीस पचया, वेउव्वियकायजोगा-
भावादो । अवसेसाण तेदालीस पचया, पचमिउत्ताणुबधिचउपकोरालिय-वेउव्विय-
मिस्स-कम्मइयपचयाणमभावादो । मणुसगइदुगेरालियदुग वज्जरिसहसघडणाण बधो
मणुसगइसजुतो । देवगइ-वेउव्वियदुगाण देवगइसजुतो । सेससच्चपयडीण देव-
मणुसगइसजुतो । मणुमगइदुगेरालियदुग-वज्जरिसहसघडणाण देव-गेरइया सामी ।
देवगइ-वेउव्वियदुगाण तिरिक्ख-मणुमा सामी । सेसाण पयडीण बधस्स सामी

समचतुरअसंख्यान, औदारिक च वैक्रियिक शरीरारोपाग, यज्जर्पमसहनन, वर्ण, गन्ध, रस,
स्पर्श, मनुष्यगति च देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास,
प्रशस्तविहायोगति, अस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुखर, आदेय, निर्माण,
उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनका धुवबन्ध
देखा जाता है । साता च असाता वेदनीय, हारस्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर,
हृम, अहृम, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे
भी इनका बन्धविध्राम देखा जाता है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिक शरीर, औदारिकशरीरारो-
पाग और यज्जर्पमसहननके व्यालीम प्रत्यय है, क्योंकि, औदारिककाययोगका
अभाव है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक
शरीरारोपागके भी व्यालीस प्रत्यय है, क्योंकि, यहा वैक्रियिककाययोगका अभाव है । शेष,
प्रवृत्तियोंके तैदालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, पाच मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, औदारिक
मिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कर्मण प्रत्ययोंका मिश्रगुणस्थानमें अभाव है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और यज्जर्पमसहननका बन्ध मनुष्यगतितसे सम्युक्त
होता है । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका बन्ध देवगति सम्युक्त होता है । शेष सत्र प्रवृ-
त्तियोंका बन्ध देव च मनुष्य गतितसे सम्युक्त होता है । मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक च यज्ज-
र्पमसहननके देव च नारकी सामी हैं । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके त्रियेच च मनुष्य
सामी हैं । शेष प्रवृत्तियोंके बन्धके सामी चारों गतियोंके सम्यग्मिथ्याहाष्टे हैं । बन्धाध्यान

चउगइसम्मामिच्छाद्विणो । चउद्वाण गत्थि, एन्कम्हि अद्वाणविरोहादो । बधवोन्नेदो वि
गत्थि, 'एत्थ सत्तासि बधुवलभादो' । उवपधिपयडीण तिविहो बधो, धुवाभाभादो । ससाण
सादि-अहुवो, अहुवपधितादो ।

मिच्छाद्विणमभवसिद्धियभगो ॥ ३१९ ॥

सुगममेदं सुत्त, विंससामावादो । नउरि उवपधिपयडीण चउन्निहो बधो, सादि-सानर
बधुवलभादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु जाव तित्थयरे ति ओघभगो
॥ ३२० ॥

एहदिय श्रीइदिय-सीइदिय चउरिदियजादि-आदान-थावर-सुहुम-साहारणाण परोदयसु
लभादो पविंदियजादि-तस वादराण सोदयबधुवलभादो नेद सुत्त जुज्जदे ? । न, देसामासिय

नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अज्ञानका विरोध है । बन्ध-पुच्छेद भी नहा है,
क्योंकि, यहा सब प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ध्रुव-रन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका
बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव-रन्धीका यहा अभाव है । दोष प्रकृतियोंका सांदि व अधुय बन्ध
होता है, क्योंकि, ये अधुयबन्धी हैं ।

निष्पादष्टि जीवोंकी प्ररूपणा अभव्यसिद्धिक जीवोंके समान है ॥ ३१९ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, यहा कोई विशेषता नहीं है । भेद इतना है कि ध्रुव
रन्धी प्रकृतियोंका यहा चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, सांदि व सांतर अर्थात्
अधुय बन्ध पाया जाता है ।

संज्ञिमार्गणानुसार सजी जीवोंमें तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा है
॥ ३२० ॥

शङ्का—चूँकि यहा पंचेन्द्रिय, छीन्द्रिय, श्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आत्ताप,
स्वावर, सूक्ष्म और माधारण प्रकृतियोंका बन्ध परोदयसे और पंचेन्द्रिय जाति, वस
व वादरका बन्ध सोदयसे पाया जाता है, अतएव यह सूत्र युक्त नहीं है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देशामार्शक-सूत्रोंमें इस प्रकारकी

सुतेषु एवविहभेदातिरोहादो । पयडिबन्धानिनिधनभेदपदुप्यायणद्वमाह—

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स चक्खुदंसणिभंगो ॥ ३२१ ॥

सुगममेद ।

असणीसु अभवसिद्धियभंगो ॥ ३२२ ॥

पचणाणावरणीय-णवदसणावरणीय सादासाद-मिच्छत-सोलस-रुसाय-णवणोकेसाय-चउ-
आउ चउगह-पचजाडि-ओरालिय-वेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर-छसठाण-ओरालिय वेउव्वियभंगो-
वग ठसपडण वण्ण गध रस-फाम-चउआणुपुव्वी-अगुरुवलहुम-उपघाद परघाद-उत्सास-आदा-
उज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-यादर-सुहुम-पज्जतापज्जत्त-पत्तेय साहारणसरीर धिराथिर-सुहा-
सुह सुमग-दूमग सुस्सर-दुस्सर-आदेज अणदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण पीजुच्चागोद-
पचतराहयपयडीओ असणीहि बज्झमाणियाओ । उदयादो बधो पुव्व पच्छ वा वोच्छिण्णो ति
परिस्खा णटिय, एत्थेदासिं धघोदयवोच्चेदाभावादो ।

विशेषता विरोधसे रहित है ।

प्रकृतियोंके बन्धाधानमिमित्तक भेदके प्ररूपणार्थ सूत्र कहते हैं—

परन्तु विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयकी प्ररूपणा चक्षुदर्शनी जीवोंके समान है ॥ ३२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असङ्गी जीवोंमें बन्धोदयव्युच्छेदादिकी प्ररूपणा अभव्यसिद्धिक जीवोंके समान है ॥ ३२२ ॥

पाच घ्राणावरणीय, नौ दर्शनारणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोक्तषाय, चार आयु, चार गतिया, पाच जातिया, औदारिक, वैकियिक, तेजस व कामेण शरीर, छह सख्यान, औदारिक व वैकियिक शरीरागोपाग, छह सहनन, पर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, चार आनपूर्वा, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्रवास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतिया, त्रस, स्थावर, यादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, मल्लेक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्मग, सुस्वर, दुस्वर अपदेय, अनदेय, यश-कीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊच गोत्र और पाच अन्तराय, ये प्रकृतिया असङ्गी जीवोंके द्वारा ग्रह्यमान हैं । उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह परीक्षा पहा नहीं है। क्योंकि, यहा इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय मिच्छत-तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ थिराथिर-सुहासुह निमिण-णीचागोद-पचतराइय तिरिक्खगईण धघो सोदओ । गिरय-देवाउ गिरय-देवगइ-वेउत्थियमगी रेउत्थियमगीअगोवग-गिरय-देवगइपाओग्गानुपुव्वी-उच्चागोद-मणुसाउ मणुसगइदुगाण परोदओ धघो । पचदसणावरणीय-सादासाद-मोलस-कमाय णवणोकमाय-पचनादि-ओरात्थियसरीर-उसठाण ओरात्थियसरीरअगोवग छसचडण-तिरि-क्खानुपुव्वी आदाउज्जेव देविहायगइ तम थाय पादर सुहुम पज्जतापज्जत-पतेय-साहारण-सरीर सुभग दूभग सुस्सर दुस्सर आदेज्ज [अणादेज्ज-] जसकित्ति अजसकित्तीण धघो सोदय परोदओ, उदयहा वि यअविरोहामासाद । उवपाद परपाद उस्सासाण पि सोदय-परोदओ, अपज्जत्तकाले उदएण निणा वि धधुवलभादो ।

पचणाणावरणीय णउदसणावरणीय मिच्छत सोलमरुसाय भय दुगुठ-चउआउ-तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण गंध-रस फास अगुरुअलहुअ उपपाद निमिण-पचतराइयाण गिरतरो धघो, एगसमएण धधुवरमाभावाओ । सादामाद मत्तणोकमाय गिरय-मणुस-देवगइ-पचिंदियजादि-वेउत्थियसरीर छसठाण ओरात्थिय-वेउत्थियसरीरअगोवग छसचडण गिरय-मणुस देवानुपुव्वी-पर-

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यातय, तैजस य कामण शरीर, घर्ष, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण, नाशगोत्र, पाच अन्तराय और तियगतिफा य य स्वोदय होता है । नारकाय, देवाय, नरकगति, देवगति, वैत्रियिकशरीर, वैत्रियिकशरीरागोपाग, नरकगति य देवगति प्रायेत्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र, मनुष्याय और मनुष्यगतित्रिक परोदय बंध होता है । पाच दर्शनावरणीय, साता य असाता वेदनीय, सोलह कपाय, ना नोकपाय, पाच जातिया, औदारिकशरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहनन, तिथगानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगनिया, त्रस, स्वाधर, पादर, सुहम, पयाण, अपयाण, प्रत्येक य साधारण शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, [अनादेय], यशकित्ति और अयशकित्ति य बन्ध स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी इनने बंधका कोई विरोध नहीं है । उपधात, परधात और उच्छ्वासका भी स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपयान्तकालमें उदयके बिना भी इनका बंध पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यातय, सोलह कपाय, भय, दुगुप्ता, चार आयु, तैजस य कामण शरीर, वण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपधात, निर्माण और पाच अन्तरायका निरंतर बंध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बंधविधामका प्रभाव है । साता य असाता वेदनीय, सात नोकपाय, नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, वैत्रियिक शरीर, छह सस्थान, औदारिक य वैत्रियिक शरीरागोपाग,

[१२२]

पादुस्साम-आदाबुजोव-दोविहायगइ तस-थावर वादर-सुहुम-पञ्जत्तापञ्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-
शिराधिर-सुहासुह सुमग-दूमग-सुस्सर दुस्सर-आदेज्ज अणादेज्ज-असकित्ति-अजसकित्ति-उच्चा-
गोदाण मातरो वधो, एगसमण्ण नि धधुवरमदसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणु-
पुन्नी ओराळियसरीर जीचागोदाण वधो सातर-णित्तरो, तेउ वाउकाइएसु णित्तरवधुवलमादो ।

असणीसु पण्णदालीस पच्चया सच्चपयडीण, वेउळियदुग-चउविहमण-तिविहवचिजोग-
माणवासनमावादो । णवरि णिरय-देवाउअ-णिरय-देवगइ-णिरयगइ-देवगइपाओग्गाणुपुन्नी-
वेउळियसरीर-वेउळियसरीरअगोवगाण तेगलीस पच्चया, ओराळियमिस्स-कम्मइयपच्चयाण-
ममावादो । मणुस्स तिरिक्खाउआण चोदालीस पच्चया, कम्मइयपच्चयामावादो । 'साश-
वेदणीय इत्थि-पुरिसवेद इस्स रदि-समचउरससठाण-पसरथविहायगइ-थिर-सुह-सुमग-सुस्सर-
ओदेज्ज जमकिटीण यत्री तिगइमजुतो, णिरयगइए अमावादो । णिरयाउ णिरयगइ-णिरयगइ-
पाओग्गाणुपुन्नीण णिरयगइसजुतो । मणुमाउ मणुमगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुन्नीण मणुमगइ-
संजुतो । देवाउ-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुन्नीण देवगइसंजुतो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-

एइ सहनन, नारकानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, देवानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, माताप, उद्योत,
दो विहायोगतिया, अस, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण
शरीर, दिग्घर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, दुर्मग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनादेय,
'यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्छ्वगोत्रका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे
भी इनका बन्धविधाम देखा जाता है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर
और नीचगोत्रका बन्ध सान्तर निरतर होता है, क्योंकि, तेज उ धायुकायिक जीवोंमें
इनका निरतर बन्ध पाया जाता है ।

अमही जीवोंमें सब प्रकृतियोंके पैतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके वैकृतियिकट्टिक,
चार प्रकारका मन, अनुमय यच्चनयोगके जिना तीन प्रकारका यच्चन योग और मन जनित
असपम प्रत्ययोंका अमाय है । विशेषता यह है कि नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति,
नरकगति व देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैकृतियिकशरीर और वैकृतियिकशरीरानोपागके
पैतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिध और कामेण प्रत्ययोंका अमाय है । मनुष्यायु
और तिर्यगायुके चवालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, कामेण प्रत्ययका अमाय है ।

मातयेदनीय, स्त्रीयेद, पुरुषयेद, हास्य, रति, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहयो
गति, किरर, शुभ, सुमग, सुस्सर, आदेय और यशकीर्तिका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त
होता है, क्योंकि, इनके साथ नरकगतिके बन्धका अमाय है । नारकायु, नरकगति और
नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध नरकगतिसंयुक्त होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति और
मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । देवायु, देवगति और देवगति
प्रायोग्यानुपूर्वीका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति और तिर्यग्गति

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय मिच्छत्त-तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गघ-रस-फास-अगुरुअत्तहुअ धिराधिर सुहासुह-णिमिण णीचागोद-पचतराइय निरिस्खगईणं वधो सोदओ । णिग्य-देवाउ-णिरय-देवगइ-वेउअवियसरीर पेउअवियसरीरअगोवग णिरय-देवगइपाओगाणुपुव्वी-उच्चागोद-मणुसाउ मणुसगइटुगाण परोदओ वधो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोलस-कसाय णवणोकमाय-पचजादि-ओरालियसरीर-छमछाण ओरालियसरीरअगोवग छमघडण-तिरि-क्खाणुपुव्वी आदाउज्जेव-दोविहायगइ तम धाअर-धादर-सुहुम पज्जतापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-सरीर सुभग दूभग सुस्मर दुस्सर आदेज्ज [अणादेज्ज-] जसकित्ति अजसकित्तीण वधो सोदय परोदओ, उदयहा नि वधविरोहामाआदा । उवघाद परघाद उस्मासाण पि सोदय-परोदओ, अपज्जत्तकाले उदएण विणा नि यधुवन्मादो ।

पचणाणावरणीय णवदसणावरणीय मिच्छत्त-मोलस्रुमाय भय-दुगुछ-चउआउ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गघ रस फास अगुरुअत्तहुअ उवघाद णिमिण-पचतराइयाण निरतरो वंधो, एगममएण वधुवरमामाआदो । सादामाद मत्तणोकमाय निरय-मणुस-देवगइ-पचिंदियजादि वेउअवियसरीर-छसछाण ओरालिय पेउअवियसरीरअगोवग छसघडण निरय-मणुस देवाणुपुव्वी-पर-

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, तैजस व कामण शरीर, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण, नीचगोत्र, पाच भन्तराय और तियग्गातिका वध स्वोदय होता है । नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, वैश्विधिकशरीर, वैश्विधिकशरीरागोपाग, नरकगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र, मनुष्यायु और मनुष्यगतिविक्रम परोदय वध होता है । पाच दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, पाच जातिया, औदारिकशरीर, छह सन्धान, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहनन, तियगानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगतिया, त्रस, स्वाघर, धादर, सुहुम, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्सर, आदेश [अनादेश], यशकीर्ति और अयशकीर्तिका वन्ध स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी इनके वधका कोई विरोध नहीं है । उपघात, परघात और उच्छ्रयासका भी स्वोदय परोदय वध होता है, क्योंकि अपर्याप्तकालमें उदयके बिना भी इनका वध पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, चार आयु, तैजस व कामण शरीर, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच भन्तरायका निरन्तर वध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके वधविधामका है । साता व असाता वेदनीय, सात नोकपाय, नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय जाति, वैश्विधिकशरीर, छह सन्धान, औदारिक व वैश्विधिक शरीरागोपाग,

अनाहारएसु कम्महयभंगो ॥ ३२४ ॥

पचणाणावरणीय-उदसणावरणीय-असादवेदनीय-आरसकमाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-
[आदि] सोम मय-दुगुळा मणुसगद-पचिन्द्रियजाति ओरालिय तेजा कम्महयसरीर समचउरससठाण
ओरालियअगोवग-वज्जरिसहसपडण-वण्ण गध रस फस मणुसगडपाओग्गानुपुञ्जी-अगुरुवल्लुअ-
उवघाद परघाद-उस्सास पसत्थविहायगद-तस-आदर-पञ्च-पत्तेयसरीर-थिराथिर सुहासुह-सुभग-
सुस्सर आदेज जसकित्ति अजमकित्ति निमिणुवागोत्र-पचतराहयपयडीओ तीहि गुणट्ठाणेहि वज्ज-
माणियाओ । एदासिसुदयपुन्नारकालमनविबधवोच्छेदपरीक्खा णत्थि, स गसिमेत्थ बधोदय-
दसणादो ।

पचणाणावरणीय-उदसणावरणीय तेजा कम्महयसरीर-वण्ण-गध-रस-फस-अगुरुव-
ल्लुअ-थिराथिर-सुहासुह-निमिण-पचतराहयाण सोडओ बधो, ध्रुवोदयत्तादो । 'ओरालियसरीर-
समचउरससठाण ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसवडण उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थ-
विहायगद पत्तेयसरीर सुस्सरण परोदओ बधो, सोदण्ण-एत्थ बधविरोहादो । निद्रा-प्रचला-
असादवेदनीय-आरसकमाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोम-मय-दुगुळा-सुभग-आदेज-जस-

अनाहारु जीवोंमें कर्मणकाययोगियोंके समान प्ररूपणा है ॥ ३२४ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, उद दशनावरणीय, असाता वेदनीय, आरह कपाय, पुरसवेद,
हास्य, रति, [अरति], शोक, मय, दुगुप्सा, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व
कामेण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरागोपांग, वज्रर्पमसहनेन, वर्ण, गन्ध, रस,
स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलुपु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तप्रिहायो-
गति, व्रस, वादर, पर्षाप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर,
आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय प्रकृतिया तीन
[मिथ्यादृष्टि, सासादन, अविरतसम्पददृष्टि] गुणस्थानों द्वारा अध्ययमान हैं । इन प्रकृतियोंके
उदययुच्छेदके पूर्वापर कालसम्बन्धी बन्धयुच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, सब
प्रकृतियोंका यहा बन्ध और उदय देखा जाता है ।

-पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस,
स्पर्श, अगुरुलुपु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तरायका स्वोदय
यच हाता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक
शरीरागोपांग, वज्रर्पमसहनेन, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तप्रिहायोगति, प्रत्येक
शरीर और सुस्सरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे यहा इनके बन्धका
विरोध है । निद्रा, प्रचला, असाता वेदनीय, आरह कपाय, पुरसवेद, हास्य, रति, अरति,
शोक, मय, दुगुप्सा, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका स्वोदय

तिरिक्खगडपाओग्गाणुपुञ्जी एइदिय-यीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि-आदावुज्जोव-थावर-
सुहुम-साहारणमरीण तिरिक्खगडसजुतो वधो । वेउवियमरीर-वेउवियसरीरअगो-
वगाण देव गिरयगडमजुतो । ओराडियसरीरअगोवग-मज्झिमचउसठाण-उपघडण अपज्जत्ताण
तिरिक्ख-मणुसगडमजुतो वधो । णउसयवेद हुडसठाण अणमत्थविहायगद-दुमग दुस्सर-
अणदेव णीचागोराण तिगइमजुतो वधो, देवगईए अमावादो । उन्चागोदस्म दुगइसजुतो,
गिरय तिरिक्खगईए अमावादो । अवसेसाण पयडीण वधो चउगइसजुतो ।

तिरिक्खा चेव सामी, अण्णत्थासण्णीणमभाज्जादो । यवद्धाण गत्थि, एककहि
अद्धाणविरोहादो । नधोच्छेदो वि गत्थि, यवुवलमादो । ससेतालीसधुववगिपयडीण चउ-
व्विहो वधो । सेसाण सादि-अहुवो, पडिवम्बवधानुवलमादो ।

आहाराणुवादेण आहारएसु ओधं ॥ ३२३ ॥

एदम्म सुत्तम्म त्रधा ओधम्म परूवणा कदा तथा कायथा । णवरि सत्वरथ कम्म
इयपन्चओ अवणेयन्तो । चटुण्णमाणुपुञ्जी वयो परोदओ । उपघादम्म सोदओ ।

पूर्वी, एकेंद्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और
साधारणशरीरका तिर्यग्गतिसंयुक्त बन्ध होता है । धैक्रियकशरीर और धैक्रियक
शरीरागोपागका वेध व नरक गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीरागोपाग, मध्यम
चार संस्थान, छह सहस्रन और अपर्यन्तका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता
है । नपुंसकपेद, टण्डसंस्थान, अग्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादिय और नीच
गोत्रका तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ वेधगतिके बन्धका अभाव है ।
उच्चगोत्रका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, उसके साथ नरक और तिर्य-
ग्गतिका बन्ध नहीं होता । दोष प्रकृतियोंका बन्ध चारों गतियोंमें संयुक्त होता है ।

तिर्यक् जीव ही स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें असही जीवोंका अभाव है ।
बन्धावधान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यातका विरोध है । बन्ध पुच्छेद् भी नहीं
है, क्योंकि, बन्ध पाया जाता है । सतालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध
होता है । दोष प्रकृतियोंका सादि व अनुप बन्ध होता है, क्योंकि, इनके प्रतिपक्ष
अर्थात् अनादि व ध्रुव बन्ध नहीं पाये जाते हैं ।

आहारमार्गानुसार आहारक जीवोंमें ओधके समान प्ररूपणा है ॥ ३२३ ॥

इस सूत्रकी जैसे ओधमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहा भी करना चाहिये ।
विशेषता केवल इतनी है कि सर्वत्र कामण प्रत्ययको कम करना चाहिये । चार आनु-
पूर्वियोंका बन्ध परोदय होता है । उपघातका स्वोदय बन्ध होता है ।

अमनदसम्मादिद्वीसु गिरतरो, पडिवक्खपयडिनधाम्मादाओ । पच्चिदियजादि-ओरालियसरीर-
वगोण-परघादुस्साम-त्तम चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण मिच्छाद्विद्दि सातर-भिरंतरो, सण-
क्कुमारादिदेव णेरइएसु गिरतरवधुवलमादो । विग्गहगदीए कथ गिरंतरदा ? ण, सत्तिं पडुच्च
गिरतरवदेसादो । सासणसम्मादिद्वि असजदसम्मादिद्वीसु गिरतरो, पडिवक्खपयडिबधा-
मावादो । एनमेरालियसरीरस्स वि वत्तन्व ।

मिच्छाद्विद्दिस्स तेदालीस, सासणस्स अट्ठीम, असजदसम्मादिद्विस्स तेत्तीसं
पच्चया । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गानुपु-णीण वधो मणुसगइसजुत्तो । ओरालिय-
सरीर-ओरालियसरीरोगवाणं मिच्छाद्विद्दि-सासणसम्मादिद्वीसु तिरिन्त्य-मणुसगइसजुत्तो ।
असजदसम्मादिद्वीसु मणुसगइसजुत्तो । एन वज्जरिसहवडरणायणसरीरसयडणस्स वि
वत्तन्व । उच्चागोदस्स मिच्छाद्विद्दि-सासणसम्मादिद्वीसु मणुसगइसजुत्तो, असजदसम्मा-
दिद्वीसु देन मणुसगइसजुत्तो । सेसाणं पयडीण वधो मिच्छाद्विद्दि-सासणसम्मादिद्वीसु तिरिक्ख-
मणुसगइसजुत्तो, एवेसिमपज्जत्तकाले देन गिरयगईण वधाभावादो । असजदसम्मादिद्वीसु देव-

असजदसम्मादिद्वीसु निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका
अभाव है। पचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीरागोपाग, पराजाल, उच्छ्वास, अस, वादर, पर्याप्त
और प्रत्यक्षशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
मनुष्यादि देव और नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शका—निग्रहगतिमें बन्धकी निरन्तरता कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, शक्तिकी अपेक्षा उसकी निरन्तरताका उपदेश है।

सासादनसम्मादिद्वि और असजदसम्मादिद्वीसुमें उनका निरन्तर बन्ध होता है,
पर्यंत, उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। इसी प्रकार औदारिकशरीरके भी
बन्धना चाहिये।

मिथ्यादृष्टिके तेदालीस, सासादनसम्मादिद्विके अट्ठीस, और असजदसम्मादिद्विके
तेत्तीस प्रत्यय हैं। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्विका बन्ध मनुष्यगतिसंयुक्त
होता है। औदारिकशरीर और औदारिकशरीरागोपागाका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्मा-
दिद्वीसुमें तिर्यग्गति य मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। असजदसम्मादिद्वीसुमें
मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है। इसी प्रकार चर्चमवज्जनारवशरीरसहननके भी कहना
चाहिये। उच्चागोदका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्मादिद्वीसुमें मनुष्यगतिसंयुक्त, तथा
असजदसम्मादिद्वीसुमें देव य मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध
मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्मादिद्वीसुमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है,
पर्यंत, एसे अपर्याप्ततामें देव य नरक गतिके बन्धका अभाव है। असजदसम्मा

किति अजसकिति उच्चागोदाण सोदय परोदओ, उहयहा नि बधविरोहाभावादे । मणुसगइ-
मणुसगइपाओगाणुपुञ्जीण बधो मिच्छाइडि-सासणसम्मादिडीसु सोदय-परोदओ । असज्ज-
सम्मादिडीसु परोदओ चेव, मोदण्ण बधविरोहादे । पचिडियजादि तस पादर-पञ्जताण
मिच्छाइडीसु बधो सोदय-परोदओ, पडिवक्खुदयदसणादे । सासणसम्मादिडि अमज्जदसम्मा
दिडीसु सोदओ चेव, पडिवक्खुदयामावादे ।

पचणाणारणीय छद्मणावरणीय पारमकसाय भय दुगुठ-तेजा-कम्मइयसगीर-वण्ण-
गघ्न-रस-फास अगुरुवल्लुअ उपघाद णिमिण पचतराइयाण गिरतरो बधो, धुवधवितादे ।
असादावेदणीय-हस्स-रदि अरदि सोग थिराथि-मुहामुह-जसकिति अजमकितीण सातरो बधो ।
पुरिसवेदस्स मिच्छाइडि-सासणसम्मादिडीसु सातरो । असज्जदसम्मादिडीसु गिरतरो, पडिवक्ख
पयडिनधाभावादे । एउ समचउरममठाण-वज्जरिसहसघडण पसरथविहायगइ-सुभग-सुस्सर-
आदेज्जुच्चागोदाण पि वत्तज । मणुसगइ मणुसगइपाओगाणुपुञ्जीण मिच्छाइडि-सासणसम्मा
दिडीसु सातरो गिरतरो, आणइदिदेवसुण्णज्जिय विगहगईए वट्टमाणेसु गिरतरबधुवलभादे ।

परोदय ब न होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है । मनुष्य
गति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका बन्ध मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुण
स्थानोंमें स्वोदय परोदय होता है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें परोदय ही बन्ध होता
है, क्योंकि, यहा स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । पचेन्द्रिय ज्ञाति, जस, पादर और
पयाप्तका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष
प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें
उनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

पाच शानावरणीय, छद्मदर्शनावरणीय, वारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व
कार्मेण शरीर, धन, गन्ध, रस, स्पर्श, अशुक्लघु, उपघात, निर्माण और पाच भन्तराय,
इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुववर्गी हैं । असादावेदनीय, दास्य, रति, अरति,
शोक, स्तिर, अस्तिर, शुभ, अशुभ, यशस्कीति और अयशस्कीतिका सान्तर बन्ध होता है ।
पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर होता है । असयतसम्य
ग्दृष्टियोंमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव
है । इसी प्रकार समचउरससस्थान, वज्जर्यममहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर,
आदेय और उच्चगात्रके भी कहना चाहिये । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका
द्वयोंमें उत्पन्न होकर विप्रहयनिमें वर्तमान जीवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

ते, पपुदयाभावादो । श्रीगमिद्वितिय जणताणुपधिचउक्काण गिरतरो बघो, अणेगसमय-
 त्तसिसेनुचतादो । निरिखगद-तिरिखगइपाओग्गाणुपुब्बि णीचागेदाण मिच्छाइडीसु सातर-
 निग्गो, तेउचाउकाटणसु विग्गइ काऊणुप्पण्णार्ण तदो विग्गइगईए गयाण सत्तमपुढवीडो
 सिग्गइ काऊा णिगायाण च गिरतरपुवउभाडो । सासणम्मि सांतरो, एगसमएण वि बधु-
 समसिउदसयाने । मेमाण पयडीण बघो सव्वत्थ सातरो, सामावियादो । पच्चया सुगमा ।
 निरिखगदओग्गाणुपुब्बि उन्नोयाण तिरिखगइमजुत्तो । चउयउण-चउसघडणाण तिरिख-
 गममजुत्तो । इधियेदस्स दुगइसजुत्तो, देव गिरयगईणमभावादो । अणसत्थविहायगइ-
 द्दुग्ग दुम्मर अणोदेज्ज णीचागेदाण ययो मिच्छाइडिम्हि सासणे दुगइसजुत्तो, देव-गिरय-
 गइयनभावादो । श्रीगमिद्वितिय-अणताणुपधिचउक्काण मिच्छाइडिम्हि सासणे दुगइसजुत्तो,
 निग्गदेवगईणमभावादो । चउगइमिच्छाइडि सासणमम्माडिडिणो सामी । बधुद्धाण बंध-
 दोउदद्वान च सुगमं । धुउवधीण नंओ मिच्छाइडिम्हि चउत्तिहो । सासणे तिविहो,

होता है, क्योंकि, यहा उनका उदयाभाव है । स्थानगृद्धित्रय और अनन्तानुयन्धिचतुष्कका
 गिरतर बन्ध होता है, क्योंकि, ये अनेक समयरूप बंधशक्तिसे संयुक्त हैं । तिर्यग्गति, तिर्य-
 गगताणानुपूर्वी और नीचगोत्रा मिथ्यादृष्टिओंमें सान्तर निरन्तर रन्ध होता है, क्योंकि,
 वरकरि और पायुकायिक जीवोंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए, उनमेंसे विग्रहगतिमें
 सब हुए, तथा मज्जम धूमिरीमें विग्रह करके निकले हुए जीवोंके उनका निरन्तर बन्ध पाया
 जाता है । सामादन गुणस्थानमें उनका सातर रन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी
 कथावगमनगति देखी जाती है । दोष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सातर होता है, क्योंकि,
 ऐसा समझा है । प्रत्यय सुगम है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसे
 धनुवच होता है । चार मस्थान और चार सहननरा तिर्यग्गति और मनुष्यगतितसे संयुक्त
 रह जाता है । मर्यादका दो गतियोंमें संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा उक्त दो गुणस्थानोंमें
 सब बन्ध गतिके बंधका अभाव है । अप्रदास्तविहायोगति, दुर्मग, दुस्तर, अनोद्वेय और
 अत्रोद्वेय बंध निर्यादृष्टि य सामादनमम्यदृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त होता है,
 अत्रोद्वेय बंध मरक गतिके बंधका अभाव है । स्थानगृद्धित्रय और अनन्तानुयन्धिचतुष्कका
 निर्यादृष्टि य सामादनमम्यदृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि,
 शब्द वच गतिके बंधका अभाव है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सामादनमम्यदृष्टि
 रहता है । बंधागमन य बन्धधुवउदम्भान, सुगम है । धुउवधी प्रकृतियोंका बन्ध
 निर्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है । सामादन गुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध

मणुसगइसजुतो, तत्थण्णगर्दण वधाभापादो ।

मणुसगइ मणुमगइआगमाणुपुव्वी ओरात्थियसरीर ओरात्थियसरीरअगोवगाण चउगइ-
मिच्छाइडि-सासणसम्मादिड्ढी सामी, देव पिरयगइअसजदसम्मादिड्ढी सामी । एव वज्ज
रिसहसवडणस्स वि वत्तय । सेमाण पयडीण चउगइमिच्छाइडि-सासणसम्मादिड्ढी अमजद-
सम्मादिड्ढी सामी । वधद्धाण सुगम । वधवोच्छेदो च सुगमो । धुमनधीण वधो मिच्छाइडीसु
चउत्थिहो, सासणसम्मादिड्ढी अमजदसम्मादिड्ढीसु तिनिहो । सेमाण पयडीण सच्चत्थ
सादि-अहुवो ।

धीणमिद्धित्थ अणताणुगधचउत्थियेद तिरिस्सगइ चउसवडण चउमठाण तिरिस्स
गइआगमाणुपुव्वी-उज्जोव-अणसत्थविहायगइ-दुमग दुम्मर-अणाइज्ज-णीचागोदाण दुड्डाण-
पयडीण वुच्चदे — अणताणुगधचउत्थियेदोदाण वधोदया सम वोच्छिण्णा । दुमगाणादेज्ज
णीचागोद तिरिस्सगइगण पुन उवो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि । अवसेसाण पयडीण
वधोच्छेदो चेन, एत्थुदयपिरोहाओ । अणताणुगधचउत्थियेद-तिरिस्सगइदुग दुमगाणा-
देज्ज णीचागोदाण वधा सोदय परोदओ, उदयहा वि वधपिरोहाभापादो । सेमाण परोदओ

गइयिओं वेन व मनुप्य गतिसे सयुक्त वन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अन्य गतियोंके बन्धका
अभाव है ।

मनुप्यगति, मनुप्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, औदारिकशरीर और औदारिकशरीरागो
पागके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि, तथा वेद्यगति व नदक
गतिके असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । इसी प्रकार वज्जवभसहननक भी वेदना चाहिये ।
शेष प्रवृत्तियोंके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सामादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि
स्वामी हैं । वधाध्यान सुगम है । वन्ध-युच्छेद भी सुगम है । धुमनधी प्रवृत्तियोंका
वध मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका होता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्य
ग्दृष्टियोंमें तीन प्रकारका वध होता है । शेष प्रवृत्तियोंका सर्वत्र सादि व अधुच वध
होता है ।

स्वप्नपृथिव्य, अनन्तानुगधचतुष्क, स्वप्न, तिर्यग्गति, चार सहनन, चार
सस्यान, निपगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, उद्योत, अप्रशस्नविहायगति, दुमग, दुस्वर, अनदेय
और नीचगोत्र, इन छिस्थान प्रवृत्तियोंकी प्ररूपणा करते हैं — अनन्तानुगधचतुष्क और
स्वप्नदका वध व उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं । दुमग, अनदेय, नीचगोत्र और
तिर्यग्गतिस्वप्न पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है । शेष प्रवृत्तियोंका
वेदक वध-युच्छेद ही है, क्योंकि, यह उनमें उदयका निरोध है । अनन्तानुगधचतुष्क,
१, तिर्यग्गतिद्विक, दुमग, अनदेय और नीचगोत्रका वन्ध स्वोदय परोदय होता है,
दोनों प्रकारमें भी इनके वधका निरोध नहीं है । शेष प्रवृत्तियोंका परोदय वध

पारिशिष्ट

१ बंधसामित्तविचय-सुत्ताणि ।

सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	जो सो बंधसामित्तविचयो णाम तस्स इमो दुग्गिहो णिद्देसो ओघेण भादसेण य ।		गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे यधा, अजसेसा अबधा ।	१३
२	ओघेण रधमामित्तविचयस्स चोहत्तनीरसमासाणि णाद ध्याणि भयति ।	१	७ णिहाणिहा-पयलापयला-धीण- गिद्धि भणताणुग्धि-कोह-माण- माया लोम-इत्थियवेद तिरिक्खाड तिरिक्खगइ चउसडाण चउसघ डण-तिरिक्खगइपाभोगाणु- पुग्धि उज्जोव भणसत्यविहायगादि- दुभग दुस्सर अणादेज्ज-णीचा- गोदाण को बधो को अबधो ?	३०
३	मिच्छाइद्दी सासणसम्माइद्दी सम्मामिच्छाइद्दी असज्जदसम्मा इद्दी सज्जदासज्जदा पमत्तसज्जदा अप्यमत्तसज्जदा अपुब्बकरणपइद्दु उरममा खया अणियट्ठिगदर सापराइयपइद्दुउवसमा खया सुद्धमसापराइयपइद्दुउवसमाखया उरमतक्सायणीयरागछुदुमत्या दीणक्सायवीयरायछुदुमत्या सज्जोगिकेउली अज्जोगिकेउली ।	४	८ मिच्छाइद्दी सासणसम्माइद्दी बधा । एदे रधा, अवसेसा अरधा ।	३१
४	एदेसि चोहत्तह जीरसमासाण पयन्निधयोच्छेदो कादन्वो भरदि ।	५	९ णिहा पयलाण को रधो को अरधो ?	३५
५	परण्ण णाणारणीयाण चटुण्ह दमणावरणीयाण जमकित्ति उच्चागोद-पचण्हमतराइयाण को बधा को अरधो ?	५	१० मिच्छाइद्दिपहुडि जाव अपुब्ब- करणपविट्ठसुद्धिसज्जदेसु उव- समा खया बधा । अपुब्बकरण खाए सखेज्जदिम भाग गतूण रधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अजसेसा अबधा ।	३६
६	मिच्छादिट्ठिपहुडि जाव सुद्धम सापराइयसुद्धिसज्जदसु उवसमा खया बधा । सुद्धमसापराइय सुद्धिसज्जदाए चरिमसमय	७	११ सादावेदणीयस्स को बधो को अबधो ?	३८
११.			१२ मिच्छाइद्दिपहुडि जाव सज्जोगि केउलि ति बधा । सज्जोगि केउलिअडाए चरिमसमय गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अजसेसा अरधा ।	३९
			१३ असादावेदणीय-अरदि-सोग-	४०

१ बंधसामित्तविचय-सुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	जो सो बधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुग्घो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ।	१	गत्तूण बधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अउसेसा अयधा ।	१३
२	ओघेण बधसामित्तविचयस्स चोहसजीवसमासाणि णाव व्याणि भवति ।	४	७ णिद्वाणिद्वा-पयलापयला-धीण- गिद्धि अणताणुयधि-कोह-माण- माया लोभ-इत्थियेद तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ चउसठाण चउसघ इण—तिरिक्खगइपाभोगाणु— पुग्घि उज्जोव अप्पसत्थविहायगदि दुभग दुस्सर अणादेज्ज-णीचा- गोवाण को यधो को अयधो ?	३०
३	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असजदसम्मा इट्ठी सजदसजदा पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा अपुग्घकरणपइट्ठ उयसमा खया अणियट्ठियादर सापराइयपइट्ठउयसमा खया सुहुमसापराइयपइट्ठउयसमा खया उयसतकसाययीयरागछदुमत्था खीणकसाययीयरागछदुमत्था सजोगिकेवली भजोगिकेवली ।	४	८ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बधा । एदे यधा, अवसेसा अयधा ।	३१
४	एदेसि चोहसण्ह जीयसमासाणं पयट्ठियधवेच्छेदो कादब्बो भवदि ।	५	९ णिद्वा पयलाण को यधो को अयधो ?	३५
५	पचण्ण णाणायरणीयाण चदुण्ह दसणायरणीयाण जसकित्ति उच्चागोद—पचण्हमतराइयाण को यधो को अयधो ?	७	१० मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाय अपुग्घ करणपविट्ठसुद्धिसजदेसु उव समा खया यधा । अपुग्घकरण झाप सखेज्जदिम भाग गत्तूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अउसेसा अयधा ।	३६
६	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाय सुहुम सापराइयसुद्धिसजदेसु उयसमा खया यधा । सुहुमसापराइय सुद्धिसजदझाप चारिमसमय		११ सादावेदणीयस्स को यधो को अयधो ?	३८
			१२ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाय सजोगि केवलि ति यधा । सजोगि केवलिअझाप चरिमसमय गत्तूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अवसेसा अयधा ।	३९
			१३ असादावेदणीय-अरदि-सोग—	

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
	अथिरे-असुह-अजसकिति- नामाण को बधो को अयधो ?	४०	२० मिच्छाद्विपहुडि जाय अणि यद्विवादरसापराइयपद्विउवसमा खवा यधा । अणियद्वि वादरदाए सेसे सखेज्जाभाग गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अयधा ।	५२
१४	मिच्छाद्विपहुडि जाय पमत्त सज्जा यधा । एदे बधा, अव सेसा अयधा ।	४१	२३ माण भायसज्जलणण को बधो को अयधो ?	५५
१५	मिच्छत्त-णपुसपवेद-णिरयाउ- णिरयगह-यइदिय-येइदिय-ती- इदिय-अउरंदिदियजादे हुटसठाण असपत्तमेयद्वसरोरसघडण- णिरयगहपाओग्गाणुपुवि आदान थायर सुहुम अपज्जत्त-साहारण सरोरणामाण को बधो को अयधो ?	४२	२४ मिच्छाद्विपहुडि जाय अणि यद्विवादरसापराइयपद्विउवसमा खवा यधा । अणियद्विवादरदाए सेसे सेसे सखेज्जाभाग गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अयधा ।	५६
१६	मिच्छाद्विपहुडि यधा । एदे बधा, अवसेसा अयधा ।	४३	२५ लोमसज्जलणस्स को बधो को अयधो ?	५८
१७	अपच्चकप्पाणावरणीय-कोध- माण माया लोम मणुसगह ओरा लियसरीर ओरालियसरीरअगो- घग घज्जरिसइयररणारायणसघ- डण-मणुसगहपाओग्गाणुपुवि- णामाण को बधो को अयधो ?	४६	२६ मिच्छाद्विपहुडि जाय अणि यद्विवादरसापराइयपद्विउवसमा खवा यधा । अणियद्वि वादरदाए अरिमसमय गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अयधा ।	५९
१८	मिच्छाद्विपहुडि जाय असज्जद सम्माद्विपहुडि यधा । एदे बधा, अव सेसा अयधा ।	४७	२७ इत्थं रदि मय दुगुछाण को बधो को अयधो ?	६०
१९	पच्चकप्पाणावरणीयकोध माण माया लोमाण को बधो को अयधो ?	४८	२८ मिच्छाद्विपहुडि जाय अपुच्च- करणपद्विउवसमा खवा, यधा । अपुच्चकरणदाए अरिमसमय गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा अवसेसा अयधा ।	६१
२०	मिच्छाद्विपहुडि जाय सज्जा- सज्जा यधा । एदे बधा, अव सेसा अयधा ।	४९	२९ मणुस्साउअस्स को बधो को अयधो ?	६२
२१	पुरिसवेद-कोधमज्जलणण को बधो को अयधो ?	५०	३० मिच्छाद्विपहुडि जाय अणि यद्विवादरसापराइयपद्विउवसमा खवा यधा । अणियद्वि वादरदाए सेसे सखेज्जाभाग गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अयधा ।	६३

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ मूल संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३१	देवाउअस्स को यधो को अबधो ?	६४	यधा । अपुव्वकरणद्वाए सखेज्जे भागे गतूण यधो वोच्छिज्जादि । एदे यधा, अउसेसा अयधा ।	७३
३२	मिच्छाद्विटी स्तासणसम्माद्विटी असज्जदसम्माद्विटी सज्जदासज्जदा पमत्तसज्जदा अप्पमत्तसज्जदा यधा । अप्पमत्तसज्जदाए सखे ज्जदिभाग गतूण यधो वोच्छिज्जादि । एदे यधा, अउसेसा अबधो ।	"	३० कदिहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोद कम्म यधति ?	७६
३३	देवगह-पच्चिदियजादि घेउठिय-तेजा कम्मइयसरीर समउउरस-रुठान-वेउठियसरीरअगोउग-घण्ण-गध रस-फास देवगह-पाओग्गाणुपुत्ति अशुरुचलहुव-उवघाद परघाद उस्सास-पसत्थ विहायगइ-त्तस-यादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुम-सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाण को यधो को अयधो ?	६६	४० तत्थ इमेहि सोल्लसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोद कम्म यधति ?	७८
३४	मिच्छाद्विटीपट्टुडि जाय अपुव्व करणपट्टुउयसमा सया यधा । अपुव्वकरणद्वाए सखेज्जे भागे गतूण यधो वोच्छिज्जादि । एदे यधा, अउसेसा अयधा ।	"	४१ इसणविसुज्जदवाए विणयसपण्ण दाए सील-उदेसु णिरदिचारवाए आवाप्पसु अपरिहीणदाए सण लवपडियुज्जणदाए लल्लिसवेग सपण्णदाए जघायामे तथा तथे साहूण पासुअपरिचागदाए साहूण समाहिसधारणाए साहूण येज्जायच्चजोगजुत्तदाए अरहत भत्तीए बहुसुदमत्तीए पययण भत्तीए पययणवच्छलदाए पय यणप्पमाउणदाए अमिक्खण अमिक्खण णाणोवजोगजुत्तदाए इच्चवेदेहि सोल्लसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोद कम्म यधति ।	७९
३५	आहारसरीर-आहारसरीरअगो-घण्णामाण को यधो को अबधो ?	७१	४२ जस्स इण तित्थयरणामगोद कम्मस्स उदण्ण मदेवासुरमाण-सस्स लोगस्स अच्चाणिज्जा पूज णिज्जा यद्वणिज्जा णमसणिज्जा णेदारा भम्मतित्थयर जिणा केवलिणो हवति ।	९१
३६	अप्पमत्तसज्जदा अपुव्वकरण पट्टुउयसमा सया यधा । अपुव्वकरणद्वाए सखेज्जे भागे गतूण यधो वोच्छिज्जादि । एदे यधा, अउसेसा अयधा ।	"	४३ आदेसेण गदियानुआदेण णिरय गत्तीए णेरइएसु पचणाणाउरण छदसणावरण सादासाद यारस-कसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय दुग्गहा-मणुम-गदि-पच्चिदियजादि-ओरालिय-	
३७	तित्थयरणामस्स को यधो को अबधो ?	७३		
३८	असज्जदसम्माद्विटीपट्टुडि जाय अपुव्वकरणपट्टुउयसमा सया			

सूत्र सत्या	सूत्र	शृष्ट सूत्र सत्या	सूत्र	शृष्ट
तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस- सठाण ओरालियसरीरअगोयग- यज्जरिसहसघडण-वण्ण-गध- रस फास-मणुसगइपाओग्गाणु- पुब्बि अगुरुलहुग-उवघाद-पर- घाद उस्सास पसत्थिहायगदि तस-थादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर- धिराधिर सुहासुह सुभग-सुस्सर आदेज्ज जसकित्ति अजसकित्ति- णिमिणुच्चागोद-पच्चतराइयाण को बधो को अबधो ?	५० मिच्छाद्विटी सासणसम्माद्विटी असज्जदसम्माद्विटी यथा । एदे यथा, अवसेसा अयथा ।	५१ तित्थयरणामकम्मस्स को यधो को अबधो ?	५२ असज्जदसम्माद्विटी यथा । एदे यथा, अवसेसा अयथा ।	५३ एउ तिसु उउरिमासु पुढवीसु जेय-उ ।
५४ मिच्छाद्विप्पहुडि जाव असज्जद सम्माद्विटी यथा । एदे यथा, अयथा णत्थि ।	५४ चउत्थीए पच्चमीए छट्ठीए पुन्वीए एव चेय णेद्वर । णयदि विसेसो, तित्थयर णत्थि ।	५५ सत्तमाए पुढवीए णेरइया पच्च णाणाउरणीय-छवसणावरणीय- सादासाद वारसकत्ताय-पुरिस- येद हस्स रदि भरवि-सोग भय- दुगछा पच्चदियजादि ओरालिय तेजा-कम्मइयसरीर समचउरस- सठाण ओरालियसरीरअगोयग- यज्जरिसहसघडण-वण्ण-गध- रस फास अगुरुपलहुव-उवघाद- परघाद उस्सास-पसत्थिविहाय- गइ-तस-थादर-पज्जत्त-पत्तेय- सरीर धिराधिर [सुहा] सुह सुभग सुस्सर आदेज्ज जसकित्ति अजसकित्ति-णिमिण-पच्चतरा- इयाण को बधो को अबधो ?	५६ मिच्छाद्विप्पहुडि जाव अस ज्जदसम्माद्विटी यथा । एदे यथा, अयथा णत्थि ।	५७ मिहणिहा-पयलापयला-वीण- गिद्धि अणत्ताणुवधिकोध माण- माया-लोभ-इत्थियेद-तिरिक्ख- गइ चउसठाण-चउमघटण-
५६ मिच्छाद्विटी सासणसम्माद्विटी यथा । एदे यथा, अवसेसा अयथा ।	५८ मिहणिहा-पयलापयला-वीण- गिद्धि अणत्ताणुवधिकोध माण- माया-लोभ-इत्थियेद-तिरिक्ख- गइ चउसठाण-चउमघटण-	५९ मणुस्साउअस्स को बधो को अबधो ?		

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
	तिरिक्खगइपाओग्माणुपुब्बी— उज्जोव अप्पसत्थविहायगइ दुमग दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण को बधो को अबधो ? १०९		कित्ति णिमिण-उच्चागोद पंचत- राइयाण को बधो को अबधो ? ११०	
५८ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा । "		६४ मिच्छाइट्ठिप्पह्ठि जाय सज्जदा सज्जदा बधा । एदे बधा, अबधा णत्थि । ११३		
५९ मिच्छत्त-णयुसयवेद तिरिक्खाउ हुइसठाण असपत्तसेवट्टसघडण णामाण को बधो को अबधो ? १११		६५ णिहाणिहा-पयलापयला-धीण- गिद्धि-अणताणुबधिकोघ-माण- माया लोभ-इत्थियेद तिरिक्खाउ मणुसाउ तिरिक्खगइ मणुसगइ ओरात्थिसरीर-चउसठाण ओरा त्थिसरीरअगोवग पचसघडण- तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओ- ग्माणुपुब्बी-उज्जोव-अप्पसत्थ- विहायगइ दुमग-दुस्सर-अणा- देज्ज-णीचागोदाण को बधो को अबधो ? ११९		
६० मिच्छाइट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा । "		६६ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा । "		
६१ मणुसगइ-मणुसगइपाओग्माणु- पुब्बी-उच्चागोदाण को बधो को अबधो ? "		६७ मिच्छत्त-णयुसयवेद-णिरयाउ- णिरयगइ-परिदिय बीरदिय तीर- दिय-चउरिदियजादि हुइसठाण- असपत्तसेवट्टसघडण-णिरय- गइपाओग्माणुपुब्बि-आदाव- थानर सुहुम अपज्जस साहारण सरीरणामाण को बधो को अबधो ? १२३		
६२ सम्मामिच्छाइट्ठी असज्जदसम्मा इट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा । ११२		६८ मिच्छाइट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा । "		
६३ तिरिक्खगदीय तिरिक्खा पंचि- दियतिरिक्खा पंचिदियतिरिक्ख- पज्जत्ता पंचिदियतिरिक्खजोणि णीसु पचणाणायरणीय उदसणा घरणीय-सादासाद-अट्टकसाय- पुरिसवेद-इस्स-रदि अरादि-सोग भय-दुमुछा-देवगइ-पंचिदिय- जादि-वेउब्बिय-तेजा-कम्मइय- सरीर-समचउरससठाण-वेउ- थियसरीरअगोवग वण्ण-गध- रस-फास-देवगदिपाओग्माणु- पुब्बी अगुसवलहव उवघाद-पर- घाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ- तस-चादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर- [थिरा] थिर-सुहासुह सुमग सुस्सर भादेज्ज जमवित्ति अजम		६९ अपच्चक्खानकोघ माण-माया- लोमाण को बधो को अबधो ? १२५		
		७० मिच्छाइट्ठिप्पह्ठि जाय अस जदमममाविट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा । "		

हस्त रदि अरदि-सोग-भय—
दुगुछा-मणुस्साउ-मणुसगह—
पचिदियजादि ओरालिय-तेजा
कम्मइयसरीर-समचउरस—
सठाण-ओरालियसरीरअगो—
पग यज्जरिसहसघडण-वण्ण-
गघ रस फास-मणुसगहपाओ-
ग्गानुपु-नी अगुरुमलहुअ-उज-
घाद परघाद उस्सान-पसत्थ-
विहायगह तस थादर-पजस-
पसेयसरीर धिराधिर सुहासुह
सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जम-
कित्ति-अजसकित्ति-णिमिण—
तिथयर उच्चागोद पचतराह-
याण को बघो को अबघो ?

१५५

१०१ असजदसम्मादिट्ठी यथा। अबघा
णथि ।

१५६

१०२ इदियाणयादेण एइदिया बादरा
सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता
वीइदिय तीइदिय-चउरिदिय-
पज्जत्ता अपज्जत्ता पचिदिय
अपज्जत्ताण पचिदियातिरिक्ख
अपज्जत्तमगो ।

१५८

१०३ पचिदिय-पचिदियपज्जत्तएसु
पचणाणायरणीय चउदसणा—
यरणीम जसकित्ति-उच्चागोद
पचतरायाण को बघो को
अबघो ?

१७०

१०४ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुम
सापररायसुद्धिसज्जेसु उव
समा रथा यथा । सुहुमसाप
राइयसुद्धिसज्जेसु चरिम
समय गतूण बघो योच्छि
ज्जदि । एदे यथा, अयसेसा
अबघा ।

१७२

१०५ निहाणिहा पयलापयला धीण-
गिद्धि अणंताणुयधिफोच्च माण-
माया लोभ-इत्थियेद—तिरि-
क्खाउ तिरिक्खगह-चउसठाण
चउसघडण तिरिक्खगहपाओ
ग्गानुपु-नी उज्जाय-मण्णसत्थ-
विहायगह दुमग दुस्सर अणा-
देज्ज णीचागोदाण को बघो
को अबघो ?

१७४

१०६ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी
यथा । एदे यथा, अयसेसा
अबघा ।

१०७ निहा पयलाण को बघो को
अबघो ?

१७७

१०८ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुण्य
करणपविट्ठसुद्धिसज्जेसु उव
समा रथा यथा । अपुण्यकरण
सज्जेसु सरेज्जदिम भाग
गतूण बघो योच्छिज्जदि । एदे
यथा, अयसेसा अबघा ।

१०९ सादावेदणीयस्स को बघो को
अबघो ?

११० मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सज्जोगि
केवली यथा । सज्जोगिकेवल्लि
अद्धाप चरिमसमय गतूण बघो
योच्छिज्जदि । एदे यथा, अय
सेसा अबघा ।

१७८

१११ असादावेदणीय-अरदि-सोग-
अधिर असुद-अजसकित्ति-
णामाण को बघो को अबघो ?

११२ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्त
सज्जेसु ति यथा । एदे यथा,
अयसेसा अबघा ।

१७९

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
११३	मिच्छस्त-णपुसयवेद निरयाउ निरयगइ पइदिय धीइदिय तीइ दिय-चउरिंदियजादि हुइसठाण असपत्तसेउट्टसघडण निरयाणु पुग्गी आदाय थावर-सुहुम अप- ज्जत्त—साहारणसरीरणामाण को यधो को अयधो ?	१८०	१२१	माण मायासजलणाण को यधो को अयधो ? १८५
११४	मिच्छाइट्ठी यधा । पदे यधा, अवसेसा अयधा ।	”	१२२	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाय आणि यट्ठी उवसमा खया यधा । अणियट्ठियादरदाए सेसे सेसे सखेज्जे भागे गतूण यधो योच्छिज्जदि । पदे यधा, अवसेसा अयधा । ”
११५	अपच्चक्खाणाउरणीयकोध— माण-माया-लोभ-मणुसगइ— ओरालियसरीर—ओरालिय— सरीरअगोयग यज्जरिसहघहर णारायणसरीरसघडण-मणुस- गइपाओग्गाणुपुधिणामाण को यधो को अयधो ?	१८०	१२३	लोभसजलणस्स को यधो को अयधो ? ”
११६	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाय अस जदसम्मादिट्ठी यधा । पदे यधा, अवसेसा अयधा ।	१८३	१२४	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाय आणि यट्ठी उवसमा खया यधा । अणियट्ठियादरदाए चरिम समय गतूण यधो योच्छिज्जदि । पदे यधा, अवसेसा अयधा । ”
११७	पच्चक्खाणावरणकोध माण— माया लोभाण को यधो को अयधो ?	१८४	१२५	हस्स-रदि भय दुग्गुछाण को यधो को अयधो ? १८६
११८	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाय सजदा सजदा यधा । पदे यधा, अव सेसा अयधा ।	”	१२६	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाय अपुञ्ज करणपघिट्ठउवसमा खया यधा । अपुञ्जकरणदाए चरिमसमय गतूण यधो योच्छिज्जदि । पदे यधा अवसेसा अयधा । ”
११९	पुरिसवेद कोधसजलणाण को यधो को अयधो ?	”	१२७	मणुस्साउअस्स को यधो को अयधो ? ”
१२०	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाय आणि यट्ठियादरसापराइयपट्ठिउव- समा खया यधा । अणियट्ठि यादरदाए सेसे सखेज्जाभागे गतूण यधो योच्छिज्जदि । पदे यधा, अवसेसा अयधा ।	”	१२८	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी यधा । पदे यधा, अवसेसा अयधा । ”
			१२९	देवाउअस्स को यधो को अयधो ? १८७
			१३०	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी सजदासजदा पमत्तमजदा अप्पमत्तसजदा यधा । अप्पमत्तदाए सखे

सूत्र सप्तम

सूत्र

पृष्ठ सूत्र सप्तम

सूत्र

पृष्ठ

ज्जिदम भाग गतूण वधा वोचिउ
ज्जदि । एदे वधा, असेसा
अवधा ।

१८७

१३१ देवगइ-पविदियजादि वेडा उय
तजा कम्मइयसरार समउउरस
सठाण वेडा उयसरीर गाग-
घण्ण मय रस फास देवगइ
पा तोगाणुपुत्री गुग्गुलुव-
उयवाद् परघाद्-उत्तमान-
पसत्तयिहायगइ-तल-गदर-
पञ्चत्त पत्तेपसरीर विर-सुम
सुभग सुस्सर गदेज्ज निमिण
णामाण को वधा को अवधा ?

”

१३२ मिच्छाद्विपट्टि जाय अपुत्र
करणपइदुउरसमा मया वधा ।
अपुत्रकरणद्वारे ससेजे भाग
गतूण वधा वोचिउज्जदि । एदे
वधा, अवसेसा अवधा ।

१८८

१३३ आहारमरीर आहारअगोवण-
णामाण को वधा को
अवधा ?

१८९

१३४ अप्पमत्तज्जदा अपुत्रकरण
पइदुउरसमा मया वधा ।
अपुत्रकरणद्वारे ससेजे भाग
गतूण वधा वोचिउज्जदि । एदे
वधा, अवसेसा अवधा ।

”

१३५ तित्थयरणामाण को उवो को
अवधा ?

”

१३६ असज्जमम्मादिट्टिपट्टि जाय
अपुत्रकरणपइदुउरसमा मया
वधा । अपुत्रकरणद्वारे ससेजे
भाग गतूण वधा वोचिउज्जदि ।
एदे वधा, अवसेसा अवधा ।

”

१३७ कायाणुसदेण पुढविपाइय
आउसाइय-वणफदिवाइय-
णिगोदणीय-गदर-सुहम-
पञ्चत्तापञ्चत्ताण गार-
फदिवाइयपत्तेयसगीरपञ्चत्ता
पञ्चत्ताण च पविदियनिमिण
अव जत्तभगे ।

१९०

१३८ तेउकाइय-गदर-गदर-
सुहम पञ्चत्तापञ्चत्ताण सा
चेर भगे । णरणि त्रिसेसो
मणुस्साउ मणुसगइ मणुसगइ
पा तोगाणुपुत्री-उत्तमानोद्
णरि ।

१९१

१३९ तलसाइय तमसाइयपञ्चत्ताण
मोत्र पेदर जाय तित्थयेरे
सि ।

२००

१४० जोगाणुवादेण पचवणजागि
पचवणजागि कायजोगीसु गोत्र
णेय-जाय ति थयेरे सि ।

२०१

१४१ सादावेदणीयस्स को वधा को
अवधा ? मिच्छाद्विपट्टि
जाय सजोगिपेउली उधा ।
एदे वधा अवधा नाति ।

२०२

१४२ जोरात्थिअयजोगीण मणुस-
गइमगो ।

२०३

१४३ णरणि त्रिसेसो सादावेद
णीयस्स मणवेगिभगो ।

२०४

१४४ जोरात्थिमिस्सकायजोगीसु
पचवणारणीय छदसणार-
णीय-असादावेदणीय-वारस-
कसाय-पुरिमवेद हस्स-रदि-
अरदि सोण मय दुगुछा-पवि-
दियजादि वेवा कम्मइयसरार-
समउउरसठाण-घण्ण-मय

सूत्र मर्या

सूत्र

शृष्ट सूत्र सत्या

सूत्र

शृष्ट

रस फास-अगुरुअलहुअ-उर-
त्राद परघाद उस्साम-पसत्त-
विहायगइ तस रादर-पज्जत्त-
पत्तेयसरीर यिरायिर सुहासुह
सुभग-सुस्मर-आदेज्ज-जस-
कित्ति णिमिण उच्चागोद पच-
तरादयाण को वधो 'को
अवधो ?

२०५

१४५ मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी
असज्जसम्माइट्ठी वधा । एदे
वधा, अवसेसा अवधा ।

२०६

१४६ णिहाणिहा-पयलापयला-थीण-
गिहि-अणत्ताणुअधिकोध माण
माया लोभ इत्थियेद-तिरिक्ख-
गइ मणुसंगइ ओरालियसरीर-
अउसठाण ओरालियसरीर-अगो-
वग पचसघटण तिरिक्खगइ-
मणुसगइपाओग्माणुपु-री-
उज्जोव अपसत्तविहायगइ-
दुभग-दुस्सर अणादेज्ज णीचा-
गोदाण को वधो को अवधो ?

२०९

१४७ मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी
वधा । एदे वधा, अवसेसा
अवधा ।

॥

१४८ सादायेदणीयस्स को 'धो को
अवधो ?

२१२

१४९ मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी
असज्जसम्माइट्ठी सज्जोगि
केवली वधा । एदे वधा, अवधा
णत्थि ।

॥

१५० मि-उत्त-णउमयेद-तिरि-
फलाउ मणुसाउ-अदुजादि दुड-
सठाण असपत्तमेवट्ठम-उदण-
आदाय धावर-सुहम अज्जत्त-

साहारणसरीरणामाण को वधो
को अवधो ?

२१३

११ मिच्छाइट्ठी वधा । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ।

॥

१५२ देवाइ वेडणियसरीर वेडणिय
सरीर-अगोवग-देवगइपाओ-
ग्माणुपु-री तित्थयरणामाण को
वधो को अवधो ?

२१४

१५३ असज्जसम्माइट्ठी वधा । एदे
वधा, अवसेसा अवधा ।

२१५

१५४ वेडणियकायजोगीण देवगईप
भगो ।

॥

१५५ वेडणियमिस्सकायजोगीण देव
गइभगो ।

२१२

१५६ णवरि वित्तेसो वेट्ठानियासु
तिरिक्खाउण णत्थि मणु
स्साउण णत्थि ।

२०९

१५७ आहारकायजोगि आहारमिस्स
कायजोगीसु पचणाणावरणीय-
उदमणावरणीय-सादासाद-
अदुसज्जलण पुरिस्सयेद-दस्स-
रदि अरदि जोग-भय-दुगुछा-
देवाउ देवगइ पच्चिदियजादि-
वेडणिय-तेजा-कम्मइयमरीर-
समचउरससठाण-वेडणिय-
सरीर-अगोवग-उण्ण-अचरस-
फास-देवगइपाओ-ग्माणुपु-री-
अगुरुअलहुअ-उचघाद परघाद-
स्साम पम्पविहायगइ-तस-
धादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर-
यिरायिर-सुहासुह-सुभग-
सुस्मर आदेज्ज-जमकित्ति-
अनमकित्ति णिमिण तित्थयर-
उच्चागो-पचतरादयाण को

सूत्र सख्या

मूल

पृष्ठ सूत्र सख्या

सूत्र

पृष्ठ

बधो को अबधो ?

२२९

१५८ पमत्तसज्जा बधा । पदे बधा,
अबधा णत्थि ।

२३०

१५९ कम्मइयकायजोगीसु पचणाणा
वरणीय—चउदसणावरणीय—
असादावेदणीय—वारसकसाय—
पुरिसवेइ हस्स रदि—अरदि—
सोग भय दुगुला मणुसगह—
पचिवियजादि ओरालिय तेजा—
कम्मइयसरीर—समचउरस—
सठाण ओरालियसरीरअमोघम
वज्जरिसहसघडण घण्ण—अध—
रस फास मणुसगइपाओग्माणु
पुम्भी अगुदयलहुअ—इवघाद—
परघादुसास पसत्थविहायगह
तल बावर पज्जत्त पत्तेयसरीर
धिराधिर सुहासुह—सुभग—
सुस्सर आदेज्ज—असविसि—
अजसकिसि—णिमिणुच्चागोद—
पचतराइयाण को बधो को
अबधो ?

२३२

१६० मिच्छाइटी सासणसम्माइटी
असज्जदसम्माइटी बधा । पदे
बधा, अबसेसा अबधा ।

॥

१६१ णिहाणिहा पयलापयला धीण—
मिद्धि अणताणुअधिकोच भाण—
माया लोम इयियेद तिरिक्कस—
गह—चउसठाण—चउसघडण—
तिरिक्कउगइपाओग्माणुपुत्थि—
उज्जोव अपसत्थविहायगह—
हुमग दुस्सर अणदेज्ज—णीचा
गोदाण को बधो को अबधो ?

२३७

१६२ मिच्छाइटी सासणसम्माइटी
बधा । पदे बधा, अबसेसा
अबधा ।

॥

१६३ सादावेदणीयस्स को बधो को
अबधो ?

२३८

१६४ मिच्छाइटी सासणसम्माइटी
असज्जदसम्माइटी सजोगि
केवली बधा । पदे बधा, अबधा
णत्थि ।

२३९

१६५ मिच्छत्त—अणुसयवेद चउजादि
हुउसठाण—असपत्तमयट्टसघ—
एण आदाव धायर—हुहुम अप—
उज्जत्तसाहारणसरीरणामाण को
बधो को अबधो ?

॥

१६६ मिच्छाइटी बधा । पदे बधा,
अवसेसा अबधा ।

२४०

१६७ देवगइ येउद्वियसरीर—वेउ—
द्वियसरीरअमोघम—देउमह—
पाओग्माणुपुत्थि—तिरिधयर—
णामाण को बधो को अबधो ?

२४१

१६८ असज्जदसम्माइटी बधा । पदे
बधा, अबसेसा अबधा ।

॥

१६९ वेदानुवादेण इयियेद पुरिस
वेद अणुसयवेदएसु पचणाणा
वरणीय—चउदसणावरणीय—
सादावेदणीय—चउसज्जण—
पुरिसवेइ असकिसि—उच्चागोद
पचतराइयाण को बधो को
अबधो ?

२४२

१७० मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाय अणि
यट्टिउवसमा खवा बधा । पदे
बधा, अबधा णत्थि ।

॥

१७१ वेदुणी ओघ ।

२४५

१७२ णिहा पयला य ओघ ।

२४८

१७३ असादावेदणीयमोघ ।

२४९

१७४ पचदुणी ओघ ।

॥

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१७५ अपचक्षणाणावरणीयमोघ ।	२५१	१८६ लोमसंजलणस्त को बधो को		
१७६ पचक्षणाणावरणीयमोघ ।	२५३	अबधो ?		२६८
१७७ हस्त रदि जाय तित्थयेर सि	"	१८७ अणियट्ठी उवसमा खवा बधा ।		
मोघ ।	"	अणियट्ठियादरद्दाए चरिम		
१७८ अवगद्रेदपसु पचनाणावर		समय गतून बधो घोच्छिज्जदि ।		
णीय चउदसणावरणीय जस—		एदे बधा, अवसेसा अबधा ।		२६९
कित्ति उच्चागोद पचतराहयाण	२६४	१८८ कसायाणुवादेण कोधकसाईसु		
को बधो को अबधो ?		पचनाणावरणीय [चउदसणा		
१७९ अणियट्ठिप्यहुडि जाय सुहुम		वरणीय-सादायेदणीय] चहुसज		
मापराइयउवसमा खवा बधा ।		लण जसकित्ति उच्चागोद पच-		
सुहुमसापराइयसुद्धिसज्जदद्दाए		राहयाण को बधो को अबधो ?		"
चरिमसमय गतून बधो घोच्छि		१८९ मिच्छाइट्ठिप्यहुडि जाय अणि		
ज्जदि । एदे बधा, अवसेसा		यट्ठि सि उवसमा खवा बधा ।		
अबधा ।	"	एदे बधा, अबधा णत्थि ।		२७०
१८० सादावेदणीयस्त को बधो को	२६५	१९० वेट्ठाणी ओघ ।		२७२
अबंधो ?		१९१ जाय पचक्षणाणावरणीयमोघ ।		२७४
१८१ अणियट्ठिप्यहुडि जाय सजोगि		१९२ पुरिसवेदे ओघ ।		२७५
केरणी बधा । सजोगिकेवलि		१९३ हस्त रदि जाय तित्थयेर सि		
बद्दाए चरिमसमय गतून बधो		ओघ ।		"
घोच्छिज्जदि । एदे बधा, अव		१९४ भाणकसाईसु पचनाणावर		
सेसा अबधा ।	"	णीय चउदसणावरणीय सादा-		
१८२ कोधसजलणस्त को बधो को	२६६	वेदणीय तिणिसजलण-जस-		
अबधो ?		कित्ति उच्चागोद पचतराहयाण		
१८३ अणियट्ठी उवसमा खवा बधा ।		को बधो को अबधो ?		"
अणियट्ठिबादरद्दाए सखेज्जे		१९५ मिच्छाइट्ठिप्यहुडि जाय अणि		
भागे गतून बधो घोच्छिज्जदि ।		यट्ठी उवसमा खवा बधा । एदे		
एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	"	बधा, अबधा णत्थि ।		२७६
१८४ भाण मायासजलणाण को बधो		१९६ वेट्ठाणि जाय पुरिसवेद कोध		
को अबधो ?	२६७	सजलणाणमोघ ।		"
१८५ अणियट्ठी उवसमा खवा बधा ।		१९७ हस्त-रदि जाय तित्थयेर सि		
अणियट्ठिबादरद्दाए सेसे सेसे		ओघ ।		२७७
सखेज्जे भागे गतून बधो		१९८ मायकसाईसु पचनाणावर		
घोच्छिज्जदि । एदे बधा, अव		णीय चउदसणावरणीय सादा-		
सेसा अबधा ।	"	वेदणीय-तिणिसजलण-जस-		

सूत्र सप्त्या

सूत्र

षष्ठ सूत्र सप्त्या

सूत्र

११

किति-उच्चागोद पचतराश्याण को यधो को अयधो ?	२७७	दियजादि भोरालिय वेउदिय- तेजा कम्मइयसरि पचसठाण भोरालिय वेउदियसरि अगो- चग पचसघडण वण्ण गध रत्त काम तिरिक्खगइ-मणुसगइ- देवगइ पाओगाणुपु-मी अगुएभ लहुय उवघाद परघाद ठस्साम उज्जोव दोरिहायगइ-तस- वादर पज्जस-पत्तेयसरि- गिराधिर-सुहासुइ-सुमग- हुमग सुस्सर दुस्सर आद-ज- अणदिज्ज जसकिति-अजस- किति निमिण णीउच्चागोद- पचतराश्याण- को यधो को अयधो ?	२८०
१०९ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाय अणि यट्ठी उवसमा मया यधा । एदे यधा, अयधा नत्थि ।	"	२०८ मिच्छाइट्ठी सामनसम्माइट्ठी यधा । एदे यधा, अयधा नत्थि ।	"
२०० भेड्डाणि जाय माणसजलणे सि ओघ ।	"	२०९ एकवट्ठाणी ओघ ।	२८५
२०१ हस्स-रदि जाय तित्थयरे त्ति ओघ ।	२७८	२१० आभिणिपोहिय-सुद-—ओहि- णाणीसु पचणाणापरणीय चउ दसणापरणीय जसकिति उच्चा गोद पचतराश्याण को यधो को अयधो ?	२८६
२०२ लोभकसारंसु पचणाणापर- णीय चउदसणापरणीय सादा- वेदुणाय जसकिति उच्चागोद पचतराश्याण को यधो को अयधा ?	"	२११ असज्जदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाय सुहुमसापराशयउवसमा सया यधा । सुहुमसापराशयअद्दाए चरिमसमय गतूण यधो वोत्ति उज्जदि । एदे यधा, अयसेसा अयधा ।	"
२०३ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाय सुहुम सापराशयउवसमा सया यधा । एदे यधा, अयधा नत्थि ।	"	२१२ जिहा पयला य ओघे ।	२८७
२०४ सेस जाय तित्थयरे त्ति ओघ ।	"	२१३ सादावेदुणीयस्स को यधो को, अयधो ?	२८८
२०५ अस्स-रसु सादावेदुणीयस्स को यधो को अयधो ?	"		
२०६ उवसतपसापनीदरागउदुमत्था खीणज्जापयीदरागउदुमत्था सज्जोगिकेयली यधा । सज्जोगि केवलमद्दाए चरिमसमय गतूण यधो वोत्तिउज्जदि । एदे यधा, अयसेसा अयधा ।	२७९		
२०७ णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि सुदअण्णाणि विभगणाणीसु- पचणाणापरणीय णवदसणा- परणीय-सादामाद-सोलस- फमाय अट्ठणोक्कसाय-तिरि- फलाउ-मणुसाउ-देवाउ तिरि- फलाउ-मणुसगइ देवगइ पचि-			

सूत्र सत्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सत्या	सूत्र	पृष्ठ
२१४ अमज्जदमममादिद्विप्पहृडि जाय खीणस्सायमीदरागछदुमत्था यथा । एदे यथा, अयथा णत्थि ।	२८८	२२४ मज्जागिक्कयली यथा । सज्जागि केवल्लि अद्वाए चरिमसमय गत्तण उघो योत्तिञ्जदि । एदे यथा, अयसेमा अयथा ।	२९७	
२१५ सेसमोत्र जाय तित्थयेरे-त्ति । णत्थि असेज्जदमममादिद्विप्पहृडि त्ति भाणिद्वय ।	२८९	२२५ सज्जमाणुवादेण मज्जेदसु मण पज्जण्णाणिमगो ।	२९८	
२१६ मणपज्जण्णाणीसु पचणाणा वरणीय-चउदसणावरणीय-जसकित्ति उधारागेद पचतराह-याण को यधो को अयधो ?	२९५	२२६ णत्थि त्रिसेनो सादावेदणीयस्स को उघो को अयधो ?	"	
२१७ पमत्तसज्जदप्पहृडि जाय सुद्धम सापराहयउवसमा यथा यथा । सुद्धमसापराहयसज्जदप्पहृडि चरिमसमय गत्तण उघो योत्तिञ्जदि । एदे यथा, अयसेमा अयथा ।	"	२२७ पमत्तसज्जदप्पहृडि जाय सज्जागि कयली यथा । सज्जागिकेवल्लि अद्वाए चरिमसमय गत्तण यधो योत्तिञ्जदि । एदे यथा, अयसेमा अयथा ।	"	
२१८ णिहा पयलाण को यधो को अयधो ?	"	२२८ सामाहयछेदो गत्तणसुद्धि-सज्जेदसु पचणाणावरणीय-सादावेदणीय-लोभसज्जलण-जन्मत्ति उल्लागागेद पचतराह-याण को यधो को अयधो ?	"	
२१९ पमत्तसज्जदप्पहृडि जाय अपुत्र करणपहृडउवसमा यथा यथा । अपुत्रकरणद्वाए संखे-जदिम भाग गत्तण यधो योत्तिञ्जदि । एदे यथा, अयसेमा अयथा ।	२९६	२२९ पमत्तसज्जदप्पहृडि जाय अणि यद्विउवसमा यथा यथा । एदे यथा, अयथा णत्थि ।	२९९	
२२० सादावेदणीयस्स को यधो को अयधो ?	"	२३० सेसं मणपज्जण्णाणिमगो ।	३००	
२२१ पमत्तसज्जदप्पहृडि जाय खीण कसायमीयरायछदुमत्था यथा । एदे यथा, अयथा णत्थि ।	"	२३१ परिहारसुद्धिसज्जेदसु पचणाणावरणीय छदसणावरणीय सादावेदणीय-चउदसजुलण-पुरिमवेद-हस्स-रदि-अय-दुमुच्छा देवगइ-पविदियजादि-वेउत्थिय तेजा-अमहयसरीर-समचउरससठाण-वेउत्थिय-सरीरअमोत्रग वण्ण गध-स्स-फास देवाणुपुवि अगुरुल्लहम उधवाद् परघादुमसास पसत्थ-विहायगइ तस यादरे-पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिर-सुह-सुभग-	"	
२२२ सेसमोत्र जाय तित्थयेरे त्ति । णत्थि-पमत्तसज्जदप्पहृडि त्ति भाणिद्वय ।	"			
२२३ केवल्लणाणीसु सादावेदणीयस्स को यधो को अयधो ?	२९७			

सूत्र सङ्ख्या

सूत्र

पृष्ठ सूत्र सङ्ख्या

सूत्र

पृष्ठ

- सुस्तर-आदेज्ज-जसकित्ति—
णिमिण तित्थयरुच्चागोद-पच
तराहयाण को बधो को अबधो ? ३०३
- २३२ पमत्तअप्पमत्तसज्जदा बधा ।
एदे बधा, अबधा णत्थि । ३०४
- २३३ असादावेदणीय-अरदि-सोग-
अधिर-असुह-अज्जसकित्ति—
णामाण को बधो को अबधो ? ३०५
- २३४ पमत्तसज्जदा बधा । एदे बधा,
अयसेसा अबधा । ३०६
- २३५ देवाउअस्स को बधो को
अबधो ? ३०७
- २३६ पमत्तसज्जदा अप्पमत्तसज्जदा
बधा । अप्पमत्तसज्जदाए
सज्जेजे भागे गत्तण बधो
योच्छिज्जदि । एदे बधा, अय
सेसा अबधा । ३०८
- २३७ आहारसरीर-आहारसरीरगो-
धगणामाण को बधो को
अबधो ? ३०९
- २३८ अप्पमत्तसज्जदा बधा । एदे
बधा, अयसेसा अबधा । ३१०
- २३९ सुहुमसापराहयसुद्धिसज्जेसु
पचणाणाधरणीय-उदसणा—
धरणीय-सादावेदणीय-जस—
कित्ति-उच्चागोद-पचतराहयाण
को बधो को अबधो ? ३१०
- २४० सुहुमसापराहयउवममा खवा
बधा । एदे बधा, अबधा णत्थि । ३११
- २४१ जहाअस्सादविहारसुद्धिसज्जेसु
सादावेदणीयस्स को बधो को
अबधो ? ३१२
- २४२ उवसतकमायवीदरागउदुमत्था
अवीणकसायवीयरायउदुमत्था
सज्जेजेकेयली बधा । सज्जेजे
केयलिअदाए चरिमसमय
गत्तण [बधो] योच्छिज्जदि ।
एदे बधा, अयसेसा अबधा । ३१३
- २४३ सज्जदासज्जेसु पचणाणाधर
णीय उदसणाधरणीय-साणा—
साद मट्टकसाय—पुरिसवेद—
हस्स-रदि-सोग-भय-दुगुछा-
देवाउ देवगह पंचिदियजादि—
येउवियसेजा-कम्मइयसरीर-
समचउरससठाण-येउवियसे—
सरीरअंगोवग-अण्ण-गध-रस-
फास-देवगहपाभोगाणुपु-री-
अगुदयलहुय-उवघाद परघाद-
उस्सास-पसत्थविहायगह-सस
बादर-पज्जत्त—पत्तेयसरीर—
थिराथिर-सुहासुह - सुभग—
सुस्तर-आदेज्ज-जसकित्ति—
अज्जसकित्ति-णिमिण-तित्थ—
यरुच्चागोद पचतराहयाण को
बधो को अबधो ? ३१४
- २४४ सज्जदामज्जदा बधा । एदे बधा,
अबधा णत्थि । ३१५
- २४५ असज्जेसु पचणाणाधरणीय
उदसणाधरणीय-सादासाद—
धारसकसाय पुरिसवेद-हस्स-
रदि-अरदि-सोग भय दुगुछा-
अणुसगह-देवगह-पंचिदिय—
जादि-ओरालिय येउवियसेजा
कम्मइयसरीर—समचउरस—
सठाण ओरालिय येउवियअगो
वग-अज्जरिसहसघडण-अण्ण-
गध-रस-फास-अणुसगह-देवगह

सूत्र सत्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
पाशोगाणुपुत्री अगुरुअलहुअ उवघाद-परघाद-उस्मास- पसत्यविहायगइ-तम-वादर- पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिराथिर- सुहासुह सुभग-सुस्तर जादेज्ज जसकित्ति पजसकित्ति णिमिणु च्चागोद पचतराइयाण को बधो को अबधो ?		३१०	णीलेस्सिय काउलेस्सियाणम सज्जदमगो ।	३१०
२४६ मिच्छाइट्ठिणहुडि जाय अस जदसम्मादिट्ठी यथा । एदे यथा, अवघा णत्थि ।	३१०	"	२५९ तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु- पचणाणावरणीय छदसणावर- णीय-सादावेदणीय-चउसज- लण पुरिसवेद-इस्स रदि-भय- हुगुछा देवगइ-पचिंदियजादि- येउत्तिय-तेजा-कम्मइयसरीर- समचउरससठाण-उत्तिय- सरीर-अगोत्तम वण्ण गध-रस- फास-देउगइपाओगाणुपुत्री- अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघादु स्मास पसत्यविहायगइ-तस- वादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर- थिर सुह सुभग सुस्तर जादेज्ज जसकित्ति णिमिणुच्चागोद पच तराइयाण को बधो को अवधो ?	३१३
२४७ वेट्ठाणी ओत्त ।	३१३	"	२६० मिच्छाइट्ठिणहुडि जाय अप्प मत्तसज्जदा यथा । एदे यथा, अवघा णत्थि ।	"
२४८ एफट्ठाणी ओघ ।	"	"	२६१ वेट्ठाणी ओघ ।	३१७
२४९ मणुस्ताउ वेराउ-जाण को यधो को अयधो ?	"	"	२६२ अमादावेदणीयमोघ ।	३१९
२५० मिच्छाइट्ठी मासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी यथा । एदे यथा, अवसेसा अयथा ।	३१८	"	२६३ मिच्छत्त-णुत्तयवेद पइदिय- जादि हुडसठाण अमपससेउट्ठ सघडण-आदाय-थाउरणामाण को बधो को अयधो ?	३२०
२५१ तित्थयरणामस्म को बधो को अवधो ?	"	"	२६४ मिच्छाइट्ठी यथा । एदे यथा, अवसेसा अवघा ।	"
२५२ असजदसम्माइट्ठी यथा । एदे यथा, अवसेसा अयथा ।	"	"	२६५ अपचच्चक्खाणावरणीयमोत्त ।	३२१
२५३ इस्सणाणुवादेण चक्रउदम्माणि अयक्खुदसणीणमोघ णेद्वन् जाय तित्थयेरत्ति ।	"	"	२६६ पच्चक्खाणचउक्कमोघ ।	३२३
२५४ णयरि विसेसो, सादावेदणी यस्स को यधो को अयधो ?	३२०	"	२६७ मणुस्ताउअस्स ओघमगो ।	"
२५५ मिच्छाइट्ठिणहुडि जाय म्माण क्सायवीपराय उट्ठुमत्था पंधा । एदे यथा, अवघा णत्थि ।	"	"	२६८ देघाउअस्म ओघमगो ।	३२४
२५६ ओहिदसणी ओहिणाणिमगो ।	"	"		
२५७ केउलदसणी केउलणाणिमगो ।	"	"		
२५८ लेस्सणावादेण किण्हलेस्सिय				

सूत्र सत्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सत्या	सूत्र	पृष्ठ
२६९ आहारसरीर आहारसरीरभगो यगणामाण को बघो को अरधो? अपमत्तसजदा बघा। एदे बघा, अवसेसा अबघा।	३४४	अणादेज्ज जसक्खि-अजस— क्खिणिमिण णीचुन्वागोद— पचतराहयाण को बघो को अरधो?	३५९	
२७० तिथयरणामाण को बघो को अबघो? असजदसम्माद्वीजाव अपमत्तसजदा बघा। एदे बघा, अवसेसा अबघा।	३४५	२७३ सये एदे बघा, अबघा णत्थि।	॥	
२७१ पम्मलेस्सिणसु मिच्छत्तदुओ णेरहयभगा।	३४६	२७८ सम्मत्ताणुवादेण सम्माद्वीजु व्वइयसम्माद्वीजु आभिणि योदियणाणिमणो।	३६३	
२७२ सुक्खलेस्सिणसु जाय तिथयेरे त्ति भोगभगो।	॥	२७९ णवरि साद्वेदणीयस्स को बघो को अबघो?	३६४	
२७३ णवरि निसेसो साद्वेदणीयस्स मणजोगिभगो।	३५६	२८० असजदसम्मादिट्ठिपहुडि जाय सचोगिअली बघा। सजोगि केअलिअद्वए चरिमसमय गतुण बघो योच्छिज्जदि। एदे बघा, अवसेसा अबघा।	॥	
२७४ वेद्वणि-एअद्वणीण णवगेअज्ज निमाणआसियदेवाण भगो।	॥	२८१ वेद्वसम्मादिट्ठिपहुडि पचणाणा वरणीय छइसणावरणीय सादा वेद्वणीय-चउसज्जलण-पुरिस- वेद्व हम्मस-दि मय दुगुछ-देव- गदि पचिदियजादि-वेउयय- तेजा कम्मइयसरीर समचउरस सट्ठाण वेउययभगोवग वण्ण- गध रस-फास-देवगइपाओ— आणुपुअनी-अगुरुअलहुव-उव- घाद-परघाद उस्सास-पसत्थ- विहायगइ तस बादर-पज्जत्त- पत्तेयसरीर थिर-सुभ-सुभग- सुस्सर-आदेअ—जसक्खि- णिमिण तिथयएच्चागोद पच तराहयाण को बघो को अरधो?	॥	
२७५ भविष्याणुवादेण भवसिद्धियाण मोघ।	३५	२८२ असजदसम्मादिट्ठिपहुडि जाय अपमत्तसजदा बघा। एदे बघा, अबघा णत्थि।	३६५	
२७६ अभयसिद्धिपसु पचणाणावर- णीय णवदसणावरणीय सादा- साद मिच्छत्त-सोलसयसाय- णअणोक्साय-चदुआउ चदुगइ पचजादि ओरालिय-वेउअिय- नेजा-कम्मइयसरीर-छसट्ठाण- ओरालिय—वेउअिय गो— वग छसघडण वण्ण गध-रस- फास चत्तारिआणुपुअनी अगुरुव लहुव उवघाद परघाद उस्सास आदानुजोय-ओनिहायगइ तस- यादर-थाअर-सुहुम-पज्जत्त- अपज्जत्त पत्तेय साहारणसरीर थिराथिर-सुहासुद—सुभग- दुभग-सुस्सर दुस्सर आदे ज-				

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	
२८३	असादावेदणीय अरादि सोग— अथिर असुह—अजसमिति— णामाण को बघो को अयघो ?	३६७	२०३	उचसमसम्मादिट्ठीसु पचनाणा वरणीय-चउदसणावरणीय— जसकिति उच्चागोद पचतराह— याण को बघो को अयघो ?	३७२
२८४	असजदसम्मादिट्ठिपट्टि जाय पमत्तसजदा यथा । एदे यथा, अयसेसा अयथा ।	३६८	२९४	असजदसम्मादिट्ठिपट्टि जाय सुहुमसापराहयउचसमा यथा । सुहुमसापराहयउचसमाया चरिमममय गतूण यधो योच्छिउ ज्जदि । एदे यथा, अयसेसा अयथा ।	"
२८५	अपच्च फत्ताणावरणीयकोह— माण—माया-लोह मणुस्साउ- मणुमगह—आराखियसरीर— आराखियसरीरअगोउम यज्जरि सहसघटण—मणुसाणुपुन्नी— णामाण को बघो को अयघो ?	३६९	२०५	निदा पयलण को बघो को अयघो ?	३७४
२८६	असजदसम्मादिट्ठी यथा । एदे यथा, अयसेसा अयथा ।	"	२०६	असजदसम्मादिट्ठिपट्टि जाय अपुन्रकरणउचसमा यथा । अपुन्रकरणउचसमाया सखे ज्जदिम भाग गतूण यधो योच्छिउ ज्जदि । एदे यथा, अय सेसा अयथा ।	"
२८७	पच्च फत्ताणावरणीयकोह माण माया लोमाण को यधो को अयघो ?	३७०	२९७	सादावेदणीयस्स को बघो को अयघो ?	३७५
२८८	असजदसम्मादिट्ठी सजदा सजदा यथा । एदे यथा, अय सेसा अयथा ।	"	२०८	असजदसम्मादिट्ठिपट्टि जाय उचसतरसाय गीयरागछुदुमथा यथा । एदे यथा, अयथा णत्थि ।	"
२८९	देयाउअम्स को बघो को अयघो ?	३७१	२९९	असादावेदणीय-अरादि-सोग- अथिर-असुह-अजसकिति— णामाण को बघो को अयघो ?	३७६
२९०	असजदसम्मादिट्ठिपट्टि जाय अपमत्तसजदा यथा । अप मत्तहाय सखेले भागे गतूण यधो योच्छिउज्जदि । एदे यथा, अयसेसा अयथा ।	"	३००	असजदसम्मादिट्ठिपट्टि जाय पमत्तसजदा यथा । एदे यथा, अयसेसा अयथा ।	"
२९१	आहारसरीर-आहारसरीरगो- यगणामाण को बघो को अयघो ?	३७२	३०१	अपच्च फत्ताणावरणीयमाहि— णाणिभगो ।	"
२९२	अपमत्तसजदा यथा । एदे यथा, अयसेसा अयथा ।	"	३०२	जवरि आउच णत्थि ।	३७७

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३०३	पञ्चकन्याणावरणचउक्कस्म को वधो को अवधो ?	३७७	३१३ देवगह-पविन्दियजादि-वेड- त्रिय तेजा-वम्मइयसरार सम चउरमसटाण-वेड-त्रियभगो- यम वण्ण गध रम फास देयाणु पु-जी-अगुरु गल्लुग उवघाद- परघाद उस्तम पम, एविहाय गदि-तस वादर पज्जस पत्तेय- सरार धिर सुह सुभग सुस्मर- आदेज्ज णिभिण तित्थवरणामाण को वधो को अवधो ?	३७९
३०४	असजदसम्मादिट्ठिपट्ठि जाव अणियट्ठी उवसमा यथा । अणि यट्ठिउवसमद्वाए मेमे सखेज्जे भागे गतूण वधो वोचिउज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ।	"	३१४ असजदसम्मादिट्ठिपट्ठि जाव अपुव्वकरणउवसमा यथा । अपुव्वकरणउवसमद्वाए सखेज्जे भागे गतूण वधो वोचिउज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ।	३८०
३०५	माण मायसजलणण को वधो को अवधो ?	३७८	३१५ आहारसरार आहारसरारभगो यगाण को उधो को अवधो ?	"
३०८	असजदसम्मादिट्ठिपट्ठि जाव अणियट्ठी उवसमा यथा । अणि यट्ठिउवसमद्वाए सेसे सेसे सखेज्जे भागे गतूण वधो वोचिउज्जदि । एदे वधा, अव सेसा अवधा ।	"	३१६ अप्पमत्तापु-उकरणउवसमा यथा । अपु-उकरणवम्ममद्वाए सखेज्जे भागे गतूण वधो वोचि उज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ।	"
३०९	लोअसजलणस्स को वधो को अवधो ?	"	३१७ सासणसम्मादिट्ठी मदि अण्णाणिभगो ।	"
३१०	असजदसम्मादिट्ठिपट्ठि जाव अणियट्ठी उवसमा यथा । अणि यट्ठिउवसमद्वाए अरिमसमय गतूण वधो वोचिउज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ।	"	३१८ सम्मामिच्छादट्ठी असजदभगा ।	३८३
३११	हस्स रदि मय दुगुलाण को वधो को अवधो ?	३७९	३१९ मिच्छादट्ठीणमभवसिद्धियभगो ।	३८६
३१२	असजदसम्मादिट्ठिपट्ठि जाव अपु-उकरणउवसमा यथा । अपुव्वकरणवम्ममद्वाए अरिम समय गतूण वधो वोचिउज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ।	"	३२० सण्णियाणुवादेण सण्णीसु जाय तित्थयेरे सि भोघभगो ।	"
			३२१ णवरि वित्तेसो सादायेद णीयस्स अरमुदसणिभगो ।	३८७
			३२२ असण्णीसु अमवसिद्धियभगो ।	"
			३२३ आहाराणुवादेण आहारणसु ओघ ।	३९०
			३२४ अणाहारणसु कम्मइयभगो ।	३९१

२ अवतरण-गाथा सूची

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अथवा पत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अथवा पत्र कहाँ
१६	अगुरुमल्ल उचघाद	१७	२२	पणउण्णा हर उण्णा	२४
२४	जागमचक्यू साह	२६४ प्र सा ३ ३४	९	पण्णरस कमाया जिणु	१०
१७	इत्थि पउसयनेदा	१८	१८	पचासुहसघडणा	१८
२१	उवरिरलण्ण पुण	२४ गो क ७८८	१०	पुउत्तवसेसाओ	१३
२०	चदुपन्चइगो यधो	" " ७८७	१	उधेण य सजोगो	३
१५	पाणतरायदस्य	" ७	३	उओन्य पुअ ना	८
१२	पाणतरायदसण	१५	५	" " "	"
११	तिस्थयर गिरयदेवाउअ	१४	७	यधो यधविही पुण	"
२३	दस अट्टारस दसय	२८ गो क ७२२	८	मिउत्त भय दुगुछा	१०
६	दस चदुरिगि सत्तारस	११ " २६३	१३	सत्तारीसेदाओ	१५
७	देनाउदेवचउफ्फाहार	"	१४	सत्तेताल धुआओ	१६
४	एवचयमामित्तिहि	८	१९	सातरगिरनरेण य	१९

३ न्यायोक्तियां

क्रम संख्या	न्याय	पृष्ठ क्रम संख्या	न्याय	पृष्ठ
१	'जहा उदेसो तदा णिदेसो' ति जाणावणट्टमोघेणे सि उत्त ।	४	इति दो धि णए अचिरविऊण द्विण्णेगमणयस्म मायाभाय उयहार विरोदाभायदो ।	६
२	'पदग्नि न तद् दग्धमतिलप्प वर्त्तत'			

४ ग्रन्थोल्लेख

१ कमायपाहुड

कमायपाहुडसुत्तेणेद सुत्त विग्गज्झदि सि उत्ते सच्च विक्कज्झइ किंतु । ५६

२ चूर्णिसूत्र

चूर्णिसुत्तकत्ताराणमुधएसेण पचण्ण पयडीणमुदयवोन्हेदो, चहुजादि
धावराण तासणसम्मादिट्ठिमिह उदयवोन्हेदम्मुयगमादो । ९

३ महाकर्मप्रकृतिप्रामृत

मिच्छत्त एइदिय बीइदिय तीइनिय-चउरिइदियजादि-आदाय-धावर-सुद्धम-
भयजस साहाराण वसण्ह पयडीण मिच्छाइट्ठिस्स चरिमसमयमि उदयवोन्हेदो ।
एसो महाकम्मपपडिपाहुडउवएसो । ९

४ व्याकरणसूत्र

‘एए उच्च सामणा’ सि सुत्तेण आदिवुड्डीए कपअफारत्तादो । ९०

५ सूत्र पुस्तक

अपमसज्जाए सयेज्जेसु भागसु गदेसु देवाउअस्स बधो वोडिछज्जदि सि
केसु वि सुत्तपोत्थएसु उअरम्मइ । ६५

५ पारिभाषिक शब्दसूची

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अज्ञानमिध्यात्व	२०
अगतिस्तयुक्त		अतिचार	८२
अगुदल्लु	८	अध्वान	८, ३१
अज्जुवर्धनी	२०	अध्वय	८
	३१८	आस्तानुबन्धी	९

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अनपित	६	अष्टस्थानिक	२०५
अनादिक	८	असम्प्राप्तवर्षायुष्क	११६
अनादेय	९	असञ्जी	३८७
अनाहारक	३९१	असम्प्राप्तसृपाटिकासहनन	१०
अनिवृत्तिकरण	४	असयत	३१२
अनुभाग बन्ध	२	असयतसम्यग्दृष्टि	४
अनेकान्त	१४५	असयम	२, १९
अन्तर	६३	असंयम प्रत्यय	२५
अन्तरकरण	५३	असातादण्डक	२४९, २७४
अन्तराय	१०	अस्थिर	१०
अपगतज्व	२६५, २६६		
अपर्याप्त	९	आ	
अपूर्णकरण	४	आचार्य	७३, ७३
अष्कायिक	१९२	आताप	९, २००
अप्रत्यय	८	आदेय	११
अप्रत्याख्यानायरणदण्डक	२५१, २७४	आदेश	९३
अप्रमत्तसयत	४	आनुपूर्वी	९
अभ्यन्तरीय	३५९	आभिनियोधिष्वानी	२८६
अभिधेय	१	आभ्यन्तर तप	८६
अभीक्ष्ण अभीक्ष्णज्ञानोपयोगयुक्तता	७९, ९१	आश्रयक	८४
अयशकीर्ति	९	आश्रयकापरिहीनता	७९, ८३
अयोगिकेयली	४	आहारक	३९०
अरति	१०	आहारककाययोगी	२०९
अरहन्त	८९	आहारकमिश्रकाययोगी	"
अरहन्तभक्ति	७९, ८९	आहारकशरीरद्विक	९
अचना	९०		
अर्धापिचि	२७४	इ	
अर्धनाराचसहनन	१०	इन्द्रियामयम	६१
अर्पणान्त्र	१९०, १९९, २००		
अपित	५	उ	
अवधि	२६४	उच्चगोत्र	११
अवधिज्ञानी	२८६	उच्छ्वास	१०
अवधिदर्शनी	३१९	उत्तरप्रवृत्तिबन्ध	२
अव्योगादमूलप्रवृत्तिबन्ध	२	उत्तर प्रत्यय	२०
अनुम	१०	उद्योग	९, २००
		उपघात	१०

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
उपशमक	२६५	क्षपक	२६५
उपशमसम्यग्दृष्टि	३७२	क्षायिकसम्यग्दृष्टि	३६३
उपशान्तकपाय	४	क्षीणकपाय	४
उपसहार	५७		
ए		ग	
एक एक मूलप्रवृत्तिष्वध		गतिसयुक्त	
एकस्थानदण्डक	२	गध	८
एकस्थानिक	२७८		१०
एकात्मिण्यात्	२४९	च	
एकेन्द्रिय	२०	चक्षुदशानी	३१८
ऐ	९	चतुर्विन्द्रिय	९
ऐन्द्रियज	९०	चारित्र्यनिय	८०, ८१
		चूर्णिसूत्र	९
औ		ज	
औदारिककाययोगी		जीवसमास	
औदारिकमिश्रकाययोगी	२०३	जीवस्थान	४
औदारिकशरीर	२०५	जुगुप्सा	५
औदारिकशरीरागोपण	१०	ज्ञाननिय	१०
क	"	ज्ञानावरणीय	८०
		ज्योतिषी	१०
कल्पवृक्ष	९२	त	
कपाय	२, १९	तिर्यगायु	९
कपायप्रत्यय	२१, २५	तिर्यग्गति	"
कापोतलेद्या	३२०, ३३२	तिर्येच	१९२
कामणकाययोगी	२३२	तीर्थ	९२
कामणशरीर	१०	तीर्थकर	११, ७२, ७३
कालितसहनन	"	तीर्थकरनामगोयक्रम	७६, ७८
कृति	२	तीर्थकरसन्तरुमिक	३३२
कृष्णलेद्या	३२०	तेज	२००
कैवल	२६८	तेजकायिक	१९२
कैवलशानी	२९६	तेजोलेद्या	३३३
कैवलदशानी	३१९	तेजसशरीर	१०
क्षण लयप्रतिषाधनता	७९, ८५	त्रस	११
		त्रीन्द्रिय	

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
दर्शनयिनय	८०	निरन्तरबन्धप्रकृति	१७
दर्शनविशुद्धता	७९	निर्माण	१०
दर्शनावरणीय	१०	नीचगोत्र	९
दुर्भंग	९	नील्लेख्या	३००, ३३१
दुस्वर	१०	नैगमनय	६
देवगति	९		
देवायु	"	पद्मलेदया	३३३, ३४५
देशप्रती	२५५, ३११	परघात	१०
द्रव्यभूत	९१	परिहारशुद्धिसयत	३०३
द्रव्यार्थिकनय	३	परोक्ष	७
द्विस्थानदण्डक	२७४	पर्याप्त	११
द्विस्थानी	२४५, २७२	पर्याप	५, ६
द्विन्द्रिय	९	पर्यायार्थिकनय	३, ७८
		पचेन्द्रियजाति	११
घ		पचेन्द्रियतिर्यक्	११२
घर्म	९२	पचेन्द्रियतिर्यक्प्रपर्याज	१२७
ध्रुव	८	पचेन्द्रियतिर्यक्पर्याप्त	११२
ध्रुवबन्ध	१७	पचेन्द्रियतिर्यक्चयोनिमती	"
ध्रुवबन्धप्रकृति	"	पुरुषवेद	१०
ध्रुवबन्धी	"	पुरुषवेददण्डक	२७५
		पृथिवीकायिक	१९२
न		प्रकृतिबन्ध	२, ७
नपुंसकवेद	१०	प्रकृतिबन्धन्युच्छेद	५
नमसन	९२	प्रकृतिसमुत्कीर्तना	७
नरकगति	९	प्रकृतिस्थानबन्ध	२
नारकायु	"	प्रचला	१०
नाराचसहनन	१०	प्रचलाप्रचला	९
निगोदजीव	१९२	प्रतिक्रमण	८३, ८४
निद्रा	१०	प्रत्यक्षज्ञानी	५७
निद्रादण्डक	२७४	प्रत्ययविधि	८
निद्रानिद्रा	९	प्रत्याख्यान	८३, ८५
निरतिचारता	८०	प्रत्याख्यानदण्डक	२७४
निरन्तर	८	प्रत्याख्यानानवरण	९
निरन्तरबन्ध	१७	प्रत्यासत्ति	६

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
प्रत्येकशरीर	१०	म	
प्रदेशग्रन्थ	२	मतिप्रज्ञानी	२७९
प्रमत्तसयत	४	मन पर्ययज्ञानी	२९५
प्रमोक्ष	३	मनुष्यअपर्णाप्त	१३०
प्रयोजन	१	मनुष्यगति	११
प्रवचन	७२, ७३, ९०	मनुष्यनी	१३०
प्रवचनप्रभावना	७९, ९१	मनुष्यपयाप्त	"
प्रवचनभक्ति	७९, ९०	मनुष्यायु	११
प्रवचनवत्सलता	"	महारुमप्रकृतिप्राभृत	९
प्राण्यसयम	२१	महामह	९२
प्राणिकपरित्यागता	७१, ८७	महावर्ता	२५५, २५६
ब		मानदण्डक	२७५
बन्ध	२, ३, ८	मार्गणास्थान	८
बन्धक	२	मिथ्यात्व	२, ९, १९
बन्धन	"	मिथ्यादृष्टि	४, ३८६
बन्धनीय	"	मूत्रप्रवृत्तिबन्ध	२
बन्धनिधान	"	मूलप्रत्यय	२०
बन्धविधि	"	य	
बन्धयुक्तेद्	८	यथाप्यातसयत	३०९
बन्धस्त्रामित्वाविषय	५	यथाशक्तितप	७९, ८६
बन्धाध्वान	३	यशकीर्ति	११
बहुभुत	८	योग	२, २०
बहुभुतभक्ति	७२, ७३, ८२	योगप्रत्यय	२१
बादर	७९, ८९	र	
बाह्यनय	११	रति	१०
भ	८६	रस	"
भय	१०	ल	
भयनयामी	१४६	लब्धि	८६
भयसिद्धि	३५८	लघुसवेगसम्पन्नता	७९, ८६
भग	१७१	लेह्या	३५६
भायधृत	९१	लोभदण्डक	
भुजगाद्वय	२		

शब्द

पृष्ठ

शब्द

पृष्ठ

यज्ञनाराचसहनन	१०	श्रुतब्रह्मानी	२७२
यज्ञनृपभनाराचसहनन	"	श्रुतकेवली	५७
चनस्पतिकायिक	१९०	श्रुतशानी	२८६
चन्दना	८३, ८४, ९२		
चर्गणा	२	स	
चर्ण	१०	समता	८३, ८४
चानयन्तर	१४६	समाधि	८८
चायुकायिक	१९२	सम्यग्	१, २
त्रिग्रहगति	१६०	सम्यग्दृष्टि	३६३
विनय	८०	सम्यग्मिध्यादृष्टि	४, ३८३
विनयसम्पन्नता	७२, ८०	सयोगकेवली	४
विपरीतमिध्यात्	२०	सर्वतोभद्र	९२
विभगद्वानी	२७९	सत्यातवर्षायुष्क	११६
विरति	८२	सत्री	३८६
विहायोगति	१०	सज्वलन	१०
वेदकसम्यक्तर	"	सयत	२९८
वेदकसम्यग्दृष्टि	३६४	सयतासयत	४, ३१०
वेदना	२	सयोग	८६
वेदनीय	११	सम्यान	१०
वैश्विककाययोगी	२१५, २२२	सादिक	८
वैश्विकशरीर	९	साधारण	९
वैश्विकशरीरागोपाग	"	नाधु	८७, २६४
वैश्विकमिध्यात्	२०	साधुसमाधि	७२, ८८
वैषामत्य	८८	सान्तर	७
वैषामत्ययोगयुक्तता	७९, ८८	सान्तर निरन्तर	८
न्यभिचार	३०८	सान्तरव्यग्रवृत्ति	१७
ध्युत्सर्ग	८३, ८५	सामायिकछंदोपस्थापनशुद्धिसयत	२९८
मत	८३	सासाधनसम्यग्दृष्टि	४, ३८०
		सादायिकमिध्यात्	२०
श		सुभग	११
शील	८२	सुस्वर	१०
शीलव्रतेषु निरतिचारता	७९, ८०	सूक्ष्म	९
शुक्ललेइया	३४६	सूक्ष्मसाम्परायिक	४
शुभ	१०	सूक्ष्मसाम्परायिकसयत	३०८
शोक	"	सूक्ष्म	५७

शब्द

पृष्ठ

शब्द

पृष्ठ

स्तव	८३, ८४	स्वप्रत्यय	८
स्त्यानगृद्धि	९	स्वामित्व	"
स्त्रीषेद	१०	स्रोदय	७
स्थायर	९	स्रोदय परोदय	"
स्थितिय-घ	२		
स्थिर	१०		
स्पर्श	"	हास्य	१०



